

# ममता कालिया के कथा-साहित्य में यथार्थ बोध :

## एक अध्ययन

(Mamta Kaliya ke Katha-Sahitya Main Yatharth Bodh :  
Ek Adhyayan)



कोटा विश्वविद्यालय, कोटा  
की

पीएच.डी. (हिन्दी)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

कला संकाय

शोधार्थी

रमा उदावत

पंजीयन क्रमांक - RS/1478/19

शोध पर्यवेक्षक

प्रो. अनिता वर्मा

हिन्दी विभाग

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा (राज.)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) 324005

मार्च, 2025

शोध निदेशालय  
कोटा विश्वविद्यालय

एम.बी.एस. मार्ग, कोटा (राजस्थान)-324005

फोन नम्बर : 0744-2471037



Directorate of Research  
University of Kota

MBS Marg, KOTA (Rajasthan)-324005

Phone No. : 0744-2471037

## CERTIFICATE

I feel great pleasure in certifying that the Ph. D. thesis entitled “ममता कालिया के कथा-साहित्य में यथार्थ बोध : एक अध्ययन” submitted by **Rama Udawat** to the University of Kota in the partial fulfillment of the requirements for the award of the degree of Doctor of Philosophy is based on the research work carried out under my guidance.

She has completed the following requirement as per UGC regulations and research ordinance of the University:

- Satisfactory Completion of the Ph. D. Course work.
- Submission of Half Yearly Progress Reports.
- Fulfillment of residential requirement of the Research Centre (Minimum 200 Days).
- Presentation of research work before the Departmental Committee.
- Publication of at least one research paper in the referred research journal of national and international repute.
- Two paper presentation in the Conferences/Seminars.

I recommend the submission of the Ph.D. thesis and certify that it is fit to be evaluated by the examiners.

Place :

Date :

**Prof. Anita Verma**  
(Research Supervisor)



## CANDIDATE'S DECLARATION

I, **Rama Udawat** hereby certify that the research work presented in my Ph.D. Thesis, entitled “ममता कालिया के कथा-साहित्य में यथार्थ बोध : एक अध्ययन” which is carried out by me under the supervision of **Prof. Anita Verma, Department of Hindi, Govt. Arts College, Kota (Raj.)** and submitted in fulfillment of the requirement of the award of the degree of Doctor of Philosophy of the University of Kota represents my ideas in my own words and where others ideas or words have been included in this thesis, I have adequately cited and referenced the original sources.

The work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of any other degree or diploma from any institutions in India or abroad. I declare that I have adhered to all the principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea/data/fact/source in my submission.

I understand that any violation of the above will cause disciplinary action by the University and can also evoke penal action from the sources which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

Date :

Place :

**Rama Udawat**  
(Research Scholar)

This is to certify that the above statement made by **Rama Udawat** (Registration Number RS/1478/19) is correct to the best of my knowledge.

Date:

Place :

**Prof. Anita Verma**  
(Research Supervisor)



## *Anti-Plagiarism Certificate*

It is certified that the Ph.D. thesis entitled “ममता कालिया के कथा-साहित्य में यथार्थ बोध : एक अध्ययन” submitted by **Rama Udawat** has been examined with the Anti-plagiarism tool.

We undertake that:

- The Thesis has significant new work/knowledge as compared already published or are under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.
- The work presented is original and own work of the author i.e. there is no plagiarism. No ideas, processes, results or words of others have been presented as author's own work.
- There is no fabrication of data or results which have been compiled and analyzed.
- There is no falsification by manipulating research materials, equipment or processes, or changing or omitting data or results such that the research is not accurately represented in the research record.
- The Thesis has been checked using **DrillBit** software and found within limits as per UGC plagiarism Policy and instructions issued from time to time.

Report is also enclosed along with this Ph.D. Thesis.

Date :

**Rama Udawat**

Place :

**(Research Scholar)**

**Prof. Anita Verma**

**(Research Supervisor)**



The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

*Selected Language*

Hindi

*Submission Information*

Author Name	Rama udawat
Title	ममता कालस्या के कथा-साहित्य में यथार्थ बोध : एक अध्ययन
Paper/Submission ID	3385325
Submitted by	anitakota97@gmail.com
Submission Date	2025-03-07 14:03:45
Document type	Thesis

*Result Information*

Similarity	7%
------------	----

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File



## कृतज्ञता-ज्ञापन

इस शोध-प्रबंध कार्य की अन्तर्यात्रा की पूर्णता के साथ मेरा मन कृतज्ञता से भर रहा है और यह मेरे लिए एक स्वप्न के पूरा होने जैसा लग रहा है। इस शोध कार्य को पूर्ण करना मेरी जैसी अल्प बुद्धि, लघु प्राणी के लिए असंभव था लेकिन इस कल्पना रूपी स्वप्न को मूर्तता की परिणति तक पहुँचाने में जिन श्रद्धेयजन, आत्मीयजन तथा स्वजनों ने मुझे अपना अमूल्य समय देकर मेरा सहयोग किया उन सबके प्रति मैं श्रद्धावन्त हूँ और हमेशा आभारी रहूँगी।

यह बात उचित है कि गहन अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने में गुरु की अहम भूमिका होती है। मेरे इस शोध कार्य में उपस्थित अनेक बाधाओं रूपी घने अंधकार को हटाकर मेरे शोध कार्य को संकल्प एवं कृतार्थता तक पहुँचाने में मेरी परम पूज्य गुरु और शोध पर्यवेक्षक डॉ. अनिता वर्मा की वात्सल्यमयी प्रेरणा स्नेहाशिष एवं उत्साहवर्द्धक मार्गदर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिन्होंने मुझे शोध कार्य के लिए समय-समय पर प्रेरित किया तथा शोध कार्य में होने वाली बाधाओं से अवगत कराकर उनका निराकरण किया। उनका पुत्रीवत् स्नेह और सहज निर्मल स्वभाव भी मेरे शोध कार्य के लिए पथप्रदर्शक बना जिसे मैं कभी भी विस्मृत नहीं कर पाऊँगी। उनकी सूक्ष्मदृष्टि, तटस्थ समालोचनात्मक दृष्टि ने मेरे शोध कार्य को गहनता प्रदान कर उसे उपादेय बनाया मेरी अज्ञानता, अल्पज्ञता को उन्होंने विज्ञता प्रदान कर शोध विषय की जटिलता, कठिनाई और शोध के अनसुलझे पक्षों को बड़ी सहजता से समझाते हुए सुलझाया। उनके सान्निध्य और निर्देशन में मेरी शोध यात्रा कब पूर्ण हुई, परिज्ञात ही नहीं हो सका।

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. विवेक शंकर, हिंदी विभाग के अन्य समस्त सदस्यों के स्नेहाशीष, शोध प्रबंध लेखन संबंधी मार्गदर्शन, मूल्यवान सुझावों और संबल प्रदान करने वाले निर्देशों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

कोटा विश्वविद्यालय कोटा के शोध विभाग कार्यालय के श्री चमन तिवारी जी के सहयोग के लिए भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

किसी भी असाधारण कार्य को व्यक्ति तभी पूर्ण कर सकता है जब उसका आत्मबल दृढ़ हो और मेरे इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए प्रेरित करने वाले मेरे परम पूज्य पिता श्री गजेन्द्र सिंह उदावत तथा मेरी परम पूज्य माता श्रीमती सुमन कंवर हैं जिन्होंने हमेशा मुझे प्रोत्साहित किया। मेरे माता-पिता की मैं सदा ऋणी रहूँगी जिन्होंने सदा मेरा उत्साहवर्धन कर मेरा आत्मबल बढ़ाया।

विवाह के पश्चात मेरे पिता समान परम सम्माननीय मेरे ससुरजी श्री रघुवीर सिंह नरुका ने मुझे शोध कार्य के लिए प्रेरित किया तथा समुचित अवसर प्रदान किया। माता समान परम सम्माननीय सासुजी श्रीमती लता कंवर जिन्होंने मुझे घर-परिवार की जिम्मेदारी से मुक्त रखते हुए शोध कार्य के लिए मुझे समुचित अवसर प्रदान किया, साथ ही मैं अपनी छोटी बहन के समान ननद बाईसा एकता कंवर जवाईसा उमेश राघव का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे शोध कार्य में मदद की। मैं विशेष रूप से आभारी हूँ मेरे जीवन साथी श्री देवराज सिंह की जिन्होंने मेरी हर मुश्किल घड़ी में मेरा उत्साहवर्धन किया। साथ में ही मैं अपने पुत्र परीक्षित की आभारी हूँ मेरे शोध कार्य के दौरान अनेक मातृ स्नेह से वंचित होने तथा किंचित लाड़-दुलार से वंचित होने पर भी मधुर मुस्कान से मुझे शोध कार्य में ऊर्जा प्रदान की।

मैं विशेष रूप से मेरे अनुज अरविंद प्रताप के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिसने मेरे शोध कार्य में हमेशा मेरा साथ दिया और मेरे मनोबल को बढ़ाया। मैं अपने सभी मित्रों रीना पारीक, वंदना शर्मा, स्वाति, दिव्या, भाग्यश्री, मुकेश, प्रतिभा, राजकुमार, श्रीपाल जी सभी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे शोध कार्य हेतु प्रेरित किया।

मैं आभार व्यक्त करती हूँ इग्नू विभाग के प्रो. राजकुमार सर का जिन्होंने मुझे समय-समय पर जानकारी प्रदान की तथा शोध कार्य से संबंधित समस्याओं से अवगत कराया।

मैं आभार व्यक्त करती हूँ प्राचार्य राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा का उनकी मैं अन्तःस्थल से आभारी हूँ। इसके साथ ही मैं हिन्दी विभाग के समस्त गुरुजन की भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर प्रेरणा और सुझाव देकर मुझे सतत प्रेरित किया आप सभी का मैं हृदय की गहराईयों से आभार व्यक्त करती हूँ।

इस शोध प्रबन्ध को उत्कृष्ट रूप से सृजनात्मक टंकण के द्वारा सुसज्जित करने के लिए मैं शबनम खान एवं श्री नियाज मोहम्मद, परम कम्प्यूटर स्टेशन, कोटा जंक्शन की आभारी हूँ जिन्होंने विषम परिस्थितियों में पूर्ण मनोयोग, निष्ठा, लग्न एवं धैर्य से शोध प्रबन्ध को आकार देने का प्रशंसनीय कार्य सम्पन्न किया है।

अंत में मेरे शोध कार्य में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ मैं उन सभी की तहेदिल से आभारी हूँ और धन्यवाद करती हूँ। इस शोध ग्रन्थ के प्रस्तुतीकरण में अज्ञानतावश हुई त्रुटि के लिए मेरा अल्पज्ञान ही दोषी है। श्रेष्ठ सब आपके पथ प्रदर्शन का परिणाम है।

**शोध छात्रा**

**रमा उदावत**



## प्राक्कथन

हिंदी साहित्य के इतिहास में उपन्यास और कहानी हिंदी कथा साहित्य की सबसे सशक्त विधा है। आधुनिक साहित्य के इतिहास में अनेक महिला उपन्यासकारों और कहानीकारों ने अपना लेखन कार्य किया है उनमें से इस विधा की प्रमुख हस्ताक्षर हैं ममता कालिया। ममता कालिया स्त्री होने के बावजूद समाज में व्याप्त विसंगतियों को देखा और परखा उसके पश्चात् ही साहित्य में यथार्थ दृष्टिकोण से लेखन कार्य प्रारंभ किया। इनके लेखन की शुरुआत सन 1960 के आस-पास मानी जाती है। आपने लेखन की शुरुआत 'कविता' के माध्यम से की। 'कविता' किसी हृदयहीन, नीरस प्राणी को भी रस से सराबोर कर देती है और आपने भी अपने लेखन की शुरुआत एक कविता के माध्यम से की। आपकी पहली कविता 'प्रयोगवादी प्रियतम' मानी जाती है जो 'जागरण' पत्रिका में छपी थी। इस कविता से ममता कालिया के लेखन का सिलसिला शुरू हो जाता है जो वर्तमान तक अनवरत रूप से चल रहा है। हिंदी महिला लेखिकाओं की सूची में मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, राजी सेठ, नासिरा शर्मा, उषा प्रियंवदा इत्यादि के साथ जुड़ने वाला एक विशेष उल्लेखनीय नाम है ममता कालिया का जिन्होंने अपने साहित्य में वर्तमान नारी समस्याओं के यथार्थ को अपने रचना कार्य के माध्यम से समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। ममता कालिया ने कभी भी घोर स्त्रीवादी होने का प्रयास नहीं किया बल्कि समाज में फैली कुरीतियों तथा स्त्री व पुरुष के प्रति समान दृष्टिकोण को अपनाते हुए समाज के सम्मुख यथार्थ को प्रकट करने का सफल प्रयास किया है।

समकालीन रचना जगत में इन्होंने अपने मौलिक और प्रखर लेखन में हिंदी साहित्यकारों की शीर्ष पंक्ति में अपना अलग स्थान बनाया है। इन्होंने बदलते संदर्भ में समाज की बदलती हुई मानसिकता तथा नारी व समाज की समस्याओं को केंद्र में रखकर अपने साहित्य संसार का सृजन किया है। अपने कथा-साहित्य में ममता कालिया ने अपने उपन्यासों व कहानियों में नारी जीवन के साथ-साथ दहेज प्रथा, मध्यमवर्गीय परिवारों में व्याप्त द्वंद्वात्मक तनाव, पारिवारिक विसंगतियों और घुटते-पिसते आदमी की टूटन की पीड़ा पुरुषसत्तात्मक सोच आदि के यथार्थ को चित्रित किया है। इन्होंने पारिवारिक जीवन तथा समाज के प्रति व्यापक दृष्टिकोण को भी महत्व दिया है। अपनी कहानियों, उपन्यासों में नारी को केंद्र में रखा तथा साथ ही साथ समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, तुच्छ राजनीति को भी अपने लेखन में स्थान दिया।

ममता कालिया ने अपने जीवन संघर्षों को साहित्य के लिए प्रेरणा स्रोत मानती है। एक अध्यापिका होने के कारण जीवन भर पढ़ना-लिखना और पढ़ाना चलता रहा जिसके दौरान उनका समाज में कई स्त्रियों से संपर्क हुआ जो अनेक समस्याओं से ग्रसित थीं। बचपन से ही पापा के तबादलों के कारण भी उनको अलग-अलग जगह व वातावरण में रहने का अनुभव था अर्थात् उनके जीवन में उन्हें अलग-अलग लोगों ने तथा क्षेत्रों ने प्रभावित किया, उन्हीं से प्रेरणा प्राप्त कर उन्होंने अपना लेखन कार्य शुरू किया। ममता कालिया ने अध्ययनकाल से ही साहित्य सृजन का कार्य प्रारंभ कर दिया और अपने लेखन की शुरुआत कविता के माध्यम से करते हुए आज वे साहित्य की लगभग सभी विधाओं की सशक्त हस्ताक्षर हैं। ममता कालिया का रचना संसार बहुत विस्तृत है अब तक वे अनेक कहानियों उपन्यासों का प्रकाशन कर चुकी हैं और वर्तमान में भी वे अनवरत रूप से लेखन कार्य में सजग हैं।

ममता कालिया बेहद हंसमुख स्वभाव की हैं। वे लेखन में जितनी गंभीर हैं, व्यवहार में उतनी ही सरल और जीवंत हैं। महिला कथाकार ममता कालिया का चेहरा रोजमर्रा के संबंधों से युद्धरत साहित्यकार का चेहरा है जिसे गृहिणी से लेकर कॉलेज की प्राचार्य, साहित्यकार तक अनेक उत्तरदायित्व निभाने पड़ते हैं। उन्होंने जीवन से ही प्रेरणा हासिल कर अनुभवजनित उपन्यास कहानियाँ आदि का सृजन किया जो मनुष्य के सम्पूर्ण चित्र को समादृत करने में सक्षम हैं।

मुझे शोध कार्य में रुचि केंद्रीय विश्वविद्यालय बांदरसिंदरी से एम.ए. करने के दौरान हुई जहाँ हमारे अग्रजों से मुझे प्रेरणा मिली तब मैंने निश्चय किया कि मैं भी शोध कार्य करूंगी। मैंने कोटा कला महाविद्यालय में पीएच.डी. करने के लिए **‘ममता कालिया के कथा-साहित्य में यथार्थ बोध : एक अध्ययन’** विषय को चुना। मेरी शोध पर्यवेक्षक आचार्य (डॉ.) अनिता वर्मा जी ने मुझे इस विषय पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। जिन्होंने मेरे शोध-प्रबंध के विषय चयन से लेकर उसे अंतिम रूप देने तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को मैंने पाँच अध्यायों में विभाजित किया है तथा इसमें मैंने विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में **‘ममता कालिया के कथा-साहित्य में यथार्थ बोध : एक अध्ययन’** विषय पर कार्य किया गया है। अध्ययन एवं विश्लेषण की दृष्टि से इस शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है इस प्रकार है-

**प्रथम अध्याय :** 'यथार्थ की अवधारणा एवं स्वरूप' के अन्तर्गत यथार्थ बोध, यथार्थ का अर्थ एवं परिभाषा, यथार्थ का स्वरूप, यथार्थवाद का उद्भव एवं विकास, यथार्थ एवं यथार्थवाद की अवधारणा आदि पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई है। यथार्थ एवं यथार्थवाद को लेकर भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाओं को समझने का प्रयास किया गया है। यथार्थवाद तथा यथार्थ बोध के रूपों को जानने समझने का प्रयास किया गया है।

**द्वितीय अध्याय :** 'ममता कालिया : व्यक्ति और कथाकार' से संबंधित है इसके अंतर्गत ममता कालिया के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत चर्चा की गई है- ममता कालिया का जन्म, शिक्षा, हिंदी उपन्यास और ममता कालिया का परिवार एवं परिवेश तथा ममता कालिया का संक्षिप्त साहित्यिक परिचय, पुरस्कार, सम्मान आदि के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है।

**तृतीय अध्याय :** 'ममता कालिया के कथा-साहित्य में स्त्री जीवन का यथार्थ' पर विस्तृत चर्चा की गई है। इसमें स्त्री शोषण का यथार्थ, उपेक्षित स्त्री का यथार्थ, स्त्री अधिकारों का हनन, ममता कालिया के कथा साहित्य में प्रगतिशील चेतना से युक्त नारी का यथार्थ, आर्थिक दुर्बलता व स्त्री, सामाजिक जीवन व स्त्री आदि विषय पर विस्तृत चर्चा की गई है।

**चतुर्थ अध्याय :** 'ममता कालिया के कथा-साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक यथार्थ' पर चर्चा की गई है इसमें सामाजिक संदर्भ, लैंगिक भेदभाव तथा मानवीय मूल्यों का हनन, कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा, पारिवारिक विघटन एवं टूटन, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, भारतीय संस्कृति व वर्तमान परिवेश अस्तित्व संघर्ष व स्त्री आदि महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई है।

**पंचम अध्याय :** 'ममता कालिया के कथा-साहित्य में राजनीतिक एवं आर्थिक यथार्थ' के अन्तर्गत स्वार्थ लोलुप राजनीति का यथार्थ, गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव, सत्याग्रह आंदोलन का यथार्थ एवं युद्ध की त्रासदी, आर्थिक विषमता का यथार्थ, मध्यमवर्गीय परिवारों की आर्थिक स्थिति तथा अंतर्द्वंद्व व तनाव आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई है।

**उपसंहार :** अंतिम पड़ाव के रूप में उपसंहार है जिसमें शोध प्रबंध का सार एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।



## शोध-सार

सृष्टि के आरंभ से ही मानव अपने चारों ओर की दृश्य जगत की वस्तुओं को देखकर उनमें विश्वास करता रहा है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है संसार के सभी जीवों में से केवल मानव ही है जिसे परमपिता परमेश्वर द्वारा बोद्धिक संपदा प्रदान की गई है जिसके द्वारा वह हरसंभव कार्य कर पाता है या करने की क्षमता रखता है। इसी बुद्धि का सहारा लेकर मनुष्य उन्नति के मार्ग पर निरन्तर बढ़ता जाता है। आज के इस वैज्ञानिक युग में अपने आपको यथार्थ निहित होता है। साहित्यकार समाज में होने वाली प्रत्येक घटना को देखकर बिना किसी पक्षपात के अपनी रचनाओं में ज्यों का त्यों चित्रित करता है। इसलिए साहित्य को युग विशेष का दर्पण भी माना गया है, क्योंकि युग अथवा समाज का वास्तविक चित्रण करना ही यथार्थ कहलाता है।

जिस प्रकार समय के साथ-साथ समाज बदलता है ठीक उसी प्रकार समाज का सत्य भी बदलता रहता है। परिस्थितियों के अनुसार यथार्थ भी निरन्तर बदलता रहता है। क्योंकि जो भूतकाल में था वह वर्तमानकाल में नहीं और जो वर्तमानकाल में है वह जरूरी नहीं कि भविष्य में भी ऐसा ही होगा। साहित्यकार तो आदर्श और कल्पना से नाता जोड़कर समाज की युगीन सच्चाई को बिना किसी लाग लपेट के अभिव्यक्त करने लगे तो वह यथार्थ चित्रित करता है। मानव जीवन से जुड़ा प्रत्येक पहलू यथार्थ की श्रेणी में आता है। कोई भी साहित्यकार कोरी कल्पना के आधार पर समाज का साक्षात् चित्र प्रस्तुत नहीं कर सकता साहित्य तभी सफल होता है जब साहित्यकार अपनी रचना में मानव जीवन का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता है। साहित्यकार सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि सभी तरह का विश्लेषण करके, सभी सत्य-असत्य घटनाओं को परखकर अपनी रचना में स्थान देता है जिससे साहित्य को एक गति मिलती है। अच्छा-बुरा, कोमल-कठोर, सुंदर-कुरूप आदि सभी स्थितियाँ मानव-जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं।

भारतीय संस्कृति और समाज में 'नारी' एक विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित रही है। भारतीय संस्कृति ने उसे माता के रूप में उपस्थित कर इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि वह मानव के काम भोग की सामग्री न होकर उसकी

वन्दनीया है। ममता कालिया के कथा-साहित्य का अध्ययन करके उनके उपन्यास कहानियों की समीक्षा करना। ममता जी के साहित्य में चित्रित, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक व दाम्पत्य जीवन के विभिन्न संदर्भों को समझना ही इसका उद्देश्य है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्त्री-विमर्श के तथा विविध पहलुओं का अध्ययन करते हुए नारी जीवन से जुड़े विविध पक्षों का अध्ययन करना ममता जी के साहित्य की अवधारणा का सूक्ष्म विश्लेषण करना मेरे शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य रहा है। ममता कालिया की कहानियों व उपन्यासों में व्याप्त समसामयिक समस्याओं के यथार्थ तथा नारी जीवन की बढ़ती समस्याओं के यथार्थ को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना। वर्तमान समाज में नारी शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़कर आत्मनिर्भर बनती जा रही है, जिससे वह समाज में अपना महत्व स्थापित करती हुई समाज की रूढ़ियों परंपराओं को बदलने का अथक प्रयास कर रही है।

ममता कालिया ने उपन्यास लेखन व साहित्य के माध्यम से आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक चेतना की मुखर अभिव्यक्ति की है। इनके अध्ययन से ममता कालिया के साहित्य के माध्यम से विभिन्न चुनौतियों को समझने व उन्हें दूर करने में मदद मिलेगी। इस शोध कार्य के द्वारा जनमानस को स्त्री जीवन के यथार्थ, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ व राजनीतिक-आर्थिक चुनौतियों को दूर करने का मार्ग भी प्रशस्त होगा। यह शोधकार्य न केवल हिन्दी विद्यार्थियों को लाभान्वित करेगा बल्कि आम जनमानस को भी नई जागरूकता प्रदान करेगा। साहित्य के सुषुप्त अवस्था में रहने वाली आमजनता को झकझोरता है और नवीन चेतना का संचार करता है। ममता जी का साहित्य आज भी प्रासंगिक बना हुआ है और भविष्य में भी एक दीपक की भांति प्रज्वलित होता हुआ समाज में साहित्य का प्रकाश फैलाता हुआ चिरस्मरणीय रहेगा। समाज की रूढ़िवादी सोच में परिवर्तन करने के लिए समानता व स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु अन्याय व शोषण का प्रतिकार करने समाज की जड़ मानसिकता व पुरुष की संकीर्ण मनोवृत्ति का सामना करने में सिद्ध होगा। यह प्रस्तावित विषय निश्चित रूप से समाज की समसामयिक समस्याओं तथा नारी जीवन के विविध पक्ष की पूर्ति करते हुए अपने महत्व को सिद्ध कर सके ऐसी मेरी कोशिश रहेगी। ममता जी का साहित्य, अध्ययन की विशिष्टता के कारण उनकी कहानियाँ, उपन्यास हमेशा अनवरत रूप से प्रासंगिक है और उनकी पठनीयता ज्यों की त्यों बनी रहेगी उनके साथ भी और उनके बाद भी

**‘ममता कालिया के कथा-साहित्य में यथार्थबोध : एक अध्ययन’** विषयक शोध कार्य इस शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है जिसका अध्यायवार विवरण निम्नानुसार है-

**प्रथम अध्याय : यथार्थ की अवधारणा एवं स्वरूप** - में यथार्थ के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की गई है। यथार्थ बोध, यथार्थ की अर्थ एवं परिभाषा, यथार्थ का स्वरूप, यथार्थवाद का उद्भव एवं विकास तथा यथार्थवाद एवं यथार्थवाद की अवधारणा के अंतर्गत सम्पूर्ण यथार्थ को समझने का प्रयास किया गया है। यथार्थ का आरंभ, यथार्थ के बारे में विभिन्न विद्वानों के मत आदि के द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है।

**द्वितीय अध्याय : ममता कालिया : व्यक्ति और कथाकार** - में ममता कालिया के व्यक्तित्व कृतित्व पर चर्चा की गई है। उपन्यास, कहानी उनका व्यक्ति परिचय को इसके अंतर्गत परिचित करवाया गया है। ममता कालिया के आंतरिक व बाह्य व्यक्तित्व की झांकी को प्रस्तुत किया गया है। उनके जीवन से जुड़े विभिन्न आयामों यथा जन्म, जन्मस्थान, पारिवारिक पृष्ठभूमि, कार्यक्षेत्र, दाम्पत्य जीवन, जीवन के संघर्ष विभिन्न पुरस्कार साहित्य लेखन कहानी, उपन्यास, कविता आदि उनके जीवन उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उनके लेखन के प्रेरणास्रोत, उनकी रुचियों जन्म व शिक्षा, हिन्दी कहानी और ममता कालिया, हिन्दी उपन्यास और ममता कालिया, ममता कालिया : परिवार व परिवेश का तथ्यात्मक परिचय करवाया गया है। इस अध्याय के अंत में ममता कालिया जी के संक्षिप्त साहित्यिक परिचय, पुरस्कार और सम्मान पर प्रकाश डाला गया है।

**तृतीय अध्याय : ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री-जीवन का यथार्थ** - में ममता कालिया के उपन्यासों कहानियों में स्त्री के प्रति दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है। नारी को देवी स्वरूपा माना जाता रहा है किंतु फिर भी समाज में नारी की स्थिति आज भी चिंतनीय बनी है। नारी आज भी घर के भीतर समाज आदि में उपेक्षित होती आ रही है। ममता जी के साहित्य में स्त्री के शोषण का यथार्थ चित्रित करने पर प्रकाश डाला गया है आज समाज में किस प्रकार स्त्री उपेक्षित होती आ रही है इन सबको दूर करने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय को अनेक उप-अध्यायों में विभक्त करके समझाने का प्रयास किया गया है जैसे स्त्री शोषण का यथार्थ, उपेक्षित स्त्री का यथार्थ, स्त्री के अधिकारों का हनन, प्रगतिशील चेतना से युक्त नारी

का यथार्थ, आर्थिक दुर्बलता व स्त्री सामाजिक जीवन व स्त्री इन विभिन्न बिन्दुओं के माध्यम से ममता जी के साहित्य को प्रस्तुत किया गया है। भारतीय समाज में किस प्रकार नारी अपने अधिकारों के हनन होने पर उन्हें प्राप्त करने के लिए संघर्षरत दिखाई पड़ती है। पुरुष सत्तात्मक समाज में आर्थिक रूप से दुर्बल नारी की स्थिति किस प्रकार दयनीय बनी रहती है। आर्थिक रूप से दुर्बल नारी पूर्ण रूप से पुरुष पर निर्भर रहती है जिससे उसमें आत्मविश्वास की कमी हो जाती है। इस प्रकार ममता जी के साहित्य में नारी की प्रत्येक स्थिति का यथार्थ चित्रण दिखाई पड़ता है।

**चतुर्थ अध्याय : ममता कालिया के कथा-साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक यथार्थ -** में सामाजिक सांस्कृतिक यथार्थ पर मंथन किया गया है। इस अध्याय में ममता कालिया के साहित्यिक यथार्थ के माध्यम से उनके साहित्य में सामाजिक व सांस्कृतिक विशिष्टताओं को व्याख्यायित किये जाने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय को विभिन्न उप-अध्यायों में विभाजित करके उसे समझाने का प्रयास किया गया है। सामाजिक संदर्भ के अंतर्गत मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए उसे समाज में अनेक समस्या का सामना करना पड़ता है और उन्हीं समस्याओं को साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से अपने साहित्य में प्रस्तुत करता है ममता कालिया ने भी समाज के विभिन्न पहलुओं को अपने साहित्य में उठाकर उन्हें दूर करने का प्रयास बखूबी किया है। लैंगिक भेदभाव आज भी बना हुआ है। कुछ घरों में लड़का-लड़की में आज भी वहीं असमानता व्याप्त है। मानवीय मूल्यों का हनन आज की गंभीर समस्या है जिस पर प्रकाश डाला गया है। समाज में व्याप्त कुरूपतियों जैसे दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या को भी ममता जी ने अपने साहित्य का विषय बनाकर उसका निराकरण करने का प्रयास अपनी तीव्र बुद्धि से किया है। पारिवारिक विघटन व टूटन, भारतीय संस्कृति पर बढ़ते पाश्चात्य संस्कृति के दुष्परिणामों पर चर्चा की गई है। समाज में भारतीय संस्कृति व वर्तमान परिवेश व अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती स्त्री का यथार्थ अंकन ममता जी के साहित्य में किया गया है।

**पंचम अध्याय : ममता कालिया के कथा-साहित्य में राजनीतिक एवं आर्थिक यथार्थ -** के अंतर्गत राजनीति व आर्थिक यथार्थ को व्याख्यायित किया गया है। इस अध्याय में ममता कालिया के कथा-साहित्य में व्याप्त राजनीतिक पहलुओं, राजनीतिक दृष्टिकोण विचारधारा पर प्रकाश डाला गया है साथ ही आर्थिक विषमता, आर्थिक रूप से

कमजोर परिवारों की मनः स्थिति का पर प्रकाश डाला गया है। ममता कालिया के साहित्य के यथार्थ दृष्टिकोण को समझते हुए सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध में यथार्थवादी दृष्टिकोण का निर्वहन किया गया है। राजनीतिक एवं आर्थिक यथार्थ के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय को विभिन्न उप-अध्यायों में विभाजित करके समझने का प्रयास किया गया है जैसे स्वार्थ-लोलुप राजनीति का यथार्थ अंकन, राजनीति पर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव, सत्याग्रह आंदोलन का यथार्थ एवं युद्ध की त्रासदी उसके नकारात्मक परिणाम, आर्थिक विषमता का यथार्थ व मध्यवर्गीय परिवारों की आर्थिक स्थिति का यथार्थ : मानव मन में राजनीतिक अंतर्द्वंद्व व तनाव की स्थिति आदि सभी बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है।

**उपसंहार** - ममता कालिया के कहानियों उपन्यासों का यथार्थ अंकन करते हुए इस शोध प्रबंध के अंतिम पड़ाव उपसंहार तक पहुँचते हुए आत्मसंतुष्टि की अनुभूति हुई। इसके अंतर्गत शोध प्रबन्ध के समस्त अध्यायों को समाहित किया गया है। ममता कालिया हिन्दी साहित्य की प्रशस्त लेखिका हैं जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज को जागृत करने का अतुलनीय प्रयास किया है। अपनी लेखनी की चमक से उन्होंने सम्पूर्ण साहित्य को चमत्कृत करके उसे चिरस्मरणीय बनाया है। ममता जी आज भी अपनी लेखनी की सशक्त हस्ताक्षर हैं जो साहित्य को अपनी लेखनी से समृद्ध कर रही हैं। जीवन के विभिन्न उतार-चढ़ाव को पछाड़ते हुए उन्होंने अपने-आपको हिन्दी साहित्य में स्थापित किया हुआ है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से मेरे द्वारा एक लघु प्रयास करके चिंतनपरक तथ्यपरक शोध उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से समाज में स्त्री जीवन के यथार्थ को चिन्हित करना है तथा नकारात्मक परिवर्तनों समस्याओं का निराकरण करके समाज में स्त्री के प्रति संकीर्ण सोच का अंत करना और उसे समाज के मूल से उखाड़ना है। समाज में भेदभाव समाप्त करके समान रूप से जीवन जीने के समाधान जो कि ममता जी के कथा साहित्य में विद्यमान हैं उन्हें उद्घाटित करने का यहाँ मैंने प्रयास किया है। यही मेरे शोध का सार्थक उद्देश्य है। जिन्हें मैंने सोदाहरण प्रस्तुत करने की कोशिश की है।



## अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमाण - पत्र	I
2.	घोषणा-पत्र	II
3.	साहित्यिक चोरी विरोधी प्रमाण-पत्र	III
4.	कृतज्ञता ज्ञापन	IV-VI
5.	प्राक्कथन	VII-IX
6.	शोध सार	X-XIV
7.	अनुक्रमणिका	XV-XVII
8.	संक्षिप्ताक्षर	XVIII
प्रथम अध्याय	<b>यथार्थ की अवधारणा एवं स्वरूप</b> 1.1 यथार्थ बोध 1.2 यथार्थ अर्थ एवं परिभाषा 1.3 यथार्थवाद का स्वरूप 1.4 यथार्थवाद का उद्भव एवं विकास 1.5 यथार्थ एवं यथार्थवाद की अवधारणा निष्कर्ष	1 - 26
द्वितीय अध्याय	<b>ममता कालिया : व्यक्ति और कथाकार (उपन्यास, कहानी और व्यक्ति परिचय)</b> 2.1 हिंदी उपन्यास और ममता कालिया 2.2 हिंदी कहानी और ममता कालिया यात्रा 2.3 ममता कालिया जन्म और शिक्षा 2.4 ममता कालिया परिवार और परिवेश 2.5 ममता कालिया संक्षिप्त साहित्यिक परिचय, पुरस्कार और सम्मान निष्कर्ष	27 - 75

तृतीय अध्याय	<b>ममता कालिया के कथा-साहित्य में स्त्री जीवन का यथार्थ</b> 3.1 स्त्री शोषण का यथार्थ 3.2 उपेक्षित स्त्री का यथार्थ 3.3 स्त्री अधिकारों का हनन 3.4 प्रगतिशील चेतना से युक्त नारी का यथार्थ 3.5 आर्थिक दुर्बलता व स्त्री 3.6 सामाजिक जीवन व स्त्री निष्कर्ष	<b>76 - 124</b>
चतुर्थ अध्याय	<b>ममता कालिया के कथा-साहित्य में सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ</b> 4.1 सामाजिक संदर्भ 4.2 लैंगिक भेदभाव तथा मानवीय मूल्यों का हनन 4.3 कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा 4.4 पारिवारिक विघटन व टूटन 4.5 पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव 4.6 भारतीय संस्कृति व वर्तमान परिवेश निष्कर्ष	<b>125 - 156</b>
पंचम अध्याय	<b>ममता कालिया के कथा-साहित्य में राजनीतिक एवं आर्थिक यथार्थ</b> 5.1 स्वार्थ-लोलुप राजनीति का यथार्थ 5.2 गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव 5.3 सत्याग्रह आंदोलन का यथार्थ एवं युद्ध की त्रासदी	<b>157 - 188</b>

	5.4 आर्थिक विषमता का यथार्थ 5.5 मध्यमवर्गीय परिवारों की आर्थिक स्थिति 5.6 अंतर्द्वंद्व व तनाव निष्कर्ष	
	उपसंहार	189 - 197
	सारांश	198 - 215
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	216 - 222
	शोध – पत्र प्रमाण-पत्र परिशिष्ट (साक्षात्कार) छायाचित्र	

## संक्षिप्ताक्षर

1.	रि.	-	रियल
2.	व्या.	-	व्यावहारिक
3.	चरमा.	-	चरमावस्था
4.	यथा.	-	यथार्थवाद
5.	अंध.	-	अंधविश्वासी
6.	निरी.	-	निरीक्षण
7.	सा.	-	साहित्यकार
8.	सका.	-	सकारात्मक
9.	परि.	-	परिवर्तनशील
10.	वास्त.	-	वास्तविकता
11.	प्रति.	-	प्रतिभाशाली
12.	मू.	-	मूल्यांकन
13.	प्रा.	-	प्राचीनकाल
14.	परं.	-	परंपरा
15.	दार्श.	-	दार्शनिक
16.	आलो.	-	आलोचनात्मक
17.	अनि.	-	अनिवार्य
18.	वस्तु.	-	वस्तुनिष्ठ
19.	प्रा.	-	प्राकृतिक
20.	दृष्टि.	-	दृष्टिकोण



# **प्रथम अध्याय**

**यथार्थ की अवधारणा एवं स्वरूप**

## प्रथम अध्याय

### यथार्थ की अवधारणा एवं स्वरूप

यथार्थ का अंग्रेजी शब्द 'रियल' से है जिसका अर्थ होता है सत्य, वास्तविक। 19वीं शताब्दी में एक आन्दोलन का रूप पाकर यह यथार्थवाद के रूप में लेखन जगत में अवतरित हुआ है। इससे पहले लेखन जगत में यथार्थ, सत्य घटना से हटकर काल्पनिकता, मनोरंजन को विषय बनाकर लेखन कार्य किया जाता था परंतु 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आते-आते लेखन में एक मोड़ आया और लेखक समाज की सच्ची घटना व आस-पास घटित होने वाली घटनाओं को आधार बनाकर लेखन करने लगा। यथार्थवाद की अवधारणा का उदय पश्चिम से ही माना जाता रहा है। जहाँ इसका विवेचन दो रूपों में किया जाता है (1) दर्शन की भूमि पर (2) दूसरा कला तथा साहित्य की भूमि पर। यथार्थवाद मानव जगत के यथार्थ अंकन पर बल देता हुआ विकसित हुआ है इस अध्याय में यथार्थवाद के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए इसे पाँच सह अध्यायों में विभक्त किया है। इन सह अध्यायों को विभक्त करते हुए यथार्थवाद की विवेचना प्रस्तुत की गई है। प्रमुख पाँच सह अध्याय- 1.1 यथार्थबोध, 1.2 यथार्थ अर्थ एवं परिभाषा, 1.3 यथार्थ का स्वरूप, 1.4 यथार्थवाद उद्भव एवं विकास, 1.5 यथार्थ एवं यथार्थवाद की अवधारणा इस प्रकार इनका विभाजन किया गया है।

यथार्थवाद पाठकों को ऐतिहासिक व वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है तथा सम्पूर्ण जीवन व जगत् को वास्तविक रूप में व्यक्त करता है। यथार्थवाद समाज में व्याप्त स्थितियों का गहराई के साथ अध्ययन करता है तथा उसे समाज के सम्मुख उद्घाटित करता है।

#### 1.1 यथार्थ बोध

यथार्थ का अर्थ- सत्य तथा बोध का अर्थ है- ज्ञान अर्थात् सत्य का ज्ञान ही यथार्थ बोध है। विषयानुसार यथार्थ बोध के अलग-अलग मायने होते हैं। सृष्टि के प्रारंभ से ही मानव अपने विचारों और अपने चारों ओर की वस्तुओं को देखकर उनमें विश्वास करता रहा है और यही यथार्थवादी विचारधारा की मूल पृष्ठभूमि है।

यथार्थवादी विचारधारा, सिद्धांतों तथा शब्दों की अपेक्षा वस्तुओं व पदार्थों को अधिक महत्व देती है यद्यपि यथार्थवाद कई शताब्दियों से चला आ रहा है लेकिन इसका वास्तविक विकास 16वीं और 17वीं शताब्दी में ही हुआ क्योंकि 16वीं शताब्दी के अंत तक प्राचीन और मध्यकालीन आदर्श महत्वहीन हो चुके थे जिससे आदर्शवाद में मनुष्य को व्यावहारिक और क्रियाशील बनाने की क्षमता नहीं थी। जब आदर्शवाद अपनी अंतिम अवस्था में था और यथार्थवाद का बीज पनप रहा था उसी समय कोपरनिकस, जान क्रेपलर, बेकन हारवेज, न्यूटन आदि वैज्ञानिकों की खोजों ने अपने प्रमाण प्रस्तुत कर मनुष्य के अंधविश्वासी दृष्टिकोण को समाप्त करने का प्रयास किया तथा समाज में वैज्ञानिक प्रभाव के कारण मानव मस्तिष्क पर अंधविश्वास के स्थान पर बुद्धि और विवेक का प्रभाव बढ़ा जिससे यथार्थवादी विचारधारा का मार्ग प्रशस्त हुआ।

जो संसार हमारे चारों ओर है, वह यथार्थ का संसार है, न कि छाया का संसार। यह विचारधारा स्वीकार करती है कि हमारे अनुभवों के गुण यथार्थ स्वतंत्र बाह्य संसार के तथ्य हैं। यह विचारधारा जगत को उसी रूप में स्वीकार करती है, जिस रूप में दिखाई देती है या जिस रूप में हम उसका अनुभव करते हैं। इस विचारधारा की मान्यता है कि केवल इंद्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान ही सत्य है। यथार्थवादी किसी वस्तु के अस्तित्व को तभी स्वीकार करेगा जब वह निरीक्षण तथा परीक्षण की कसौटी पर कसा जा सके।

मनुष्य संसार के अन्य जीवों से भिन्न है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जब से सृष्टि का आविर्भाव हुआ तब से लेकर आज तक संसार में सर्वश्रेष्ठ व उत्कृष्ट प्राणी का स्थान मनुष्य को ही मिला है क्योंकि सम्पूर्ण जीवों में, प्राणियों में बौद्धिक संपदा केवल मनुष्य को ही प्राप्त है जो उसे अन्य जीवों से सर्वश्रेष्ठ व अलग करती है, मनुष्य ने बुद्धि का सहारा लेकर उन्नति के मार्ग पर निरंतर बढ़ना सीखा है तथा आज के वैज्ञानिक तकनीकी युग में अपने आपको बुद्धि के बल पर स्थापित करने का प्रयास कर रहा है अर्थात् मनुष्य ने स्वयं को वर्तमान युग में स्थापित कर लिया है।

साहित्य जगत में मानव-जीवन का यथार्थ निहित है। साहित्यकार समाज में होने वाली घटनाओं को देखकर, बिना किसी पक्षपात के अपनी रचनाओं में उसका ज्यों का त्यों चित्रण न करके, उन घटनाओं में स्वयं की कल्पना के माध्यम से तथा

समाज कल्याण को ध्यान में रखकर पाठकों के समक्ष सकारात्मक पक्ष को उजागर करने का प्रयत्न करता है तथा उन घटनाओं से समाज पर पड़ने वाले अच्छे बुरे प्रभाव का ताना-बाना बुनकर एक रचना का सृजन करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। इसलिए साहित्य को युग विशेष का दर्पण भी माना जाता है क्योंकि युग व समाज का वास्तविक चित्रण करना ही यथार्थ कहलाता है।

संसार के प्राचीन साहित्य और कला रूपों को देखने से मालूम होता है कि सूचनाकार और कलाकार भी यथार्थ से विमुख नहीं हैं। साहित्य हमेशा से यथार्थ का माध्यम रहा है। साहित्य और कला में यथार्थ का चित्रण हमेशा हुआ है। प्रत्येक भाषा के साहित्य में प्रारंभिक काल से ही यथार्थ का चित्रण होता रहा है तथा यथार्थ साहित्य में मानव जगत की सच्ची घटनाओं को आधार बनाकर साहित्य सृजन किया जाता है इसलिए साहित्य वही अच्छा माना जिसमें जीवन का यथार्थ निहित होता है।

परिवर्तन ही जीवन का विकास है। जिस प्रकार समय के साथ-साथ समाज बदलता रहता है, ठीक उसी प्रकार समाज का सत्य भी बदलता है। परिस्थितियों के अनुसार यथार्थ भी निरंतर बदलता रहता है क्योंकि जो भूतकाल में था वह वर्तमानकाल में नहीं और जो वर्तमानकाल में है आवश्यक नहीं कि वही हमें भविष्य में भी होगा क्योंकि समय परिवर्तनशील होता है और यदि मनुष्य समय के साथ नहीं बदलता तो वह अपने जीवन में पिछड़ जाता है इसी तरह साहित्यकार भी समाज के बदलते हुए स्वरूप का यथार्थबोध करते हुए उसे अपनी रचनाओं के केंद्र बिन्दु में रखकर साहित्य सृजन करता है। साहित्यकार समाज की परिस्थितियों तथा समाज युगीन सच्चाई को बिना किसी लाग-लपेट के अभिव्यक्त करता है तो समाज का यथार्थ चित्रण करता है।

## 1.2 यथार्थ अर्थ एवं परिभाषा

‘यथार्थ’ शब्द दो शब्दों के योग से बना है- यथा+अर्थ अर्थात् यथा- जैसा देखा वैसा चित्रण करना। अर्थात् यथा- जैसा देख वैसा चित्रण करना। यथार्थ का संबंध वास्तविकता से है जो वास्तव में विद्यमान है, वह यथार्थ है। मानव जीवन से जुड़ा प्रत्येक पहलू यथार्थ की श्रेणी में आता है। कोई भी साहित्यकार अपनी कोरी कल्पना के आधार पर समाज का साक्षात् चित्रण प्रस्तुत नहीं कर सकता। साहित्य भी तभी सफल होता है जब साहित्यकार अपनी रचना में मानव-जीवन के वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता है। समाज की वास्तविक घटनाओं का चित्रण करना तथा समाज के

सत्य को उद्घाटित करना कोई आसान कार्य नहीं होता है जो साहित्यकार इन घटनाओं को उद्घाटित करता है उसे समाज के अनेक विरोधों व संघर्षों का सामना करना पड़ता है। किसी भी घटना या दृश्य का ज्यों का त्यों चित्रण कर पाना टेढ़ी खीर है। एक प्रतिभाशाली साहित्यकार अपनी प्रतिभा से समाज का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। साहित्यकार का उद्देश्य मानव समाज में फैली बुराईयों को यथार्थ रूप में चित्रित करना नहीं बल्कि समाज के सकारात्मक नकारात्मक पक्ष को समान रूप से चित्रित करना साहित्यकार का उद्देश्य होता है। समाज में मानव भिन्न-भिन्न संस्कृति का दोहन करता है, क्योंकि भारतीय समाज में अलग-अलग पंथ निवास करते हैं तो उनकी संस्कृति, उनके त्योहार, रीति-रिवाज भिन्न होते हैं उन सबको यथार्थ में चित्रित करना ही साहित्यकार का उद्देश्य होता है। केवल समाज में फैली बुराईयों को ही चित्रित करना यथार्थ नहीं है, बल्कि मानव जीवन से जुड़ी प्रत्येक घटना यथार्थ है।

शिवकुमार मिश्र के अनुसार- “यथार्थ के अन्तर्गत वे सभी क्रियाएँ सम्मिलित हैं, जिनका आदमी अनुभव एवं परिज्ञान करने के सिलसिले में भागीदार है। वस्तुतः यथार्थ उन सभी विषयों को अपनी परिधि में लेता है, जो मानव तथा जीवन से जुड़े हैं। इसकी सार्थकता मनुष्य सम्पूर्ण व्यक्तित्व को साकार करने में निश्चित है। सामाजिक जीवन में ही नहीं, निजी जीवन में मनुष्य हर्ष-विवाद, सुख-दुःख, जय-पराजय आदि के लिए यथार्थवाद में पूर्ण अवकाश है।”<sup>1</sup> इस प्रकार कोमल-कठोर, अच्छा-बुरा, सुंदर-कुरूप आदि सभी स्थितियाँ मानव-जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं।

### यथार्थ की परिभाषाएँ

यथार्थ के संबंध में भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ इस प्रकार हैं।

डिक्शनरी ऑफ लिट्रेरी हर्मस में- “यथार्थ को सत्य चित्रण की पद्धति विशेष माना गया है। लिखने की एक ऐसी पद्धति जिसमें पारिवारिक जीवन की वास्तविकता का जीवन जैसा है, चित्रण करना ही यथार्थवाद है।”<sup>2</sup>

नंद दुलारे वाजपेयी के अनुसार- “यथार्थवाद वस्तुओं की पृथक् सत्ता का समर्थक है। वह समष्टि की अपेक्षा व्यष्टि की ओर अधिक उन्मुख रहता है। यथार्थवाद का संबंध प्रत्यक्ष वस्तु जगत से है।”<sup>3</sup>

मुंशी प्रेमचंद्र ने यथार्थ के विषय में कहा है- “यथार्थवाद का आशय यह नहीं है कि हम अपनी दृष्टि को अंधकार की ओर केंद्रित कर दें। अंधकार में मनुष्य को अंधकार के सिवाय सूझ ही क्या सकता है। साहित्य का संबंध सत्य और सुंदरता से है।”

मानक हिंदी कोश में यथार्थ - “जो अपने अर्थ आशय, उद्देश्य भाव आदि के अनुरूप ठीक हो। ठीक, वाजिब, उचित, जैसा होना चाहिए, ठीक वैसा।”<sup>4</sup>

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है- साहित्य अथवा कलागत यथार्थ सामाजिक परिवेश के अनुकूल चलते हुए स्वयं को समाज के अनुरूप परिवर्तित करता है- “कला के क्षेत्र में यथार्थ एक ऐसी मानसिक प्रवृत्ति है जो निरंतर अवस्था के अनुकूल परिवर्तित और रूपायित होती रहती है।”<sup>5</sup>

त्रिभुवन सिंह “यद्यपि यथार्थ को एक जीवन दृष्टि माना है तथापि इस सत्य से असहमत है कि साहित्य का यथार्थ, समाज के यथार्थ से भिन्न होता है।”<sup>6</sup>

द लिविंग वैबस्टर इन्साइक्लोपीडिया डिक्शनरी में “वास्तविकता के साथ तादात्म्य, वस्तुओं को जैसी है- प्रदर्शित करना या वर्णन करना, यथार्थ है।”<sup>7</sup>

दि न्यू कोलंबिया इन्साइक्लोपीडिया में “मध्यम एवं निम्नवर्ग के जीवन का वास्तविक वर्णन है, जहाँ सामाजिक तत्त्व के रूप में चरित्र का निर्माण होता है।”<sup>8</sup>

मुक्तिबोध के अनुसार “आज का यथार्थ कोई रहस्यवादी नहीं है, जिसको समझने के लिए इड़ा, सुषुम्ना, नाड़ियों को तीव्र करना जरूरी है। आज का यथार्थ जनता के जीवन का यथार्थ है। जो हम स्वयं रोजमर्रा जीते हैं।”<sup>9</sup>

इस प्रकार अनेक विद्वानों की परिभाषाओं के माध्यम से यथार्थ के अर्थ को समझा जा सकता है। यथार्थ का मुख्य रूप से संबंध बाह्य जगत व वास्तविक संसार में घटने वाली सच्ची घटनाओं से होता है। समाज में जो यथार्थ घटित होता है उसे अनदेखा करने के बावजूद भी वह समाज में घटनाएँ घटित होती रहती हैं यथार्थवाद से आशय है जो जगत में जैसा है वैसा ही स्वीकार करता है, जैसा हमें दिखाई देता है। यह एक ऐसा सिद्धांत है जो मानव समाज में भौतिक रूप से चेतन मन में स्वतंत्र रूप में अस्तित्व रखता है। जो हम प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करते हैं वही वास्तविक यथार्थ है।

इस प्रकार साहित्य, समाज और व्यक्ति के पारस्परिक संबंधों, उसके प्रत्येक आचार-विचारों, उसकी आर्थिक एवं नैतिक परिस्थितियों का मूल्यांकन तत्कालीन परिवेश के आधार पर वास्तविक रूपों में नहीं करता उसके इस रूप में भी

अभिव्यक्ति देता है कि पाठक का युग के सत्य एवं समाज में होने वाले कार्य व्यापार के औचित्य को सरलता से परख सके और इन मर्यादाओं का अनुसरण कर सके जिन पर चलकर एक आदर्श समाज की स्थापना की जा सके।

**यथार्थवाद के रूप-** दर्शन के रूप में हमें यथार्थवाद के अनेक रूप देखने में आते हैं जो निम्न हैं-

1. **सरल यथार्थवाद** - यथार्थवाद का सरल रूप प्राचीनकाल से चला आ रहा है, जो यह मानता है कि मानव अपनी समझ से सभी वस्तुओं में विश्वास रखता है। इसी विश्वास पर उसने अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं का निर्माण किया है।
2. **नवीन यथार्थवाद** - नवीन यथार्थवाद का विकास दार्शनिक विचारधारा के रूप में हुआ है जिसमें मानव मन ज्ञान तथा उस समाज में होने वाली नवीन घटनाओं को उजागर किया जाता है। इसका संबंध मनुष्य के बाह्य मन, समाज के बाहरी वातावरण के यथार्थ से है।
3. **आलोचनात्मक यथार्थवाद** - आलोचनात्मक यथार्थवाद नवीन यथार्थवाद की प्रतिक्रियास्वरूप अस्तित्व में आया है, इसके अनुसार समाज में घटने वाली घटनाओं के गुण दोषों को आलोचनात्मक रूप में प्रस्तुत करने से है। इसके अनुसार ज्ञाता का मन जब बाह्य विचारों को धारण करता है तब हमको बाह्य जगत का ज्ञान होता है।
4. **वैज्ञानिक यथार्थवाद** - वैज्ञानिक यथार्थवादी वस्तु का मूल्य विषयगत न मानकर वस्तुनिष्ठ मानते हैं व इस जगत को काल्पनिक न मानकर वास्तविक व यथार्थ रूप में स्वीकार करते हैं। इस प्रकार भारतीय दर्शन में भी यथार्थवादी भावना पाई जाती है।

यथार्थवाद के आधारभूत सिद्धांत - यथार्थ के अनेक ऐसे सिद्धान्त हैं जिनसे यथार्थवादी दृष्टिकोण दृष्टिगत होता है जिससे यथार्थवाद को समझने में सहायता मिलती है।

1. **भौतिक संसार ही सत्य है-** भौतिक संसार के पीछे कोई विचारों का जगत नहीं है, परलोक का कोई अस्तित्व नहीं है क्योंकि भौतिक जगत को हम इंद्रियों से नहीं समझ सकते।

2. ब्रह्माण्ड पदार्थजन्य है- यथार्थवाद संसार में पदार्थों, जिनकी स्वतंत्र सत्ता है, के योग से बना है। पदार्थों में परिवर्तन होने से ही संसार में परिवर्तन होता है।
3. इंद्रियों का संवेदन ही सत्य है- यथार्थवादी दृष्टिकोण में यथार्थवादी इंद्रियों को ज्ञान का प्रवेश द्वार मानते हैं और इनका मानना है कि मानव संवेदन प्राणी होता है जो बाह्य आकर्षण के प्रति अधिक आकर्षित होता है।
4. मनुष्य द्वारा संयोजित व्यवस्था ही राज्य है- मनुष्य सामाजिक प्राणी होता है और राज्य का निर्माण मनुष्यों ने ही अपना सुखपूर्वक जीवन जीने के लिए किया है, अतः प्रत्येक राज्य का कर्तव्य है कि वह अपने नागरिकों को सुखपूर्वक जीने के साधन जुटाए।
5. सुखमय जीवन के लिए व्यवहारिक जगत का ज्ञान आवश्यक है- मनुष्य इस संसार की वस्तुओं का जितना आर्थिक व्यावहारिक ज्ञान रखता है, वह उतना ही अधिक सुखी रहता है। प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग कर हम भौतिक सुख प्राप्त करते हैं और यह तभी संभव है जब हमें वस्तु जगत का ज्ञान हो।
6. संसार की नियमितता के अनुसार मनुष्य का विकास - यथार्थवादी वस्तुजगत में एक नियमितता के दर्शन करते हैं, और नियमितता को अनुभव तथा ज्ञान के लिए अनिवार्य मानते हैं। उनका कहना है कि जगत की सम्पूर्ण वस्तुओं में एक नियमित क्रम पाया जाता है।
7. भौतिक विज्ञान का ज्ञान एवं उसका प्रयोग आवश्यक है- यथार्थवादी इस जगत् के वास्तविक ज्ञान को प्राप्त करने के लिए निरीक्षण, परीक्षण एवं नियमीकरण करते हैं। इनके अनुसार ज्ञान का प्रयोग वस्तु को उपयोगी बनाने और उसका प्रयोग सुखभोग करने से है।

इस प्रकार यथार्थवाद के सिद्धांतों से यथार्थवादी अवधारणा को समझा जा सकता है। यथार्थवाद को यथार्थ की विशेषताओं के माध्यम से भी समझने की सहायता मिलती है।

### **यथार्थवाद की प्रमुख विशेषताएँ**

1. पारलौकिकता को अस्वीकार करना - यथार्थवाद इस प्रत्यक्ष जगत को ही वास्तविक मानता है यह विचारधारा वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बल देती है। यह आत्मा को न मानकर उसको भौतिक सत्ता के रूप में स्वीकार करती है।

2. प्रयोग पर बल दिया जाता है- यथार्थवादी विचारधारा प्रयोग पर बल देती है। जब तक कोई अनुभव निरीक्षण व प्रयोग की कसौटी पर सिद्ध न हो गया हो तब तक वह स्वीकार नहीं किया जा सकता।
3. वस्तु जगत में नियमितता को स्वीकार करना - वस्तु जगत में नियमितता के सिद्धांत को स्वीकार करने के कारण यथार्थवादियों का दृष्टिकोण यांत्रिक बन जाता है। इस कारण वे मन को भी यांत्रिक ढंग से क्रियाशील मानते हैं।
4. मानव के व्यावहारिक जीवन पर बल - यह मनुष्य को एक जैविक पदार्थ मानकर उसका लक्ष्य सुखी जीवन व्यतीत करना मानते हैं। मनुष्य यह लक्ष्य तभी प्राप्त कर सकता है जब वह भौतिक जगत की अधिकतम वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करके जीवन में उसका पूर्ण उपयोग करें।
5. उदारवादी शिक्षा पर बल - यथार्थवादी उदार शिक्षा पर बल देते हैं जो व्यक्ति को न्यायोचित ढंग से कुशलतापूर्वक तथा उदारता के साथ निजी एवं सार्वजनिक दोनों प्रकार के सभी कार्यों को हर परिस्थिति में पूर्ण करने के योग्य बनाती है।
6. प्राकृतिक तत्वों एवं सामाजिक संस्थाओं का महत्व - यथार्थवादी शिक्षा में विषयों की अपेक्षा प्राकृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं को महत्व प्रदान करते हैं। इसी से वे भाषाओं और साहित्य की अपेक्षा प्राकृतिक घटनाओं और सामाजिक संस्थाओं के अध्ययन को महत्व देते हैं।
7. व्यावसायिक शिक्षा पर बल - यथार्थवादी उदार शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा पर बल देते हैं।

**शिक्षा में यथार्थवाद** - शिक्षा में यथार्थवाद का जन्म पुस्तकीय और शाब्दिक ज्ञान के विरोध में हुआ है। शिक्षा में यथार्थवाद ने वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया है। इनके अनुसार शिक्षा को प्राप्त करके जीवन की समस्याओं का उचित समाधान निकालना तथा शिक्षा का वास्तविक जीवन से समन्वय स्थापित करना। शिक्षा में यथार्थवाद के निम्नलिखित तीन रूप मिलते हैं-

1. मानवतावादी यथार्थवाद - मानवतावादी यथार्थवाद शिक्षा को यथार्थवादी रूप में चाहते हैं। इनके अनुसार जीवन को सफल एवं समृद्ध बनाने के लिए रोमन एवं यूनानी साहित्य का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि उस साहित्य द्वारा मनुष्य का व्यक्तिगत सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास संभव है।

मुनरो के शब्दों में - “मानवतावादी यथार्थवादियों का लक्ष्य अपने जीवन के प्राकृतिक तथा सामाजिक वातावरण का पूर्ण अध्ययन पुरातन लोगों के जीवन की वृहत्तर परिस्थितियों के द्वारा करना था, लेकिन दोनों ही यूनानी और रोमन साहित्य के पूर्ण अध्ययन ही पूर्ण शिक्षा न थी। शारीरिक, नैतिक तथा सामाजिक विकास इसके निर्धारक अंग थे क्योंकि साहित्य का ज्ञान प्राप्त होने पर वह जीवन का एक अधिक सुरक्षित एवं व्यापक पथ-प्रदर्शक हो सकता है।”

मानवतावादी यथार्थवादियों में इरैसमस, रेबेल तथा मिल्टन प्रमुख हैं। इरैसमस ने ‘शब्द’ की अपेक्षा ‘वस्तु’ को अधिक महत्वपूर्ण बताया। मिल्टन पूर्ण व उदार शिक्षा का समर्थक था मिल्टन के शब्दों में “पूर्ण व उदार शिक्षा वही है, जो व्यक्ति को शांति तथा युद्धकाल के समस्त सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत कार्य को चतुरता, औचित्य तथा उदारता के साथ करने के योग्य बनाती है।” मिल्टन ने शारीरिक शिक्षा को महत्वपूर्ण माना और भ्रमण तथा यात्रा को शिक्षा का महत्वपूर्ण साधन बतलाया। रेबेल ने प्राचीन भाषा तथा पुस्तकीय शिक्षा के स्थान पर सामाजिक, धार्मिक, नैतिक तथा शारीरिक शिक्षा पर विशेष बल दिया है।

2. सामाजिक यथार्थवाद - यथार्थवाद का यह रूप प्राचीन परम्परावादी पुस्तकीय ज्ञान तथा विद्वता के विरोध में विकसित हुआ था। इनके अनुसार, शिक्षा का लक्ष्य मानव जीवन को सभ्य, सुंदर एवं उपयोगी बनाना है। पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर मनुष्यों एवं वस्तुओं के प्रत्यक्ष अध्ययन पर बल दिया जाये।

इस संबंध में रॉस ने लिखा है- “सामाजिक यथार्थवादी पुस्तकीय शिक्षा को व्यर्थ मानते थे और मनुष्यों एवं वस्तुओं के सीधे अध्ययन पर बल देते थे यद्यपि वे अपने मस्तिष्क में उच्च वर्ग का ही ध्यान रखते हैं। इसी कारण वह लम्बी यात्रा करने के लिए कहते हैं जिससे जीवन के विविध पहलुओं का वास्तविक अनुभव हो जाये।” इस विचारधारा का उद्देश्य व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना।

सामाजिक यथार्थवादियों में लार्ड मान्टेन तथा जॉन लॉक प्रमुख हैं। लॉक ने पाठ्यक्रम में उन्हीं विषयों को प्रधानता दी जो वैयक्तिक और सामाजिक दृष्टि से उपयोगी और व्यावहारिक समझे जाते हैं। मोन्टेन ने शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में बुद्धि और 'विवेक' पैदा करना है, जिससे वह अपने जीवन को भली प्रकार व्यतीत कर सके।

3. ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद - ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद का प्रादुर्भाव 17वीं शताब्दी में हुआ। ज्ञानेन्द्रियाँ प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार एवं द्वार हैं। इसलिए बालकों को इंद्रियों द्वारा वस्तुओं का ज्ञान कराया जाना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में मानवतावादी यथार्थवाद तथा सामाजिक यथार्थवाद दोनों के मिश्रण तथा विज्ञान के परिणामस्वरूप ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद विकसित हुआ।

ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद से शिक्षा संबंधी विचारों और धारणाओं में परिवर्तन हुआ। इससे व्यावहारिक और उपयोगी शिक्षा को बल मिला। साहित्य और भाषाओं के स्थान पर सामाजिक एवं भौतिक विज्ञानों के अध्ययन को महत्व प्राप्त हुआ तथा यह विचारधारा शिक्षा-मनोविज्ञान के विकास में सहायक हुई।

इस विचारधारा के समर्थकों में मूलकास्टर, बेकन, राटके तथा कमेनियस मुख्य हैं। मूलकास्टर ने बालक को शिक्षा का केन्द्र माना और उसकी बुद्धि विवेक तथा स्मरण शक्ति के विकास पर बल दिया। बेकन ने वास्तविक शिक्षा वहीं मानी जो व्यावहारिक लाभप्रद और फलप्रद हो।

शिक्षा में यथार्थवाद वस्तुवादी विचारधारा है तो भौतिक विज्ञान और तकनीकी के विकास की दार्शनिक परिणति है। शिक्षा में यथार्थवादी दृष्टिकोण ने शिक्षा के सम्पूर्ण स्वरूप को प्रभावित किया है। आज शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि मूल्यांकन, अनुशासन, शिक्षा तथा शिक्षार्थी की जो स्थिति है, उसके निर्माण में यथार्थवादी विचारधारा का महत्वपूर्ण योगदान है।

**यथार्थवाद और शिक्षा के उद्देश्य** - यथार्थवाद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक को शिक्षा का पूर्ण ज्ञान प्रदान करना होता है। शिक्षा के उद्देश्य शैक्षिक मूल्यों पर आधारित है। यथार्थवादी शैक्षिक मूल्यों के विषय में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाता है अतः इनके अनुसार शिक्षा के निम्न उद्देश्य हैं-

- (1) शारीरिक विकास एवं इंद्रिय प्रशिक्षण - यथार्थवादियों के अनुसार मनुष्य का मन भी शरीर का अंग है, अतः उसके शारीरिक इंद्रिय विकास पर शिक्षा को ध्यान देना चाहिए।
- (2) मानसिक शक्तियों का विकास - शिक्षा के द्वारा बच्चे की मानसिक शक्तियों-स्मरण विवेक और निर्णय आदि का विकास करना चाहिए तभी इंद्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान सुरक्षित रहता है।
- (3) प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण का ज्ञान - शिक्षा का उद्देश्य है बच्चे को समाज व प्राकृतिक वातावरण का ज्ञान प्रदान करना तथा सामाजिक व प्राकृतिक वातावरण में समायोजन करना सिखाना जिससे बालक समाज में प्रचलित रीति-रिवाज, संस्कृति व सामाजिक संगठनों के अनुकूल स्वयं को ढाल सके।
- (4) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास - यथार्थवादी विचारक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को महत्व प्रदान करते हुए प्राचीन रूढ़ियों और अंधविश्वासों का खण्डन करते हैं तथा उनका मानना है कि बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा वैज्ञानिक विधियों के माध्यम से ही उनके सामाजिक व प्राकृतिक ज्ञान को सुदृढ़ किया जा सकता है।
- (5) व्यावसायिक क्षमता का विकास करना - यथार्थवादी दृष्टिकोण के अनुसार बालकों को समाज में ऐसी शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो तथा उनकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करे। शिक्षा जो व्यक्ति में ऐसी क्षमता उत्पन्न करे कि वह वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करके जीवकोपार्जन कर सके। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे व्यक्ति का यथार्थवादी दृष्टिकोण विकसित हो सके।
- (6) बालक को सुखी जीवन के लिए तैयार करना - यथार्थवादी विचारकों का मानना है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे व्यक्ति को आत्मिक सुख की प्राप्ति हो। शिक्षा के माध्यम से बालक को सुखी जीवन जीने के लिए तैयार किया जा सकता है। क्योंकि जीवन जीने के लिए तैयार किया जा सकता है। क्योंकि संसार एक पदार्थ है जीवन एक प्रक्रिया, जिसे जीने के लिए मनुष्य को सांसारिक ज्ञान प्राप्त होता है तभी वह अपने जीवन को सुखी बना सकता है।

किसी विषय का स्वरूप और उसकी उपयोगिता क्या है यह यथार्थवाद तथा शिक्षण विधि से ही जाना जा सकता है। किसी विषय की व्यापकता, उसकी उपयोगिता का अध्ययन अध्यापक के विश्लेषण विवेचन और व्याख्या पद्धति से ही छात्रों के सामने उसका स्पष्टीकरण किया जाता है।

शिक्षण विधि के संबंध में यथार्थवाद की अपनी मौलिकताएँ इस प्रकार हैं-

1. शाब्दिक तथा आत्मकेन्द्रित भावना का विरोध किया जाए तथा प्रत्यक्ष प्रमाण पर अधिक बल दिया जाए।
2. वैज्ञानिक व वस्तुनिष्ठ विधि के प्रयोग पर बल
3. निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग आदि पर बल
4. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए
5. आगमन और निगमन विधियों पर बल दिया जाए
6. यात्रा, वस्तुओं, दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग करना आदि।

### **शिक्षक और यथार्थवाद**

शिक्षक समाज का निर्माता होता है जिसके हाथों अनेक बालकों का भविष्य निर्मित होता है इसलिए शिक्षक का दृष्टिकोण यथार्थवादी होना चाहिए जिससे वह समाज तथा अपने आस-पास की वस्तुओं को यथार्थवादी दृष्टिकोण के माध्यम से सत्य को उद्घाटित करता है। यथार्थवादी विचारक शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं न कि आदर्शवाद की तरह। शिक्षक को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि उसे किसको, क्या, कितना, किस समय तक और कैसे पढ़ाना है। अतः शिक्षकों को प्रशिक्षित होना चाहिए यथार्थवाद के अनुसार शिक्षक की परिकल्पना की निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए-

1. शिक्षक का विज्ञान में अटूट विश्वास होता है।
2. कल्पना की अपेक्षा वस्तुनिष्ठ और उपयोगी ज्ञान को वह जानने वाला होना चाहिए।
3. वैज्ञानिक विधि द्वारा अन्वेषित ज्ञान पर ही विश्वास करता हो।

4. यथार्थवादी शिक्षक अपने छात्र की आवश्यकताओं, रुचियों और इच्छाओं से परिचित होता है और उसकी परिपुष्टि वैज्ञानिक ढंग से करता है।
5. यथार्थवादी शिक्षक बाल मनोविज्ञान और किशोर मनोविज्ञान से परिचित होता है। इसलिए वह पाठ को सरस व आकर्षित विधि से पढ़ाता है।

### **छात्र और यथार्थवाद**

सम्पूर्ण शिक्षा इस प्रकार व्यवस्थित होनी चाहिए कि वह बालक के व्यक्तित्व में सहायक हो। बालक ही शिक्षा का मुख्य पात्र होता है इसलिए यथार्थवादी दार्शनिक मुल्का स्टार के शब्दों में शिक्षा का उद्देश्य यह है कि “बालक की वास्तविक प्रवृत्ति को उसकी पूर्णता तक पहुँचा दिया जाये।”

यथार्थवाद के अनुसार बालक की कुछ विशेषताएँ होती हैं जो निम्न हैं-

1. छात्र विवेक से ही सीखकर यथार्थ के निकट पहुँचने की चेष्टा करता है। बुद्धि ही सीखने में उसकी सहायता करती है।
2. छात्र लक्ष्यों व सिद्धान्तों के आधार पर वह आगे बढ़ता है, इसमें वह कोरी कल्पना का सहारा नहीं लेता है।
3. छात्र वास्तविक ज्ञान और उपयोगी व्यवहारों पर अधिक विश्वास करता है।
4. छात्र अपनी बुद्धि के विकास के लिए अधिक से अधिक स्वतंत्रता चाहता है।
5. यथार्थवाद के अनुसार छात्र देवता नहीं है, वह मात्र मनुष्य है, सामाजिक प्राणी है। अतः सामाजिक सामंजस्य उसके ज्ञान और व्यवहार का विशेष गुण होता है।

### **विद्यालय और यथार्थवाद**

यथार्थवादियों ने शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र या साधन माता-पिता की अपेक्षा विद्यालय को माना है। यथार्थवादी दार्शनिक कॉमेनियस के अनुसार “विद्यालय मनुष्यों के कूट निर्माण का एक सच्चा स्थान है।” यथार्थवादी दार्शनिकों के अनुसार विद्यालय को समाज का लघु रूप माना जाता है जो समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है।

ज्ञान असीम है लेकिन मनुष्य की सीखने की सीमाएँ सीमित होती हैं। सीखना दो रूपों में होता है- (1) औपचारिक तथा दूसरा अनौपचारिक। अनौपचारिक रूप से व्यक्ति कहीं भी, कभी भी किसी भी रूप में ज्ञान सीख सकता है किन्तु औपचारिक रूप में व्यक्ति किसी संस्थान विशेष में ही अपने ज्ञान की वृद्धि कर पाता है जैसे 'विद्यालय; औपचारिक शिक्षा का केन्द्र है। इसलिए हमें विद्यालय की आवश्यकता होती है जहाँ प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा बच्चे अपनी रुचि, रुझान और योग्यतानुसार विकास करते हैं। बालकों की आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार के विद्यालय स्थापित करने चाहिए। विद्यालयों को कृत्रिमता से दूर रखना चाहिए। अतः यथार्थवादी सह-शिक्षा वाले विद्यालयों को महत्व देते हैं।

**यथार्थवाद और अनुशासन** - यथार्थवादी अनुशासन के पक्षधर होते हैं जब तक शिक्षा में अनुशासन नहीं होगा समाज उन्नति के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो पायेगा। अनुशासन प्रेम, सहानुभूति पर आधारित होता है इसलिए अनुशासन में जरूरी है-

- ♦ डंके के जोर से अनुशासन न रखा जाए।
- ♦ सामाजिक नियमों के पालन में भी अनुशासन हो।
- ♦ प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन रखा जाए।
- ♦ बच्चों को ऐसा भौतिक पर्यावरण दिया जाए कि वह स्वयं अनुशासन में रुचि लेने लगे।

निष्कर्ष यह है कि यथार्थवादी शिक्षा के एक विश्वव्यापी संगठन का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार बालक का वर्तमान जीवन शिक्षा का केन्द्र बिन्दु होना चाहिए। मनुष्य कर्म करने के लिए स्वतंत्र है, उसे ईश्वर पर नहीं अपितु अपने प्रयास या कर्म पर निर्भर रहना चाहिए।

### 1.3 यथार्थवाद का स्वरूप

साहित्य में यथार्थवादी परम्परा मूलतः उन्नीसवीं शताब्दी की देन है। इसी काल में साहित्य चिंतकों एवं रचनाकारों ने इसे प्रौढ़ता प्रदान की। इस दृष्टिकोण ने जीवन जगत को देखने-परखने की उनकी परंपरागत दृष्टि में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। उन्नीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिकों ने जीवन और जगत से संबंध परम्परागत आध्यात्मिक धारणाओं को अमान्य घोषित किया तथा उन्होंने ठोस तथ्यों पर

आधारित ऐसी व्याख्याएँ तथा विश्लेषण प्रस्तुत किये, जिससे लोगों का चिंतन विशेष रूप से प्रभावित हुआ। जीवन और जगत संबंधी विचारधारा में इस परिवर्तन का श्रेय उन्नीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध चिंतक डार्विन को जाता है। डार्विन ने विकासवाद के सिद्धांत से यह सिद्ध किया कि मनुष्य पशु जगत का विकसित रूप है। डार्विन के इस सिद्धांत ने पुरानी मान्यताओं विशेषतया आदर्शवाद एवं आध्यात्मिकता की धारणा को जड़ से हिला दिया है। इसी कारण मानव बाध्य होकर मनुष्य जीवन और उसकी आकृति तथा उसके विकास क्रम को नये संदर्भों में देखने लगा है। मनुष्य की अलौकिक व स्वप्निल सौंदर्य की, खोजी आँखों को मानव तथा उसके जीवन की वास्तविक छाया को भौतिक व लौकिक जीवन संदर्भों में देखने के लिए विवश होना पड़ा।

इस काल के बहुत से विचारकों ने यथार्थ संबंधी दृष्टिकोणों का प्रतिपादन किया। जिनमें कार्ल मार्क्स, मैथ्यू अर्नाल्ड तथा फ्रांस के प्रसिद्ध विचारक सेंटव्यू का नाम आता है। इन साहित्यकारों ने साहित्य एवं कला की जो व्याख्या की है, वह मानव कल्याण तथा लोकमंगल की कामना पर आधारित है। प्रसिद्ध विचारक 'सेंटव्यू' जिन्होंने एक जीवन शास्त्री का दृष्टिकोण अपनाते हुए कहा था “जैसा वृक्ष होगा वैसा ही उसका फल होगा।” सेंटव्यू का यह मत साहित्यकारों के लिए एक चुनौती था। डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत ने मानव को आध्यात्मिकता की सोच को छोड़कर भौतिक धरातल पर प्रतिस्थापित किया था।

अतः सेंटव्यू के मत के आधार पर साहित्यकार ने अपनी सोच को परिवर्तित कर समाजोपयोगी बनाने का प्रयत्न किया। इनके अनुसार लेखकों एवं दार्शनिकों को अपनी सोच को बदलना पड़ा।

कहना न होगा कि आदर्शवादी विचारों में से मुक्त लेखक आदर्श की स्थापना का प्रयत्न करेगा वैसा यथार्थवादी यथार्थ का। समाज में डार्विन के सिद्धांत की सिद्धता और सेंटव्यू के इस चुनौतिपूर्ण दृष्टिकोण ने साहित्य चिंतकों को समाजोपयोगी लेखन के लिए विवश किया।

इस प्रकार के दृष्टिकोण से भाववादी सोच पर करारी चोट लगी। इससे साहित्य लेखन में यथार्थ संबंधी धारणा को विशेष बल मिला जो उत्तरोत्तर विकसित होती चली गई। आधुनिक समाज में यथार्थवाद के बदलते परिप्रेक्ष्य के कारण इसके स्वरूप में परिवर्तन होता जा रहा है। यथार्थवाद यथार्थ के विभिन्न पहलुओं से जुड़कर उनका

उद्घाटन करता है वह मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों को समझकर लेखन में बालकों के मनोवैज्ञानिक स्वरूप को प्रस्तुत करता है तो कहीं ऐतिहासिक पहलू पर विचार करता हुआ समाज के विभिन्न ऐतिहासिक यथार्थवाद को प्रस्तुत करता है, कहीं, सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति को समझता हुआ समाज के सामाजिक रीति-रिवाज, सभ्यता संस्कृति का यथार्थ उद्घाटित करता है। यथार्थ सत्य की अनुभूति से प्रेरित होता है और यदि रचनाकार पाठकों को सत्य से परिचय कराकर समाज की ज्वलंत व वास्तविक घटनाओं से उन्हें रूबरू करवाता है तो इससे पाठकों के मन व मस्तिष्क में यथार्थ का सच्चा चित्र उभरता है, इससे पाठक का ध्यान अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं, समस्याओं की ओर केंद्रित होगा व समाज में होने वाली अमानवीय घटनाओं को रोका जा सकता है। मानवीय मन में झंकृत ये समस्याएँ यथार्थ को ग्रहण करके युग जीवन को परिवर्तित करने में सफल भूमिकाएँ निभाती है मानव इन समस्याओं, स्थितियों, घटनाओं को चीरता हुआ सदैव हर्ष विषाद, की मुद्रा बनाता हुआ आगे बढ़ता जाता है। इस संबंध में बाबू गुलाब राय का कहना है कि- “यथार्थ वह है जो सामने घटित होता है, उसे सुख-दुःख, पाप-पुण्य, सद्भाव-दुर्भाव, क्रोध-शोक, तद्रुपता-विद्रुपता, अच्छाई-बुराई, सत्य-असत्य आदि पर वैचारिक आवरण डाले बिना प्रस्तुत किया जाता है। यथार्थ जीवन और समाज का कटु चित्रण है।”<sup>10</sup> इस प्रकार गुलाब राय जी ने यथार्थ को बिना प्रपंच किए प्रस्तुत होने वाला चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें मानव समाज के सत्यों का उद्घाटन होता है लेकिन यदि यथार्थ को यथावत प्रस्तुत करना भी यांत्रिकता को सूचित करता है। समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने वाली घटनाओं को प्रस्तुत करने पर समाज उन्नति की ओर अग्रसर होगा और यदि समाज में केवल नकारात्मक पक्ष को ही उद्घाटित किया जाएगा तो वह समाज पर गहरा असर डालेगी जिससे अधिकतर मानव समाज अवनति की ओर रुख करेगा।

#### 1.4 यथार्थवाद का उद्भव एवं विकास

साहित्य मानव जीवन के विकास में, विघटन में बाह्य एवं आंतरिक परिवेश में जो जैसा है, वैसा ही वर्णन करना यथार्थवाद कहलाता है। इसमें हमारी विशेषताओं एवं क्रूरताओं की अपेक्षा नहीं की जा सकती। यथार्थवाद आदर्शवाद से विपरीत है जिसमें केवल आदर्श की स्थापना मुख्य होती है, परंतु यथार्थवाद में जगत का सत्य चित्रण होता है। यथार्थवाद समाज में व्यक्ति के संघर्षों, उसकी सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थितियों का सत्य चित्रण ही यथार्थवाद है।

पश्चिमी भारत में यथार्थ से संबंधित विवेचन दो रूपों में मिलता है। एक ओर जहाँ वर्कले दार्शनिक भूमि के आधार पर यथार्थ का अस्तित्व मानसिक स्तर मानता है, वहीं दूसरी ओर यथार्थवादी दार्शनिकों का मत इसके विपरीत यह प्रमाणित करने का रहा है कि बाह्य जगत व बाहरी पदार्थों का अस्तित्व मन से स्वतंत्र अपनी वस्तुगत स्थिति में यथार्थ है। मूलतः यथार्थवादी रचनाकार और दार्शनिक, दोनों ही ये मानते हैं कि बाहरी विश्व का अस्तित्व मन से अलग एक ठोस वस्तुगत अस्तित्व पर टिका है। साहित्य का संबंध भी इसी बाह्य जगत और उसके विभिन्न रूपों से है। साहित्य एवं कला के क्षेत्र में यथार्थ संबंधी अवधारणा के स्पष्टीकरण के लिए 'अर्नेस्ट फिशर' का आग्रह ध्यान में रखना आवश्यक है। उनका अभिमत है कि दुर्भाग्यवश कला के क्षेत्र में यथार्थ संबंधी धारणा बहुत उदार और अस्पष्ट है। जहाँ कभी यथार्थ एक दृष्टिकोण बन जाता है और कभी-कभी शैली या पद्धति।

फिशर का अभिमत है कि यदि हम यथार्थ को एक पद्धति के रूप में मान्यता दे तो पायेंगे कि अमूर्त कला या उस तरह की कुछ वस्तुओं को छोड़कर वास्तव में सारी कला यथार्थ है। अतः फिशर के अनुरूप यथार्थ को चित्रण की एक विशिष्ट पद्धति के रूप में स्वीकारना अधिक व्यावहारिक तथा उपयोगी सिद्ध होगा किंतु यथार्थ संबंधी फिशर के दृष्टिकोण को समग्रतः स्वीकार करना इसलिए उचित नहीं है कि उन्होंने कला के तहत यथार्थ बोध की रूपरेखा को एकदम सामान्य बना दिया है। कला के अंतर्गत स्थान पाने वाला यथार्थ बाहरी यथार्थ से विशिष्ट होकर भी अंततः उसी का अविच्छिन्न भाग है। जहाँ तक यथार्थ को केवल एक पद्धति मानने की बात है तो प्रायः सभी विचारकों ने इसे दोनों रूपों में स्वीकार किया है। मूलतः यथार्थ कोई रचना पद्धति न होकर रचना दृष्टि ही है। यथार्थ की अभिव्यक्ति विभिन्न पद्धतियों एवं शिल्पों के माध्यम से रचनाओं में हो सकती है, लेकिन इसकी पहचान रचना दृष्टि से ही सम्यक है। साहित्य पारिभाषिक शब्दों के अपने कोश में शिटले यथार्थवादी धारणा को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- “यथार्थ चित्रण को अधिक समर्थपूर्ण तथा प्रभावपूर्ण बनाने हेतु वस्तुस्थिति के प्रत्येक पक्ष को वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास है।”<sup>11</sup>

कला दर्शन और साहित्य में यथार्थ की परंपरा एक लंबे समय से अनवरत गतिशील रही है जो समय-समय पर विद्वान विचारकों के मतों से परिवर्तित होती हुई पुष्ट बनती गई है। ज्यों-ज्यों मानव समाज व सभ्यता का विकास होता चला गया

वैसे-वैसे यथार्थ का स्पष्ट चित्र लेखकों के विचारों में दृष्टिगत होने लगा तथा यथार्थ के प्रति स्वाभाविक अभिरूचि कलात्मक तथा परिष्कृत रूप में सामने आने लगी जैसे शेक्सपीयर, रेबेलेज व सरवेंतीज की रचनाओं में इनका यथार्थ दिखाई देने लगा। हिंदी साहित्य में यथार्थवादी चिंतन का उदय भारतेन्दु के आगमन के साथ ही दिखाई देने लगा। भारतेन्दु युग में समाज 1857 की क्रांति के असफल होने के कारण गहरे विषाद व अवसाद के गहवर में डूबा हुआ था। इस समय भारतेन्दु युग के साहित्य व साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करते हुए तत्कालीन समाज के यथार्थ को उद्घाटित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस समय समाज धार्मिक आडम्बरों, रीति-रिवाजों के अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ था जहाँ यथार्थ के दरवाजे सर्वथा के लिए बंद थे किंतु इस समय एक वर्ग ऐसा उभरा जिसने भारतीय समाज की सभ्यता संस्कृति का हनन किए बगैर, समाज को ज्ञान-विज्ञान की तरफ प्रेरित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार पाश्चात्य विद्वानों के साथ-साथ हिंदी साहित्य में भी समाज के वास्तविक सत्य को चित्रित करने का प्रयास किया। रचनाओं के माध्यम से छोटी से छोटी वास्तविक घटना की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करने में समाज में नवजागरण की स्थिति उत्पन्न हो गई। भारतेन्दु ने अपने काव्य के माध्यम से अंग्रेजों को गहरा आघात पहुँचाया और भारतीयों को जाग्रत करते हुए कहा कि-

“अंग्रेज-राज सुख साज सजे सब भारी;

पै धन विदेश चलि जात है, यहै अति खवारी।।”

### 1.5 यथार्थ एवं यथार्थवाद की अवधारणा

यथार्थवाद समाज की प्रमुख एवं ज्वलंत समस्याओं को ही अपने चित्रण के लिए चुनता है और समकालीन मानवीय घुटन, पीड़ाओं आदि के यथार्थ चित्रण में ही उसकी लेखकीय स्थिति सुदृढ़ रहती है यथार्थ की दृष्टि तथ्यात्मक है तथा विज्ञान पर आधारित होती है और इन्हीं तथ्यों पर अन्वेषण करना यथार्थवाद की सबसे बड़ी शर्त एवं मांग है। वह चाहता है लेखक बिना किसी भय, संकोच एवं पक्षपातपूर्ण दृष्टि से अपने सृष्टि के सादृश्य से प्राप्त अनुभव एवं चारों ओर के परिवेश का ईमानदारी के साथ विवरण प्रस्तुत करें। यथार्थवाद ने कला का संबंध विज्ञान से स्थापित किया है और उसे विश्लेषित शक्ति से विभूषित किया है। यथार्थवाद कट्टर सामाजिक व्यवस्थाओं, रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों के प्रति अनास्था का भाव प्रकट करता है।

“यथार्थवाद की सीमायें केवल उच्च वर्गीय लोगों तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि वह मध्यम वर्गीय व्यक्तियों को समान रूप से अपने चित्रण का आधार बनाता है।”<sup>12</sup>

यथार्थवाद सत्य को देखने वाली आँख है फिर सत्य चाहे कितना ही कुरूप और घिनौना क्यों न हो? जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ यथार्थवाद की पहुँच न हो। समाज में विद्यमान निर्धन और मध्यमवर्गीय जीवन की कटुताएँ और जटिलताएँ महत्वपूर्ण होते हुए भी स्वयं प्रकाश में नहीं आ पाती। इस वर्ग की जटिलताएँ एवं कटुताएँ जब यथार्थवादी लेखक अपने साहित्य के माध्यम से उभारता है तो वह एक बहुत बड़े समाज को प्रभावित करती है।

अतः कहा जा सकता है कि यथार्थवाद सत्य की खोज करता है, फिर सत्य कितनी गंदगी में लिपटा हुआ क्यों न हो। उसे उस गंदगी से निकालकर समाज के समक्ष प्रस्तुत करना यथार्थवाद का प्रमुख उद्देश्य है।

### **यथार्थवाद के विविध प्रकार**

साहित्यकार समाज के यथार्थ रूप को अपने साहित्य में प्रतिबिंबित करता है। साहित्य यदि एक सामाजिक संस्था है तो साहित्यकार एक सामाजिक प्राणी। साहित्यकार की कृतियाँ सामाजिक एवं उसके परिवेश को प्रभावित करती हैं। समाज के सभी पक्षों यथा-राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक आदि का वास्तविक चित्रण कथा साहित्य एवं उपन्यास साहित्य के अंतर्गत सशक्त रूप में मिलता है। एक सशक्त एवं प्रबुद्ध उपन्यासकार समाज के इन्हीं विभिन्न सोपानों की कसौटी पर यथार्थ का चित्रण करता है। साहित्य के अंतर्गत आने वाले यथार्थ के विभिन्न सोपानों का वर्णन निम्न प्रकार से है-

### **सामाजिक यथार्थ**

सामाजिक यथार्थ समाज की सम्पूर्ण वस्तुस्थिति का चाहे वह किसी भी रूप में विद्यमान है, वास्तविक बोध है। वास्तविकता का यह बोध ज्ञान की उस आधारशिला पर प्राप्त होता है जिस पर समाज की नींव टिकी होती है। सामाजिक यथार्थ चित्रण किसी सामाजिक प्राणी का भी हो सकता है और समाज की किसी घटना का भी, जिससे समाज प्रभावित हो। सामाजिक यथार्थ में समाज के सूक्ष्म तत्व का भी विवेचन होता है। व्यक्ति, परिवार एवं वर्गों के सामंजस्य से ही समाज का निर्माण होता है। इनके बिना समाज का अपना कोई अस्तित्व नहीं माना जा सकता।

अतः समाज के संगठित तत्वों के रूप में स्थापित इन इकाईयों का चित्रण भी सामाजिक यथार्थ साहित्य में समाज की वास्तविक स्थिति का बोध कराता है, जिसका निर्माण व्यक्ति एवं समाज के मिले-जुले परिवेश के बहुआयामी संघर्ष से होता है। साहित्य व्यक्ति से समाज का संबंध निर्धारित करता है। साहित्य के माध्यम से व्यक्ति समाज में अपनी स्थिति एवं समाज की व्यवस्था की स्थापना में पूर्ण योगदान देता है।

लालजी रामशुक्ल सामाजिक यथार्थ के विषय में लिखते हैं- “सामाजिक यथार्थ से तात्पर्य ऐसे चित्र से है, जिसमें रचनाकार वास्तविक घटनाओं को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करता है ताकि पाठक समाज में होने वाले विभिन्न व्यापारों के औचित्य-अनौचित्य सफलतापूर्वक समझ सके और एक आदर्श समाज की ओर प्रवृत्त हो सके।”<sup>13</sup>

### राजनैतिक यथार्थ

राजनीति प्रत्येक युग को प्रभावित करती रहती है। आधुनिक युग के हर क्षेत्र में राजनीति का बोलबाला है। धर्म, शिक्षा, समाज के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में भी राजनीतिकरण अपने पांव पसार रहा है। साहित्यकार की संवेदनशीलता उसे साहित्य में राजनीति से जुड़े कटु सत्य को प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करती है। वर्तमान युग में प्रत्येक राजनीति दल अपनी स्वार्थपूर्ति में लगा हुआ है।

आज जनता के दुःखों से उसे कोई सरोकार नहीं। ऐसा लगता है कि सत्ता के लोभी नेताओं ने अपनी संवेदनाओं को गहरी खाई में धकेल दिया है। कई बार ऐसा महसूस होता है कि आलिशान बंगलों में रहना और शानो-शौकत का जीवन व्यतीत करना ही राजनेताओं का एकमात्र आदर्श बन चुका है। बड़े-बड़े वायदों से आम जनता को छलना उनका प्रिय खेल बन चुका है। प्रजातंत्र प्रणाली में हर पांच वर्ष के ऐसे स्वार्थी नेताओं को हरा दिया जाता है, जो अपने वायदों को भूल जाते हैं, किन्तु जो नये नेता चुने जाते हैं, उनका भी कोई दीन-ईमान नहीं होता। राजनीतिक यथार्थ के बारे में मुहम्मद फरीदुद्दीन का कहना है कि- “राजनीतिक सत्ता प्राप्त व्यक्तियों के द्वारा अपने साथियों या समर्थकों को अनुचित लाभ पहुँचाना या स्वयं अपने स्वार्थ के लिए अनेक पद और शक्ति का दुरुपयोग करना आदि राजनीतिक भ्रष्टाचार में आते हैं।”<sup>14</sup>

## धार्मिक यथार्थ

धर्म भारतीय समाज का मूल तत्व है। धर्म का संबंध पवित्रता से, आन्तरिक शान्ति से है। साहित्य में समाज की आस्था और उनके सरोकार का भी यथार्थ चित्रण किया गया है। सामाजिक कुरीतियों व अंधविश्वासों का यथार्थ चित्रण साहित्य में चित्रित किया गया है। लोगों के विश्वास व आस्थाएँ, भावनाएँ सभी जो कुछ परिवेश में व्याप्त है। उसका भी चित्रण आज किया जा रहा है।

## आर्थिक यथार्थ

मानव जीवन में अर्थ का अतिमहत्वपूर्ण स्थान है। यदि कहा जाए कि प्राणों के बाद अर्थ सबसे महत्वपूर्ण उपादान है तो गलत नहीं होगा। अर्थ ही मानव जीवन को अर्थवान बनाता है। प्राचीनकाल में मानव की प्रतिष्ठा उसके गुणों के आधार पर टिकी होती थी, परंतु वर्तमान युग में वहीं व्यक्ति श्रेष्ठ माना जाता है जिसके पास धन है। धन की कमी से मनुष्य के जीवन में अनेक समस्याएँ हैं जिसका कारण अर्थ की कमी होना है। भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि यहाँ अमीर आदमी अधिक अमीर और गरीब आदमी अधिक गरीब होता जा रहा है। अमीर-गरीब के बीच की खाई गहरी होती जा रही है। आज का साहित्यकार ऐसी व्यवस्था का पक्षधर है जिसमें अमीर-गरीब सब समान हो। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था का समर्थक कार्ल मार्क्स को माना गया है, जिसने अपने विचारों से दुनियाभर के विद्वानों को प्रभावित किया। मार्क्स की यथार्थवादी नीति ने साहित्यकारों को भी अत्यधिक प्रभावित किया। इसके बारे में साहित्यकोश में कहा गया है- “साम्यवाद समाज में शोषक और शोषित, बुर्जुआ और सर्वहारा, पूंजीपति और श्रमिक इन परस्पर दो वर्गों की सत्ता मानता है। साम्यवाद की स्थापना शोषित वर्ग के लिए हर संभव उपाय से शोषित वर्ग के हाथ मजबूत करने चाहिए। इस कार्य में सहयोग देने वाला क्रियाकलाप प्रतिक्रियावादी है। काव्य पर भी यही नियम लागू होता है।”<sup>15</sup>

हिन्दी साहित्य के प्रगतिशील साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में शोषित वर्ग पर होने वाले अत्याचारों का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। वर्तमान युग का सजग साहित्यकार भी अपनी रचनाओं में आर्थिक असमानता का शिकार हुए लोगों का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करने की कोशिश में लगा हुआ है, यही आर्थिक यथार्थ है।

## मनोवैज्ञानिक यथार्थ

मनुष्य का व्यक्तित्व दो प्रकार हो होता है- बाहरी व्यक्तित्व व आंतरिक व्यक्तित्व। सामान्यतः हम व्यक्ति के बाहरी व्यक्ति को देखते हैं व समझते हैं कि जो व्यक्ति के आंतरिक व्यक्तित्व से बिल्कुल अलग होता है। साहित्य केवल बाहरी व्यक्तित्व को चित्रित करके अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकता है। उसमें आंतरिक व्यक्तित्व का प्रस्तुतीकरण भी आवश्यक होता है। अंग्रेजी साहित्य में इसको 'Psychological Realism' कहा जाता है।

इस प्रकार वह यथार्थ जिसमें व्यक्ति के आंतरिक (मानसिक) भावों, विचारों, विकारों आदि का वर्णन किया जाए उसको हम मनोवैज्ञानिक यथार्थ कहते हैं।

आज पाश्चात्य साहित्य जगत में व्यक्तिवादी मनोवैज्ञानिक विचारधारा प्रमुख रूप से आ रही है। इस कार्य में फ्रायड एडलर आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने व्यक्ति के अंतर्मन की विकृतियाँ, प्रमाद, कुण्ठाओं तथा सामान्य-असामान्य व्यवहार तथा यौन संबंधों को अपने साहित्य में विशेष स्थान दिया है। भारतीय मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रेमचंद, जैनेंद्र इलाचंद्र जोशी एवं अज्ञेय आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अतः मनोवैज्ञानिक यथार्थ से अभिप्रायः उन मानसिक परिस्थितियों से जो एक विशिष्ट काल में एक व्यक्ति को अप्रत्याशित आचरण के लिए बाध्य कर देती है।

## सांस्कृतिक यथार्थ

संस्कृति किसी देश या समाज के विभिन्न जीवन व्यापारी, सामाजिक संबंधों एवं मानवीय दृष्टि से प्रेरणादायक तत्वों की सृष्टि को संस्कृति कहते हैं। हिंदी साहित्य कोश में "संस्कृति को सामाजिक प्रथा का पर्याय कहा गया है।"<sup>16</sup> संस्कृति शब्द रहन-सहन और पारंगत परंपरा आदि अर्थों में लिया गया है। संस्कृति का संबंध मानव की मानस भूमि से होता है कि प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है। संस्कृति साहित्य के समान समाज की धरती पर उगने वाला फूल है, जो खुद सुगंधित है और दूसरों को भी सुगंधित करता है। संस्कृति रूपी भित्ति के आधार पर ही उच्च साहित्य की सृजना संभव है। संस्कृति मानव जीवन एवं व्यक्तित्व को संपुष्ट करती है। सहिष्णुता एवं समन्वय की भावना भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण पक्ष है। संस्कृति का अंग्रेजी रूपांतरण 'कल्चर' से है जो लेटिन भाषा के 'कल्टस' से

लिया गया है। संस्कृति वह है जो किसी समाज में व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है जो उस समाज के मानवों के विचारों और कार्यों को तथा सभ्यता को प्रस्तुत करते हैं। सभ्यता संस्कृति का ही अंग होता है जो हमारे विकास को यथार्थ रूप में आगे बढ़ाता है तथा संस्कृति की जड़ें मजबूत बनाता है।

भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को जानने के लिये भारतीय संस्कृति को जानना आवश्यक है। संस्कृति के विकास में भारतीय समाज की महत्वपूर्ण भागीदारी होती है। इस संबंध में संस्कृति की परिभाषाएँ निम्न हैं-

“संस्कृत शब्द के समान संस्कृति शब्द में भी परिमार्जन अथवा परिष्कार के अतिरिक्त शिष्टता एवं सौजन्य आदि अर्थों भी अन्तर भाव हो जाता है। संस्कृति शब्द मनुष्य की सहज प्रवृत्तियों नैसर्गिक शक्तियों तथा उनके परिष्कार का द्यौतिक है। संस्कृति मनुष्य के भूत, वर्तमान तथा भावी जीवन का अपने में पूर्ण विकसित रूप है।”<sup>17</sup>

“समाज के आदर्श, विश्वास, मान्यताएँ, मानदण्ड, धर्म, प्रथाएँ, रूढ़ियाँ आदि सभी सांस्कृतिक जीवन का प्रतिबिम्ब हैं। इन्हीं प्रतिबिम्बों से सांस्कृतिक मूल्यों का सृजन होता है। मूल्य तथा प्रतिमान संस्कृति की विशेषताएँ माने जाते हैं। मूल्यों, मानों, प्रतिमानों एवं आदर्शों की चेतना संस्कृति की वह विशेषता है जो उसे पशु समाज से भिन्न करती है।”<sup>18</sup>

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि- संस्कृति वह धरोहर होती है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है। संस्कृति समग्र जीवन को दर्शाती है। साहित्यकार संस्कृति के प्रमुख तत्वों, लक्षणों व विशेषताओं के द्वारा अपने साहित्य को समृद्ध करने के साथ समाज विशेष या मनुष्य के जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति अपनी समन्वयता, सहिष्णुता, विशालता, उदारता, सर्वांगीणता की दृष्टि से विश्व में सर्वोपरि है।

साहित्यकार का संघर्ष, मूल्यों की प्रतिष्ठा व स्थापना के लिए होता है, संस्कृति का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। कोई भी साहित्यकार संस्कृति के विविध सूक्ष्म पक्ष को अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करता है क्योंकि साहित्य का प्रयोजन सामाजिक सरोकार से जुड़ा होता है और कल्याणकारी होता है।

## निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रथम अध्याय 'यथार्थ की अवधारणा व स्वरूप' का विभिन्न विद्वानों की परिभाषा व विचार के अनुसार यथार्थ को सोदाहरण इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है साथ ही यथार्थ के उद्भव एवं विकास के साथ यथार्थ के विविध स्वरूप सामाजिक यथार्थ, राजनैतिक यथार्थ, आर्थिक यथार्थ पर प्रकाश डाला गया है। जिससे ममता कालिया के कथा साहित्य को समझने की दृष्टि विकसित हो सके।



## संदर्भ सूची

1. हेरिशा, डिक्शनरी ऑफ लिटरेरी टर्मस, पृ.सं.-316
2. शिवकुमार मिश्र यथार्थवाद दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली, 1983, पृ.सं.-156
3. नंददुलारे वाजपेयी, आधुनिक साहित्य, भारती भण्डार, प्रयाग 1957, पृ.सं.-393
4. रामचंद्र वर्मा, मानक हिंदी कोश (खण्ड-4) प्रयाग प्रथम संस्करण-1965, पृ.सं.-435
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी, विचार और वितर्क, साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद द्वितीय संस्करण-1961, पृ.सं.-95
6. त्रिभुवन सिंह, हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद हिन्दी प्रचार पुस्तकालय, वाराणसी, वि.सं.-2014, पृ.सं.-12
7. मेयि पेई, दि लिविंग वैबस्टर इन्साइक्लोपीडिया डिक्शनरी इंग्लिश लैंग्वेज इंस्टीट्यूट ऑफ आगरा, 1977, पृ.सं.-797
8. विलियम हैरिस, दि न्यू कोलंबिया इन्साइक्लोपीडिया, कोलंबिया युनिवर्सिटी प्रेस, चतुर्थ संस्करण, 1975 पृ.सं.-84
9. मुक्तिबोध, नई कविता का संघर्ष, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1983, पृ.सं.-89
10. अमृतलाल नागर के उपन्यासों में यथार्थ बोध, डॉ. प्रतिभा प्रसाद प्रथम संस्करण-2013, पृ.सं.-45
11. शिवकुमार मिश्र, यथार्थवाद, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली, 1983, पृ.सं.-4
12. सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1967, पृ.सं.-23
13. लालजी राम शुक्ल, सरल मनोविज्ञान, पृ.सं.-2

14. मुहम्मद फरीदुद्दीन, राही मासूम रजा के उपन्यासों का समाज शास्त्रीय अध्ययन, पृ.सं.-129
15. धीरेन्द्र वर्मा (स.) हिंदी साहित्य कोश, प्रयाग, प्रथम संस्करण 1965 ई., पृ.सं.-844
16. धीरेन्द्र वर्मा (स.) हिंदी साहित्य कोश, प्रयाग, प्रथम संस्करण 1965, पृ.सं.-568
17. डॉ. अनिता वर्मा, शचीन्द्र उपाध्याय के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प, पृ.सं.-63
18. डॉ. अनिता वर्मा, शचीन्द्र उपाध्याय के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प, पृ.सं.-64

## द्वितीय अध्याय

ममता कालिया : व्यक्ति और कथाकार  
(उपन्यास, कहानी और व्यक्ति परिचय)

## द्वितीय अध्याय

### ममता कालिया : व्यक्ति और कथाकार (उपन्यास, कहानी और व्यक्ति परिचय)

ममता कालिया हिंदी साहित्य की एक प्रगतिशील रचनाकार रही है जो पिछले छह दशक से हिंदी साहित्य को अपने लेखन से समृद्ध कर रही है और आज तक सक्रिय है। बीसवीं शताब्दी को हिंदी साहित्य में महिला उत्थान का युग माना जाता है। जिसमें महिला घर की दहलीज को पार करके पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाती हुई समाज में अपना स्थान प्राप्त कर रही है। ममता कालिया छह दशकों से रचना लेखन में सक्रिय भूमिका निभा रही है। जिनका स्थान साठोत्तरी काल के यथार्थवादी रचनाकारों में विशेष रूप से अपनी अलग से सत्ता स्थापित किए हुए हैं। साठोत्तरी महिला साहित्यकारों में कृष्णा सोबती, इन्दु बाला, शिवानी, मन्नू भण्डारी, सूर्यबाला मृणाल पाण्डे, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग आदि साहित्यकारों में ममता कालिया एक यथार्थवादी साहित्यकार के रूप में अपनी छवि बनाए हुए है। जिनका रचना लेखन पाठकों को यथार्थ के धरातल से संपृक्त करता है तथा समाज का सच्चा दर्पण दिखाता है। ममता कालिया ने कभी घोर स्त्रीवादी होने का दावा नहीं किया बल्कि समाज में स्त्री-पुरुष को समानता की कसौटी पर परखते हुए यथार्थ का चित्रण किया है। ममता कालिया का बचपन भी साहित्यिक परिवेश में ही गुजरा है इस अध्याय में ममता कालिया के व्यक्तित्व कृतित्व को विभिन्न बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास मेरे द्वारा किया गया है। ममता कालिया व्यक्ति और कथाकार को पाँच अध्याय में विभक्त करते हुए लेखन को समझने में आसानी हो सकती है-

2.1 हिंदी उपन्यास और ममता कालिया 2.2 हिंदी कहानी और ममता कालिया यात्रा  
2.3 ममता कालिया : जन्म और शिक्षा 2.4 ममता कालिया : परिवार और परिवेश  
2.5 ममता कालिया : संक्षिप्त साहित्यिक परिचय, पुरस्कार और सम्मान। इस प्रकार विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए ममता कालिया के जीवनवृत्त व साहित्यिक लेखन को समझा परखा जा सकता है।

## 2.1 हिंदी उपन्यास और ममता कालिया

हिंदी साहित्य की प्रगतिशील लेखका के रूप में ममता कालिया महत्वपूर्ण एवं सशक्त हस्ताक्षर है। उन्होंने अपने जीवन से ही साहित्य की प्रेरणा हासिल कर अनुभवजनित उपन्यास साहित्य का सृजन किया। हिंदी साहित्य में अनेक विधाओं जैसे कहानी, नाटक, उपन्यास, संस्मरण, आत्मकथा, डायरी आदि का नियमित लेखन होता रहा है जिसमें उपन्यास ही एक ऐसी विधा है, जो मनुष्य के सम्पूर्ण चित्र को समादृत करने में सक्षम है। ममता कालिया आज 21वीं शताब्दी में भी अपने लेखन में सक्रिय रहते हुए साहित्य जगत को सुशोभित कर रही है।

आधुनिक जगत् में नारी प्रगति पथ पर बढ़ते हुए भी शिक्षित होते हुए भी किस प्रकार इस निर्दयी समाज की रूढ़िगत सोच का शिकार हो जाती है इसका यथार्थ चित्र इनके उपन्यासों में दिखाई पड़ता है। नारी की आज समाज में वास्तविक स्थिति पूर्व की भाँति दयनीय है। वैचारिक दृष्टि से उसका विकास नहीं हो पाया तथा साथ ही प्रचार-प्रसार के माध्यम ने भी नारी को एक अलग रूप में प्रस्तुत कर उसकी संवेदनाओं का वहन किया है, इस स्थिति में ममता कालिया कहती है- “भारतीय नारी अस्तित्व से लेकर व्यक्तित्व के हर स्तर पर शोषित है। सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि जो उसके गुण है, वही उसके अभिशाप बन गए हैं।”<sup>1</sup>

वर्तमान समाज भारतीय नारी की वास्तविक स्थिति का अंकन कर ममता कालिया ने उत्कृष्ट उपन्यासों का सृजन कर नारी को विभिन्न समस्याओं के प्रति उनमें जागृति लाने का प्रयास किया है। इनके द्वारा रचित उपन्यासों की श्रृंखला अनवरत रूप से चल रही है जो वर्तमान समाज में अपनी प्रासंगिक है-

1. बेघर-1971
2. नरक दर नरक-1975
3. प्रेम कहानी-1980
4. लड़कियाँ-1987
5. एक पत्नी के नोट्स-1997
6. दौड़-2000
7. अँधेरे का ताला-2009

8. दुःखम-सुखम-2009
9. सपनों की होम डिलिवरी-2016
10. कल्चर वल्चर-2017

### (1) बेघर - 1971

‘बेघर’ उपन्यास सन् 1971 में प्रकाशित ममता कालिया का प्रथम उपन्यास है। अत्यन्त गंभीर एवं गहन विषय चित्रित इस उपन्यास में नारी की स्थिति का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। इस उपन्यास का केन्द्रीय विषय नारी की कौमार्यावस्था और उसके व नारी के संबंध में समाज की गलत धारणाओं का यथार्थ चित्रण ममता कालिया ने अपनी लेखनी से किया है। यह उपन्यास मध्यमवर्गीय लोगों की समाज की संकीर्णता, विचारों का पिछड़ापन व अंधश्रद्धा को व्यक्त करता है। किसी भी रचना लेखन के पश्चात् उस रचना पर आलोचकों के द्वारा सकारात्मक व नकारात्मक टिप्पणी होना सहज है, उसी प्रकार ममता कालिया के ‘बेघर’ उपन्यास को भी इसका शिकार होना पड़ा। इस उपन्यास के संबंध में डॉ. रामचंद्र तिवारी का कथन उल्लेखनीय है कि “बेघर में आपने संस्कारबद्ध पुरुष मन पर गहरी चोट की है। आपने यह दिखाना चाहा है कि नारी की पवित्रता की कसौटी उसकी मानसिक एकात्मकता और समर्पण है, शारीरिक कुँआरापन नहीं।”<sup>2</sup>

उपन्यास के केन्द्र में नायक परमजीत व नायिका संजीवनी है। कौमार्य और उसके संबंध में गलत धारणाओं पर केंद्रित उपन्यास का नायक परमजीत जड़ मानसिकता से युक्त पंजाबी परिवार से संबंधित है। साधारण पढ़ाई करके वह बंबई में नौकरी पाने में सफल हो जाता है। अपनी मेहनत और ईमानदारी से वह कम्फर्ट रेफ्रिजरेशन कंपनी में तरक्की प्राप्त कर चिक ऐजेंट का ओहदा प्राप्त कर लेता है। परमजीत अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को छोड़कर अपनी टूटी-फूटी इंग्लिश और मात्र तीन जोड़ी कपड़े लेकर वह नौकरी करने बम्बई जैसे महानगर की ओर चल पड़ता है। परमजीत अपने पिता की पारंपरिक लस्सी की दुकान पर बैठना पसंद नहीं करता और महानगर की ओर आकर्षित होता है। मुम्बई शहर में परमजीत वहाँ की चकाचौंध में इस प्रकार घुल जाता है कि वह अपने परिवार वालों को भूल जाता है और धीरे-धीरे वही रहने का आदी हो जाता है। नायिका संजीवनी की मुलाकात परमजीत से एक रेस्त्रा में होती है और परमजीत संजीवनी के सरल, सादगीपूर्ण

व्यक्तित्व से आकर्षित हो जाता है। संजीवनी बैंक ऑफ बड़ौदा में काम करती है। परमजीत संजीवनी के व्यवहार व व्यक्तित्व पर आकर्षित हो जाता है इस पर ममता कालिया लिखती है कि “दफ्तर की टाइपिस्ट सामान्य रूप से आकर्षक होते हुए भी परमजीत को कभी रोचक नहीं बल्कि उसे वह लड़की अधिक भायी जो चश्मा लगाये-लगाये रेल के फर्स्ट क्लास डब्बे में सो जाती थी, जिसमें अक्सर परमजीत भी सफर करता। परमजीत को उसकी सजगता पसंद थी।”<sup>3</sup> एक बार परमजीत और संजीवनी मिलते हैं तो परमजीत उसे अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों देखने का आग्रह करता है इस पर संजीवनी कहती है कि मैं टिकट लाती है जिससे परमजीत खुश होता है।

परमजीत संजीवनी को रोज मिलने की बात करता है और इस प्रकार परमजीत एक रोज संजीवनी से प्रेम का इजहार कर देता है। अपने परिवार के बारे में बताता है। धीरे-धीरे संजीवनी परमजीत से घुलने मिलने लग जाती है और उसे उस विपिन की याद स्मरण हो आती है जो उसे कुछ वर्ष पहले छोड़कर चला जाता है, परमजीत के उसके जीवन में आने से संजीवनी विपिन की यादों को भुला देती है और इतिहास का यह दूसरा परिच्छेद ही बाद में उसके जीवन में भयंकर तूफान लेकर आता है। सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन करता है और संजीवनी से प्रेम करने लगता है। प्रेम के प्रौढ़ रूप में परमजीत संजीवनी को इतना उत्तेजित कर देता है कि वह समर्पण कर देती है। परमजीत संजीवनी को समर्पण के लिए उत्तेजित करने के संबंध ममता कालिया की अभिव्यक्ति है कि “संजीवनी ने बहुत मना किया, कई तरह के डर दिखाए, कितने ही बहाने बनाये, फिर वह नर्वस होकर काँप गयी। जीत ने उसे पकड़ लिया था और बहुत हल्के हाथों से उसके कसाव ढीले कर दिये। परत दर परत कपड़े उतरने पर वह चमत्कृत होता गया। कुछ देर संजीवनी ने संघर्ष किया पर परमजीत ने उसे मसलकर, सहलाकर, गुदगुदाकर इतना उत्तेजित कर दिया कि वह स्वयं निढाल हो गयी।”<sup>4</sup>

समाज में लड़कियों के कौमार्य की पहचान उसके संभोग के समय चीख-पुकार और रक्त स्राव से मानी जाती है और उसी रूढ़ि का शिकार परमजीत हुआ है सदियों से चली आ रही इस पुरुष मानसिकता में ग्रस्त परमजीत पहले समर्पण में संजीवनी को बाधाहीन पाकर स्वयं को अपमानित एवं परास्त महसूस करता है। उसके पुरुष मन पर गहरी चोट लगती है। समाज में नारी कौमार्य की सीमा का निर्धारण हुआ है किंतु कभी पुरुष के लिए पवित्रता का प्रमाण क्या हों? इस पर कभी विचार नहीं किया

गया क्योंकि भारतीय समाज पुरुष प्रधान है जहाँ स्त्री को हर कदम पर प्रमाण देना जरूरी होता है। परमजीत संजीवनी के संसर्ग से स्वयं को लज्जापूर्ण महसूस करता है उसके अहंकार को चोट लगती है कि संजीवनी का यह पहला संसर्ग नहीं उपन्यासकार परमजीत की मनःस्थिति को इस प्रकार व्यक्त करता है कि- “परमजीत बोलना चाह रहा था, गुस्सा करना चाह रहा था, उसका मन हो रहा था वह उठकर संजीवनी के दोनों गालों पर कस-कसकर चाँटे मारे पर उसकी ताकत मुर्दा हो गई थी। उसे लगा जैसे उसने इतनी आगे जाकर अपने को ही अपमानित कर लिया है।”<sup>5</sup>

इस घटना के पश्चात परमजीत फिर कभी संजीवनी से मिलता भी नहीं। संजीवनी कितनी कोशिश करती है कि वह उससे मिलकर सारी बात साफ-साफ बता दें किंतु वह ऐसा नहीं कर पाती है। परमजीत दफ्तर के काम में लग जाता है। माता-पिता की चिट्ठी के साथ एक तस्वीर मिलती है और उसकी शादी तय हो जाती है। परमजीत की शादी एक रमा नाम की लड़की से हो जाती है। रमा उसके साथ मुम्बई आती है किंतु गाँव से मुंबई आने से पहले ही उसके पैर भारी हो जाते हैं।

इस समाज में नारी की स्थिति कितनी दयनीय है कि उसे पुरुष की कामी प्रवृत्ति का शिकार होना पड़ता है इस संबंध में ‘डॉ. गोपाल राय’, ‘बेघर’ उपन्यास के संबंध में लिखते हैं कि “1971 में बेघर प्रकाशित हुआ जिसमें नारी संहिता के एक बड़े क्रूर विरोधाभास को प्रस्तुत किया है। यौनशुचिता, कौमार्य और केवल पति से यौन संबंध नारी संहिता के अनुल्लंघन नियम है और जो भी स्त्री जाने-अनजाने इनका उल्लंघन करती है, उसे पुरुष समाज का कोप भाजन होना पड़ता है। स्त्री को अपने भोग की वस्तु समझने वाला पुरुष इस बात को बर्दाश्त नहीं कर पाता कि विवाह के पूर्व कोई दूसरा उसे जूठा कर चुका है।”<sup>6</sup> इस प्रकार परमजीत संजीवनी को त्यागकर रमा से शादी करता है। उसके पैर भारी हो जाते हैं। रमा एक ऐसी झगड़ालू संस्कारविहीन औरत है। रमा के पुत्र होता है तो वह खुश नजर आती है परंतु दूसरी तरफ परमजीत की माँ के आने से वह दुःखी हो जाती है आपस में पारिवारिक झगड़ा और इसी बीच परमजीत के दूसरा लड़का भी हो जाता है।

परमजीत को दिल का दौरा पड़ने के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। इस उपन्यास में महानगर की जीवनशैली और रूढ़िगत परिवार की संघर्ष की कहानी के बीच नारी की अस्मिता पर सवाल खड़ा कर दिया। ममता कालिया का यह उपन्यास बहुत चर्चित भी रहा तो विवादास्पद भी रहा।

## (2) नरक-दर-नरक (1975)

‘नरक-दर-नरक’ उपन्यास ममता कालिया का दूसरा उपन्यास है जिसका प्रकाशन 1975 में हुआ। यह उपन्यास आधुनिक मध्यमवर्गीय जीवन में व्याप्त सामाजिक यथार्थ को चित्रित करता है। 207 पृष्ठों में लिखा यह उपन्यास वर्तमान शिक्षित युवकों को सताने वाली गंभीर समस्या बेरोजगारी का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। बेरोजगारी के कारण समाज में पारिवारिक स्थिति और एक युवा की मानसिक स्थिति का चित्रण किया गया है। इस संबंध में डॉ. रामचंद्र तिवारी का कथन- “नरक-दर-नरक’ में आज की पूरी सामाजिक व्यवस्था को नरक के रूप में चित्रित किया गया है, जिसके चलते प्रतिभा सम्पन्न श्रमशील और ईमानदार शिक्षित युवकों को आर्थिक असुरक्षा के दबाव को झेलते हुए इधर-उधर भटकना पड़ता है और दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती है इसके विपरीत समझौतावादियों और चापलूसों को दिन-दूगुनी रात चौगुनी तरक्की मिलती रहती है।”<sup>7</sup>

इस उपन्यास का नायक जोगेंदर व नायिका उषा हैं। जोगेंदर बेरोजगारी की समस्या से जूझता हुआ चित्रित किया गया है। वह एम.ए. करने के पश्चात् कई वर्ष तक बेरोजगार रहता है। कुछ समय पश्चात् उसे मुम्बई के केडिया कॉलेज में नौकरी मिल जाती है। वह छुट्टियों में घर नहीं जाता और ‘समर इन्स्टीट्यूट’ में नौकरी करता है जहाँ उसकी मुलाकात (उपन्यास की नायिका) उषा नाम की लड़की से होती है जो एक प्रतिभाशाली होशियार लड़की है, उसके पिताजी चाहते हैं कि उषा पढ़कर पीएच.डी. करने के लिए विदेश जाए और प्रोफेसर बने। उषा और जगन में किसी बात को लेकर बहस होती है किंतु वास्तविकता जानने पर उषा जगन से माफी मांग लेती है। जगन उषा से प्रभावित होकर उससे अपने प्रेम का इजहार करता है तथा उषा का अकेलापन उस प्यार में समर्पण की मोहर लगाता है। उषा और जगन प्रेम विवाह कर लेते हैं किंतु वैवाहिक जीवन की वास्तविकता और जिम्मेदारियाँ उनके सपनों के संसार को ढेर कर देती हैं। जगन को अपने कॉलेज में राजनीति का शिकार होना पड़ता है उसकी नौकरी छूट जाती है और अभावग्रस्त आर्थिक रूप से त्रस्त जीवन में द्वंद्व व्याप्त हो जाता है। इस संबंध में डॉ. सानप कहती है कि “प्रेम विवाह के बाद जब दोनों के लिए जहाँ असंख्य सपनों का ढेर सामने उपस्थित होता है वहाँ

समस्याओं का ढेर भी उसी अनुपात से उपस्थित होता है। सामान्य से सामान्य जरूरतों के लिये पैसों का अभाव उत्पन्न होता है। उषा ने वैसे भी रसोई में ध्यान दिया था, ढेर सारी सद्भावना प्यार के बावजूद भी जगन खाना नहीं खा पाया।”<sup>8</sup>

आर्थिक व बेकारी की समस्या के कारण वे मथूरा चले जाते हैं। उषा अपने पिता के घर रुकती है किंतु स्नेह व प्यार का अभाव महसूस करने के कारण वह वापस चले जाते हैं। चण्डीगढ़ में आकर जगन एक प्रेस खरीद लेता और काम में व्यस्तता के कारण उषा व जगन में दरार पड़ने लगती है। इसी बीच उषा गर्भवती होती है और बच्चे को जन्म देती है।

उपन्यास के अन्त में होली व मुहर्रम के पर्व में उषा के बच्चे बबलू से साधारण सी गलती हो जाती है, उसके हाथ से भीड़ में पानी का गिलास फैल जाता है जिससे भीड़ उत्तेजित होकर उनके मकान पर टूट पड़ती है और पूरा घर तहस नहस हो जाता है। इस प्रकार ममता कालिया ने इस उपन्यास में सांप्रदायिक दंगों का भी चित्रण किया है। इस प्रकार इस उपन्यास में विभिन्न समस्याओं आर्थिक, धार्मिक, पारिवारिक संघर्षों के बीच एक मनुष्य की स्थिति नारकीय होती जाती है उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

**तीन लघु उपन्यास** - ममता कालिया ने तीन लघु उपन्यास लिखे उन्होंने ‘प्रेम कहानी’ (1980) में दूसरा ‘लड़कियाँ’ 1987 में व तीसरा लघु उपन्यास ‘एक पत्नी के नोट्स’ 1995 में अपने तीनों लघु उपन्यासों में अलग-अलग विषय को लेकर इन उपन्यासों का ताना-बाना बुना है।

### **(3) प्रेम कहानी - 1980**

प्रेम कहानी सन 1980 में प्रकाशित एक लघु उपन्यास है। 107 पृष्ठों में रचित यह उपन्यास जिसमें अनेक सामाजिक, पारिवारिक, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं को अपने उपन्यास का आधार बनाया है। इस कहानी की नायिका जया है और नायक गिनेस है। नायिका जया पढ़ाई में अक्वल आने वाली लड़की है। वह आगे की पढ़ाई के लिए दिल्ली चली जाती है। दिल्ली में जया अपने चाचा के घर रुकती है, एक बार अंधेरी रात में चाचा के द्वारा जया के साथ दुर्व्यहार करने के कारण वह हॉस्टल में रहने लगती है। इस समाज में स्त्री को भोग की वस्तु मानकर पुरुष अपना विवेक भी भूल जाता है और वह वासना में अंधा होकर रिश्तों को तार-तार कर देता

है उसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास दिखाया गया है। “दरअसल हुआ यह कि नींद में यकायक लगा, जैसे कोई सारे बदन को माप रहा है। आभास नींद के समुंदर में डूबा, उतराया फिर ऊपर आ गया। लगा, मैं दर्जी की दुकान में हूँ। लेकिन यह कूल्हे और जाँघ के दरम्यान कैसी माप?.....अचकचाकर बैठी हो गई। देखा.....पायताने अंकल सिटपिटाए खड़े हुए थे।”<sup>9</sup>

इस घटना के बाद जया हास्टल में रहने लगती है जहाँ उसकी एक सहेली फरीदा है फरीदा पढ़ाई करके अपने देश चली जाती है। जया और गिनेस की मुलाकत सागर छात्र समिति के उद्घाटन के समय होती है और यह मुलाकात प्रेम का रूप ले लेती है। जया गिनेस परिवार के विरुद्ध शादी करते हैं, मॉरीशस जाते हैं, परंतु जया और गिनेस वापस दिल्ली आ जाते हैं और गिनेस हॉस्पिटल में नौकरी करने लग जाता है। इस उपन्यास में ममता कालिया ने मध्यवर्गीय परिवार, डॉक्टरों की तानाशाही, दाम्पत्य जीवन में तनाव, कर्मचारियों के शोषण, किसानों की संघर्ष गाथा का यथार्थ चित्रण किया है। इस उपन्यास के लिए जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव के स्वर में “अपने इस उपन्यास में उन्होंने नई जनशक्ति के विकास के सड़े-गले अवरोधक तत्वों की न केवल पहचान की है बल्कि उसके विकल्प की संस्कृति को उजागर करने का भी प्रयास किया है। ममता को उजागर करने का भी प्रयास किया है। ममता की बोल्ड-बेबाक और बेझिझक भाषा न केवल समस्यागत यथार्थ को सुथरेपन के साथ पाठक को रूबरू करती है बल्कि जिंदगी की रूढ़िया और चूके हुए आदर्शों पर रोचक शैली में आक्रमण भी करती है।”<sup>10</sup>

इस उपन्यास की अभिव्यक्ति आत्मकथात्मक रूप में हुई है जिसमें जया और गिनेस के प्रेम के बारे में चित्रण किया गया है। जब जया उद्घाटन समारोह में गिनेस से मिलती है तो ममता कालिया उसी के शब्दों में कहलवाती है कि “वह मुझे जरा भी फ्रांसीसी नहीं लगा बल्कि उसका रंग गहरा भूरा था, उसके सूट की तरह। दोनों इस अंदाज में घुलमिल रहे थे कि एक-दूसरे के लिए अनिवार्य और अविभाज्य लग रहे थे, मुझे यह लड़का शत-प्रतिशत भारतीय लग रहा था।”<sup>11</sup> जैसे इस उपन्यास का शीर्षक है ‘प्रेम कहानी’ में उसी प्रकार जया और गिनेस में प्रेम अपने प्रगाढ़ रूप पर पहुँच जाता है जो इस उपन्यास के शीर्षक को सार्थक करता है और उपन्यास के संवाद से उनके प्रेम की प्रगाढ़ता स्पष्ट होती है “गिनेस ने मेरी सब जिद मान ली। यहाँ तक यह भी कि हम पहले शादी करे, बाद में मॉरीशस जाएं! मेरी रजिस्ट्रार के दफ्तर से

जब हमें तमाम तामझाम और विलंब के बाद विवाह-प्रमाण पत्र हासिल हुआ, तब वही कागज थमा गिनेस ने बाँहों में ले लिया, लो तुम इसके लिए आतुर थी और मैं तुम्हारे लिए।”<sup>12</sup>

इस उपन्यास में शादी से पहले वाले प्रेम और शादी के बाद गार्हस्थ्य जीवन के द्वंद्व को चित्रित किया है। किस प्रकार शादी से पूर्व जब हम प्रेम करते हैं तो जिम्मेदारी से मुक्त एक स्वप्न गगन में उड़ते रहते हैं और जब वही प्रेम शादी का रूप लेकर जिम्मेदारी में तब्दील होता है, परिवार की जिम्मेदारी, नौकरी विभिन्न सामाजिक समस्याओं के बीच मनुष्य इस कदर पिस जाता है कि उसके जीवन में प्रेम के लिए कोई स्थान ही नहीं बचता। इस संबंध में गिनेस कह उठता है कि “प्रेम और प्रेमी इतने पिटे हुए शब्द हैं कि इनका कोई अर्थ नहीं बचा है। हम एक-दूसरे के लिए जरूरी हैं, क्या यह काफी नहीं है? तुम मेरी जिंदगी में वैसे ही जरूरी हो जैसे सुबह का अखबार।”<sup>13</sup> इस उपन्यास में प्रेम विवाह पश्चात् होने वाली यथार्थ समस्याओं का चित्रण किया गया है। प्रेम के साथ-साथ इसमें भ्रष्टाचार अनैतिकता, सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया गया है।

#### (4) लड़कियाँ - 1987

ममता कालिया का यह उपन्यास आधुनिक, अविवाहित, सुशिक्षित युवा नारियों को नये आयाम के साथ प्रस्तुत करते हुए मुम्बई जैसे महानगर की विज्ञापनों का प्रभाव दर्शाया है। 61 पृष्ठों में रचित यह एक लम्बी कहानी या औपन्यासिक कृति के रूप में लिखित है। इस उपन्यास में लेखिका ने मुम्बई महानगर में घटित घटनाओं व विज्ञापनों की दुनिया से प्रभाव ग्रहण कर उसका ‘लड़कियाँ’ रूप में सृजनात्मक चित्रण किया है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। इस उपन्यास की नायिका लल्ली है जो अविवाहित है तथा सहनायिका ऑफशा वह भी अविवाहित है। दोनों अविवाहित नायिका व सहनायिका की जीवन शैली विचारों को इस लघु उपन्यास में चित्रित किया गया है। इस उपन्यास के संबंध में रवीन्द्र कालिया का कथन है कि “आधुनिक नगर बोध के साथ-साथ जीवन की स्पर्द्धा व्यक्त करने वाला लघु उपन्यास ‘लड़कियाँ’ व्यक्ति-मन के मर्मस्थल की इ.सी.जी. रिपोर्ट भी प्रस्तुत करता है। ममता कालिया ने मुम्बई नगर के विज्ञापन जगत् को करीब से देखकर जो भाव ग्रहण किए ‘लड़कियाँ’ उसका सृजनात्मक रूप है।”<sup>14</sup> उपन्यास की नायिका ‘लल्ली’ अपने फ्लैट में अकेली रहती है वह भी मुम्बई जैसे महानगर में। वहीं दूसरी तरफ

लल्ली के बॉस 'हामिद' अपनी कजन आफशा, वह भी हामिद के द्वारा प्रबंध किए गए स्थान पर रहती है। ऑफशा पाकिस्तान से आई है। लल्ली और ऑफशा एक स्थान पर रहते हैं और दोनों अपने-अपने कार्य में व्यस्त रहती है, दोनों एक साथ होते हुए भी अकेलेपन और असुरक्षा के भाव से त्रस्त थी। इस उपन्यास में लल्ली ऑफशा के भोलेपन पर मोहित थी ममता कालिया लल्ली के शब्दों से कहलवाती है कि- “आए दिन चोरी, ठगी और बलात्कार की खबरे पढ़-पढ़कर मन दहल जाता है इसलिए जब तमाम इंतजार के बाद आखिरकार ऑफशा मेरे पास पहुँची, मुझे काफी तसल्ली हुई। पहले ही दिन से उस बड़ी-बड़ी कजरारी आँखों वाली ऑफशा ने मुझे आपा कहकर मोह लिया।”<sup>15</sup> नायिका लल्ली व ऑफशा साथ-साथ रहते हैं, एक बार लल्ली को ऑफशा के पर्स से कटार मिलती है, ऑफशा पर लल्ली को कुछ संदेह होने के कारण वह उसके कमरे की तलाशी लेती है तो उसे पिस्तौल भी प्राप्त होती है लल्ली डर जाती है और उसमें असुरक्षा की भावना पैदा हो जाती है, वह सोचती है अगर ऑफशा इसे अपनी सुरक्षा के लिए रखती है तो इसे साथ क्यों नहीं रखती है और इस संबंध में लल्ली कहती है कि “मैं सारा दिन, तनाव में जागी रही, जैसे ही मैं आँख बंद करती, मुझे अपने गले पर ठंडी कटार और कनपटी पर चमकीली रिवाल्वर का स्पर्श महसूस होने लगता, मुझे पक्का यकीन हो गया कि ये हथियार मेरे लिए ही यहाँ लाए गए हैं। अगर ऑफशा इन्हें अपनी हिफाजत के लिए लाई है तो साथ क्यों नहीं रखती, अलमारी में छुपाकर क्यों रखती है।”<sup>16</sup>

कुछ दिनों पश्चात् एक अप्रत्याशित घटना से लल्ली को अपने संदेह पर पश्चाताप होता है वह देखती है अचानक दो नंग धड़क व्यक्ति ऑफशा पर हमला बोल देते हैं लल्ली यह दृश्य देखकर पास में पड़ी रोड़ से उन पर हमला करती है, जिससे ऑफशा उन व्यक्तियों के हाथों से छूटकर लल्ली से जा लिपटती है। इस घटना से केवल शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक आघात भी होता है। किस प्रकार अकेली स्त्री अपने आपको असुरक्षित अभावग्रस्त महसूस करती है और महानगर में होने वाली घटना की शिकार बनती है ममता जी लिखती है कि “इस वारदात से शारीरिक हानि से तो हम सब बच गए, लेकिन मानसिक क्षति का अंदाजा लगाना किसी के लिए भी असंभव था। तीन दिन, तीन रात तक ऑफशा नर्सिंग होम में रह-रहकर यही चीत्कार करती रही। “आपा वो आ रहे हैं, मुझे बचाओ।”<sup>17</sup>

इस उपन्यास के अंत में दोनों असुरक्षा का भाव लेकर एक-दूसरे से विदा लेती है। इसमें ममता कालिया ने एक नारी के संघर्ष, नौकरी पैशा जीवन व अविवाहित मनोगाथा का यथार्थ दस्तावेज प्रस्तुत किया है।

### (5) एक पत्नी के नोट्स - 1997

यह उपन्यास 1997 में लिखा गया है। इस उपन्यास की कथावस्तु प्रेम विवाह पर आधारित है। इसके माध्यम से दिखाया गया है कि इस समाज में नारी चाहे कितनी शिक्षित हो जाए किंतु पुरुष की मानसिक सोच को कभी बदला नहीं जा सकता। एक शिक्षित पुरुष भी यही चाहता है कि नारी हमेशा उससे पीछे ही रहे ऐसी सोच की प्रेम कहानी इस उपन्यास में चित्रित की गई है जो पुरुष मानसिकता को उजागर करती है। इसमें नायक 'संदीप' जो साहित्य प्रेमी हैं। वह आई.ए.एस. की तैयारी करता है और नौकरी लग जाता है। संदीप की सोच भी इसी पुरुष मानसिकता को उद्धृत करती है। संदीप जब नौकरी पर जाता है तो वह रास्ते में एक लड़की को देखता है जो उसे अपनी सुंदरता से प्रभावित करती है। 'कविता' इस उपन्यास की नायिका जिसे संदीप दफ्तर आते-जाते एक मोड़ पर रोज देखता उस लड़की के लंबे बाल, भरा बदन, बड़ी-बड़ी आँखें तथा उसका अकेलापन संदीप को बेहद आकृष्ट करता उपन्यास में नायिका के प्रति नायक का स्पष्ट आकर्षण है कि "संदीप जानता था कि इतनी गंभीर, सीधी और निश्छल लड़की को गंभीरता, सादगी, आदर्शवाद और आस्था के स्तर पर ही जीता जा सकता है।"<sup>18</sup>

संदीप अपने शायराना अंदाज और वाक्पटुता के कारण कविता को पाने में सफल हो जाता है और दोनों प्रेम विवाह की परिणति में पहुँच जाते हैं। ममता कालिया ने इस उपन्यास में पति-पत्नी के संबंधों को बखूबी व्यक्त किया है जो संजीव प्रतीत होते दिखाई पड़ते हैं। इस उपन्यास को रेखांकित करते हुए डॉ. रामचंद्र तिवारी का कहना है कि "उपन्यास एक आई.ए.एस. अधिकारी संदीप और उसकी व्याख्याता पत्नी (कविता) की पारिवारिक जीवन-स्थितियों को केंद्र में रखकर लिखा गया है। पति आज भी सामंतीय संस्कारों से मुक्त नहीं हो पाया है। वह पत्नी पर अपना वर्चस्व कायम रखना चाहता है। छोटी-छोटी बातों पर उसे पीड़ित करता है। जबकि स्त्री एक मुकम्मल जीवन जीना चाहती है, जो किसी तरह संभव नहीं हो पाता।"<sup>19</sup>

इस उपन्यास में संदीप कविता से शादी करके उसे अपने वर्चस्व से एक व्याख्याता के पद पर नौकरी दिलवा देता है, कविता की बढ़ती जन लोकप्रियता से संदीप शक करने लगता है उसे नीचा दिखाने की कोशिश करता है और अपनी शेरों शायरी से दूसरों को प्रभावित करता रहता है। एक कुशल बुद्धिजीवी होने से वह तत्काल कविता बनाकर अपना प्रभाव जमाये रखता है संदीप के व्यक्तित्व को उद्घाटित करते हुए ममता कालिया लिखती है कि “सही मौके पर सटीक उद्धरण देना उसकी विशेषता थी। हाजिरजवाबी, सांस्कृतिक सूझबूझ, शायराना तबीयत और उसकी साहित्यिक रुचियों के कारण वह शहर में लोकप्रिय हो गया। मंत्रिमंडल से लेकर मित्र मण्डली तक उसका स्वागत होने लगा।”<sup>20</sup> इस उपन्यास में पुरुष वर्चस्व में फंसी सुशिक्षित नारी की समस्याओं को चित्रित किया गया है। जब-जब संदीप उसे शक की नजर से देखता है कविता उसका विरोध करके नाराज हो जाती है और संदीप बड़े नाटकीय ढंग से कविता को मनाने में कामयाब हो जाता है। संदीप कविता को अपनी निजी वस्तु मानकर उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है और उस पर तरह-तरह के तंज कसता है। इस उपन्यास में नारी की मानसिक स्थिति व नारी मनोविज्ञान का स्पष्ट चित्रांकन है इसमें उपन्यासकार अपने शब्दों में कहता है कि “कविता के अंदर कुछ टूट गया है, चटाख-चटाख उसे लगा वह एक मनोरोगी के साथ रह रही है। चेहरे पर मन की पीड़ा उभर आई थी। संदीप को बेहद तसल्ली महसूस हुई। उसे लगा उसकी पत्नी पूरी उसके कब्जे में है। इस अहसास के साथ-साथ उसे नींद आ गई।”<sup>21</sup> अंत में कविता घर छोड़कर चली जाती है किंतु संदीप अपने नाटकीय ढंग से कविता को पुनः मना लेता है। इस प्रकार इस उपन्यास में दाम्पत्य जीवन के उतार-चढ़ाव व दाम्पत्य जीवन में काम-काजी, पति-पत्नी की मानसिकता को चित्रित किया गया है। इस उपन्यास के संबंध में डॉ. श्रद्धा उपाध्याय का कथन है कि उपन्यास का वस्तु विन्यास संक्षिप्तता के कारण कसा हुआ संगठित है। अंत अवश्य निराश करता है। पति के अत्याचार से, विकृत मनोवृत्ति से त्रस्त होकर भी कविता कोई साहसिक कदम नहीं उठाती, पति के नाटक से प्रभावित होकर या डर से पुनः उसके नारकीय जीवन में वापस लौट आती है।<sup>22</sup>

इस प्रकार इस उपन्यास में ममता कालिया ने दो काम-काजी पति-पत्नी के जीवन संघर्ष व इस सुशिक्षित समाज में पुरुष मनोविज्ञान को चित्रित किया है जहाँ वह आज भी नारी को अपने से कम आँकता है।

## (6) दौड़ - 2000

ममता कालिया द्वारा रचित यह उपन्यास 2000 में प्रकाशित होता है जिसमें आधुनिक शिक्षित रेखा और राकेश समाज की मर्यादा को लांघकर प्रेमविवाह करते हैं और उनसे उत्पन्न दो पुत्र पवन व सघन भी बड़े होकर इसी राह पर चलते हैं। 'दौड़' उपन्यास में आज के दौर के बारे में लेखिका पात्रों और उनकी जीवनगत परिस्थितियों के माध्यम से वर्तमान औद्योगिक परिवेश में युवा प्रतिभा के मानसिक द्वंद्व, तनाव के जीवनगत परिणामों को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। इस रचना को कई आलोचकों ने प्रामाणिक आलोचना कहा है। उपन्यास की भूमिका में समीक्षक कृष्ण मोहन का मत ममताजी के शब्दों में प्रस्तुत है। "युवा समीक्षक कृष्ण मोहन लिखते हैं, 'बीसवीं' सदी के अंत में भारतीय समाज सबसे गहरे सांस्कृतिक संकट का आख्यान है, दौड़।"<sup>23</sup>

उपन्यास के कथ्य का आरम्भ भारतीय युवा वर्ग के सुशिक्षित परिवार के मानसिक द्वंद्व, से संचालित होता है। यह उपन्यास इलाहाबाद की पृष्ठभूमि पर रचा गया है जिसमें मध्यवर्गीय परिवार किस प्रकार आधुनिकता उत्तर आधुनिकता, बाजारवाद व भ्रूण्डलीकरण की ओर आकर्षित होता है जिसमें परिवार को महत्व न देकर मनुष्य व्यावसायिकता की ओर अग्रसर हो रहा है इसका यथार्थ चित्रण दिखाई पड़ता है। पवन और सघन जैसे दो पात्रों को आधुनिक युवा पीढ़ी को संबोधित करते हुए ममताजी ने बाजार तंत्र और उपभोक्तावाद को अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। पवन और सघन के माता-पिता पुरातन परम्परावादी रूढ़िग्रस्त मान्यताओं से चित्रित पात्र नहीं अपितु इक्कीसवीं सदी में दोनों नौकरीपेशा हैं। राकेश संस्कारबद्ध आदर्शवादी पुरुष है। रेखा और राकेश का बड़ा बेटा पवन एम.बी.ए. पास कर अपनी उच्च शिक्षा की योग्यता के आधार पर एल.पी.जी. गैस कंपनी में मार्केटिंग विभाग में नौकरी प्राप्त कर लेता है। पिता के आदर्शों पर चलकर पवन माँ से भी भावनात्मक स्तर से जुड़ा है। पुत्र और माँ संबंध को संबोधित कर ममता कालिया लिखती है कि "उसका अपनी माँ से बेहद जीवंत रिश्ता रहा है फोन जैसे यंत्र बीच में डालकर सिर्फ उस तक पहुँचा जा सकता है, उसे पुनर्सृजित नहीं किया जा सकता। वह माँ के चेहरे की एक-एक जुम्बिश देखना चाहता है। पिता हँसते हुए अद्भुत सुंदर लगते हैं। इतनी दूर बैठकर पवन को लगता है माता-पिता और उसके भाई की यह सबसे सुंदर तस्वीर है।"<sup>24</sup>

उपन्यास में सघन व पवन दोनों व्यावसायिकता की ओर आकृष्ट होते हैं। पवन का परिचय 'स्टैला' नाम की लड़की से होता है जो किमैलो एंटरप्राइज कार्पोरेशन में बराबर की पार्टनर थी और उसकी कंपनी गुर्जर गैस कम्पनी को कम्प्यूटर सप्लाई करती थी। स्टैला चौबीस वर्षीय दुबली-पतली हँसमुख लड़की के प्रति पवन आकर्षित होता है और माता-पिता की अनुमति के बिना व समाज की मर्यादा का निर्वाह किए बगैर वह 'स्टैला' से विवाह-तिथि तय कर लेता है। रेखा-राकेश ने प्रेम विवाह किया परंतु वे पवन के इस प्रसंग से आहत होते हैं। पवन की माँ चाहती है कि स्त्री में सभी स्त्रियुचित गुण होने चाहिए किंतु 'स्टैला' जितनी कम्प्यूटर के क्षेत्र में पारंगत थी रसोई व घर के काम में उतनी ही निष्क्रिय। एक रोज वह रेखा की सभी रचनाएँ फ्लॉपी में डालकर उसका मन मोह लेती है।

इस उपन्यास में पुरानी पीढ़ी या नयी पीढ़ी के मध्य संबंधों में विचारों में टकराव व संघर्ष को दिखाया गया है। सघन भी पवन के कदमों पर चलता है और ताड़वान की कंपनी में नौकरी का निर्णय कर लेता है। इस उपन्यास में माता-पिता के उत्तरदायित्व के प्रति उदासीन दोनों ही पुत्र भूमण्डलीकरण व्यावसायिक जगत में आकृष्ट होते हैं तथा अपने पारिवारिक संबंधों की अवहेलना करता है और संबंधों का नष्ट कर देते हैं उपन्यास में ममता कालिया की संवेदनापूर्ण अभिव्यक्ति चित्रित है। "रेखा को लगा सघन में से पवन का चेहरा झाँक रहा है। वही महाजनी प्रस्ताव और प्रसंग। उसे यह भी लगा कि जवान बेटे ने एक मिनट को नहीं सोचा कि माता-पिता यहाँ किसके सहारे जिंदा रहेंगे।"<sup>25</sup>

इस प्रकार इस उपन्यास के माध्यम से ममता कालिया ने आधुनिक मनुष्य की दौड़ का यथार्थवादी चित्रण किया है जो औद्योगिक जगत् में आजीविका हेतु भावनात्मक स्तर पर रिश्तों को रोंदते हैं। इस उपन्यास में आधुनिक नारी रेखा और स्टैला के माध्यम से वर्तमान नष्ट होते संबंधों चित्रण किया है। हमारा समाज आज इस दौराहे पर खड़ा है कि जहाँ मनुष्य को बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ आकर्षित करती हैं वहीं दूसरी तरफ समाज संस्कृति की गहरी खाई है। इसके माध्यम से पुरानी पीढ़ी का नयी पीढ़ी के प्रति अविश्वास असुरक्षा की भावना व जीवन अस्तित्व का चित्रण किया है।

## (7) दुःखम-सुखम - 2009

महिला लेखन की सशक्त हस्ताक्षर ममता कालिया का यह उपन्यास 2009 में प्रकाशित होता है। इस उपन्यास की कथावस्तु का थोड़ा आभास ममता कालिया के जीवन से संबंधित प्रतीत होता है। इसमें यशस्वी कथाकार ममता कालिया ने तीन पीढ़ियों के मध्य सक्रिय समय, समाहित एवं समाज की विशिष्ट गाथा को चित्रित किया है। यह उपन्यास जीवन के जटिल यथार्थ में गुँथा हुआ तीन पीढ़ियों का आख्यान है। इस उपन्यास का ताना-बाना ममता जी ने मथुरा, मुम्बई और दिल्ली जैसे शहरों के इर्द-गिर्द बुना है। अलग-अलग शहरों से गुजरती रचना प्रक्रिया में ममताजी ने मध्यमवर्गीय परिवार के समस्त जीवन की जटिलताओं को यथार्थ वाणी दी है। इस उपन्यास के संबंध में सुशील सिद्धार्थ का कथन है कि “लेखिका का जीवनानुभव अपनी सर्वोत्तम रचनाशीलता के साथ ‘दुःखम-सुखम’ में आकार पा सका है। अमृतलाल नागर के उपन्यास ‘खंजन-नयन’ के बाद ब्रज भाषा की मिठास, टीस और अर्थ व्याप्ति का सबसे सार्थक उपयोग इस उपन्यास में हुआ है।”<sup>26</sup> उपन्यास की कथा का आरंभ मथुरा में रहने वाले मध्यमवर्गीय परिवार के लाला नत्थीमल व उनकी पत्नी विद्यावती के घर पोती के जन्म से होता है। लाला नत्थीमल आढ़त का व्यापार करता है। नत्थीमल के इकलौता बेटा कविमोहन और बहु इन्दु हैं जिनके यह दूसरी संतान हुई थी। कविमोहन के पिता चाहते थे कि बेटा घर का आढ़त का व्यापार संभाले किंतु कवि मोहन की रुचि पढ़ने में होने के कारण वह विद्रोह करके एम.ए. करने घर से भाग जाता है। कविमोहन पत्नी इन्दु को अपने माता-पिता व बहन के पास छोड़ शहर चला जाता है। इन्दु के प्रति घर वालों का रूखा व्यवहार देखकर कविमोहन एम.ए. करने के पश्चात् अपनी पत्नी व उसकी दोनों बेटियों को साथ ले जाता है। एम.ए. करने के बाद कविमोहन को मथुरा के चम्पा अग्रवाल में नौकरी मिल जाती है। नौकरी मिलने के कारण नत्थीमल को खुशी होती है, उसकी खुशी की स्थिति लेखिका ममता कालिया ने इन शब्दों में व्यक्त की है कि “कविमोहन को जब यहाँ पढ़ाने के लिए कच्ची नौकरी मिली घर में खुशी की लहर फैल गयी बहुत दिनों बाद लाला नत्थीमल के चेहरे पर भी हँसी आयी। उनकी छाती चौड़ी हो गयी। गली-मुहल्ले में उनकी इज्जत बढ़ी। लड़का मास्टरसाब बन गया।”<sup>27</sup>

ममता कालिया ने दूसरी पीढ़ी का आख्यान को खण्ड दो में दर्शाया है कविमोहन अपनी दोनों बेटियों प्रतिभा व मनीषा के साथ दिल्ली में रहता है और कविमोहन की दोनों बेटियाँ किशोरावस्था में पहुँच गयी है। उसकी पत्नी दिल्ली जैसे शहर में रहकर आधुनिक रूप से रहने लग गयी है। प्रतिभा सभी गुणों में सम्पन्न नृत्य, गीत, पढ़ाई व सुंदरता में अक्वल थी तो वही मनीषा औसत रंग रूप व दुबली देह वाली मनीषा 15 वर्ष की होने पर भी 11 वर्ष की लगती थी। प्रतिभा के पुरस्कारों की घर में भरमार लगी हुई थी। घर से भी सभी प्रतिभा को ज्यादा तवज्जों देते थे मनीषा अपनी बहन को उसके स्पीच और ड्रामा के डायलॉग याद करवाती थी। एक बार प्रतिभा के दोस्तों ने उसकी छोटी बहन का मजाक उड़ाया इस पर प्रतिभा ने उनको कुछ नहीं बोला बल्कि हँसने लगी जिससे मनीषा के हृदय पर गहरी चोट पहुँचती है। परिवार की मानसिकता इस प्रकार अभिव्यक्त होती है। “घर पहुँचकर मनीषा ने किसी से कुछ नहीं कहा पर रूलाई एक अन्धड़ की तरह मन में घुमड़ रही थी। किसी को उसकी तरफ देखने की फुर्सत नहीं थी। कोई प्रतिभा की पीठ ठोक रहा था कोई उसका मुँह चूम रहा था। पापा ने सगर्व दीदी से कहा यू आर माय ब्रेवी डॉक्टर, शाबाश।”<sup>28</sup>

प्रतिभा कुछ समय पश्चात मॉडल बनने का सपना लेकर घर से भाग जाती है किंतु प्रतिभा के सामने जीवन का यथार्थ जल्द ही सामने आ जाता है। मनीषा पढ़ाई में अक्वल आती है उसकी अपने पिता की तरह साहित्य में रुचि होती है।

उपन्यास के कथ्य में गांधीवाद का प्रभाव तथा स्वतंत्रता के पूर्व संघर्ष दिखाई देता है। जिसमें विद्यावती भी स्वतंत्रता संघर्ष से प्रभावित होती है उसमें भागीदार बनती है। मथुरा, दिल्ली, मुम्बई जैसे विभिन्न शहरों में विस्तार लाकर ममता कालिया ने वहाँ का परिदृश्य कथा में उभारा है। तीन पीढ़ियों की नारियों का आख्यान प्रस्तुत कर उन्होंने ब्रज भाषा की मिठास, स्वतंत्रता पूर्व तथा बाद के परिदृश्य को सम्मिलित किया है।

## (8) अँधेरे का ताला - 2009

यह उपन्यास ममता कालिया ने अपने चिर-परिचित परिवेश, कॉलेज की अध्यापिकाओं, छात्राओं तथा अन्य कर्मचारियों की मानसिकता को चित्रित करने का प्रयास किया है। यह उपन्यास 2009 में प्रकाशित है। जिसका प्रारम्भ वे निराला की ‘अँधेरे का ताला’ कविता की पंक्तियों को सामने रखते हुए ‘अँधेरे का ताला’ खोलने

वाली की असलियत को अपने विनोदपूर्ण व्यंग्य भरे शब्दों में व्यक्त करती है। वर्तमान भारतीय सामाजिक परिदृश्य में सुशिक्षित कार्यरत नारी के बदलते परिवेश का सजीव चित्रण इसमें किया गया है। इस उपन्यास में ममता कालिया ने वर्तमान समय में व्याप्त शिक्षा प्रणाली, कॉलेज शिक्षा की मानसिकता व कॉलेज भवन में होने वाले कार्यों का यथार्थ चित्रण इसमें प्रस्तुत किया है। कथन दृष्टव्य है कि “अँधेरे का ताला उपन्यास में ममता ने अपने चिर-परिचित परिवेश कॉलेज की अध्यापिकाओं छात्राओं और अन्य कर्मचारियों के जीवन को चित्रित किया है निराला की प्रसिद्ध कविता की पंक्तियों को सामने रखते हुए ममता ने अँधेरे का ताला खोलने की असलियत को अपने सुपरिचित व्यंग्य विनोद भरी शैली में उकेरा है।”<sup>29</sup> उपन्यास का आरंभ कॉलेज परिदृश्य में नायिका कॉलेज की प्रधान अध्यापिका नंदिता के प्रभावशाली व्यक्तित्व के व्याख्यान से होता है। नंदिता चक्रवर्ती जो अपने नियमों की पक्की व अनुशासन प्रिय अध्यापिका है। नंदिता का कॉलेज में रूतबा व सम्मान है वह छात्राओं को नैतिक शिक्षा का उपदेश भी देती है। नंदिता चक्रवर्ती को कॉलेज में सब बड़ी दीदी कहकर संबोधित करते हैं। नंदिता अपने सभी कार्यों को पूर्ण ईमानदारी के साथ करती है तथा कॉलेज की अध्यापिकाओं और कर्मचारियों को भी इसके लिए समय-समय पर उपदेश देती रहती है। जुलाई माह में प्रवेश हेतु जमघट लगा रहता है, एक दिन नंदिता के दफ्तर में एक लड़का अपनी बहन का प्रवेश करवाने हेतु आता है और नंदिता से बहस करने लगता है, किन्हीं कारणों से मना करने पर वह लड़का नंदिता के सिर पर पेपरवेट से मारकर भाग जाता है। नंदिता का सिर व चेहरा खून से लथपथ हो जाता है।

खून से सनी नंदिता शारीरिक पीड़ा की अपेक्षा अपने अपमान से आहत होती है। नंदिता की मनोदशा का चित्रण ममता कालिया निम्न शब्दों में प्रकट करती है कि “नंदिता के अंदर क्रोध का प्रचण्ड आवेग था। उसके ही दफ्तर में, उसके ही पेपरवेट से हमला हो गया और वह कुछ नहीं कर सकी। कोई कुछ नहीं कर सका। हमलावर आराम से भाग निकला, कोई उसके पीछे भाग तक नहीं सका, उसकी गलती सिर्फ इतनी थी कि वह यूनिवर्सिटी के बनाये गये नियमों का अनुपालन कर रही थी।”<sup>30</sup>

इस प्रकार इस अप्रत्याशित घटना ने नंदिता को अंदर तक झकझोर दिया। इससे स्पष्ट रूप यथार्थ दिखाई पड़ता है कि किस प्रकार नियमों का पालन करने के बावजूद उस अशिक्षित और कुत्सित समाज के द्वारा नंदिता को गहरा आघात दिया।

वर्तमान में शिक्षा को व्यापार का क्षेत्र बना दिया है जिसमें सभी इसे केवल पैसा कमाने का जरिया मात्र समझते हैं। शिक्षा के प्रति कोई अपना काम ईमानदारी से नहीं करना चाहता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली को दूषित कर रहे भ्रष्ट प्रबंधक नंदिता को कॉलेज में मौलिक जरूरत 'शौचालय' बनाने से इंकार कर देता है। कॉलेज में महिलाओं, छात्राओं को इसका कठिन रूप से सामना करना पड़ता है। इस उपन्यास में ममता कालिया ने समाज में व्याप्त चोरी डकैती व पुलिस प्रशासन की शिथिलता के यथार्थ को भी चित्रित करती है एक बार नंदिता अपनी सहेली के साथ दशहरे के मौके पर बाजार जाती है तभी दो लड़के बाईक पर सवार होकर नंदिता की गोद से पर्स चुरा ले जाते हैं थाने पर जाने पर वहाँ कोई नंदिता की रिपोर्ट लिखने को तैयार नहीं होते इस संबंध में कथन है कि “यह बताने पर कि पर्स में साढ़े सात सौ रुपये घर की चाबियाँ, पेन, लिपिस्टिक और फोन डायरी थी। थानाध्यक्ष ने बड़ी हिकारत से कहा बस? और साढ़े सात सौ रूपल्ली के लिए आप थाने चली आयी। नंदिता की नजर में नुकसान से भी बड़ा यह तथ्य कि अपराध पेशेवर चोरों द्वारा नहीं बल्कि छात्रों द्वारा किया गया था।”<sup>31</sup> इस प्रकार समाज में छात्रों द्वारा अपनी गलत आदतों को पूरा करने के लिए चोरी डकैती जैसे कार्यों में लिप्त होने का यथार्थ चित्रण किया गया है।

कॉलेज परिसर में मानसून के दिनों में पानी भर जाता है और किस प्रकार एक कॉलेज, कॉलेज से तालाब बन जाता है जिसमें कोई पैदल नहीं चल सकता। सभी कर्मचारियों को, छात्राओं को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

इस प्रकार इस उपन्यास में भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली, प्रबंधकों की असलियत उजागर करते हुए कॉलेज की अध्यापिकाओं, छात्राओं व अन्य कर्मचारियों के जीवन का वास्तविक यथार्थ का सूक्ष्मतापूर्वक चित्रण किया है। शिक्षा प्रणाली किस प्रकार उथल-पुथल का शिकार है इसका दस्तावेजी चित्रण ममता कालिया ने किया है।

## **(9) सपनों की होम डिलिवरी - 2016**

ममता कालिया का यह उपन्यास 2016 में प्रकाशित होता है। 21वीं सदी में लिखा गया यह उपन्यास वर्तमान आधुनिक जगत में पुरुष-स्त्री अर्थात् पति-पत्नी के मध्य संबंधों के बीच एक संतान के, एक बच्चे के खोते हुए बचपन को दर्शाता है। इस उपन्यास में बिगड़ते दाम्पत्य जीवन, तलाकशुदा स्त्री और कामकाजी स्त्री-पुरुष की मानसिकता का यथार्थ चित्रण किया गया है। ममता कालिया ने इस उपन्यास का

कथानक उनके सामने घटने वाली अप्रत्याशित घटना को आधार बनाकर उसे वर्तमान जगत में व्याप्त स्त्री-पुरुष संबंधों के इर्द-गिर्द बुना है। इस उपन्यास में एक मशहूर पाक कला विशेषज्ञ व उसके पति के झगड़े की सरेआम चर्चा का चित्रण उन्होंने अपने कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जिसमें पति द्वारा पत्नी का गला दबाने की तस्वीर कैमरे में कैद कर ली जाती है। इस समय ममता कालिया को धूमिल की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं कि-

“लोहे का स्वाद

लोहार से मत पूछो

उस घोड़े से पूछो

जिसके मुँह में लगाम है”<sup>32</sup>

उपन्यास में नायिका मशहूर पाक कला विशेषज्ञ ‘रूचि’ है तथा नायक प्रसिद्ध पत्रकार सर्वेश नारंग है। सर्वेश व रूचि की पहचान, सर्वेश द्वारा ‘रूचि’ की बनाई डिश को गरिष्ठ, असुपाच्य बताने से प्रारंभ होती है और भोजन को किस प्रकार हल्का स्वादिष्ट बनाया जाए इसके बारे में सर्वेश नारंग रूचि के भोजन के खिलाफ प्रस्तुत करता है। सर्वेश को भोजन में अपनी कोई दिलचस्पी नहीं वह तो इस जरिए रूचि तक पहुँचना चाहता है और पहुँच जाता है। रूचि और सर्वेश शादीशुदा है किंतु दोनों अपने-अपने पति व पत्नी के साथ नहीं रहते। रूचि की शादी एक प्रभाकर नाम के आदमी से होती है जो नशेड़ी है, कामचोर है, उनके एक लड़का है वह भी अपने पापा को अधिक प्रेम करता है, प्रभाकर आए दिन रूचि के साथ मारपीट झगड़ा करता है इस उपन्यास में रूचि की मानसिकता इस प्रकार दृष्टिगत होती है। जब प्रभाकर उस पर किस प्रकार प्रहार करता है। “प्रभाकर को जब प्रचण्ड क्रोध चढ़ता है तो वह झाड़ू, चाकू डण्डे किसी भी चीज से उस पर प्रहार करता है।”<sup>33</sup>

‘रूचि’ जब अपने बेटे को गलत करने के लिए रोकती है तो प्रभाकर अपने बेटे का साथ देता है और ‘रूचि’ पर चिल्लाता है। इस प्रकार एक बार रूचि अपने पुत्र को स्कूल छोड़ने जाती है तो प्रभाकर पीछे से अपनी काम वाली बाई के साथ जबरदस्ती करने की कोशिश करता है इस घटना से आहत होकर ‘रूचि’ घर छोड़कर अपने पिता के घर चली जाती है। वहाँ उसके पिता उसे ‘क’ चैनल और ‘म’ चैनल में नौकरी दिलवा देते हैं। इस तरह धीरे-धीरे ‘रूचि’ अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ बन जाती है और मशहूर हो जाती है। उपन्यास के शीर्षक को सार्थक करते शब्द “अखबारों में व्यंजनों

के साथ उसकी रंगीन मोहक तस्वीर छपती गयी, एक नहीं दो-दो व्यंजनों की होम डिलीवरी हो रही हो इन सब बातों से रुचि का अहम् तुष्ट होता है।”<sup>34</sup>

इस उपन्यास में सर्वेश नारंग व रुचि का मिलना जुलना प्रारंभ हो जाता है ‘रुचि’ से शादी करना चाहता है और एक-दूसरे के साथ रहना प्रारंभ कर देते हैं, इससे ‘रुचि’ का अकेलापन कुछ कम होता है, दोनों अपने-अपने काम को शिद्दत से करते हैं।

इस उपन्यास में तलाकशुदा स्त्री, अकेलेपन की शिकार लड़कियों का यथार्थ चित्रण किया गया है और एक शहर में अकेली रहने वाली लड़की की मानसिकता को ममता कालिया इस प्रकार व्यक्त करती है कि “शहर में अकेली जीने वाली लड़कियाँ आखिर क्या करें, वे कहाँ, किससे, किस हद तक सामाजिक संपर्क बनाए, कामकाजी दुनिया में यह मुमकिन नहीं कि महिलाएँ सिर्फ महिलाओं के संपर्क में रहे और पुरुष सिर्फ पुरुषों के।”<sup>35</sup> इस प्रकार उपन्यास में नये जमाने में करवट बदलते रिश्तों को केंद्र में रखकर उपन्यास लिखा गया है।

उपन्यास में नायिका रुचि का एक लड़का है वही सर्वेश का भी एक लड़का है किंतु रुचि शुरु में सर्वेश से अपना एक बेटा होने की बात छुपाती है। दूसरी तरफ सर्वेश का बेटा अपने माता-पिता के झगड़े और दोस्तों की संगत में आकर नशे का शिकार हो जाता है इस उपन्यास में यह चित्रित किया गया है कि किस प्रकार माता-पिता की लड़ाई में एक बच्चे के बचपन का गला घुटता है, उसे अच्छी परवरिश नहीं मिल पाती और गलत आदतों का शिकार होकर अपने जीवन से हाथ धो बैठता है। इसी प्रकार ‘रुचि’ का बेटा भी गलत आदतों का शिकार हो जाता है और एक शाम वह सर्वेश को नशे की हालत में झुग्गी-झोंपड़ी में मिलता है, सर्वेश उसे देखकर अपने बेटे को याद करके दुःखी होता है और उस लड़के को घर उठा लाता है जहाँ सर्वेश की माँ उसमें अपने पोते की छवि देखकर उसे खाना खिलाती है, गगन कुछ भी नहीं खाता और चुपचाप बैठा रहता है। रुचि को देखकर गगन अपनी माँ से माफी माँगता है। इस प्रकार इस उपन्यास में पति-पत्नी के झगड़े, तलाकशुदा स्त्री की स्थिति व माता-पिता के बीच छोटे बच्चों का बचपन के खो जाने का यथार्थ चित्रण किया गया है। कथाकार ममता कालिया का कहना है कि “रिश्ता चाहे पति-पत्नी का हो, माता-पिता को हो और संतान का हो या प्रेमी-प्रमिका का ईमानदारी से देखे तो हर रिश्ता नए वक्त के साथ ताल बिठाने की कोशिश कर रहा है। दोष किसी का नहीं, शायद हर युग अपने सामाजिक संजाल को ऐसे ही बदलता होगा।”<sup>36</sup>

इस प्रकार लेखिका इस उपन्यास में समाज के बदलते रिश्तों की पहचान को बचाने और दूसरी तरफ वयस्क होती वैयक्तिकता जिसमें सभी को निजी स्पेस चाहिए। आज के युग में कोई व्यक्ति अपनी निजी जिंदगी में दूसरे का हस्तक्षेप पसंद नहीं करता है इसी का यथार्थ चित्रण किया गया है।

## **(10) कल्चर वल्चर - 2020**

यह उपन्यास ममता कालिया का नवीनतम उपन्यास है जो कलकत्ता की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इसका प्रकाशन 2020 में होता है। जिसमें कलकत्ता शहर में पनपने वाली हर नई संस्था का चित्रण यथार्थ रूप में ममता कालिया प्रस्तुत करती है। इस प्रकार उभरने वाली संस्थाओं से लेखिका को थोड़ा आघात लगता है कि किस प्रकार संस्थाएँ आजकल कारोबार बनती जा रही हैं, ममता कालिया कहती है कि “जब भी कहीं कोई नई संस्था उठ खड़ी होती और कला, साहित्य, संस्कृति का राग अलापती हुई अपनी पारदर्शिता का दम भरती है, मुझे उनका नाट्य दिखाई देने लगता है, कला, साहित्य व संस्कृति आज सरोकार न रहकर कारोबार बनते जा रहे हैं और इसके प्रबंधक कारोबारी।”<sup>37</sup>

‘कल्चर-वल्चर’ उपन्यास में वर्तमान पनपने वाली छोटी-मोटी संस्थाओं का चित्रण किया गया है। उपन्यास के केंद्र में कलकत्ता का ‘साहित्य संस्कृति भवन’ और उसकी प्रधानमंत्री सुषमा अग्रवाल हैं जिसके इर्द-गिर्द इस उपन्यास की कथावस्तु को विस्तार दिया गया है। साहित्य संस्कृति भवन के संस्थापक अज्युध्यानंद जी और मनोरथ थे जो दिवंगत हो गए ये मारवाड़ी व्यापारी थे जिन्होंने भारतीय भाषाओं के विकास विस्तार के लिए अनेक ऐसे छोटे-मोटे भवन खोले थे इसी में एक ‘साहित्य संस्कृति भवन’ था जिसकी प्रधानमंत्री सुषमा अग्रवाल थी। उपन्यास के बीच-बीच में अनेक छोटी-छोटी कथाओं को विस्तार देकर उपन्यास को गति प्रदान की गई है। एक तरफ साहित्य संस्कृति भवन के इर्द-गिर्द कथा का विस्तार है इस भवन का उद्देश्य है भारतीय भाषाओं का विकास व प्रचार-प्रसार और विशिष्ट रूप से हिंदी व संस्कृत को आगे बढ़ाना। भवन में एक ही व्यक्ति का वर्चस्व होने से अन्य कर्मचारी निष्क्रिय रूप में रहते हैं और हाँ में हाँ मिलाते रहते हैं। सुषमा अग्रवाल के कहने को तो सचिव का पद, निदेशक का पद और और अन्य सभी पदों पर व्यक्ति नियुक्त है पर शक्ति केवल सुषमा अग्रवाल के पास है जो भी करना हो उनकी अनुमति के बिना इस भवन का कोई भी काम नहीं होता। जो काम निदेशक को करना है, वह काम भी वह स्वयं

करती है। साहित्य संस्कृति भवन के निदेशक-नवीन मिश्र है केवल नाममात्र के निदेशक, कुछ काम तो उनको बिना बताए गए सम्पन्न हो जाते हैं। 'साहित्य संस्कृति भवन' में कोई नियमों का पालन नहीं होता जैसे उपन्यास में कथन है कि "भवन के अध्यक्ष माहेश्वरी जी और मंत्री सुषमा जी ने भवन की कार्यकारिणी में कहा बहुत सी बातें समयप्रवाह को देखकर तय होनी होती हैं। यदि भवन ने वज्र-नियम बना लिए तो हाथ में केवल मात्र नियम ही रह जाएंगे।"<sup>38</sup>

साहित्य संस्कृति भवन के अध्यक्ष माहेश्वरी जी हैं, निदेशक-नवीन मिश्र हैं, पुस्तकालय अध्यक्ष-तारकेश्वर जी। साहित्य संस्कृति भवन में सुषमा का बोलबाला है। इस उपन्यास के माध्यम से ममता कालिया भ्रष्टाचार, राजनीति, जैसे विषयों को उठाया है कि किस प्रकार एक साहित्य संस्कृति भवन की स्थापना भाषा के प्रचार व संस्कृति के विकास के लिए की गई किंतु इसे प्राइवेट कंपनी में तब्दील किया जा रहा है इसे व्यवसाय की संस्था बना दिया जाता जहाँ अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की जा रही है और संस्कृत भाषा व हिंदी भाषा की अवहेलना की जा रही है जब नवीन मिश्र जी संस्कृत भाषा पर कार्यक्रम करवाते हैं तो किस प्रकार षड़यंत्र रचकर वे उन्हें ध्वस्त करती हैं उपन्यास में दृष्टव्य है कि "नवीन को लगा, घपलों और घोटालों के लिए जितनी उसकी घ्राण-शक्ति प्रबल है, उतनी ही प्रबल दूसरे लोगों की पाचनशक्ति। एक कार्यक्रम की हत्या कर दी गई थी कार्यालय ऐसे चल रहा था जैसे कुछ हुआ ही नहीं।"<sup>39</sup>

इस प्रकार 'साहित्य संस्कृति भवन' के कर्मचारी मंत्री से परेशान हैं किंतु किसी की हिम्मत नहीं की कोई बोल दे। उपन्यास के माध्यम से ममता कालिया ने आज के मानव की मरती हुई संवेदना को भी दिखाया है। एक कर्मचारी जो अपना कार्य पूर्ण ईमानदारी के साथ करता है किंतु उसके द्वारा मंत्री को प्रणाम न करना और स्पष्ट जवाब देना इतना अखरता है कि उसे बर्खास्त कर दिया जाता है और संवेदना उस समय मरती दिखार्द पड़ती है जब अपनी बर्खास्तगी का लेटर पाकर उसे 'दिल का दौरा' पड़ता है और मंत्री सुषमा अग्रवाल के ये संवेदनाहीन वाक्य "बोस बाबू ने मंत्री तक यह खबर पहुँचाई तो सुषमा जी ने कहा "बोस दा आप जरा चैरिटी अस्पताल जाकर पता लगाओ, क्या बात है। खाली नौटंकी कर रहा है या वाकई बीमार है और ये पुष्पगुच्छ जरूर ले जाना।"<sup>40</sup>

इस प्रकार 'साहित्य संस्कृति भवन' के कर्मचारी परेशान होकर फकीरचंद जो अज्युध्यानंद जी का छोटा बेटा है के पास जाकर सारी स्थिति स्पष्ट करते हैं और मंत्री के खिलाफ एक जुट होकर आंदोलन करते हैं।

उपन्यास में कुछ झलक दाम्पत्य जीवन पर डाली गई है। जिसमें कल्याण घोष पति और उसकी पत्नी उमा घोष है। कल्याण घोष एक बैंक में काम करता है। जब उनके कई वर्षों तक बच्चा नहीं होता है तो कल्याण घोष के मित्र उस पर तंज कसते हैं। उधर उमा घोष माँ बनना चाहती है और अपनी सारी जाँच डॉक्टर से करवा ली किंतु कुछ कमी नहीं है। जब डॉक्टर कल्याण घोष को अपनी जाँच करवाने के लिए कहता है तो उसके पुरुषत्व को गहरा आघात पहुँचता है और वह अपनी पत्नी में ही कमी निकालता है उपन्यास में कथन द्रष्टव्य है। “अपने मेडिकल परीक्षण का जिक्र मात्र सुनकर कल्याण भन्ना गया डॉक्टर साहब आपने ऐसा सोचा भी कैसे कि मेरे अंदर कोई खराबी हो सकती है। मैं कितना जबरदस्त हूँ यह मेरी बीवी से पूछिए। उसकी फिर से जाँच कीजिए।”<sup>41</sup> इस प्रकार ममता जी ने पुरुष की संकीर्ण सोच का यथार्थ चित्रण किया है कि पुरुष कभी भी स्वयं में कमी हो, यह सुनना पसंद नहीं करता। डॉक्टर इलाज से दोनों के बच्चा हो जाता है किंतु कल्याण घोष अपनी पत्नी पर लांछन लगाता है और अपने बच्चे और पत्नी के साथ अत्याचार करता है एक बार उसकी बेटी अपने पिता से परेशान होकर आत्मदाह कर लेती है किंतु फिर भी कल्याण घोष का पितृत्व नहीं जागता और वह निष्क्रिय बना रहता है।

इस उपन्यास में ममता कालिया ने समाज व्याप्त भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, साहित्य संस्कृति की स्थिति और भारतीय समाज में व्याप्त संवेदनहीनता का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

## 2.2 हिंदी कहानी और ममता कालिया यात्रा

हिंदी साहित्य संसार को अपने रचना लेखन से समृद्ध करने वाली 'ममता कालिया' का साठोत्तरी हिंदी कथा-साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आपने न केवल उपन्यास लिखे अपितु कहानी विधा से भी हिंदी साहित्य को सुशोभित किया है। आपकी कहानियाँ विभिन्न आयामों को छूती हुई समाज के यथार्थ को चित्रित करती हैं। अपने कहानी लेखन के माध्यम से समाज में व्याप्त नारी संघर्ष, संत्रास, मध्यम वर्ग का चित्रण, आधुनिक जीवन की भाग-दौड़ कामकाजी महिलाओं की समस्या व आधुनिक यांत्रिक मानव जीवन का चित्र अपनी कहानियों में उकेरा है। आपकी

कहानियों में अधिकतर नारी जीवन ही केन्द्र बिन्दु रहा है। आपने अनेक कहानी संग्रहों का लेखन व प्रकाशन किया है। साहित्य की प्रत्येक विधा पर आपने अपनी लेखनी चलाई है।

## **कहानी संग्रह**

1. छुटकारा - 1969
2. एक अदद औरत - 1975
3. सीट नंबर छह - 1976
4. प्रतिदिन - 1983
5. उसका यौवन - 1985
6. जाँच अभी जारी है - 1989
7. बोलने वाली औरत - 1998
8. मुखौटा - 2003
9. निर्मोही - 2004
10. थिएटर रोड के कौवे - 2006
11. पच्चीस साल की लड़की - 2006
12. खुशकिस्मत - 2010
13. काके दी हट्टी - 2010
14. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - 2013

### **(1) छुटकारा - 1969**

‘छुटकारा’ कहानी संग्रह ममता कालिया का प्रथम कहानी संग्रह है जिसका प्रकाशन 1969 में हुआ। जबकि इसका चतुर्थ संस्करण 1983 में प्रकाशित हुआ। ममता कालिया भूमिका में कहती है कि “मेरी पहली कहानी ‘छुटकारा’ में कच्ची धान की बाली की गंध है लेकिन भावुकता नहीं। सन् साठ के बाद के लेखकों की तरह मैंने

भी भावुकता का बोझ उतार फेंक कर ही कहानी की दुनिया में कदम रखा।”<sup>42</sup> नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर कर इस कहानी संग्रह में पाश्चात्य सभ्यता को दर्शाने तथा अनैतिक संबंधों का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाया है। ‘बड़े दिन की पूर्व साँझ’ ‘अपत्नी’ पिछले दिनों का अँधेरा में इन्हीं समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। कहानी ‘छुटकारा’ में समय के साथ दोस्ती के परिवर्तन तथा रिश्तों में आयी दरार का यथार्थ रूप से मार्मिक चित्रण किया गया है। ‘दो जरूरी चेहरे’ नामक कहानी में प्रेम और परिवार के बीच संबंधों के मध्य नारी की संवेदनाओं को प्रस्तुत किया है। नारी जीवन की त्रासदी को अपने सशक्त रूप में अभिव्यक्त करने में समर्थ ममता कालिया का ‘छुटकारा’ कहानी संग्रह ने हिंदी साहित्य में विशिष्ट ख्याति अर्जित की है। ‘अपत्नी’ कहानी पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव लक्षित है जहाँ पात्र विवाहित न होते हुए भी दम्पती की तरह रहते हैं जो आज भी प्रासंगिक है। आधुनिक जीवन में स्त्री-पुरुष का इतना पतन हो गया है कि वे अविवाहित होते हुए भी एक-दूसरे के साथ जीवन व्यतीत करने लगते हैं यहाँ भारतीय समाज में पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव को उजागर करने का प्रयास किया है।

## (2) एक अदद औरत - 1975

ममता कालिया का दूसरा कहानी संग्रह ‘एक अदद औरत’ जिसका प्रकाशन 1975 में हुआ। नारी मन की कुण्ठाओं को दर्शाने वाली कहानी ‘एक अदद औरत’ में नायिका के द्वंद्व को अभिव्यक्त किया गया है इसी प्रकार ‘राएवाली’ कहानी में परिवार के साथ-साथ सांसारिक जीवन में भी प्रताड़ित होने वाली नारी का चित्रण किया गया है जहाँ वह ‘राए’ की होने के कारण उसे ‘राएवाली’ कहना प्रारंभ कर देते हैं। अपने पति से अधिक पढ़ी-लिखी होने बावजूद उसे परिवार की लताड़ सुननी पड़ती है। परिवार द्वारा त्रस्त नारी का अस्तित्व संघर्ष का चित्रण किया गया है। ‘तस्की को हम न रोये’, ‘खाली होता हुआ घर’ कहानियों में ममता कालिया ने नारी के तनावग्रस्त जीवन को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। ‘बसंत सिर्फ एक तारीख’ इस कहानी में ममता कालिया ने आधुनिक काल में मानव की प्रकृति के प्रति निष्क्रियता को दर्शाया है। आधुनिक काल में मनुष्य इतना व्यस्त है कि वह ऋतुओं का भी आनंद नहीं लेता और यांत्रिक जीवन जीता चला जाता है।

### (3) सीट नम्बर छह - 1976

सीट नंबर छह कहानी संग्रह में ममता कालिया की 13 कहानियों का संकलन है। इस कहानी संग्रह में ममताजी ने पारिवारिक समस्याओं को सूक्ष्मता से दर्शाकर नारी-जीवन की विभिन्न मनोदशाओं की अभिव्यक्ति की है। ममता कालिया ने नारी के विविध पक्षों का उद्घाटन इस कहानी संग्रह में किया है। फैमिदा बीजापुरे कहती है कि “आज के समाज में अविवाहित, प्रौढ़ नौकरीपेशा नारी की स्थिति क्या है यह बताने के लिए उन्होंने ‘सीट नंबर छह’ जैसी कहानी लिखी है।”<sup>43</sup> ‘उपलब्धि’, ‘पीली लड़की’, ‘लगभग प्रेमिका’, ‘प्यार के बाद’ आदि कहानियों में प्रेम तथा पारिवारिक तनाव के मध्य स्त्री की मनोदशा का चित्रण किया गया है। ‘बातचीत बेकार है’ कहानी में अकेली स्त्री की मनःस्थिति का मार्मिक चित्रण समादृत है। ‘फर्क नहीं’ कहानी आत्म-कथात्मक शैली में लिखी गई है। इसमें समाज की लड़की के प्रति गलत धारणाओं का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस कहानी में एक लड़की की मानसिक दशा का चित्रण किया गया है। लड़की के बड़े होते ही उस पर पाबंदियाँ लगा दी जाती हैं, उसका कॉलेज आने जाने का समय नियत कर दिया जाता है। इस प्रकार घर के माहौल में घुटने वाली लड़की मौत के बारे में सोचती है इस प्रकार लड़की की मानसिक दशा का यथार्थ चित्रण है। ‘गुस्सा’ कहानी एक वृद्ध दंपती के जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है। वृद्धावस्था में किस प्रकार माता-पिता उपेक्षित हो जाते हैं। इसका चित्रण है तथा इसमें कहा गया है कि गुस्सा मनुष्य के लिए कितना हानिप्रद होता है। कहानी में माया को गुस्सा आता है तो पति आकर कहता है कि क्या मूसल में मुझे कूटकर डाल रही हो माया कथन “हा! हा! लो और लो शांति हो जाए तुम्हें कहते हुए उसने दनादन अपने सिर पर मारनी शुरू कर दी। अपने भयंकर उन्माद का अहसास उसे थोड़ी देर बाद हुआ, जब उसने पाया उसके सिर में भयंकर पीड़ा है और उसका पति उसके आस-पास कहीं नहीं है।”<sup>44</sup> माया का पति उसके गुस्से के कारण उसे छोड़कर चला जाता है। अंतिम कहानी ‘अनावश्यक’ में असमय बच्चा होने के कारण एक स्त्री के मन में होने वाली स्थिति का चित्रण किया है।

### (4) प्रतिदिन - 1983

‘प्रतिदिन’ कहानी संग्रह 1983 में प्रकाशित इनका चतुर्थ कहानी संग्रह है जिसमें महानगरीय जीवन में नारी की स्थिति का चित्रण है। इसमें वर्तमान जीवन की

जटिलताओं के मध्य नारी-जीवन की मनोदशा का यथार्थ चित्रण किया गया है। यथार्थ के व्यापक धरातल पर नारी जीवन की त्रासदी को तार-तार करता यह कहानी संग्रह वर्तमान जीवन की जटिलताओं को प्रस्तुत करता है। इस कहानी संग्रह में दस कहानियाँ हैं।

‘काली साड़ी’ इस कहानी संग्रह की यह प्रथम कहानी है जिसमें एक स्त्री द्वारा काली साड़ी के प्रति आकर्षण, उसे पाने की इच्छा का चित्रण किया गया है। इसमें एक नौकरी करने वाली स्त्री के स्वाभाविक इच्छा आकांक्षाओं को लेकर उसके नीरस और मानसिक द्वंद्वों का चित्रण किया है।

‘आपकी छोटी लड़की’ इस कहानी का ताना-बाना ममता कालिया के जीवन से संबंधित है इस कहानी में एक ऐसी लड़की का चित्रण है जो परिवार में छोटी है और उसकी बड़ी बहन हर कार्य में कुशल है जिसके कारण छोटी लड़की घर में उपेक्षित रहती है एक बार एक साहित्यकार के द्वारा उसकी आवाज की प्रशंसा में निकले शब्द जिन पर उसे विश्वास नहीं होता। उसमें ऊर्जा व उत्साह का संचार करते हैं।

‘तोहमत’ इस कहानी में दो सहेलियों के जीवन का चित्रण किया गया है दोनों सहेलिया एम.ए. की छात्रा हैं आशा और सुधा। दोनों सहेलिया एक दिन शाम को रास्ता भटक जाती हैं, उसी स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है। ‘एक जीनियस की प्रेम कथा’ कहानी के माध्यम से पति की अधीनता सहती सुशिक्षित नारी की कथा का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

‘कविमोहन’ इस कहानी में एक बेरोजगार युवा की मानसिकता का चित्रण है तथा समाज में व्याप्त बेरोजगारी, अंधविश्वास दहेज की समस्या आदि का चित्रण इस कहानी में किया गया है।

## **(5) उसका यौवन - 1985**

‘उसका यौवन’ कहानी संग्रह 1985 में प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह में ममता कालिया ने अपनी स्मृति की अनेक घटनाओं, स्वप्न, अनुराग-विराग और आशा और आकांक्षाओं को यथार्थ वाणी प्रदान की है। इस कहानी संग्रह में ‘उसका यौवन’, ‘नयी दुनिया’, ‘अपने शहर की बतियाँ’, ‘आहार’, ‘पच्चीस साल की लड़की’, ‘राजू’, ‘मनहूसाबी’, ‘मुहब्बत से खिलाइए’, ‘अट्ठानवाँ साल’, ‘मनोविज्ञान’, ‘आलमारी’,

‘बिटिया’, ‘दर्पण’ अनेक कहानियाँ संग्रहित है। नारी की विभिन्न समस्याओं को परिलक्षित कर इस कहानी संग्रह में ममताजी ने अनुभव के सीमित दायरे से ऊँचा उठाकर समाज के विभिन्न पक्षों का चित्रण किया है।

‘उसका यौवन’ कहानी में एक नवयुवक की बेरोजगारी की समस्या को चित्रित कर उसकी मानसिक स्थिति का चित्रण किया है। आत्मकथात्मक शैली में लिखित इस कहानी में ‘विराम’ की विभिन्न मनोदशाओं का चित्रण किया है। आज का युवक खाली सपने देखने में अपना समय में अपना समय बर्बाद करता है कहानी में दृष्टव्य “विराम लेटे-लेटे ऊँघ गया, उसे सपना आया कि वह बंबई पहुँच गया है, हवाई जहाज से। हवाई सीढ़ी से उतरने के पहले वह हाथ हिला रहा है। तड़ तड़ तड़.....तालियों की आवाज से पूरा एयरपोर्ट गूँज उठा।”<sup>45</sup> इस कहानी में नायक जीवन के अलग-अलग सपने देखता है किंतु सफल नहीं हो पाता।

‘अपने शहर की बतियाँ’ इस कहानी में दो दोस्तों की बेरोजगारी की समस्या का चित्रण किया गया है। किस प्रकार युवकों को नया शहर आकर्षित करता है और फिर वही आकर्षण विकर्षण में तब्दील हो जाता है। हम पूरी दुनिया में कहीं चले जाए किंतु अपनेपन का अहसास हमें हमारे बचपन में बितायी गलियों में ही होता है। ‘मनहूसाबी’ यह कहानी पूर्वदीप्ति शैली में लिखी गयी है इसमें विवाहित नौकरीपेशा नारी का यथार्थ चित्रण किया गया है। इसमें एक ऐसी लड़की है जो घर परिवार द्वारा प्रताड़ित है जिसे उषा मनहूसा कहा जाता है। एक पति द्वारा उसे मशीन समझना आदि समस्याओं का चित्रण है मनहूसाबी स्वयं की तुलना को कॉक्रोच से करती है और कहती है “मनहूसाबी को लगा वह खुद भी कॉक्रोच है, हर हालत में जीवित और गतिशील, दबाने, डराने और भगाने से कॉक्रोच की जिजीविषा में कोई कमी नहीं आती।”<sup>46</sup> इसी तरह मनहूसाबी भी कितनी भी प्रताड़ित क्यों न हो पर उसकी जिजीविषा बनी रहती है। यह कहानी नायिका प्रधान है।

‘आहार’ इस कहानी में अपना मन बहलाने वाले कर्मचारियों द्वारा क्लब की स्थापना करने पर व्यंग्य किया है तथा ऑफिस के नीरस भरे वातावरण को चित्रित किया है। ‘राजू’ कहानी में बालपन का यथार्थ चित्रण किया गया है। एक विधवा के प्रति समाज की संकीर्ण सोच का चित्रण इस कहानी में बखूबी किया है। राजू सबका अपमान सह लेता है किंतु जब उसे अपनी माँ के द्वारा अपशकुनियाँ कहा जाता है तो

उसे अच्छा नहीं लगता “तड़ाक तड़ाक उसके गालों पर तमाचे पड़े, अम्मा बिफर कर बोली निकल कर देख तू कोठरी से बाहर, तेरी हड्डी-पसली न तोड़। मरता भी नहीं अपशकुनियाँ कही का।”<sup>47</sup>

## (6) जाँच अभी जारी है - 1989

प्रस्तुत कहानी संग्रह में 16 कहानियों का संकलन हैं जैसे ‘सेमिनार’, ‘उमस’, ‘जाँच अभी जारी है’, ‘रजत जयंती’, ‘इक्कीसवीं सदी’, ‘दाम्पत्य’, ‘नया त्रिकोण’, ‘प्रिया पाक्षिक’, ‘अनुभव’, ‘पहली’, ‘नायक’, ‘वर्दी’, ‘चोटिटन’, ‘झूठ’, ‘शॉल’, ‘इरादा’ इत्यादि कहानियों का इसमें संकलन किया गया है। ममता कालिया द्वारा अपनी लेखनी से नारी तथा सामाजिक समस्याओं, भ्रष्टाचारों को परिलक्षित कर वर्तमान समाज के दृश्य को उभारा गया है। इसमें सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार नौकरीपेशा नारी की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया गया है।

‘जाँच अभी जारी है’ कहानी में स्वयं ममता कालिया कहती है कि “जाँच अभी जारी है सिर्फ सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार की कहानी नहीं है, वह हमारे समाज की पूरी बनावट की कहानी है जिसको तार-तार होने के लिए अक्सर किसी बड़े कारण की जरूरत नहीं पड़ती है।”<sup>48</sup> इस प्रकार इस कहानी संग्रह में अनेक प्रकार की समस्याओं जैसे बेरोजगारी, नारी अस्मिता, स्त्री शोषण, छोटे बच्चों की समस्या, साहित्यकारों की समस्या का चित्रण मिलता है।

‘सेमिनार’ कहानी संग्रह की प्रथम कहानी है जिसमें नये लेखक लेखिकाओं पर गहरा तीखा व्यंग्य किया गया है। ‘पाखी’ नाम की लेखिका सेमिनार में जाती है किंतु उसकी रचना पर कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। इस कहानी में पाखी व अन्य लेखिकाओं के माध्यम से आधुनिक जगत में उभरते साहित्यकारों का यथार्थ चित्रण किया है। ‘दाम्पत्य’ कहानी में पति-पत्नी के मध्य टकराव का सजीव वर्णन दृष्टव्य है। इनकी शादी को बीस साल बीत चुके हैं, पत्नी अपने काम से थक कर सो जाती है पति-पत्नी मध्य मधुर वार्तालाप की कमी होती जाती है और दाम्पत्य जीवन रसहीन होता जाता है। किस प्रकार शादी के गुजरते सालों में दाम्पत्य जीवन में निराशा, झगड़ा इधर-उधर की बातें घर कर जाती हैं।

‘नया त्रिकोण’ इस कहानी में ऐसे त्रिकोण का यथार्थ चित्रित किया है जिसमें आनन्द अपनी पत्नी व माँ बीच फँस जाता है जबकि वह प्रेम के त्रिकोण की कल्पना करता है। इसमें वृद्धावस्था में होने वाली समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

‘वर्दी’ इस कहानी में पुलिस प्रशासन की बेईमानी का यथार्थ चित्रण किया गया है। पुलिस विभाग में सिपाही के पद का चित्रण है, वह बाजार से सब वस्तुएँ मुफ्त लाता है और घर पर आकर रोब जमाता है। उसका बेटा सोचता है यह वर्दी ही इसकी जड़ है और उसे जला देता है कथन दृष्टव्य है “राजू ने लपक कर वर्दी उठती लपटों में डाल दी और बिना किसी से बोले वापस घर में घुस गया।”<sup>49</sup>

‘चोटिन’ यह कहानी गरीबी की समस्या को चित्रित करती है। किस प्रकार गरीबी के कारण सुखिया हमेशा एक ही फ्रॉक में रहती है, जिसके कारण वह कभी नहा भी नहीं पाती। समाज में पुलिस की भोग विलासिता का चित्रण भी इसमें किया गया है।

‘रजत जयंती’ इस कहानी में पति-पत्नी अपनी रजत जयंती मनाते हैं, शादी शुदा लोगों की स्थिति का यथार्थ चित्रण इसमें दिखाई पड़ता है। किस प्रकार भारतीय दम्पती लड़ते-झगड़ते अपनी जिंदगी के 25 साल गुजार देते हैं। एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप करते जीवन जीने वाले दंपती के माध्यम से सम्पूर्ण समाज के लोगों का यथार्थ चित्रण किया गया है।

‘इक्कीसवीं सदी’ इस कहानी में इक्कीसवीं सदी में घटित होने वाली घटनाओं का यथार्थ चित्रण किया गया है। इसमें पुलिस प्रशासन में भ्रष्टाचार, नगरों में होने वाली वेश्यावृत्ति का यथार्थ चित्रण किया गया है तथा कॉलेजों व विद्यालयों में व्याप्त राजनीति का यथार्थ चित्रण किया गया है।

‘पहली’ इस कहानी में आर्थिक समस्या का चित्रण किया गया है।

## **(7) बोलने वाली औरत - 1998**

इस कहानी संग्रह में कुल 13 कहानियों का संकलन किया गया है। जिनमें नारी की समस्त समस्याओं को उद्घाटित किया है। वर्तमान में सामाजिक जीवन की सूक्ष्म जटिलताओं को स्पर्श कर उसे व्यक्त किया है इस कहानी का प्रकाशन बीसवीं

सदी के अंतिम दशक में होता है इसमें 'बोलने वाली औरत', 'मुखोटा', 'मेला', 'जनम', 'सेवा', 'तासीर', 'किताबों में कैद आदमी', 'रोशनी की मार', 'पर्याय नहीं', 'एक अकेला दुःख', 'अर्द्धांगिनी', 'बच्चा' आदि कहानियों का संग्रह किया गया है।

'बोलने वाली औरत' इस कहानी में दाम्पत्य जीवन के यथार्थ को चित्रित किया है, प्रेम विवाह के उपरान्त संबंधों में टकराव एवं बिखराव का चित्रण किया है। नायक कपिल व नायिका शिक्षा के माध्यम से पारिवारिक समस्या का चित्रण किया गया है शिक्षा अपने बीते दिनों व आने वाले दिनों के बारे में सोचकर घबरा जाती है और किस प्रकार वह गृहिणी बन जाती है जबकि अपने जीवन की अलग ही तस्वीर बनाती है। नायक कपिल अपना अधिकतर समय दोस्तों, पार्टियों, अखबारों में बिताता है इस प्रकार दाम्पत्य संबंधों में फैले निराशापूर्ण वातावरण का चित्रण किया गया है।

'सेवा' इस कहानी में भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते दुष्प्रभावों का यथार्थ चित्रण किया गया है। आज कल के बहु बेटे किस प्रकार माता-पिता की सेवा का दिखावा करते हैं। कहानी में वृद्धावस्था की समस्या तथा एकाकीपन की समस्या का यथार्थ चित्रण किया गया है। 'मेला' कहानी में धार्मिक आडम्बरों अंधविश्वासों व साधु संतों द्वारा किए जाने वाले दुर्व्यवहारों का यथार्थ चित्रण मिलता है।

'अर्द्धांगिनी' इस कहानी में दाम्पत्य प्रेम का चित्रण है। कहानी की नायिका 'रूपा' जैसा नाम वैसा उसका शरीर उतनी ही सुंदर। रूपा के ब्रेस्ट कैंसर होने के कारण उसका एक वक्ष उससे अलग हो जाता है जिससे उसके मन पर गहरा आघात लगता है वह सोचती है अब वह पहले जितनी सुंदर नहीं रही उसकी संवेदनाएँ समाप्त हो चुकी हैं। कथन दृष्टव्य है "एक वही दरिद्र हो गई। शेष नारी संसार उतना ही रूप सम्पन्न है जितना पहले था। उसकी संवेदनाओं में अब उत्साह के लिए कोई स्थान नहीं था। उसके एहसास के साथ समुचा आत्मविश्वास गया। उसे लगता वह अधूरी नारी है। उसे अपना जीवन निस्तेज, निरर्थक और निष्प्रयोजक दिखाई देता है।"<sup>50</sup>

'तासीर' इस कहानी में दाम्पत्य जीवन में साथ रहते हुए पति-पत्नी एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। जीवन के अंतिम क्षणों का उल्लेख इस कहानी में किया गया है किस प्रकार पति-पत्नी अपने जीवन के अंतिम क्षणों में एक दूसरे का सहारा बनते हैं। अपनी पत्नी के अभाव में कंसल बाबू को जीवन अधूरा सा प्रतीत होता है, वे अपने मन की भावनाओं को किसी के सामने व्यक्त नहीं कर पाते हैं।

‘रोशनी की मार’ कहानी में अछूतों की समस्या का यथार्थ चित्रण किया गया है। एक ऐसी स्त्री जो अछूत जाति से है जो दूसरों के घरों में काम करके अपने परिवार का पोषण करती है। उसके जीवन में आने वाली समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

## (8) मुखौटा - 2003

यह कहानी संग्रह सन् 2003 में प्रकाशित ममता कालिया की बेबाक अभिव्यंजना शैली को प्रदर्शित करता है। इसमें 18 कहानियों का संकलन है। इसमें ‘चिर कुमारी’, ‘परदेस’, ‘श्यामा’, ‘प्रतिप्रश्न’, ‘बाल-बाल बचने वाले’, ‘सफर’, ‘रोग’, ‘सीमा’, ‘एक दिन अचानक’, ‘रिश्तों की बुनियाद’, ‘दूसरा देवदास’, ‘बाण गंगा’ आदि अनेक कहानियों का संकलन है।

‘चिर कुमारी’ इस कहानी संग्रह की प्रथम कहानी है। इसमें इलाहबाद में एक अविवाहित नौकरीपेशा नारी की यथार्थ स्थिति का चित्रण किया गया है। ‘दिशा’ नाम की नायिका जिसकी उम्र 35 वर्ष है और वह अच्छे लड़कों के चक्कर में शादी नहीं करती है। असलम नाम के लड़के से उसकी मुलाकात होती है किंतु असलम उसे घोर स्त्रीवादी समझता है। इस प्रकार इसमें एक नौकरीपेशा नारी के मानसिक अन्तर्द्वंद्वों का चित्रण किया गया है। ‘परदेस’ इस कहानी में भारतीय संस्कृति व पाश्चात्य संस्कृति का यथार्थ चित्रण है ‘करवाचौथ’ के व्रत के दिन मुहल्ले में सात सुहागिने भी नहीं मिल पाती और ऐसे माहौल से घबराकर बेबे और प्रसन्नी वापस अपने देश भाग जाती है।

‘श्यामा’ इस कहानी में भारतीय परिवारों में प्रताड़ित पत्नी की मानसिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है जो घर की चाहरदीवारी से निकलना चाहती है जहाँ वह अपने पति द्वारा शारीरिक और आर्थिक रूप से प्रताड़ित होती है। ‘दूसरा देवदास’ कहानी एक प्रेम कहानी है जो ‘हरिद्वार’ के घाट से शुरू होती है। नायक संभव व नायिका पारों होती है। संभव के माता-पिता उसे हरिद्वार पढ़ने के लिए भेज देते हैं हरिद्वार के घाट पर संभव पारों को देखता है जहाँ दोनों पण्डे से कलवा बँधवाते हैं और पण्डा उन्हें पति-पत्नी समझकर आशीर्वाद दे देता है। इस प्रकार संभव के मन में उस सुंदरी के प्रति प्रेम जाग्रत हो जाता है।

‘मुखौटा’ इसी कहानी के नाम पर इस संग्रह का नाम रखा गया है कहानी का नायक फर्जी ओबीसी का प्रमाण पत्र बनवाकर दूसरे शहर से एम.बी.ए. कर लेता है और गुजरात आकर पेंटस कंपनी में नौकरी करने लगता है। वहीं पर उसे अपर्णा से

प्रेम हो जाता है परंतु अपर्णा को उसकी सच्चाई पता चलने पर वह उसके साथ चपरासी की तरह सेवाएँ लेने लगती है इस प्रकार इस कहानी में मुखौटा पहने व्यक्ति के चरित्र का यथार्थ चित्रण है।

‘सफर’ इस कहानी में सफर में होने वाली स्थिति का चित्रण है तथा मातृ प्रेम का यथार्थ चित्रण है जिसमें एक महिला की बेटी की मृत्यु गलतोड़ बीमारी से होती है। ‘रोग’ कहानी में मध्यवर्गीय परिवार में तबादला होने पर दूसरी जगह पर जाने से होने वाली समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया गया है। नागपुर के खुले वातावरण से निकलकर दिल्ली जैसे शहर में बेला स्वयं को अकेला महसूस करती है बच्चे खुश हैं पर प्रबोध का ठसाठस भरी बसों में आना-जाना और बेला का अकेलापन इस कहानी में चित्रित है।

## (9) निर्मोही - 2004

सन् 2004 में इस कहानी संग्रह का प्रकाशन हुआ जिसमें ममता कालिया ने 17 कहानियों का संकलन किया है। वर्तमान जीवन में नारी की समस्याओं को अनुभव द्वारा अभिव्यक्त करके ममता कालिया ने नारी के अन्तर्मन की अनुभूति व्यक्त की है। इस कहानी में नारी की त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया गया है। इसमें ‘सुलेमान’, ‘ऐसा ही था’, ‘दिल्ली’, ‘बांगडू’, ‘वह मिली थी बस में’, ‘बाथरूम’, ‘सिकंदर नमक’, ‘पिकनिक’, ‘खानपान’, ‘बोहन्नी’, ‘मुन्नी’, ‘समय’ आदि कहानियों का संकलन है। डॉ. सानप का कथन दृष्टव्य है कि “अनुभव की तीव्रता को प्रकाशित करने वाली इन कहानियों में वर्तमान जीवन का करुण रूदन है। कहानी ‘निर्मोही’ इसी परिवेश में नारी जीवन की त्रासदी का जीवंत प्रमाण है।”<sup>51</sup>

‘मुन्नी’ कहानी के केंद्र में एक दो साल की बच्ची है जो चेचक, काली खांसी, गर्दनतोड़ बुखार को पराजित कर जीवित बच जाती है, मुन्नी बीमारियों से जीत जाती है किंतु अपने परिवार व स्कूल में वह उपेक्षित बनी हुई रहती है। उसके उपेक्षित होने का कारण उसका शारीरिक रूप से निढाल होना है। इस प्रकार इस कहानी में एक उपेक्षित लड़की के मानसिक अन्तर्द्वंद्व का यथार्थ चित्रण बखूबी किया गया है। ‘ऐसा ही था वह’ कहानी में एक पिता की अनुशासन प्रियता का यथार्थ चित्रण किया गया है। इसमें पिता व पुत्र के मध्य के प्रेम का चित्रण है। पुत्र विवेक अग्रवाल अपने पिता कामताप्रसाद अग्रवाल के साथ रहता है। पिता अपने पुत्र की नौकरी के लिए पैसा खर्च

कर सकता है किंतु फिजूल खर्ची के लिए नहीं, पिता के अनुशासन के कारण विवेक की नौकरी भी लग जाती है। इस प्रकार कहानी में पिता-पुत्र के संबंधों का यथार्थ चित्रण किया गया है।

‘नमक’ कहानी में ढलती उम्र में होने वाली शारीरिक बीमारियों के कारण एक नारी की मानसिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है। अस्पताल में डॉक्टर कम नमक खाने की सलाह देता है। इस प्रकार इसमें खान-पान की समस्याओं से ग्रस्त नारी मन की मानसिक स्थिति का चित्रण किया गया है।

‘दिल्ली’ कहानी में बुजुर्ग दंपती का चित्रण है जो भारत दर्शन के लिए निकल पड़ते हैं। दिल्ली पहुँचने पर उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। दिल्ली जैसे शहर में घटने वाली घटनाओं, विघटन, व्यावसायिक आदि जटिलताओं का चित्रण किया गया है। ‘समय’ कहानी में वृद्धावस्था में एक वृद्ध नारी के मानसिक द्वंद्व का यथार्थ चित्रण किया है। ‘सिकंदर’ कहानी में आर्थिक समस्या का चित्रण है। सुठई बागी और सीपी तीन बच्चे हैं जिनके घर केवल एक रजाई है। इस कहानी में आर्थिक कमी के कारण परिवार को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है इसका यथार्थ चित्रण किया है।

### **(10) थिएटर रोड़ के कौवे - 2006**

इस कहानी संग्रह का प्रकाशन 2006 में हुआ। इसमें अनेक कहानियों का संकलन है जैसे- ‘छोटे गुरु’, ‘सूनी’, ‘खुशकिस्मत’, ‘नए दोस्त’, ‘थिएटर रोड़ के कौवे’, ‘उनका जाना’, ‘चोरी’ आदि कहानियों का उल्लेख है। ‘थिएटर रोड़ के कौवे’ कहानी में अविवाहित नौकरी पेशा स्त्री का यथार्थ चित्रण है। नायक सेकत व नायिका सत्ताईस साल की बेला है। बेला एक कंपनी में जॉब करती है। सेकत एक महिने के लिए लंदन जा रहा है, बेला उसके साथ नहीं जाना चाहती है। वह सोचती है सेकत चला जाएगा तो वह कुछ दिनों की छुट्टियाँ लेकर अपनी रचनाओं को पूर्ण करेगी। उसे सेकत की रोक-टोक पसंद नहीं है। बेला के माता-पिता का निधन होने के पश्चात् वह इलाहाबाद से कोलकाता के थिएटर रोड़ के फ्लेट में आ जाती है जहाँ उसे हमेशा कौए की काँव-काँव ही सुनाई पड़ती है। आधुनिक समाज में नौकरीपेशा स्त्री किसी का गतिरोध पसंद नहीं करती। इसी समस्या को चित्रित किया गया है।

‘सुनी’ कहानी नायिका के नाम पर रखी गई है जिसका सही नाम सुनंदा है। इस कहानी में नौकरीपेशा अविवाहित स्त्री का चित्रण है जिस पर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात जिम्मेदारियों का बोझ आ जाता है, जिसके कारण उसकी शादी भी नहीं हो पाती है। सुनंदा पैंतीस वर्ष की है और कॉलेज में साहित्य पढ़ाती है, पिता की मृत्यु के बाद माँ का व्यवहार निष्ठुर हो जाता है और उन्हें सुनंदा के लिए ऐसा लड़का चाहिए जो उनके साथ आकर रहे। माँ की मृत्यु के पश्चात् सुनंदा अकेली रह जाती है। इस प्रकार सुनंदा के माध्यम से वर्तमान नौकरीपेशा स्त्रियों के अकेलेपन का यथार्थ चित्रण किया गया है। सुनंदा अंत में गिलहरी को अपना साथी बना लेती है तो उसकी कॉलेज की एक लेक्चरर कहती है “यह तुमने अच्छा जीवन साथी ढूँढ निकाला न कोई झंझट न कोई बंधन।”<sup>52</sup> अंत में गिलहरी भी मर जाती है और सुनी, सूनी ही रह जाती है। ‘नए दोस्त’ कहानी में दम्पती अपने बेटे की बीमारी के कारण चिंतित रहते हैं वे अपने पाँच-छह साल के बच्चे के साथ गाँव आ जाते हैं, गाँव में बच्चा बगीचे में खेलने चला जाता है किंतु जल्दी थक जाता है और माँ से नाश्ता मांगता है। माँ अण्डे को उबालने रखकर बच्चे को ऊपर ले जाती है, कुछ देर बाद वापस आकर देखती है तो उसमें से दो चूजे निकल आते हैं तो अपने बेटे को कहती है देखो तुम्हारे नए दोस्त आ गए। ‘छोटे गुरु’ कहानी में स्त्री के प्रति संकीर्ण सोच रखने वाले समाज का यथार्थ चित्रण है तो वहीं एक पुरुष के अच्छे व्यवहार का चित्रण किया गया है। इसका कथानक इलाहबाद की गलियों से बुना गया है। जहाँ छोटे गुरु नाम से प्रसिद्ध पुरुष जरूरतमंद महिलाओं की मदद करता है। इस कहानी के केन्द्र में ‘रेखा’ नाम की नायिका है।

### **(11) पच्चीस साल की लड़की - 2006**

प्रसिद्ध कहानी संग्रह का प्रकाशन 2006 में हुआ है। नारी समस्याओं के प्रति गहन चिंतन कर गंभीरतापूर्वक ममता कालिया ने अपने कहानी संग्रह में सुशिक्षित, अविवाहित, नौकरीपेशा नारियों के यथार्थ का चित्रण किया है ‘पच्चीस साल की लड़की’ कहानी में एक अफसर की बीवी की मानसिक रुग्णता का चित्रण किया गया है जो अपने पति के दफ्तर में काम करने वाली हर लड़की को शंका की नजर से देखती है। अफसर पति के गांव चले जाने पर जब एक स्टेनॉ उसके हस्ताक्षर के लिए उसके घर आती है जो वह उस पर शक करती है और पच्चीस साल की उम्र में शादी न करने पर उसे भला-बुरा सुनाती है। इस प्रकार इस समाज में शिक्षित व अशिक्षित कोई भी

हो स्त्री के प्रति उनकी वास्तविक संकीर्ण सोच का यथार्थ चित्रण किया गया है। 'अकेलिया दुकेलिया' यह कहानी इस संकलन की सबसे अधिक विस्तार से लिखी गई है जो नारी की मनोदशाओं का आख्यान प्रस्तुत करती है।

'कौवे और कोलकाता' कहानी में बहार और हेमा नाम की दो अविवाहित बहनों का उल्लेख किया गया है। बहार मॉडलिंग की दुनिया में गुम है और उसे हेमा से मिले आठ साल हो चुके हैं। एक दिन हेमा अचानक कोलकाता अपनी बहन के पास नववर्ष के समय पहुँच जाती है। उधर हेमा बाथरूम में फिसलने के कारण 10 हफ्ते से बिस्तरों पर पड़ी है। बहार की अनुपस्थिति में कई नयी मॉडले उभर रही है। हेमा अपने अकेलेपन से परेशान हो जाती है और शादी करना चाहती है और इसके लिए वह अपनी बहन की मदद लेना चाहती है। एक बार नहाते समय हेमा कौवे से चोट खा जाती है जिसका इलाज वह दिल्ली ही आकर करवाना चाहती है इस प्रकार हेमा को अपना शहर ही अच्छा लगता है। कहानी में अविवाहित अकेलेपन से त्रस्त बहनों की मानसिक दशा का चित्रण है।

## **(12) खुश किस्मत - 2010**

यह कहानी संग्रह 2010 में प्रकाशित हुआ। इसमें अनेक कहानियों का संकलन है जैसे- 'बगिया', 'खुशकिस्मत' आदि। 'खुशकिस्मत' इस कहानी में कॉलेज व विद्यार्थी के मध्य के मानसिक अंतर्द्वंद्व को व्यक्त किया है। तीन बहनों का भाई जो अपनी बहन का अभिभावक बनकर कॉलेज में आता है, कुछ नियमों के कारण उसका प्रवेश न होने पर वह प्राध्यापिका पर हमला कर देता है, वह खून से लथपथ हो जाती है। उससे मिलने आने वाले प्राध्यापिका को यही कहते हैं कि तुम खुशकिस्मत हो की तुम बच गई। इस प्रकार कहानी में कॉलेजों में वर्तमान घटित होने वाली घटनाओं की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है। वर्तमान समाज में गुरु के प्रति शिष्य के सम्मान का भाव समाप्त होता जा रहा है।

इस प्रकार सम्पूर्ण कहानियों का विश्लेषण करने के पश्चात हम कह सकते हैं कि ममता कालिया की कहानियों का उद्देश्य समाज में व्याप्त समस्याओं, नारी के प्रति समाज की सोच, समाज में फैले भ्रष्टाचार, स्वार्थ-लोलूप राजनीति, प्रशासन की निष्क्रियता आदि गंभीर समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाना तथा समाज के शिक्षित वर्ग को सजग व सतर्क करना रहा है।

## 2.3 ममता कालिया जन्म और शिक्षा

भारतीय संस्कृति और समाज में 'नारी' एक विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित रही है। भारतीय संस्कृति ने उसे माता के रूप में उपस्थित कर इस बात का उद्घाटन किया है कि वह मानव के भोग की सामग्री न होकर उसकी वन्दनीया है। नारी का सम्मान आदिकाल से होता आ रहा है। हिंदी साहित्य जगत् में नारी की अवहेलना पर अनेक प्रश्न उठाए गए। आज आधुनिक युग में नारी पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर समाज में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। इक्कीसवीं शताब्दी में महिला का वर्चस्व हर क्षेत्र में व्याप्त है। आज स्त्रियाँ घर की चाहरदीवारी से निकलकर समाज में अपनी जीवंतता का प्रमाण दे रही हैं। साहित्य में नारी की अवहेलना पर अनेक प्रश्न उठाए गए हैं उनके समाधान हेतु अनेक साहित्यकारों ने अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार नारियों की समस्त समस्याओं पर विचाराभिव्यक्ति कर इस दिशा में विस्तृत वाणी प्रदान की। आज नारी विमर्श और नारी चेतना से सम्पन्न अनेक भारतीय साहित्य सृजित हो रहा है। उन्हीं रचनाकारों में ममता कालिया जो 1960 से साहित्य में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। साठोत्तरी लेखन के यथार्थवादी महिला रचनाकारों में ममता कालिया का स्थान महत्वपूर्ण रहा है और वे आज भी साहित्य लेखन में अपनी सक्रिय भूमिका अदा कर रही हैं।

समकालीन महिला लेखिकाओं ने अपनी बौद्धिक क्षमता के आधार पर हिंदी उपन्यास साहित्य की श्री वृद्धि में नारी को केंद्रित कर उपन्यास सृजन में अपना मौलिक योगदान दिया है। इस संबंध में माधुरी सोनटके का कथन है कि “इन उपन्यास लेखिकाओं में नारी जीवन के प्रत्येक पहलू को दुनिया के सामने लाया और केवल नारी-जीवन ही नहीं बल्कि नारी-जीवन को प्रभावित करने वाले हर क्षेत्र को अपनी लेखनी का विषय बनाया। लेखिकाओं ने अपने उपन्यास में बहुआयामी प्रतिभा प्रस्तुत की है उन्होंने वर्तमान में हर क्षण को एहसास किया है और उसे स्वर देना चाहा है।”<sup>53</sup> महिला उपन्यासकारों ने अपने अद्वितीय व्यक्तित्व एवं समृद्ध साहित्य के माध्यम से विख्यात 'ममता' कालिया ने वर्तमान नारी की गतिविधियों को अनुभूति के आधार पर अपनी कृतियों में सम्मिलित किया है। साहित्य की अनेक विधाओं का सृजन कर ममता कालिया ने सर्वप्रथम 'कविता' से लेखन प्रारंभ कर कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी बाल साहित्य आदि विधाओं को समृद्ध किया है। फैमिदा बीजापुरे का अभिमत है कि “उनके साहित्य का प्रमुख उद्देश्य नारी की समस्याओं

का अंकन कर उसे पुरुष के बराबर का स्थान देना रहा है। उनकी प्रारंभिक रचनाओं में विद्रोह की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। ममता जी अपने आपको महिला कहानीकार या महिला साहित्यकार कहने पर आक्षेप करती हैं। वे मानती हैं। जब महिलाएँ सभी क्षेत्रों में पुरुष के साथ काम कर रही हैं, तो उसे अलग से महिला कहानीकार कहने से क्या फायदा? उसे तो सिर्फ कहानीकार या सिर्फ साहित्यकार कहना चाहिए।”<sup>54</sup>

### ममता कालिया जीवनवृत्त

श्रीमती इन्दुमति और पिता श्री विद्याभूषण अग्रवाल की द्वितीय संतान के रूप में ममता कालिया का जन्म 2 नवम्बर 1940 में वृंदावन के मिशन अस्पताल में जन्म हुआ। जन्म से संबंधित पक्ष “उत्तर प्रदेश की मथुरा के जिस लघुतम एकांश वृंदावन में जन्म लिया, उसे कभी ठीक से देखा भी नहीं। वृंदावन इसलिए क्योंकि वहाँ कमैडियन मिशनरियों ने ऐसा अस्पताल स्थापित किया जहाँ पेट चैक कर बच्चे पैदा करवाने की व्यवस्था थी।”<sup>55</sup>

ममता जी का सम्पूर्ण जीवन मथुरा में बीता। मथुरा में ममता जी के दादाजी का आदत का व्यापार था। अग्रवाल परिवार के इस पुश्तैनी व्यापार को आगे बढ़ाने का दायित्व माताजी पिताजी पर था। मथुरा में अपने बचपन के संबंध में लिखा है कि “जमुना जी के कछुओं की स्मृति है। उनकी जुड़ी अनेक डरावनी कहानियाँ आधी-अधूरी याद आती हैं। यह कभी भी समझ नहीं आया कि हम बच्चों को जमुनाजी में डूबकी क्यों लगवाई जाती थी, जबकि शाम को दादी, बाबा, बुआ कोई न कोई किस्सों की पिटारी खोल डालते।”<sup>56</sup> उनकी बड़ी बहन प्रतिभा और उन्हें माता-पिता ने बड़े लाड़ से पाला। विद्याभूषण जी की पढ़ाई एवं साहित्य में अत्यधिक रुचि थी। उन्होंने एम.ए. पास करके पारिवारिक पुश्तैनी व्यापार न करके परिवार से बगावत करके नौकरी शुरू कर दी। विद्याभूषण शंभूदयाल कॉलेज गाजियाबाद के प्रिंसिपल तथा लेखक रहे। नौकरी में तबादले की वजह से उन्हें कई शहरों में रहना पड़ा। उनका सारा जीवन संघर्षमय था। पिता की नौकरी के कारण ममता जी की शिक्षा नागपुर, मुंबई, पूणे, इंदौर दिल्ली के विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में हुई। आपने अंग्रेजी में एम.ए. कर सर्वप्रथम दिल्ली के दौलतराम कॉलेज में प्राध्यापक की नौकरी पायी आजीविका के लिए दिल्ली तथा एस.एन.डी.टी. मुम्बई के महाविद्यालयों में अंग्रेजी की प्राध्यापिका रही। 1973 से 2001 तक इलाहाबाद के एक डिग्री कॉलेज में प्राचार्य के रूप में कार्यरत रहकर निरंतर लेखन के प्रति समर्पित रही।

ममता जी का विवाह समानधर्मी साहित्यकार रवीन्द्र कालिया से 12 दिसम्बर 1965 में दिल्ली में हुआ। उनसे पहली मुलाकात के संबंध में ममता कालिया का कथन दृष्टव्य है “जनवरी 1964 में चण्डीगढ़ में हजारीप्रसाद द्विवेदी की अध्यक्षता में एक कथा-गोष्ठी थी जिसमें मोहन राकेश, कमलेश्वर, रवीन्द्र कालिया आए थे। मैं भी उसमें बिलकुल नौसिखिया के रूप में पहुँची थी, तभी औपचारिक मुलाकात हुई पर देखिए वो कथा का सेमिनार लाइफ लॉग का हो गया यानी संवादहीनता की स्थिति कभी नहीं आती।”<sup>57</sup>

साहित्य के प्रति रुचि एवं लेखन की प्रेरणा उन्हें पारिवारिक पृष्ठभूमि से प्राप्त हुई। उनके घर पर ही साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन होता था। बचपन से उन्होंने बड़े-बड़े साहित्यकारों को सुना व देखा व पिता के सान्निध्य में बचपन से ही पुस्तकों एवं साहित्यकारों के प्रति आकर्षण से वे स्वयं को रोक नहीं पाई। यहाँ उनका कथन दृष्टव्य है कि “हमें जन्मदिन पर किताब ही मिलती थी पापा से। वे शिक्षा में मनोरंजन मिला देते। वोकेब्यूलरी गेम के अंतर्गत वे हमें कुछ शब्द लिखकर देते और कहते “इनके पर्यायवाची शब्द सोचकर लिखो सात साल की उम्र में मुझे एक दिन भी ऐसा याद नहीं जब मैं बिना कुछ पढ़े पापा की नज़र बचाकर सो सकी हूँ।”<sup>58</sup>

## 2.4 ममता कालिया परिवार और परिवेश

ममता कालिया का विवाह प्रसिद्ध साहित्यकार रवीन्द्र कालिया के साथ 12 दिसम्बर 1965 को दिल्ली में हुआ। ममता कालिया उत्तरप्रदेश मथुरा की रहने वाली है जबकि प्रेमविवाह होने के कारण उनकी शादी पंजाबी परिवार में होती है। ममता कालिया के दो पुत्र अनिरुद्ध और प्रबुद्ध हैं जिनसे वे अत्यन्त प्रसन्न रहती हैं। ममताजी के व्यक्तित्व में सादगी, सरलता एवं व्यवस्थित पहनावा का प्रभाव दिखाई देता है। इनके स्वभाव में अत्यंत मधुर वाणी, हँसमुख मिलनसार आदि गुणों से युक्त है। इनके व्यक्तित्व के बारे में डॉ. फैमिदा बिजापुरे का कथन है कि “पाँच फुट दो इंच ऊँचाई, गोरा रंग, सुदृढ़ शरीर, कटे बाल और बड़ी बिंदी से युक्त ममता जी का व्यक्तित्व गरिमामय दिखाई देता है। सीधी-सीधी साड़ी होते हुए भी अत्यंत व्यवस्थित ढंग से पहनावा होने के कारण उनका व्यक्तित्व काफी साफ-सुथरा दिखाई देता है। लेखन कार्य के अलावा चुपचाप बैठना, जगजीत सिंह के गीत सुनना, पुरानी विश्व प्रसिद्ध क्लासिक पुस्तकें पढ़ना, साहित्यिक, पत्र-पत्रिकाएँ, हिंदी पिक्चर देखना, चाट खाना, साड़ियाँ खरीदना उन्हें पसंद है।”<sup>59</sup>

ममताजी अपने पारंपरिक रूप माँ, पत्नी अध्यापिका आदि को त्याग कर रात्रि के एकांत में बिना अवरोध के लिखना पसंद करती है। उनकी लेखन प्रक्रिया इतनी सुदृढ़ एवं गतिमान है कि वे एक साथ दो-दो कहानियाँ लिखने में सक्षम हैं। एक घर में दूसरी कॉलेज में। अपने लेखन के संबंध में स्वयं ममता कालिया कहती है कि “अपने गुस्से आक्रोश को तिरोहित करने में लेखन को मददगार पाया है। अपनी खुशियाँ मायूसियाँ, इरादे, मनसूबे, सब कहानियों में डाले हैं। जो कुछ रू-ब-रू कहने में शायद सात जन्म लेने पड़ते वह सब रचनाओं में किसी के मुँह में डाल दिया है। साहित्य से अच्छा जीवनसाथी किसी को मिल नहीं सकता, यह लगातार महसूस किया है।”<sup>60</sup>

अपने साहित्यिक कृतियों पर निरंतर पुरस्कार एवं सम्मान की प्राप्ति ममता कालिया के लेखन प्रक्रिया में अद्भुत प्रेरणा का कार्य किया। उनके पुरस्कारों की विस्तृत चर्चा करते हुए डॉ. सानप शाम का कथन है कि “सन् 1963 में ‘साप्ताहिक हिन्दुस्तान’ दिल्ली की ओर से तथा सन् 1976 में ‘सरस्वती प्रेस’ इलाहाबाद की ओर से सर्वश्रेष्ठ कहानीकार एवं कहानी का पुरस्कार मिला है। सन 1985 को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की ओर से ‘उसका यौवन’ कहानी संग्रह पर ‘यशपाल’ सम्मान घोषित हुआ। जो सन 1989 में उन्हें मिला है। सन 1990 में ‘अभिनव भारती’ कोलकाता की ओर से समग्र कथा साहित्य पर ‘रचना सम्मान’ तथा इसी वर्ष में ‘रोटरी क्लब’ इलाहाबाद की ओर से समग्र साहित्य पर ‘वोकेशनल पुरस्कार’ मिला है।”<sup>61</sup> प्रतिभावान ममता कालिया के व्यक्तित्व का अवलोकन करने के पश्चात् उनके विशिष्ट गुणों-संवेदनशील एवं भावुक विचार, मदद करने की प्रवृत्ति ईमानदारी एवं मुख पर सदैव विद्यमान मधुर मुस्कान आदि के कारण उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली एवं आकर्षण के केंद्र के रूप में मुखरित हुआ है। शादी के आरंभिक समय में ममता जी को कई परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। जीवन में अनेक कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए भी उन्होंने अपना लेखन कार्य जारी रखा जो आज तक निर्बाध गति से लिख रही हैं। ममता कालिया का दाम्पत्य जीवन काफी सुखदपूर्ण रहा है। वे अपने वैवाहिक जीवन से काफी खुश थीं। अपने पति रवीन्द्र कालिया के बारे में ममता जी लिखती हैं कि “रवि के साथ रहना कई किस्म के खतरों से कई स्तरों पर मुठभेड़ करना है। जैसे रवि के लिए लिखना, सोचना, आराम फरमाना, प्रेम करना सब एक आत्यंतिक प्रक्रिया के अंतर्गत आता है। किसी एक की अपर्याप्तता उन्हें समूची प्रक्रिया के प्रति बिल्कुल उदासीन कर सकते हैं।”<sup>62</sup>

इस प्रकार ममता कालिया का पारिवारिक जीवन काफी सुखदपूर्वक रहा। उन्होंने अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करते हुए जीवन को सुखप्रद बनाने का भरपूर प्रयास किया है।

## 2.5 ममता कालिया : संक्षिप्त साहित्यिक परिचय, पुरस्कार और सम्मान

ममता कालिया हिंदी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर रही हैं। अपने जीवन के संघर्षों को ममता कालिया अपने साहित्य का प्रेरणास्रोत मानती रही हैं। ममता कालिया की साहित्य में रुचि के बीज तो बचपन में उनके पिता के घर में पड़ गए थे किन्तु उनको विकास विस्तार उनकी एक प्रसिद्ध साहित्यकार रवीन्द्र कालिया से शादी होने पर मिला। ममता कालिया ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। इन्होंने छोटी उम्र में ही लिखना प्रारंभ कर दिया। ममता कालिया अपने लेखन की शुरुआत 'कविता' से करती हैं किन्तु धीरे-धीरे उनका लेखन कार्य निखरता गया और उन्होंने सभी विधाओं पर लिखना प्रारंभ कर दिया। हिंदी साहित्य में ममता एक कथाकार के रूप में विख्यात हैं। ममताजी ने अपनी रचनाओं में अपने आस-पास घटित होने वाली घटनाओं को बहुत सुंदर ढंग से अपनी कल्पनाप्रियता से सुंदर शब्दों को गढ़ने का प्रयास किया है। ममताजी को विभिन्न महानगरों में रहने का अनुभव मिला। उनके पिताजी के तबादलों के कारण उन्हें अलग-अलग महानगरों में रहने का अनुभव मिला। एक जगह वे कहती हैं कि "बचपन में पापा के तबादलों ने हमें भारत-दर्शन करवाया, बड़े होने पर जिंदगी की ठोकरी ने घाट-घाट का पानी पिलवा दिया।"<sup>63</sup>

ममता कालिया ने 1960 से अपने लेखन को प्रारंभ किया जो आज तक इक्कीसवीं शताब्दी में भी लेखन कार्य में सक्रिय हैं। जब वे बी.ए. में पढ़ रही थी तभी से लिखना प्रारंभ कर दिया था। ममता कालिया की प्रथम कविता 'प्रयोगवादी प्रियतम' जो 'जागरण' पत्र के रविवारीय अंक में छपी थी। ममता कालिया ने उन दिनों में लिखना प्रारंभ किया जब अकविता का दौर चल रहा था और उनकी यह प्रथम कविता, अकविता थी। ममताजी की प्रारंभिक रचनाओं में आक्रोश था। ममताजी की पहली पूर्ण कहानी 'ऊँचे-ऊँचे कंगूरे' 1963 में 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' पत्रिका 'हिन्दुस्तान टाइम्स' प्रकाशन की कहानी प्रतियोगिता में छपी थी और इसने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इनकी 'उपलब्धि' शीर्षक से लिखित कहानी को प्रथम पुरस्कार भी

प्राप्त हुआ। ममता कालिया की रचनाएँ ज्ञानोदय, सारिका, धर्मयुग, सुप्रभात अनेक पत्रिकाओं में छपती रही हैं। ममता कालिया अपनी रचनाओं का आलोचक अपने पिता को मानती रही हैं ममता कालिया कहती है कि “मेरी सारी रचनाओं के वे प्रखर आलोचक भी रहे हैं। मेरे उच्चारण को सुधारने में मेरे पिताजी ने काफी सहयोग किया। गलत उच्चारण वे बर्दाश्त नहीं कर पाते थे।”<sup>64</sup> इस प्रकार ममता कालिया का साहित्य लेखन निखरता गया। ममता कालिया की रचनाओं में भारतीय समाज की समस्याओं, घटनाओं के सकारात्मक, नकारात्मक सभी प्रकार के विषयों को शामिल किया है और उन्होंने अपनी कहानियों, उपन्यास, संस्मरण, कविता आदि में इन सभी समस्याओं का यथार्थ चित्रण करते हुए समाज को आईना दिखाने में बखूबी भूमिका निभाई है। ममता कालिया की विभिन्न साहित्यिक रचनाएँ निम्न हैं-

### **कहानी संग्रह**

छुटकारा 1969

एक अदद औरत 1975

सीट नंबर छह 1976

प्रतिदिन - 1983

उसका यौवन 1985

जाँच अभी जारी है 1989

बोलने वाली औरत 1998

मुखौटा 2003

निर्मोही 2004

थिएटर रोड के कौवे 2006

पच्चीस साल की लड़की 2006

खुशकिस्मत 2010

काके दी हट्टी 2010

दूरस्थ दाम्पत्य, 2025

## **उपन्यास विधा**

बेघर 1971

नरक दर नरक 1975

(प्रेम कहानी लड़कियाँ, एक पत्नी के नोट्स-तीन लघु उपन्यास 2011, नया संस्करण)

दौड़ 2000

दुःखम सुखम 2009

अंधेरे का ताला 2010

सपनों की होम डिलिवरी 2016

कल्चर वल्चर 2020

सच्चा झूठ, 2025

## **कविता संग्रह**

ए ट्रिब्यूट टू पापा एंड अदर पोयम्स 1971 (अंग्रेजी)

पोयम्स 78 1978 (अंग्रेजी)

खाँटी घरेलू औरत (2004)

## **एकांकी संग्रह**

यहाँ रोना मना है

आप न बदलेंगे 1995

## **बाल उपन्यास**

ऐसा था बजरंगी

## **खण्ड काव्य**

कितने प्रश्न करूँ 2008

अनुवाद

मानवता का बंधर-सॉमरसेट योम के उपन्यास 1992

## **अन्य रचनाएँ**

कितने शहरों में कितनी बार (संस्मरणात्मक लेख) 2016

कल परसों के बरसों (संस्मरणात्मक लेख) 2011

रविकथा (संस्मरणात्मक जीवनी) 2020

जीते जी इलाहबाद (संस्मरणात्मक कृति) 2021

जादू की घड़ी (बाल साहित्य) 2025

## **संपादित पुस्तकें**

1. एक कदम आगे - राजस्थान शासन के लिए कहानी संकलन का संपादन
2. पाँच नए एकांकी - एकांकी संकलन
3. गली कूचे-रवीन्द्र कालिया की कहानियों के संकलन
4. नई सदी की पहचान प्रमुख महिला कहानीकारों की कहानियों का संकलन
5. साहित्यिक पत्रकारिता-रविवार, माया, परिवर्तन, अमृत प्रभात मनोरमा तथा सहारा में स्तम्भ लेखन
6. बाल पुस्तक - जादू की घड़ी

## **विदेशों के पाठ्यक्रम में शामिल पुस्तकें**

1. बेघर तथा नरक दर नरक-ओसाका यूनिवर्सिटी, जापान व केरल वि.वि. तिरुवनंतपुरम में
2. 'आपकी छोटी लड़की' कहानी का नाट्य रूपांतरण राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली द्वारा प्रस्तुत किया गया।
3. 'ट्रिब्यूट टू पापा एण्ड अदर पोयम्स' - वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी पुलमैन यू.एस.ए.

## **निबंध संग्रह**

1. भविष्य का स्त्री विमर्श
2. स्त्री विमर्श का यथार्थ
3. स्त्री विमर्श के तेवर

## प्रमुख पुरस्कार एवं सम्मान

1. सर्वश्रेष्ठ कहानीकार पुरस्कार 1963
2. सर्वश्रेष्ठ कहानी पुरस्कार, सरस्वती प्रेस, इलाहबाद, 1976
3. सदस्य, परामर्शदाता समिति इग्नो, दिल्ली
4. निर्णायक मंडल की सदस्या, साहित्य अकादमी हिंदी समिति, 1988-91
5. 'उसका यौवन' कहानी संग्रह पर उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'यशपाल सम्मान' 1985
6. रचना सम्मान, अभिनव भारती, कोलकाता 1990
7. सदस्य रही, अकादमिक व कार्यकारिणी समिति, शाहुजी महाराज विश्व विद्यालय, कानपुर
8. 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास पर 1998 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान महादेवी वर्मा अनुशंसा सम्मान
9. 'सावित्री बाई फूले' सम्मान 1991 ई. कहानी संग्रह-बोलने वाली औरत के लिए
10. भारत सरकार सूचना प्रसारण मंत्रालय की ओर से 1998 में पुरस्कृत
11. साहित्य भूषण सम्मान 2007
12. लमही सम्मान 2008 इटावा हिंदी निधि न्यास की ओर से रविन्द्र कालिया व ममता कालिया को जनवाणी सम्मान
13. लमही सम्मान 2009
14. सीता पुरस्कार 2013 'कितने शहरों में कितनी बार' को
15. राममनोहर लोहिया सम्मान 2014 में
16. व्यास सम्मान 2017 उपन्यास दुःखम-सुखम के लिए बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा
17. ढींगरा फैमिली फाउण्डेशन, अमेरिका का लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 2020 में
18. ओ.पी. मालवीय स्मृति सम्मान 2020 में
19. संतोष कोली स्मृति सम्मान 2022-23
20. उदयराज सिंह स्मृति सम्मान 2024

## निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ममता कालिया हिंदी साहित्य की सशक्त साहित्यकार हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं से पाठक वर्ग के मस्तिष्क को उद्वेलित किया है। ममता कालिया को बचपन से लेकर अपनी शादी के पश्चात् भी साहित्यकारों के सानिध्य में रहना का पूर्ण अवसर मिलता रहा है, जिसका असर उनकी रचनाओं में निखरता रहा है। ममता कालिया का लेखन कभी अपने परिवार, बच्चों के कारण कभी अवरुद्ध नहीं हुआ बल्कि निर्बाध गति से चलता रहा है और वे अपनी रचनाओं में हमेशा जीवंतता प्रदान करती रही हैं।



## संदर्भ सूची

1. कालिया ममता - मेरे साक्षात्कार (प्रदीप सौरभ से बातचीत), पृ.सं.-9
2. तिवारी रामचंद्र, हिंदी उपन्यास, पृ.सं.-183
3. कालिया ममता, बेघर उपन्यास, पृ.सं.-44
4. कालिया ममता, बेघर उपन्यास, पृ.सं.-92
5. कालिया ममता, बेघर उपन्यास, पृ.सं.-93
6. राय गोपाल, हिंदी उपन्यास का इतिहास, पृ.सं.-342
7. तिवारी रामचंद्र, हिंदी उपन्यास, पृ.सं.-183
8. शाम सानप, ममता कालिया के कथा-साहित्य मेनारी चेतना, पृ.सं.-132
9. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-121-122, संस्करण-2020
10. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास (उपन्यास के अंतिम पृष्ठ से)
11. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-127
12. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-144
13. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-165
14. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, (कवर पेज से)
15. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, (लड़कियाँ, पृ.सं.-86)
16. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-104-105
17. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-109-110
18. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, (एक पत्नी के नोट्स), पृ.सं.-8
19. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-35
20. उपाध्याय श्रद्धा, हिंदी उपन्यास : वस्तु एवं शिल्प, पृ.सं.-252
21. कालिया ममता, दौड़ (भूमिका से), पृ.सं.-7
22. कालिया ममता, दौड़ (भूमिका से), पृ.सं.-25
23. कालिया ममता, दौड़ (भूमिका से), पृ.सं.-72

24. कालिया ममता, दौड़ (भूमिका से), पृ.सं.-25
25. कालिया ममता, दौड़ (भूमिका से), पृ.सं.-72
26. कालिया ममता, दुःखम-सुखम, (उपन्यास के कवर पेज से)
27. कालिया ममता, दुःखम-सुखम, पृ.सं.-72
28. कालिया ममता, दुःखम-सुखम, पृ.सं.-204
29. कालिया ममता, अँधरे का ताला, (उपन्यास के कवर पेज से)
30. कालिया ममता, अँधरे का ताला, पृ.सं.-21
31. कालिया ममता, अँधरे का ताला, पृ.सं.-54
32. कालिया ममता, सपनों की होम डिलीवरी, पृ.सं.-5
33. कालिया ममता, सपनों की होम डिलीवरी, पृ.सं.-24
34. कालिया ममता, सपनों की होम डिलीवरी, पृ.सं.-24
35. कालिया ममता, सपनों की होम डिलीवरी, पृ.सं.-33
36. कालिया ममता, सपनों की होम डिलीवरी, (पीछे वाले पेज से)
37. कालिया ममता उपन्यास कल्चर-वल्चर (पूर्वकथन से)
38. कालिया ममता उपन्यास कल्चर-वल्चर, पृ.सं.-21
39. कालिया ममता उपन्यास कल्चर-वल्चर, पृ.सं.-122
40. कालिया ममता उपन्यास कल्चर-वल्चर, पृ.सं.-142
41. कालिया ममता उपन्यास कल्चर-वल्चर, पृ.सं.-59
42. कालिया ममता 'छुटकारा' कहानी संग्रह, दूसरा संस्करण 2016 भूमिका से
43. बिजापुरे डॉ. फैमिदा 'ममता कालिया' व्यक्तित्व-कृतित्व, पृ.सं.-20 प्रथम संस्करण 2004
44. कालिया ममता 'सीट नंबर छह', कहानी संग्रह, पृ.सं.-58
45. कालिया ममता, 'उसका यौवन' कहानी संग्रह, पृ.सं.-12
46. कालिया ममता, 'उसका यौवन' कहानी संग्रह, पृ.सं.-57

47. कालिया ममता, 'उसका यौवन' कहानी संग्रह, पृ.सं.-54
48. कालिया ममता 'जाँच अभी जारी है' कहानी संग्रह (किताब के पीछे वाले पृष्ठ से)
49. कालिया ममता 'जाँच अभी जारी है', कहानी संग्रह, पृ.सं.-126
50. कालिया ममता 'बोलने वाली औरत', कहानी संग्रह, पृ.सं.-86
51. कालिया ममता 'बोलने वाली औरत', कहानी संग्रह, पृ.सं.-87
52. कालिया ममता, ममता कालिया की कहानियाँ खण्ड दो, पृ.सं.-57
53. सोनट के माधुरी, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में चेतना प्रवाह, पृ.सं.-17-18
54. बीजापुरे डॉ. फैमिदा, 'ममता कालिया व्यक्तित्व-कृतित्व', पृ.सं.-9
55. कालिया ममता, 'कितने शहरों में कितनी बार', पृ.सं.-11
56. कालिया ममता, 'कितने शहरों में कितनी बार', पृ.सं.-12
57. कालिया ममता, मेरे साक्षात्कार (रेणु दीक्षित से बातचीत), पृ.सं.-31
58. कालिया ममता, 'कितने शहरों में कितनी बार', पृ.सं.-19
59. बीजापुरे डॉ. फैमिदा, 'ममता कालिया व्यक्तित्व-कृतित्व', पृ.सं.-13
60. कालिया ममता, मेरे साक्षात्कार (कोमल राजदेव से बातचीत), पृ.सं.-51
61. डॉ. शाम सानप, ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना, पृ.सं.-115
62. बीजापुरे डॉ. फैमिदा, 'ममता कालिया व्यक्तित्व-कृतित्व', पृ.सं.-12
63. गुलाटी अनिता, रचनाधर्मिता के प्रतिबद्ध ममता कालिया, दैनिकी ट्रिब्यून जनवरी 1981, पृ.सं.-3
64. कालिया ममता, 'कितने शहरों में कितनी बार', पृ.सं.-73

# तृतीय अध्याय

ममता कालिया के कथा-साहित्य में स्त्री  
जीवन का यथार्थ

## तृतीय अध्याय

### ममता कालिया के कथा-साहित्य में स्त्री जीवन का यथार्थ

#### 3.1 स्त्री शोषण का यथार्थ

ऐसा माना जाता है कि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता का वास होता है और नारी को देवी कहा जाता है। नारी के मान-सम्मान की रक्षा की जानी चाहिए। इसी सुरक्षा के अंतर्गत उन्हें समान अधिकार दिए गए एवं अनेक कानून-कायदे बनाए गए हैं, परन्तु फिर भी नारी सदैव असुरक्षित रही है। राह पर चलते हुए, स्कूल, कॉलेज तथा कार्यालय जाते हुए सदैव उसके मन में असुरक्षा का भाव उमड़ता रहता है। भगवान ने नारी को सुकोमल तन और मन तो दिया परंतु शोषण का जहर पीने का अभिशाप भी दिया।

“हम सदैव से सुनते आ रहे हैं कि नारी की स्थिति वैदिक काल से महाभारत काल युग तक सही थी तथा कलयुग में अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण हुई है, परन्तु इस तथ्य पर कौन प्रश्न चिह्न लगा सकता है कि स्वयं माता-सीता को भी अग्नि परीक्षा देनी पड़ी थी। क्या यह शोषण नहीं क्या यह नारी के साथ अन्याय नहीं?”<sup>1</sup>

यदि आज के संदर्भ में देखें तो नारी शोषण एक गंभीर समस्या के रूप में उभरा है। आज महिलाओं की स्थिति यह है कि उन्हें हर जगह शोषण का शिकार होना पड़ता है। छोटे लड़कों से लेकर अर्धशतक के पुरुष तक सभी उसका शोषण करने को तैयार रहते हैं। अब न उम्र का लिहाज है, न संस्कारों की शर्मा। उनके साथ कहीं पर बदसलुकी होती है तो कहीं पर अभद्र एवं अश्लील टिप्पणी होती है। आये दिन बलात्कार। “अपहरण एवं कत्ल की घटनाएँ घटती रहती हैं सो अलग। इसके अलावा जब किसी नारी पर छींटाकशी की जाती है तो भले ही यह शारीरिक शोषण न हो परन्तु मानसिक एवं भावनात्मक शोषण तो है ही।”<sup>2</sup> जब एक लड़की का जन्म होता है तभी से उसके पैरों में बेड़ियाँ डाल दी जाती हैं, आज हम उन बेड़ियों का विरोध तो करते हैं परंतु उन बेड़ियों के कारणों का उन्मूलन नहीं करते। इसका सबसे बड़ा कारण है- शोषण।

पितृप्रधान समाज में पुरुष ने अपने स्वार्थ हेतु अनेक नियम प्राचीन समय से ही बनाए थे, जिनके कारण स्त्री उसके किसी कार्य में दखल नहीं दे सकती थी, उसकी सीमा घर की चारदीवारी ही थी और आज यह शोषण घर की चारदीवारियों में भी हो रहा है। कहीं कोई पति अपनी पत्नी से मारपीट करता है तो कहीं कोई बाप अपनी ही बेटी से नाजायज संबंध स्थापित करने को गलत कोशिश करता है। अखबारों में शोषण की घटनाएँ पढ़ने को मिलती हैं कहीं कोई भाई अपनी बहन का कत्ल कर देता है तो कहीं ससुर अपनी ही बहू पर बुरी नजर डालता है। भारतीय समाज में पीड़ित नारी की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए पश्चिमी पत्रकार ने कहा है- “भारत की स्त्रियाँ घर परिवार में उसी प्रकार स्थित रहती थी, जैसे किसी स्थान पर साज-सजावट का सामान सजा रहता है और सुंदर वस्तुओं के शोपीस रखे जाते हैं। यह नारी जीवन की विडम्बना ही रही है कि चाहे वह समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई अर्थात् परिवार की नींव है जिस पर गृहस्थ व समाज के समस्त सदाचार टिके हुए हैं परंतु उसे कहीं भी उसका उचित स्थान नहीं दिया जाता। उस पर दुनिया भर के कर्तव्यों को लाद दिया जाता है पर अधिकार कभी नहीं दिया जाता। वह परिवार का पोषण करती है; सभी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करती है परंतु उससे ही पोषित होकर सभी उसी का शोषण करते हैं। इसी स्थिति को स्पष्ट करते हुए महादेवी वर्मा कहती है- “यदि पुरुष धनोपार्जन कर अपने कर्तव्य का पालन करता हुआ समाज तथा देश का आवश्यक और उपयोगी अंग समझा जाता है, राजनीतिक तथा सामाजिक अधिकारों का यथेष्ट उपभोग कर सकता है तो स्त्री गृह में भविष्य के लिए अनिवार्य संतान का पालन पोषण कर अपने गुरु कर्तव्य का भार वहन करती हुई इन सब अधिकारों से अपरिचित तथा वंचित क्यों रखी जाती है? यद्यपि शोषण के कारण नारी अविकसित एवं अशिक्षित रह जाती है, तथापि वह युग-युगांतरों से मूक साधिका के रूप में अत्याचारों व शोषण को सहन करके भी संसार को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ बनाती आई है।”<sup>3</sup>

आज भी समाज में रूढ़ियों, कुरीतियों व अंध परंपराओं से नारी का शोषण किया जाता है। यह शोषण नारी के आत्मविश्वास को तार-तार कर देता है। जिस नारी के हृदय में वात्सल्य का सागर बहता है उसी की पलकें इन कुकृत्यों के बाद आँसुओं से भीग जाती हैं। पुलिस व कानून कई घटनाओं पर असहाय नजर आते हैं कानूनी दांवपेज में मूल समस्या गौण हो जाती है। शोषण चलता रहता है। स्त्रियाँ कई बार दबाव या सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण अपने साथ हो रहे शोषण व अत्याचार के

खिलाफ आवाज नहीं उठा पाती। “आज नारी का मन कुंठा, भय तथा आक्रोश से भरा हुआ है पर उसका शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक हनन होता रहता है, हर बार वहीं अबला बनकर रह जाती है और अपराधी छाती ठोककर चलते रहते हैं।”<sup>4</sup>

हमारा पूरा समाज, प्रशासन, न्यायपालिका, राजनीति और अर्थतंत्र नारी के विरोध में खड़ा होता है जहाँ उसकी परिधि घर की लक्ष्मण रेखा तक सीमित कर दी जाती है तथा उसकी समस्त प्रतिभा का उपभोग भोजन पकाने व बच्चे पैदा करने से आगे नहीं बढ़ने दिया जाता है। परिणाम स्वरूप अत्याचारों से ग्रस्त नारी में हीन भावना जन्म लेने लगती है और धीरे-धीरे वह मानसिक उत्पीड़न का शिकार होने लगती है। प्रारंभ से ही पुरुष समाज का नारी की अपेक्षा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक व धार्मिक सभी क्षेत्रों में आधिक्य रहा है। यहाँ तक कि नारी, पति के अत्याचारों का भी शिकार होती रही है, असहनीय पीड़ा को धैर्य के साथ सहते जाना ही उसका जीवन है। भारतीय नारी पति से थोड़े से प्रेम की आशा करती हुई अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है जबकि पति इसी मानसिकता का लाभ उठाकर उसका शोषण करता है। पुरुष अपनी पत्नी को शारीरिक संतुष्टि अथवा घरेलू आवश्यकता की पूर्ति का साधन मानता है। ससुराल तथा पति चाहे कितना भी क्रूर हो उसे उसी रूप में झेलते चले जाना ही परंपरागत संस्कारों से जकड़ी नारी की नियति बन जाता है। कई बार गृहस्थी की चक्की में पिसकर नारी घर का पायदान बनकर रह जाती है तथा तनावग्रस्त जीवन जीने के लिए विवश हो जाती है।

नारी सशक्तीकरण का झंडा फहराते हुए सालों बीत गए पर शोषण नामक बीज विशाल वृक्ष में परिवर्तित हो गया, परंतु इससे मुक्ति मिलने का रास्ता भी नजर नहीं आया। आधुनिक युग में स्त्री की स्थिति में काफी परिवर्तन हुए है। आज वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अवश्य चल रही है, परंतु फिर भी बहुसंख्यक नारियाँ आज भी उत्पीड़न की शिकार है, दहेज दानव की बलि चढ़ रही है, बलात्कार की शिकार होकर आत्महत्या की शरण ले रही है। “नारी शोषण की बात कोई नयी तो नहीं फिर भी यह बात हर बार विचलित करती है। आज भी नारी जीवन के विभिन्न स्तरों जैसे दैहिक, आर्थिक एवं मानसिक स्तर पर शोषण का शिकार होती जा रही है।”<sup>5</sup>

जब महिला को उपभोग की वस्तु समझकर उसके शरीर से खिलवाड़ किया जाता है तो उसे दैहिक शोषण की समस्या कहा जाता है। प्राचीन समय से ही नारी के

दैहिक शोषण की समस्या चली आ रही है। आज भले ही वह अपने आजादी के लक्ष्य को एक सीमा तक प्राप्त करने में सफल हो रही है परंतु चलते-फिरते कटाक्ष, कार्यालयों में पुरुषों की बुरी नज़रों का सामना करना आदि अनेक समस्याओं से वह आज भी उत्पीड़ित है। पहले अछूत, विधवा, वेश्या, अनमेल विवाह आदि रूपों में उसका दैहिक शोषण होता रहा। जैसे-जैसे वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई उसने इन समस्याओं का मुकाबला किया। वह पुरुषों से आगे बढ़कर कार्य करने लगी, भले ही इन लक्ष्यों तक पहुँचने में पुरुष ने उसका साथ दिया परंतु पुरुष ने ही आधुनिकता के नाम पर उसके दैहिक शोषण के नए ढंग भी खोज लिए। संयुक्त राष्ट्र से प्राप्त ताजा जानकारी के अनुसार- “महिलाओं और लड़कियों के यौन उत्पीड़न दहेज के लिए दहन, भ्रूण हत्या और परिजनों के हाथों पिटाई की घटनाएँ दुनिया भर में गंभीर समस्या बनती जा रही है, जिसके कारण लड़कियों को शारीरिक, मानसिक, यौन और आर्थिक उत्पीड़न से गुजरना पड़ता है।”<sup>6</sup> नारी अपने साथ किए गए देह शोषण को व्यक्त करना चाहते हुए भी समाज व संस्कारों के दबाव में आकर प्रकट नहीं कर पाती।

विज्ञापनों में अर्द्धनग्न देह का प्रदर्शन, सौंदर्य प्रतियोगिताएँ, फिल्मों में अश्लीलता आदि दैहिक शोषण का नया रूप ही तो है, नारी स्वयं भी आज इस शोषण में भागीदार है। अधिकतर विज्ञापनों में नारी देह के अंगों का अनावश्यक प्रदर्शन देखने को मिलता है। इस तरह के विज्ञापनों द्वारा नारी वर्ग का शोषण ही तो होता है। नारी ने जानबूझकर अपने लिए एक नए अध्याय की शुरुआत की है। आज प्रचार के लिए नारी को एक वस्तु की तरह प्रस्तुत किया जाता है, नारी सुंदरता का प्रतीक है परंतु सौंदर्य की जब सीमाएँ लांघी जाती है तो सौंदर्य हानिकारक हो जाता है। हमारा समाज कितना ही आधुनिक व प्रगतिशील क्यों न माना जाए, फिर भी पुरुष प्रधान रहेगा दोषारोपण पुरुष से अधिक महिला पर ही होता है।

आधुनिक समय में दैहिक शोषण के अंतर्गत भ्रूण हत्या अत्यंत गंभीर समस्या है। कानून होने पर भी चोरी छिपे वर्तमान समय में अल्ट्रासाउंड से लिंग निर्धारण हो रहा है। जबकि यह कानूनन अपराध है। चोरी छिपे मामूली रकम के लिए बालिका भ्रूण को जन्म से पहले ही मारा जा रहा है, देश में हर जगह स्थिति गंभीर होती जा रही है। पंजाब में प्रति हजार बालकों पर सात सौ तिरानवे बालिकाएँ रह गई हैं, जबकि हरियाणा में यह संख्या ‘आठ सौ बीस’ है तीसरा स्थान दिल्ली का है जहाँ

प्रति हजार बालकों पर आठ सौ पैंसठ बालिकाएँ, राजस्थान में प्रति हजार बालकों पर 909 बालिकाएँ हैं। इस प्रकार आज भी समाज में कहीं जन्म के बाद लड़कियों को त्याग दिया जाता है। फेंक दिया जाता है तो कहीं उन्हें विद्यालय न भेजकर घरों में खेत खलिहानों में या कारखानों में काम करने के लिए मजबूर किया जाता है, जिससे वह अपना बचपन हमेशा के लिए गिरवी रख देती है, तो कहीं समाज में उसे कच्ची उम्र में ही परिवार का दायित्व सौंप दिया जाता है, जिसके कारण उसे स्वअस्तित्व की पहचान नहीं हो पाती।

आज लाखों हजारों स्त्रियाँ प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में यौन उत्पीड़न से ग्रस्त हैं। कार्यशील महिलाओं को तो आए दिन अपने सहयोगी कर्मचारी, बॉस तथा आने-जाने वाले अनेक लोगों की घूरती निगाहों, भद्दी व अश्लील हरकतों द्विअर्थी संवादों को झेलना पड़ता है, यौन उत्पीड़न या दैहिक शोषण किसी वर्ग विशेष तक सीमित नहीं है। फर्क सिर्फ इतना है कि- “नौकरीपेशा महिलाओं को तो कभी न कभी इसका अनुभव होता ही है। चाहे वह घर में काम करने वाली बाई हो, महिला मजदूर हो या कोई उच्च स्तरीय अधिकारी जिन महिलाओं के लिए काम करना मजबूरी या जरूरत है, उनके साथ पुरुषों का व्यवहार कई बार और भी बेशर्मी व अभद्रता से भरा होता है।”<sup>7</sup> अपने व परिवार की बदनामी का डर, माँ-बाप की पीड़ा, नौकरी छूट जाने का भय आदि विचारों से नारी उलझ जाती है तथा दैहिक शोषण के साथ-साथ मानसिक उत्पीड़न का भी शिकार होती है। पुरुष अपनी बहन, बेटी व पत्नी के लिए अलग रवैया अपनाते हैं तो दूसरे की बेटी, बहन व पत्नी के साथ किया अभद्र व्यवहार उनके लिए मात्र मजाक होता है तथा स्त्री के साथ यह दैहिक शोषण हमेशा चलता रहता है। जबकि कार्यालयों व नौकरी पेशा महिलाओं के लिए यौन उत्पीड़न समिति बनी होती है।

समाज की दृष्टि में नारी को नर की अपेक्षा अनुत्पादक माना जाता है, जिसके कारण उसे दबाकर रखा जाता है। नारी को दूसरे दर्जे के नागरिक का दर्जा देकर उसे पददलित भी बनाया जाता है। ऐसे ही समाज में लड़कों का जन्म सौभाग्य व लड़की का घर में आना दुर्भाग्य का चिह्न मानकर दोनों के लालन-पोषण में दुलार सम्मान में भारी अंतर रखा जाता है। यद्यपि शिक्षा से कई परिवारों में स्थितियाँ बदली हैं। “इसी तरह आज भी समाज में पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, सती प्रथा आदि कुरीतियाँ व्याप्त हैं जो समय-समय पर नारी को उत्पीड़ित करती हैं। ये सभी परिस्थितियाँ ही नारी को हीन, असमर्थ, दीन-दुर्बल व पराधीन मानकर मानसिक रूप से पीड़ित करती हैं।”<sup>8</sup>

घर से बाहर काम करना नारी के लिए कोई नई घटना नहीं है। कृषि प्रधान देश भारत में तो नारी सदा से ही कार्य करती रही है, परंतु आज कार्यशील नारी अनेक समस्याओं का सामना कर रही है वह आत्मनिर्भर होते हुए भी दोहरी जिम्मेदारी के बोझ तले दबी हुई है।

परिवार में पूर्ण सहयोग न मिलने पर वह खुद ही अपराधबोध से भर जाती है कि वह सद्गृहिणी नहीं बन पा रही है। नौकरी के कारण उसके घर का वातावरण तनावग्रस्त बना रहता है। कई बार वह अपने मन को मारकर नौकरी भी छोड़ देती है। कई बार आर्थिक विवशता के कारण न छोड़ पाने की स्थिति में वह नौकरी तो करती है परंतु मानसिक तनाव में उलझ जाती है। शम्सुल इस्लाम नारी की इस स्थिति की ओर संकेत करते हुए कहते हैं- “स्त्री का हृदय कोमल होता है। अतः वह नौकरी का कष्ट प्रताड़ना तिरस्कार आदि नहीं सह सकती।”<sup>9</sup> थोड़ी सी विपरीत बात आते ही उसके आँसू आ जाते हैं। नौकरी करते समय कई बार पति का अविश्वास भी झेलना पड़ता है। यदि वह प्रतिष्ठित पद पर पुरुषों के साथ काम करती है, अपने व्यवसाय को गंभीरपूर्वक लेती है तो पति को यह उचित नहीं लगता हीन भावना के कारण पति के अहम को इससे धक्का पहुँचता है। इन सबके कारण नारी को सदा तनाव सहना पड़ता है। “घर और बाहर कहीं भी जब वह संतोषजनक रूप से कार्य नहीं कर पाती तब वह अपने आपको टूटा सा महसूस करती है जिससे उसे अधिक मानसिक शोषण का सामना करना पड़ता है।”<sup>10</sup>

पति का अहमवादी दृष्टिकोण में बड़ों की सहायता न मिलना, सास द्वारा प्रताड़ना, इन सभी समस्याओं से नारी समय-समय पर जूझती हुई मानसिक शोषण का शिकार होती है। काम करने वाली नौकरी पेशा नारी को घर और दफ्तर दोनों में सामंजस्य करना पड़ता है परंतु जब वह घर में बच्चों या पति पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाती है तो मन ही मन कुंठित हो जाती है। नारी चाहे कुशल इंजीनियर कुशल प्रशासक, वकील हो, उसे केवल नारी ही समझा जाता है, एक मानव नहीं। इस स्थिति में उसके तन तथा मन दोनों पर बुरा असर पड़ता है, वह मानसिक रूप से शोषित होती रहती है।

“आर्थिक रूप से नारी आत्मनिर्भर न होने के कारण अपनी प्रत्येक आवश्यकता के लिए पुरुष के अधीन रहती है और इसी अधीनता के कारण वह कोई भी निर्णय स्वतंत्र रूप में नहीं ले पाती। उसे हर कार्य अधीनता में रहकर करना पड़ता है।”<sup>11</sup> वह

भयभीत रहती है कि यदि उसे आर्थिक सहायता ही नहीं मिलेगी तो वह जीवन यापन कैसे करेगी विडंबना यह भी है कि वह यदि आत्मनिर्भर होती भी है तो भी शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक सभी दृष्टियों से शोषित होती है। परिवार के काम काज की जिम्मेदारी में पूरे दिन की व्यस्तता रहने के कारण आर्थिक स्वावलंबन की दृष्टि से नारी अवकाश पाती रही है। जहाँ लक्ष्मी को धन की देवी मानकर प्रतिवर्ष पूजा जाता है, वहाँ नारी को आर्थिक स्वतंत्रता नहीं दी जाती। यहाँ तक कि वह अपनी स्वयं की अर्जित कमाई भी पुरुष की अनुमति के बिना व्यय करने में स्वतंत्र नहीं होती। महादेवी वर्मा ने नारी की आर्थिक स्थिति को उजागर करते हुए कहा है- “समाज ने स्त्री के संबंध में अर्थ का ऐसा विषम विभाजन किया है कि साधारण श्रमजीवी वर्ग से लेकर सम्पन्न वर्ग की स्त्रियों तक की स्थिति दयनीय ही कही जाने योग्य है। वह केवल उत्तराधिकार से ही वंचित नहीं है वरन अर्थ के संबंध में भी सभी क्षेत्रों में एक प्रकार की विवशता के बंधन में बँधी हुई है।”<sup>12</sup> आर्थिक शोषण के अंतर्गत दहेज के लिए नारी को सताना, अशिक्षा परनिर्भरता, घर में पुरुषों के शासन में उसकी अधीनता पारिवारिक व कार्यक्षेत्र में पीड़ित करना आदि कई ऐसे स्तर हैं जिनसे नारी का आर्थिक शोषण किया जाता है। यदि कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करने के लिए कोई नारी जीविका उपार्जन के लिए घर से बाहर कदम भी रखती है तो उसके चरित्र पर तरह-तरह के आक्षेप लगाए जाते हैं। इन संकुचित धारणाओं के कारण परंपरागत वातावरण में पली नारी आगे बढ़ने का साहस नहीं कर पाती व दूसरों पर आश्रित होकर आर्थिक रूप से शोषित होती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नारी विविध क्षेत्रों में बाहर आयी। नौकरी पेशा नारी ने विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में अपनी भूमिका अदा की। परिणामतः ऑफिस कॉलेज, फैक्टरी, व्यवसाय आदि विभिन्न क्षेत्रों में उसके संबंधों का नया रूप उभरा और नारी को विभिन्न मनःस्थितियों के मध्य गुजरना पड़ा। आज नारी आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होने के बावजूद भी परिवार से जुड़ी हुई है। आर्थिक स्वावलंबन से उसे पारिवारिक परंपराओं, रूढ़ियों, मान्यताओं एवं मर्यादाओं से पूर्णतया मुक्ति नहीं मिली है। उसे आत्मनिर्भरता का अहसास अवश्य हुआ है और उसके मन में वैयक्तिक चेतना ने भी जन्म लिया है किंतु एक ओर उसके सामने परंपरागत संस्कार एवं मानसिकता की समस्या उत्पन्न हुई तो दूसरी ओर वह अभी भी आर्थिक रूप से शोषित है। घर के दायरे से बाहर निकलकर भी नारी को विभिन्न प्रकार की परिवेशगत समस्याओं से

जूझना पड़ता है जैसे कार्यालय में सहकर्मियों और बॉस के साथ संबंध स्थानांतरण, कम वेतन और प्रताड़ना के भिन्न तरीकों से साक्षात्कार यद्यपि आधुनिक नारी ने कामकाजी होकर अपने दायित्व पूर्ति के लिए भूमिका बदली है, उसने घर व बाहर दोनों स्थानों पर संतुलन बिठाने की कोशिश की है तथापि उसे पुरुष से भिन्न ही समझा जाता है। अधिकांशतः आज भी यह माना जाता है कि स्त्रियों को परिवार की आय में सहयोग करने हेतु नौकरी करनी चाहिए। वे स्वतंत्रतावृत्ति के रूप में अपना कैरियर नहीं चुन सकती नारी जीवन की यह विडंबना रही है कि यदि वह बंद दरवाजों में रहती है तो सामाजिक परिवेश में छिन-भिन्न होकर घुटन, कुण्ठा, संकीर्णता एवं संदेह का शिकार बन जाती है और यदि घर से बाहर कदम बढ़ाती है तो दोहरे मानदण्डों का सामना करती है।

वैसे तो पुरुषसत्तात्मक समाज में प्राचीन युग से यह मान्यता चली आ रही है कि पुरुष ही आर्थिक दृष्टि से घर का संचालक होता है। स्त्री के लिए घर से बाहर निकलकर पुरुष की बराबरी करने के बारे में सोचना भी हेय माना जाता है। इसी कारण नारी की सबसे बड़ी विवशता उसकी आर्थिक पराधीनता बन जाती है। आर्थिक स्वतंत्रता पर ही नारी की वैयक्तिक स्वतंत्रता भी निर्भर करती है। इसीलिए आज की आधुनिक नारी घर परिवार की यातनाएँ सहने की जगह अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व कायम करने के लिए नौकरी करने लगी है, परंतु आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने पर भी उसके शोषण का स्तर कम होने की बजाय बढ़ता ही जा रहा है। इस प्रकार पुरुष ने नारी को आर्थिक दासता की जंजीरों से जकड़ रखा है।

जब किसी व्यक्ति का मानसिक संतुलन किसी शोषण अत्याचार या तनाव के कारण बिगड़ने लगता है तो वह व्यक्ति मानसिक तनाव से ग्रस्त हो जाता है। आम आदमी की बोलचाल की भाषा में मानसिक तनाव एक तरह का कष्ट है जो प्रतिकूल मानसिक परिस्थितियों से उत्पन्न होता है, ये दबाव कई तरह के हो सकते हैं जैसे- सामाजिक मूल्यों को लेकर मन में छिड़ा द्वंद्व रोजमर्रा के दबाव, जबरदस्ती की नौकरी इच्छा और कर्म के बीच की खाई, अयथार्थवादी लक्ष्य, कामयाब होने से जुड़े दबाव, सफलता पा लेने के बाद सफल बने रहने का दबाव जरूरत से ज्यादा काम अनियमित नींद झुंझलाहटें, जीवनधारा में आए भारी फेर बदल जब व्यक्ति इस तरह की मानसिक स्थितियों से गुजरता है तो यह मानसिक तनाव कहलाता है। आज नारी को घर की चाहरदीवारी से तो स्वतंत्रता मिल गई है परंतु उसे मानसिक स्वतंत्रता

प्राप्त नहीं हुई है। मानसिक, आर्थिक व दैहिक शोषण से नारी के मानसिक पटल पर आघात पहुँचता है जिसके कारण उसका मानस आत्मघृणा व आत्महिंसा से भर जाता है। परिणामस्वरूप उसके मन में अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए द्वंद्व पैदा हो जाता है जहाँ आज महिलाओं में आत्मविश्वास की भावना का प्रसार हुआ है। वहाँ उन्हें दोहरी भूमिका का निर्वहन करने के कारण मानसिक तनाव से भी गुजरना पड़ता है जिसके कारण उसका जीवन व्यथाओं का जाल बन जाता है। आधुनिक स्त्री चाहे कितनी ही स्वतंत्र हो अब भी पुरुष संस्कार से आक्रांत है। पुरुष संस्कार का प्रभाव स्त्री के मानसिक संगठन का हिस्सा बनकर रह गया है इस मानसिक गुलामी से मुक्ति पाना इतना जल्दी संभव भी नहीं। दूसरा कारण यह है कि पुरुष अब भी स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व का हिमायती होकर भी स्त्री को पुरुष-संस्कार से मुक्त नहीं होने देता। यही पुरुष संस्कार के बंधन उसे मानसिक रूप से तनावग्रस्त बनाते हैं।

कार्यक्षेत्र के अंतर्गत नारी पुरुष के निर्भीक वर्चस्व, स्वार्थपरता व पितृसत्तात्मक शक्ति के कारण भयावह जीवन व्यतीत करती है। उसे कार्यक्षेत्र में प्रतियोगी सहयोगी व बॉस जैसे पुरुषों के व्यय उपहास एवं बदनाम व्यवहार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, कार्यशील महिला दोहरा दायित्व संघर्ष तो निभा रही है। दायित्व तो वह इससे अधिक भी वहन कर सकती है, क्योंकि पुरुष की अपेक्षा उसमें दायित्व निभाने की सामर्थ्य अधिक है परंतु पुरुष कार्यशील महिला के साथ उतना सहयोग नहीं दे पा रहा है।

### 3.2 उपेक्षित स्त्री का यथार्थ

ममता कालिया एक ऐसी कथाकार है जिनकी प्रतिभा का लोहा सभी साहित्यकार मानते हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में भारतीय संदर्भ में स्त्री की दोयम दर्जे की स्थिति को बेहद ही संवेदनशील ढंग से चित्रित किया है। ममता कालिया ने अपनी रचनाओं में दर्शाया है कि दोयम दर्जे की पुरानी होने के कारण परिवार और समाज में स्त्रियाँ प्रायः शोषित होती रही हैं। नारी समाज में इसका उदाहरण है समाज में नारियों की पुरुषों पर निर्भरता तथा उनकी पराधीनता का कारण उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति ही है। इस समाज में चाहे संयुक्त परिवार हो या फिर एकल परिवार पुरुष सदा ही स्त्री को संपत्ति समझता रहा है।

एक नारी के देह और मन पर उसका अबाध अधिकार रहा है, वह अपनी इच्छानुसार उस पर नियंत्रण करना चाहता है। वस्तुतः हमारे समाज का मूल ढांचा ही

इस प्रकार का है कि नारी का शोषण हर जगह होता है। परिवार से बाहर प्रत्यक्ष रूप में तो परिवार में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में होता है। ज्यादातर नारियाँ परिवार के भीतर बाहर असुरक्षित होकर भी अपने आपको आहत और अपमानित महसूस करती हैं या की जाती रही हैं। पुरुष वर्ग उसके सामने आदर्श नारी का चरित्र रखकर या फिर कोई अन्य ठोस उदाहरण देकर उसे अपने नियमों के अनुसार जीने के लिए विवश करता है वह चाहकर भी आवाज नहीं उठा पाती है और वह पुरुष के दुर्ग में घिरी, घुटी ऐसे ही जीवन व्यतीत करती है। एक दृष्टांत देखिए 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में कविता हरतालिका के व्रत में विश्वास नहीं करती है तो संदीप कविता से कहता है- तुम इतनी परंपरा शून्य क्यों हो? हिन्दुस्तान की सारी औरत आज पति की खातिर निर्जल पड़ी हुई हैं और तुम प्रेम की तरह मेरे पीछे लग गई।

सीमोन द बोउवार ने सेकण्ड सेक्स पुस्तक लिखकर इस विचारधारा को क्रांति का नया रूप दिया। उसका मानना था कि धर्म और सामाजिक रूढ़ियों ने नारी को समाज में दोयम दर्जा दिया है। जिसके पीछे पुरुष वर्चस्व की सामंती कसक दिखाई दे रही है। नारी को अपने अधिकार पाने के लिए इन धार्मिक, सामाजिक, रूढ़ियों से मुक्ति पाने के लिए अभी लंबी लड़ाई लड़नी है। 'दुःखम सुखम' उपन्यास में लेखिका ने विद्यापति के माध्यम से यह स्पष्ट किया है। सीमित शिक्षा के बावजूद उसमें सहज व्यवहारिक ज्ञान था कि स्त्री के लिए घर परिवार एक किस्म का आजीवन कारावास होता है। आगे विद्यावती कहती है मोय नाय मिलौ गांधी बाबा में पूछती क्यों जी तुमने सिर्फ आदमियों को आजादी दिला दी, लुगाइयों को कब आजाद करोगे वह तो आज भी गुलाम है। लल्ला नत्थीमल ने कहा- "क्या गुलामी कर रही हो, जरा में भी सुनूं। घर का काम बहू करे दुकान में सभारू, तौपे कौन-सी जिम्मेदारी है? अभाल की नहीं में तो पिछले सालों की बात करूँ। इसी जिंदगानी दुःखम-सुखम कट गई अपनी राजी से कुछ नाये किये। लाला नत्थीमल कहते हैं क्या कहना चाहती रही तू।"<sup>13</sup>

"कुनबे की चौथराहट तूने संभारी देसी घी के चूरमा परांठे खाए, देखबे बारी न कोई सास न ननद और कसर रह गई? तुमने बस इत्ता ही जाना अरे औरत रोटी और पाटी के ऊपर भी कुछ चाहे की नाये। मर्द की गुलामी से अच्छी तो मौत होवे।" 'फर्क नहीं' कहानी इस तथ्य को सामने लाती है कि लड़की को परिवार में बंदिशों का सामना करना पड़ता है। 'वह मेरे योवन का शिखर था इसका पता मुझे अपनी

अंदरूनी कार्यवाही से उतना नहीं चला था, जितना की बाहर से कॉलेज से लौटकर एक दिन मैंने पाया मेरे कमरे की खिड़की पर नीला पर्दा लटक रहा है।' ममता कालिया की 'राजू' कहानी की विधवा बेटी परिवार में इसलिए उपेक्षित होती है, क्योंकि वह गरीब और विधवा नारी है। भाई की शादी पर जाने पर बहन व अन्य रिश्तेदारों द्वारा विभिन्न प्रकार की बातें करके उसे और उसके बेटे को अपशकुनी कहकर अपमानित किया जाता है। 'बेघर' में पात्र परमजीत की माँ का वर्णन है कि बार-बार प्रसव से उसके शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ा है। एक नारी को अन्य दायित्वों के साथ-साथ मातृत्व का उत्तरदायित्व भी निभाना पड़ता है। परिवार की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल होने से नारी का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। उसे मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना पड़ता है। भारतीय नारी अपने विकास और अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है।

“अधिकांशतः उत्पत्ति का घरेलू कामकाज तक सीमित रहना अपना जीवन भोगने में ही अपनी सफलता मानती है। उसके परिवार में लड़कियों की शादी हमेशा एक तनावपूर्ण विषय थी और तीन चार साल छोटी बहन भी भाई से ज्यादा विवाह योग्य मानी जाती है। फिर मांये अपनी लड़कियों को ज्यादा सख्ती से रखती है, वह अक्सर माओं द्वारा पैदा किए गए बच्चे को पालती रहती है और घर का काम करती है। भारतीय समाज में नारी की उपेक्षा सदा से बनी रही है। संयुक्त परिवार में उपेक्षा इतनी अधिक हो जाती है कि कुंवारी कन्याओं की कोई भी चिंता नहीं करता।”<sup>14</sup>

ममता कालिया का विचार है कि हमारे समाज में पारिवारिक परिवेश की संरचना कुछ इस प्रकार की है कि उनमें नारी का अध्ययन और शिक्षा आदि के लिए हतोत्साहित तो किया जाता है लेकिन उसके साथ ही नारी पर काम का दबाव भी अधिक पड़ता है और इसलिए उनकी शिक्षा अधूरी रह जाती है। वह अपनी पढ़ाई तो जारी नहीं रख पाती है, 'बेघर' उपन्यास में परमजीत की बहन घरेलू कामकाज की अधिकता के कारण से अपनी व्यक्तिगत सफाई का ध्यान नहीं रख पाती। ऐसे में वह शारीरिक रूप से पीड़ित नजर आती है। उसका सिर जुओं से भरा रहता है, उसके हाथ से हर समय मसालों की गंध आती है माँ मातृत्व का बोझ झेलती है और बच्चों के पालन-पोषण में माँ का हाथ बटाती है। यही कारण है कि उसका स्कूल जाना अक्सर किसी कारणवश रुक जाता है। 'बातचीत बेकार है' कहानी में लेखिका ने एक ऐसी पत्नी को प्रस्तुत किया है जो अपनी यंत्रवत जिंदगी से ऊब गई है। उसका पति नौकरी के लिए चला जाता है और वह घर में अकेली रहती है। पुरुषों के अहमभाव

और स्त्री को समझाने की उसकी प्रवृत्ति को लेखिका ने इस कहानी में दिखाया है। इस वजह से नारी का जीवन सिर्फ रसोई घर और प्रसूति गृह तक ही सीमित होकर रह जाती है, साथ ही उसके बच्चे भी उसे ज्यादा परेशान कर देते हैं। वह नाम मात्र की गृहस्वामिनी बनकर रह जाती है। यहाँ तक की कुछ वर्षों बाद उन्हें लगता है कि पति-पत्नी के बीच बातचीत बेकार है। वह किसी काम का नहीं है। ममता कालिया की 'तोहमत' कहानी आज के समाज की विकृत मानसिकता का परिचय देती है कि एक लड़की के अगर कपड़े फटे हो अर्थात् सामान्य व्यवस्था में न हो तो समाज परिवार सभी उस पर शक की दृष्टि बनाए रखते हैं। इस तरह जुर्म करने वाला भी समाज और उस पर उंगली उठाने वाला भी समाज होता है। 'तोहमत' कहानी में सुधा और आशा दो सहेलियाँ एक साथ रहती हैं। ये दोनों एक दिन घूमने जाती हैं लेकिन वही यह अपना रास्ता भूल जाती है और जंगल में फँस जाती है। वहाँ यह दोनों सहेलियाँ एक साधु को असामान्य अवस्था में देखकर डर के मारे भागती हुई कंटीले रास्तों से आते हुए अपने घर पहुँचती हैं और कंटिलों रास्तों से आते हुए उनके कपड़े फट जाते हैं। जब उनके परिवार वाले उन्हें ऐसे ही हालात में देखते हैं तो घर में सभी लोग शंकित दिखाई देते हैं आशा की माँ बुरा-भला कहती है- “हाय हाय यह तुझे क्या हो गया?” सुधा ने हाँफते हुए कहा “कुछ नहीं चाची जी हम ज्यादा दूर निकल गई थी।”<sup>15</sup> बातों बातों में। उन लोगों को पता चलेगा तो क्या सोचेंगे। रख दी ना इज्जत धूल में मिलाकर सुधा डर आतंक और आँखों से कांपने लगी, चाचा जी आपकी इज्जत कोई धूल में नहीं मिली है, हमारे साथ कुछ भी नहीं हुआ है। हम किसी को मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहे। “आशा कहती है पर अम्मा कुछ हुआ भी तो हो, माँ कहती है अब और क्या होना बाकी है। हमारा मुँह काला करा दिया, अपना मुँह काला करा लिया, लड़कियों के बारे में तो लोगों की धारणा पहले ही ठीक नहीं होती और फिर बाद में उसकी जरा सी गलती पर लोग उस पर तोहमत लगाने को तैयार हो जाते हैं।”<sup>16</sup>

पितृसत्तात्मक समाज में नारी प्राचीनकाल से अनेकानेक समस्याओं से संघर्ष करती आई है। अपवादस्वरूप वैदिक काल में नारी की स्थिति अतिसम्माननीय थी। जीवन के सभी क्षेत्रों में उसे महत्ता प्राप्त थी। उस समय नारी पूजनीय व आदरणीय समझी जाती थी इसके विपरीत मध्यकाल में आकर नारी के अस्तित्व में गिरावट आई। नारी पुरुषों के हाथ की कठपुतली बना दी गई। पति ही अर्थोपार्जन करता था

तथा वह स्वामी होता था। पत्नी केवल पति बच्चों एवं परिवार के लिए समर्पित थी जिसका परिणाम आज आधुनिक समाज में परंपरागत जीवन जीने वाली नारी भोग रही है। उसके मन में यह मान्यता यह विश्वास ठूस-ठूस कर भरा जा चुका है कि पुरुष ही श्रेष्ठ है तथा उसे उसी के अधीन रहना है।

स्त्री-पुरुष का भेद समाज निर्मित है। इस भेद को दूर करने के लिए ही नारी स्वतंत्रता आंदोलन का सूत्रपात हुआ। “भारतीय नारी का मुक्ति संघर्ष कब शुरू हुआ होगा, इसका कुछ निश्चित प्रमाण नहीं मिलता। जैसे-जैसे नारी पर बंधन कसते गए, उन बंधनों से मुक्त होने की चाह भी वैसे-वैसे बढ़ती गई।”<sup>17</sup> 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में स्त्रियों ने स्वयं इस ओर ध्यान केन्द्रित किया और अपने प्रयत्नों को गति प्रदान की। नारी आंदोलनों ने नारी संबंधी सामाजिक वर्जनाओं को दूर करना, शिक्षा प्रसार, पर्दा प्रथा को हटाना, बाल विवाह का विरोध करना, विधवा विवाह पर बल देना इत्यादि का समर्थन किया। पाश्चात्य जागृति और चेतना ने भारतीय समाज को प्रभावित किया। 20वीं शताब्दी के आरंभ में स्वयं नारी में नारी संगठनों की स्थापना नारी स्वतंत्रता के लिए की। उसने आत्मोन्नति और आत्मनिर्भरता की आंतरिक तड़प महसूस की। आधुनिककाल में शिक्षा के प्रभाव स्वरूप व पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से नारी में जागृति आई है। उसने अपनी खोई गरिमा को पाने के लिए एक संघर्ष सा छेड़ दिया है। नारी ने अपने अधिकारों के लिए डटकर संघर्ष किया है और भी कर रही है और उसका सबसे बड़ा संघर्ष पितृसत्तात्मक सत्ता से है।

नारी संघर्ष बहुआयामी है। इक्कीसवीं शताब्दी में पहली बार ऐसी परिस्थितियाँ बन रही हैं जब स्त्री सचमुच स्वतंत्र हो सकती है इसका अर्थ यह नहीं है कि स्त्री को अपनी मानवीय अस्मिता के लिए संघर्ष नहीं करना चाहिए। भारतीय समाज में व्याप्त चुनौतियों को स्वीकार करके नारी अपना उत्तरदायित्व निभा रही है। क्योंकि वह देवी, सौम्य और सृष्टि की जननी भी है। जब कहीं भी नारी के अधिकारों का हनन होता है तो उसके मन में आक्रोश ही पनपता है। इसी कारण आज नारी ने विद्रोही रूप भी अपनाया है। यही नारी की वास्तविक भूमिका है। नारी की इसी भूमिका के संदर्भ में नासिरा शर्मा कहती है ‘हर काल में औरतों ने अपने समय को कला साहित्य, नृत्य संगीत, इतिहास व समाजशास्त्र में दर्ज किया है। जरूरत पड़ने पर तलवार भी उठाई है और पति की चिंता के साथ जलकर आत्मरक्षा का भी परिचय दिया है’।

समाज में नारी हर जगह उपेक्षित होती आ रही है, ममता कालिया ने अपने कथा साहित्य में स्त्रियों के उपेक्षित होने का बखूबी चित्रण किया है, समाज कितना भी शिक्षित हो जाए पर स्त्री के प्रति उनकी सोच यथावत् रहती है, समाज में स्त्री घर, परिवार, दफ्तर, कहीं ना कहीं उपेक्षित होती रही है स्वयं लेखिका भी इस उपेक्षा का शिकार हुई है। ममता कालिया की कहानी 'आपकी छोटी लड़की' में ममता कालिया का जीवन दृष्टिगत होता है जिसमें दुनिया अपनी बड़ी बहन के कारण घर में, उसकी दीदी के कॉलेज में उपेक्षित होती रही है। आज परिवर्तन की अखण्ड प्रक्रिया में नारी ने नगरों महानगरों में बड़े पैमाने पर होने वाले सार्वत्रिक परिवर्तनों और यांत्रिक सभ्यता के दबाव को महसूस किया है। उसने भयावह और आततायी पारिवारिक सामाजिक परिवेश को अपने भीतर रूपांतरित होते देखा है जीवनगत इन विसंगतियों में भी आज उसमें स्व अस्तित्व की चेतना प्राप्त होती है। आज वह निरंतर आत्मसम्मान की प्राप्ति के लिए चारों स्तरों पर (पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक) कोशिश कर रही है। यह आज हर क्षण स्वयं को संकट से घिरी पाती है। वहाँ उसके अस्तित्व का प्रश्न है। अस्तित्व संकट की लड़ाई में वह निहत्थी ही जूझने पर बाध्य है। आज नारी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर न होने के कारण भी वह पुरुष के अधीन रही है। आज वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर पुरुष की अधीनता को ठुकरा रही है। पिछले दशक से स्त्रियों ने नई क्रांति को जन्म दिया है। "समाज के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों ने अपनी भूमिका निभाई है। उन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा शक्ति, निष्ठा व संघर्ष से पुरुषों की दुनिया को चुनौती देकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम किया है।"<sup>18</sup>

वर्तमान समाज में नारी पुरुष में नारी पुरुष वर्ग से प्रतिस्पर्धा न कर केवल उसके समक्ष एक मनुष्य होने के नाते प्राप्त होने वाले अधिकारों की मांग कर रही है। परिणाम स्वरूप आज वास्तव में मानव जाति की मूल आधार नारी शक्ति देवी के रूप में अपनी अस्मिता व अस्तित्व की लड़ाई से धरती पर स्वर्ग के अवतरण का आधार बन रही है।

### 3.3 स्त्री अधिकारों का हनन

भारतीय समाज में स्त्री के अधिकारों पर खतरा मंडराता रहा है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्री ने अनेक उत्थान एवं पतन देखे हैं। एक और जहाँ स्त्री

वन्दनीय ममतामयी एवं प्रेरणादायी शक्ति रही है तो दूसरी और वह सामाजिक रूढ़ियों की शिकार होकर पुरुष प्रधान समाज के द्वारा कुलटा, पतिता, जैसे शब्दों से शापित हुई है। समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा इत्यादि के साथ विधवा समस्या, संतानहीनता जैसी अनेक रूढ़ियाँ हैं जो स्त्री के अधिकारों व उनकी उन्नति के मार्ग में बाधक बनती हैं।

प्राचीन समाज में सामाजिक रूढ़ियाँ रीति-रिवाज एवं धर्म के नाम पर अनेक रूढ़ियाँ प्रचलित थीं। परिणामस्वरूप स्त्रियाँ शिक्षा से भी वंचित होने लगी एवं जागरुकता में कमी आई। डॉ. तिवारी ने दहेज की समस्या के लिए कहा है कि शरीर पर छोटा सा कोढ़ का दाग उभरकर जब बढ़ने लगता है तो शरीर गलने लग जाता है। ऐसे मनुष्य का स्वाभाविक शरीर कितना विकृत और भयानक हो जाता है। यह सभी जानते हैं। दहेज भी भारतीय समाज रूपी स्वस्थ शरीर का कोढ़ है। निश्चित ही यह कोढ़ भारतीय समाज के शरीर को विकृत कर रहा है। धीरे-धीरे गलता जा रहा है। वास्तव में दहेज रूपी दानव आज भारतीय समाज में विनाश लीला मचाए हुए है। इसके कारण कितनी ही बहुएँ व युवतियाँ काल के गाल में समा चुकी हैं। इतना ही नहीं, यह देश की चहुँमुखी प्रगति में भी बाधक है। इसने मनुष्य को अपने आदर्श व मूल्यों से भी गिरा दिया है। इसके फलस्वरूप अधिकतर लोग उचित अनुचित साधनों के आधार पर धन कमाने में जुटे हैं क्योंकि उन्हें दहेज के दानव की पेट पूजा भी करती है।

“मध्यकाल की सामाजिक स्थिति ने स्त्री के लिए वैवाहिक नियमों एवं स्त्री सम्बन्धी प्रथाओं को और भी कठोर बना दिया। फलस्वरूप विधवा विवाह, सती प्रथा जैसी समस्या अपनी चरम सीमा में पहुँच गयी और स्त्री को सम्पत्ति के अधिकार से भी वंचित कर दिया गया है। इस प्रकार सामाजिक रूढ़ियों के परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि महिलाओं की स्थिति को महिलाएँ ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज भारतीय संस्कृति का अंग समझने लगा और यही कुरीतियाँ सांस्कृतिक विरासत के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होने लगी।”<sup>19</sup> कुप्रथा के कारण स्वतंत्रता का भाव हृदय से हट जाता है। काहिली और मूर्खता बढ़ती है। वैमनस्य की उत्पत्ति होती है मुकदमेबाजी में समय और रुपये का नाश होता है और स्त्रियों की अधोगति का ठिकाना नहीं रहता।

भारतीय समाज में लिंग भेद से भी स्त्री के अधिकारों का हनन होता आ रहा है। लिंग भेद के कारण स्त्री को सामाजिक एवं आर्थिक रूप में दोगुना दर्जे का समझा जाता रहा है। भारतीय समाज में बेटा-बेटी के एक समान होने के नारे भले ही लगाए जाते हैं लेकिन लिंग भेद की असमानता ने बहुत गहरी मानसिकता को व्यक्त किया है। शिक्षा एवं जागरूकता अभियान के उपरांत भी परंपरावादी मान्यताओं ने लिंग भेद की धारणा ने समाज में जड़ता जमाई हुई है। एतरेय ब्राह्मण में एक स्थल पर पुत्र को स्वर्गतुल्य व कन्या को विपत्ति के रूप में संबोधित किया है। तैत्तिरीय संहिता में नारी को शुद्र से भी नीचे माना गया है एक ही मां के जन्मे बेटा-बेटी में भेद वह भी स्वयं मां के द्वारा यह सबसे बड़ा दुःख का विषय है स्त्री के लिए बेटी के जन्म के समय उत्सव एवं खुशी न मानकर तबे बजाकर शोक प्रकट किया जाता है जबकि पशु भी अपने बच्चों को समान रूप से स्नेह करते हैं। “यदि समाज का कथन है कि औरत ही औरत की दुश्मन है, पतन का कारण है तो यह गलत नहीं है। वास्तव में यह भावना ही औरत के पतन का मुख्य कारण है। वास्तव में यह भावना पुरुष प्रधान समाज की देन है जो नारी में संस्कार बन चुकी है।”<sup>20</sup>

ममता कालिया ने अपने समग्र कथा साहित्य में यह अभिव्यक्त किया है कि पुराने पंथी विचारधारा के कारण स्त्री स्वयं एक दूसरे के विरुद्ध एवं पतन के करने तक को विवश है। कहानी ‘मनहूसाबी’ में ऊषा स्वयं अपने जन्म के होने के बारे में बताती है कि वह किस प्रकार जिंदा रह गयी। ‘मनहूसाबी’ का नाम ऊषा है। बड़ी बहन का नाम आशा था। शायद इसलिए उसका नाम ऊषा रखा गया। दरअसल नाम रखने में किसी की जरूरत नहीं समझी। अपनी बहन से वह सिर्फ ग्यारह महीने छोटी है। उसने माँ से सुना है जब वह पेट में आई माँ को बहुत गुस्सा आया था। एक बच्ची गोद में ऊपर से फिर बच्चा माँ ने उसे मिटाने के लिए सब कुछ किया अपने पेट पर जोर से मुक्के मारे मेथी उबाल कर पी कुनैन खाई पर उसे कुछ न हुआ आखिर हथियार डालकर दादी ने कहा चल हो जाने दे बेटा हो गया तो क्या कहना। अगर बेटी हुई तो घरे पे डाल देंगे या अस्पताल में छोड़ आर्येंगे। माँ ने भी धीरे से कहा, मुझे लगता है इस बार भक्त प्रहलाद ही आर्येंगे, जिस दिन वह पैदा हुई घर में चूल्हा तक नहीं जला।

“कहानी ‘कवि मोहन’ में भी लिंगभेद को दर्शाया है, कवि मोहन के घर से भाग जाने के कारण जब उसकी मां याद करती है कि दो बेटियों के बाद जन्मा यह लड़का उन्हें कितनी खुशी देता है जिसके लिए सभी त्योहार, रस्मों रिवाज निभाये जाते हैं। दूसरी तरफ लड़कियों के नामकरण भी ठीक से नहीं किये जाते हैं।”<sup>21</sup>

स्त्री के अधिकारों के हनन में भारतीय समाज में व्याप्त पितृव्यवस्था भी है जिसमें लड़की को अपने पिता की इच्छानुसार कार्य करने के लिए विवश किया जाता है। पितृ व्यवस्था एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत पिता या कोई पुरुष परिवार के सभी सदस्यों संपत्ति व अन्य आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण रखता है ऐसी व्यवस्था में नारी की स्थिति गौण मानी जाती है परंतु यदि आज नारी को पूर्णतः सशक्तीकरण के मार्ग पर चलना है तो पितृव्यवस्था के इन बंधनों से मुक्त होना पड़ेगा। ममता कालिया मानती है कि- मैं नारी मुक्ति को बड़ा पावन शब्द मानती हूँ और इसमें उसकी विचारगत स्वतंत्रता के नये रास्ते देखती हूँ। उपन्यास 'दुःखम सुखम्' की पात्रा प्रतिभा भी पितृव्यवस्था की बेड़ियों को तोड़कर बंबई जाकर विज्ञापन जगत तथा मॉडलिंग में नाम कमाना चाहती है पर पिता कवि मोहन चाहते हैं कि वह या तो आई.ए.एस की तैयारी करें या एम.ए., डी. फिल लेक्चरर बने। प्रतिभा पिता द्वारा बताए रास्ते का विरोध करती हुई कहती है- "आपका यह वाला रास्ता मैं नहीं चलूंगी। यह आप तय नहीं करेंगे पापा मैं क्या करूँगी.....पापा आप हमें कठपुतली समझते हैं, जैसे मर्जी घुमा दिया, जैसी मर्जी नचा दिया बनाओं आप मुन्नी को जो बनाना है, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। एक दिन प्रतिभा घर छोड़कर बंबई चली जाती है। घर पर एक खत छोड़ जाती है, जिस पर लिखा था "पापा मेरा घर में वक्त खत्म हो गया है, बंबई से मुझे बार-बार बुलावा आ रहा है।"<sup>22</sup>

उपन्यास 'प्रेम कहानी' की पात्रा 'यशा' मुक्त और कुंठाहीन व्यक्तित्व है। जीवन से उसकी अपेक्षाएँ भी ज्यादा थी। लेकिन अपने माँ-बाप का रवैया उसे हमेशा खिन्न कर देता है। अपने घर की पितृव्यवस्था की जकड़न के बारे में बताती हुई वह कहती है चार लड़कियों के बाप को अपनी बेटियाँ ब्याहने की कैसी उतावली रहती है। वे रिश्ता ढूँढते समय यह नहीं देखते कि रिश्ता लड़की के लायक है या नहीं। वे तो गिनती पूरी करते हैं। मेरी दोनों दीदीयों को एक-एक कर ब्याह हुए तो पिता जी ने हर बार हाथ झाड़कर कहा यह भी गई, अब बची तीन यह भी पार लगी, अब बची दो...उनके लिए हमें कुँ में धकेलना या ब्याह में धकेलना एक बराबर है। बस दो पैर दो हाथ का जीव होना चाहिए, इतना भर देखते हैं वह बाय गॉड, मैं तो ऐसे शादी नहीं करूँगी। जब उसकी मित्र जया उससे पूछती है कि अगर माँ-बाप उसकी शादी भी ऐसे ही कर देंगे तो वह क्या करेगी तब यशा कहती है आत्मदाह कर लूँगी, कपड़ों पर तेल छिड़ककर जल मरूँगी, देख लेना। "इस प्रकार स्पष्ट है कि यशा यदि

पितृव्यवस्था के बंधनों का विरोध न कर पाई तो वह उनसे मुक्त होने के लिए अपने जीवन को ही समाप्त करके सदा-सदा के लिए मुक्त हो जाएगी।”<sup>23</sup>

पितृसत्तात्मक समाज में पहले तो लड़कियों को घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता, दूसरे यदि घर के बाहर उनके साथ कोई अप्रिय घटना हो जाए तो पितृव्यवस्था की जकड़ उन पर और मजबूत हो जाती है। कहानी तोहमत में भी आशा और सुधा के साथ ऐसा ही होता है। वे दोनों शाम को पढ़ने के बाद घर से बाहर टहलने के लिए निकलती हैं। घर वापस आते हुए रास्ता भूल जाने पर और रास्ते में एक डरावने साधु को देखकर वे दोनों भागती हुई घर पहुँचती हैं। भागते हुए काँटों में फँस जाने से उनके कपड़े फट जाते हैं और शरीर पर भी खरोचें आ जाती हैं। यह सब देखकर घरवाले उन्हें ताने देते हैं। आशा के घर वाले उसकी पढ़ाई छुड़वाकर उसे घर बिठा लेना चाहते हैं सुधा के पिता उसे एम.ए. छोड़कर एल.टी. करके टीचर बनने के लिए जोर डालते हैं तो सुधा इसका विरोध करती हुई कहती हैं- मेरे साथ कुछ भी नहीं हुआ है, बाबू जी आप समझते क्यों नहीं। न मैं एम.ए. छोड़ूंगी न एल-टी करूंगी। अगले दिन जब आशा और सुधा कॉलेज जाती हैं तो लड़के देखकर भद्दे इशारे करते हैं। आशा ने जब सहायता के लिए प्रोफेसर की ओर देखा तो वह भी उनकी सहायता करने की बजाय उन दोनों को बड़े रसिक अंदाज से देखता है। आगे की घटना का वर्णन करती हुई लेखिका लिखती है- “जैसे आँधी में किवाड़ भड़भड़ाते हैं, कुछ ऐसे सुधा का मन भड़भड़ाया, वह लपक कर उठी और पास बैठे एक सक्रिय लड़के को उसने तड़ातड़ तमाचे जमा दिए। लड़के को मारे गए तमाचे संभवतः पितृसत्तात्मक व्यवस्था की औखी सोच का करारा जवाब सिद्ध होता है।”<sup>24</sup>

‘एक पति की मौत’ कहानी की पात्रा सिया का पति नमन उसे तलाक देकर विदेश में दूसरी स्त्री से विवाह कर लेता है, पर सिया की सास व उसकी बेटी तृप्ति हमेशा नमन के कहने पर उस पर शक करती हैं। लेखिका लिखती है, बहु की शुचिता की जांच पड़ताल के तहत माँजी कभी सिया का पर्स खखोरती है कभी किताबें पलटती है और कभी उसका मैला पेटिकोट सूँघती है। ऐसे एक मौके पर सिया ने विरोध करते हुए कहा हमारी चौकीदारी करने की कोई जरूरत नहीं है समझी। अरे अब हमारा आदमी हमें छोड़ गया तो हम जैसे चाहे रहे, जहाँ मर्जी जाये आये चाहे गली के काले कुत्ते के साथ सोये, तुमको क्या? सास ने इस विस्फोट के प्रतिकार में उसे बेटी के हाथों पिटवाया था। एक बार तृप्ति का हाथ उठ गया, फिर तो वह अक्सर मारने लगी

उन्हीं दिनों सिया ने विरोध स्वरूप बिन्दी और सिन्दूर लगाना छोड़ दिया। उसका सूना चेहरा देखकर सास ने कई बार शोर मचाया कि सुहागनों को सूनी मांग नहीं सोहती। तब सिया ने एक बार फिर विरोध करते हुए कड़ा जवाब दिया- ना मैं सधवा, ना मैं विधवा फिर एक कर्मकाण्डी सुहागन की तरह क्यों सिंगार का स्वांग भरूँ। प्यासी रहूँ उपासी रहूँ किसके लिए। जो मेरा जनम बिगाड़ गया। तुम्हारा वह बेटा, तृप्ति का बाप है मेरा तो कुछ नहीं रहा। नमन बेशक तलाक देकर सिया को विवाह के बंधन से तो मुक्त कर देता है पर अप्रत्यक्ष रूप से अपनी मां व बेटी की मदद से सिया के जीवन पर अंकुश लगाए रहता है और सिया इन बंधनों से मुक्ति पा लेने का हर संभव प्रयास करती नजर आती है।

ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी समाज के अधिकारों के हनन में समाज की रूढ़ियाँ परंपराएँ व पारिवारिक परिस्थितियाँ भी जिम्मेदार हैं। नारी समाज में प्रचलित विभिन्न रूढ़ियों को अपने सामाजिक संदर्भों में व पारिवारिक पृष्ठभूमि पर विधिवत् निभाती है परंतु जब समाज में पुरुष पिता पति व भाई के रूप में नारी पर एकाधिकार रखकर उसे नियंत्रित करता है, तब नारी अपनी क्षमतानुसार उन सामाजिक परंपराओं और बंधनों से मुक्ति पाना चाहती है। पितृसत्तात्मक समाज में लड़की के लिए वैवाहिक बंधन को अनिवार्य माना जाता है। पर 'लड़कियाँ' उपन्यास की नायिका विवाह परंपरा का विरोध करती हुई कहती हैं- औरत पहले एक पुरुष ढूँढती है, फिर एक भगवान के प्रति समर्पित हो जाती है। मेरी माँ ने यह गलती की मेरी मौसी ने की, मेरी मामी ने की, मैं नहीं करूँगी। नायिका के घर में रहने आई आफशा मानती है कि शादी कर लेने से और हिफाजत में रहती है। जब वह पूछती है कि उसे अकेले रहने से डर नहीं लगता तब नायिका जवाब देती है आफशा डर एक ऐसी चीज़ है जो सोचने पर ही लगता है। फिर तुमने यह कैसे सोच लिया कि शादी कर लेने से हिफाजत का इंतजाम भी हो जाता है। जो डरपोक नहीं होते वे स्वार्थी होते हैं। मेरी सहेली का पति कहता है, पत्नी को हमेशा ट्रेफिक मोड़ पर रखकर चलो तो सुखी रहोगे शादी के बाद के खतरे शादी के पहले के खतरों से ज्यादा बड़े होते हैं।

इस तरह उपन्यास की नायिका विवाह परंपरा के बंधन का विरोध करते हुए उसे गलती व खतरा मानती है। हमारे समाज में शादी के समय लड़की की मर्जी नहीं मानी जाती है और इसका नतीजा यह निकलता है कि शादी के कुछ दिन बाद या तो

वह तंग आकर आत्महत्या कर लेती है या ससुराल पक्ष वालों द्वारा जिंदा जला दी जाती है। 'लड़कियाँ' उपन्यास की पात्रा आफशा जब भी अखबार पढ़ती है तो रोज ही उसकी नजर अखबार में किसी न किसी गृहिणी की तस्वीर पर पड़ती है जो संदिग्ध अवस्था में जल या जला डाली गई ऐसी खबरें पढ़कर उसे हमेशा गुस्सा आता। तब नायिका उसे इन बातों का समाधान पूछती तो वह जवाब देती है- "अपनी मर्जी से निकाह। लड़के लड़कियाँ अगर अपनी मर्जी से शादी करें तो लड़कियों को बेमौत न मरना पड़े।"<sup>25</sup>

भारतीय परंपरा के अनुसार लड़की का रिश्ता उसके घर के लोग स्वयं ढूँढते हैं पर परंपरा के विरुद्ध कहानी 'दो जरूरी चेहरे' की पात्रा मिनाती अपने बड़े भाई के सामने अपने से शादी का ऐलान स्वयं कर देती है। वह कहती है भाई श्याम हमसे शादी करेंगे। यही नहीं वह अपने प्रेमी के साथ शादी से पहले ही शारीरिक संबंध भी स्थापित करती है। मिनाती की स्थिति को स्पष्ट करते हुए लेखिका लिखती है। "जहाँ श्याम छूता है वहाँ अजीब सा दर्द होता रहता है जब तक किसी और जगह वैसा दर्द शुरू न हो जाता। कोजीनुकश के सबसे अंधेरे कोने में हम घण्टों बैठे रहते हैं, बिना एक शब्द बोले। कभी हथेलियाँ बोलती कभी पांव, कभी कंधे और कभी देह का पूरा हिस्सा। श्याम बिल देखने के लिए भी लैम्प जलाना गंवारा न करता। मिनाती का अपने प्रेमी से मिलकर रोज रात को देर से घर आना नारी मन की परिवर्तित चेतना का प्रतीक है।"<sup>26</sup>

पितृसत्तात्मक समाज में नारी को स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार भी नहीं है। जन्म से लेकर मृत्यु तक नारी कभी भी स्वतंत्र निर्णय नहीं कर पाती है क्योंकि समाज में उसे यह स्वतंत्रता नहीं है। पितृसत्तात्मक समाज में नारी को स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार न के बराबर है। परिवार में स्त्री की सलाह लेना उचित नहीं समझा जाता परंतु वर्तमान समाज में नारी शिक्षित होकर जीवन में नौकरी व शादी जैसे महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं लेने लगी है पर आज भी स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि सभी नारियों को निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्राप्त है या नहीं, ममता कालिया के कथा साहित्य में निर्णय लेने की स्वतंत्रता के तहत दो तरह की स्थितियाँ पाई जाती हैं- उनके कुछ नारी पात्रों को तो अपने निर्णय स्वयं लेने की स्वतंत्रता प्राप्त है पर कुछ नारी पात्र अभी भी अपने निर्णय स्वयं न लेकर परिवार पर ही आश्रित हैं।

‘प्रेम कहानी’ उपन्यास में यशा के माध्यम से ममता जी ने स्पष्ट किया है कि पितृसत्तात्मक समाज में आज भी माता-पिता शादी जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर लड़की की राय पर कोई ध्यान नहीं देते। लेखिका लिखती है कि माता-पिता कन्यादान ऐसे कर देते हैं जैसे गऊदान। हमारे मुल्क के सिवा और कहाँ ऐसा मजाक होता होगा कि अच्छी-खासी पढ़ी-लिखी लड़की शादी के वक्त अपना समस्त व्यक्तित्व माता-पिता के हवाले कर दे। शादी में सिर्फ यह देखा जाता है एक साबुत शरीर लड़का एक साबुत शरीर लड़की को प्राप्त कर ले। दोनों की मानसिकता पर विचार न करके सिर्फ आर्थिक स्थिति टटोल ली जाती है। पर यदि लड़की मना करने की कोशिश करें तो उसे कम्बख्त, कुलच्छनी या कलंकिनी कहकर प्रताड़ित किया जाता है। ‘प्रेम कहानी’ की पात्रा यशा पढ़ी लिखी व स्वतंत्र विचारों वाली लड़की है। वह अपनी पसंद के लड़के के साथ प्रेम विवाह करना चाहती है पर माता-पिता को जब इस बात का पता चलता है तो वे इसे परिवार व जाति की इज्जत का प्रश्न बनाकर उसकी मर्जी जाने बिना उसका विवाह लोहे के व्यापारी के साथ कर देते हैं। यशा की मर्जी नामर्जी जाने बिना ही उसे गाय भैंस की तरह हांक दिया जाता है। वह अपनी दोस्त जया से कहती है- “हम लाख एम.ए. हो जाए पीएच.डी. हो जाए परम्पराएँ जब माँ-बाप, ताई, चाची की शक्ल में सामने आती हैं तब सब भूल जाती है। यशा को ससुराल में किसी चीज की कमी नहीं होने पर लोहे के व्यापारी के साथ शादी करके उसका जीवन लोहे की कैद बन जाता है वह हंसना तक भूल जाती है। ‘आत्मरक्षा’ कहानी में भी ममता जी ने जीवन साथी चयन के अधिकार से वंचित नारी की वर्तमान विवशता को वाणी प्रदान की है। इस कहानी में माँ अपनी बेटी से बिना पूछे ही उसका रिश्ता मुहल्ले के विधुर सुधीर चतुर्वेदी से कर देना चाहती है क्योंकि वह उनतीस वर्ष का है, पक्की नौकरी है, बच्चे का झंझट भी नहीं है, पर लड़की की इच्छा कोई नहीं पूछता।

‘सीमा’ कहानी की नायिका सीमा शादी से पहले माँ बाप की तथा शादी के बाद पति द्वारा लगाई बंदिशों से त्रस्त है। घर के सभी कामों में पति-पत्नी की उपेक्षा कर केवल अपना ही निर्णय चलाता है। सीमा की इच्छाओं की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जाता। वह कहती है वह घर अकेले सुभाष का है, सब कुछ उसकी मर्जी से होता है वहाँ कौन आये कितनी बार आये हम कहाँ जाए क्या बाते हो, कहाँ कुर्सी रखी जाए कौन से पौधे लगाए जाये, कौन सा टूथपेस्ट खरीदा जाए, हर बात सुभाष तय करता है। यहाँ तक कि जब वह दफ्तर में हो, मैं क्या करूँ, यह भी वही तय करना चाहता

है। मुझे तो सिर्फ सिर हिलाना होता है। निर्णय न ले पाने की स्थिति में वह खुद को सीमाओं में जकड़ा हुआ महसूस करती है। बड़े कामों में निर्णय तो दूर की बात सीमा का पति उसे घर के घरेलू कामों में भी निर्णय नहीं लेने देना चाहता पर वह पति की अधीनस्थता से मुक्त सभी निर्णय स्वयं लेना चाहती है।

ममता कालिया के कथा साहित्य में कुछ नारी पात्र ऐसे हैं जो स्वयं लेते हैं। लड़कियाँ उपन्यास की नायिका का विवाह न करने का निर्णय सिर्फ उसका अपना है। शादी के कई अवसर प्राप्त होने पर भी उसे हर लड़का अपने से कम अच्छा व कम प्रभावशाली लगता है। दो-तीन मुलाकातों के बाद उस लड़के में उसकी दिलचस्पी कम हो जाती है। कई बार उसकी बहन जीजा भी लड़कों के रिश्ते लेकर आए। जब उसे शादी के लिए अपने से ज्यादा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला लड़का नहीं मिला तो वह शादी न करने का फैसला लेती है। वह कहती आज के जमाने में दूध तक तो खालिस मिलता नहीं, इंसान कहाँ से मर्यादित हो। न सही इश्क, न सही शादी रहेगें हम अकेले, बेनाम बेदाब, मरते समय अपना बैंक बैलेंस निर्मल हृदय के नाम कर जाएंगे। इस तरह वह शादी के निर्णय के साथ अपने बैंक बैलेंस के बारे में भी स्वयं निर्णय लेती है।

‘फर्क नहीं’ कहानी की नायिका अपनी शादी का निर्णय स्वयं लेना चाहती है। वह विरक्ति से सोचती है। “यह नहीं कि शादी में मेरी दिलचस्पी नहीं थी, पर मैं शादी को समापन प्रकरण के रूप में चाहती थी। फिर ऐसी शादी का मैं क्या करती जो परिवार के बड़े बूढ़ों ने मेरे लिए सोच रखी थी। ये मेरे लायक क्या ढूँढ पाएंगे। इस तरह शादी का निर्णय वह माँ-बाप की अपेक्षा अधिक रूप से स्वयं ले सकती है।”<sup>27</sup> ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री को अपने अधिकारों के प्रति सचेत होते हुए भी दिखाया गया है।

नवीन प्रगतिशील जीवन की आकांक्षा रखने वाली नारी के अस्तित्व का बोध उसकी स्वतंत्रता की अनुभूति में ही है, इसलिए ममता कालिया की नारी भी स्वतंत्रता चाहती है। चाहे वह स्वतंत्रता से वरण का चयन स्वयं करे। उपन्यास ‘नरक दर नरक’ की नायिका उषा मात्र तीन महीने की जान पहचान के बाद जोगेंदर साहनी (जगन) के साथ प्रेम विवाह करने का निर्णय स्वयं लेती है वे दोनों जीवन में काफी चोकन्ने रहे थे। फिर भी पता नहीं कैसे जल्दी प्रेम उन दोनों के बीच घुसपैठ कर गया। लेखिका लिखती है, तब रात का वक्त था और दोनों अपने-अपने अकेलेपन से पैदा हुई जरूरतों

के मारे हुए थे। बाद में कई बार उन्होंने इस बात का मजाक उड़ाया, कई बार इसकी व्याख्या की, अफसोस भी किया कि किसी और नाम से यह क्यों नहीं हुआ उन जैसे तरोजाता दिमाग वाले लोगों को इतनी घिसी हुई संज्ञा प्रेम कैसे ले बैठी पर कोई फायदा नहीं हुआ। प्रेम अपनी जगह डटा रहा जगन बोला, 'उसने नहीं सोचा था, उस जैसा आदमी इतनी आसानी से पकड़ा जाएगा'।

उषा ने भी शरमाते हुए कहा, उसने नहीं सोचा था कि पहली बार ही वह हमेशा के लिए बँध जाएगी, फिर इस विषय पर दोनों चुप हो गए। ज्यादा बोलना दोनों के लिए खतरे पैदा कर सकता था। इसलिए शायद प्रेम मौन रह जाता है। बहरहाल वे दोनों ऐसी अजीबोगरीब हरकते करते रहे, जिनकी गणना प्रेमशास्त्री प्रेम के अन्तर्गत करते आए हैं, ऐसे ही एक घटनापूर्ण दिन उन्होंने तय किया कि ये शादी कर डाले। दरअसल दिन-रात ईरानी रेस्तराओं में बैठना और समुद्र के किनारे, अँधेरा होने का इंतजार करना दोनों के लिए दुःखदायी प्रमाणित हो रहा था। इसीलिए उषा घरवालों का विरोध करती हुई जगन से अपनी शादी का फैसला सुना देती है। उषा के पिता उसे इंदिरा गाँधी या विजय लक्ष्मी पंडित जैसा बनाना चाहते थे। पर जब वही उषा न विजयलक्ष्मी बनी और न इंदिरा गाँधी बल्कि उषा साहनी बनने पर आमादा हो गई तो उसके पिता पुनः उसको खीस भरा आशीष दे बिल्कुल पीछे हट गए। उषा माता-पिता का विरोध सहन करके जोगेंदर साहनी (जगन) के साथ प्रेम विवाह करने में सफल हो जाती है। इसी तरह 'एक पत्नी के नोट्स' की कविता भी अपने आई.ए.एस. प्रेमी संदीप के साथ अपनी इच्छा से प्रेम विवाह करती है।

'प्रेम कहानी' उपन्यास की नायिका जया को जब उसका प्रेमी गिनेस शादी करके मॉरीशस चलने के लिए कहता है तो जया अपने प्रेम में विवश होकर अपने पापा से सीधे-सीधे कह देती है। "पापा गिनेस हमसे शादी करेगा यह सुनकर उसके मम्मी-पापा बड़े मिल के मालिक के बेटे से दोनों इस बात का विरोध करते हैं। उसे उनके द्वारा देखे साथ रिश्ते का हवाला देती है तो जया विरोध में कह देती है, मेरी मर्जी के बिना मेरा संबंध आप कैसे तय कर सकते हैं, बस यह सुनने के बाद तो उस पर कड़े पहरे लगा दिए जाते हैं। उसे पढ़ने के लिए दोबारा दिल्ली जाने पर रोक लगा दी गई। उसे उसकी किसी सहेली के घर नहीं जाने दिया जाता। यहाँ तक कि जब उसकी कोई सखी उसके घर पर भी उसे मिलने नहीं दिया उसकी कोई सखी आती तो

मम्मी चौकीदार के तरह उनके बीच तंग आकर एक दिन जया घर से भागकर अपने प्रेमी गिनेस के पास दिल्ली जाकर अपनी मर्जी से प्रेम विवाह कर लेती है।”<sup>28</sup>

इस प्रकार ममता कालिया के कथा साहित्य की नारी विद्रोह करती हुई अपने अधिकारों के लिए सजग होती है।

भारतीय समाज में नारी को स्वेच्छा से अविवाहित जीवन जीने की स्वतंत्रता भी नहीं है, अविवाहित होने पर समाज द्वारा अलग-अलग लेबल लगा दिया जाता है। परम्परागत विवाह का उद्देश्य नारी को पितृसत्तात्मक व्यवस्था, सम्पत्ति पर स्त्री की अधिकारहीनता आर्थिक पर निर्भरता जैसी सोच तक ही सीमित करता है। ममता कालिया को नारी विवाह के रूढ़ सूत्रों में बँधने की जगह अविवाहित रहने की स्वतंत्रता हासिल करना चाहती है। उसका मानना है कि विवाह के बाद नारी की स्वतंत्रता आत्मसम्मान एवं व्यक्तित्व समाप्त हो जाता है। प्रेम और विवाह के प्रति तटस्थ रहने वाली ‘लड़कियाँ’ उपन्यास की नायिका और आफशा अविवाहित जीवन के विविध आयाम उपस्थित करती है, विवाह न करना नायिका का अपना निर्णय है, वह कहती है किसी भी तरह का शोर अशांति में बर्दाश्त नहीं कर सकती थी इसीलिए मैंने शादी तक नहीं की। तबालत तो मुझे किसी की भी मंजूर न थी, अपने सगे भाई बहनों तक की बंबई जैसे महानगर में अकेली रहने वाली सुशिक्षित नौकरीपेशा नायिका निरंतर अपने आस-पास की असुरक्षितता का अनुभव करती है। अविवाहित जीवन की नानाविध कठिनाईयों का सामना करने की शक्ति होने पर भी वह वैवाहिक जीवन के प्रति अनासक्त दिखाई पड़ती है।

भारतीय समाज में नारी को नौकरी करने, घर से बाहर निकलकर अपने भविष्य के लिए किसी भी कार्यक्षेत्र में कार्य करने का अधिकार नहीं था, नारी का घर की दहलीज पार करके नौकरी करना हेय दृष्टि से देखा जाता रहा है। नारी के लिए घर से बाहर निकलकर पुरुष-सुलभ क्षेत्र में पैर रखना हेय दृष्टि से देखा जाता रहा है, लेकिन आधुनिक नारी आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना चाहती है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र नारी में ही आत्मनिर्भर होने का तथा स्वाभिमान की रक्षा का सामर्थ्य जुटा पाने का साहस पैदा होता है पति पर आश्रित होकर जीवन व्यतीत करने वाली नारी को अपना अस्तित्व महत्वहीन लगने लगता है। इसलिए ममता कालिया की नारी अपनी आर्थिक विषमता को दूर करने तथा आत्मसंतुष्टि पाने हेतु अपने कार्यक्षेत्र का चुनाव स्वयं करना चाहती है। ‘दूसरी आजादी’ कहानी की नायिका तमन्ना को घर में किसी प्रकार

का कोई अभाव नहीं पर फिर भी वह अपनी इच्छा से स्कूल में पढ़ाने लगती है। पति को उसका इस तरह से काम करना बिल्कुल पसंद नहीं। एक दिन उसके ससुर ने भी उसकी नौकरी पर टिप्पणी की कि जितनी तनख्वाह में एक ड्राइवर को देता हूँ उतना भी नहीं पाती तुम फिर काम करने से क्या फायदा? तब तमन्ना अपने नौकरी करने के निर्णय पर अडिग रहती हुई कहती है- “अब्बू जी आपकी बात दुरुस्त है लेकिन मुझे तो स्कूल वाले कुछ भी न दे तब भी मैं काम करूँगी। तमन्ना की तरह ही ‘एक पत्नी के नोट्स’ उपन्यास की नायिका कविता भी घर में सुख-समृद्धि सम्पन्न होते हुए कॉलेज में लैक्चरशिप करने का निर्णय स्वयं लेती है।”<sup>29</sup>

‘दुःखम सुखम’ उपन्यास की पात्रा प्रतिभा का बंबई जाकर विज्ञापन जगत तथा मॉडलिंग को कैरियर के रूप में अपनाने का निर्णय उसका अपना है। वह पिता द्वारा सुझाए गए रास्ते पर न चलकर स्वयं अपना रास्ता बनाना चाहती है, इसलिए वह कहती है, आपका एम.ए., पीएच. डी., एम. फिल वाला रास्ते पर मैं नहीं चलूँगी। यह आप तय नहीं करेंगे पापा मैं क्या करूँगी। “वह अपना निर्णय सुनाती हुई कहती है- “विश वी लक पा, मैं अपने पहले मॉडलिंग असाइनमेंट पर निकल रही हूँ और वह एक दिन घर छोड़कर बंबई चली जाती है।”<sup>30</sup> ‘नयी दुनिया’ कहानी की नायिका पूर्वा पढ़ाई में होशियार नहीं थी, जिस कारण वह परिवार द्वारा उपेक्षित थी। वह साहित्य सर्जना को कार्यक्षेत्र के रूप में अपनाने का निर्णय लेती है, जो कि उसके परिवार को पसंद नहीं। परिवार व आसपास के लोग चाहते हैं कि वह औसत लड़कियों की तरह पेंटिंग क्लास या कुकरी क्लास जॉइन कर ले, पर पूर्वा अपने साहित्यकार बनने के निर्णय पर अडिग रहती हुई किसी की परवाह नहीं करती, क्योंकि वह समाज में अपनी एक अलग पहचान स्थापित करना चाहती है।

अतः शताब्दियों से शोषित और दमित नारी अब जाग उठी है। किसी प्राणी की सहनशीलता की एक सीमा होती है, उस सीमा के पार हो जाने पर वह संघर्ष प्रारंभ कर ही देता है। ममता कालिया जी ने अपने साहित्य नारी पात्रों के माध्यम से इस संदर्भ को पुष्ट किया है। वर्तमान समय में नारी कोई भी कीमत चुकाकर शोषण और दमन का विरोध करने को तत्पर दिखती है।

‘रोशनी की मार’ कहानी में जमादारिन को देखकर एक लड़का गाना गाया करता था, चूड़ी नहीं मेरा दिल है, देखो टूटे.....। बिटिया ने एक दिन उसका विरोध

करते हुए उसे कसकर कलाई से पकड़ लिया और बरजा यह चूड़ी चूड़ी का करत रहत हो, रिश्ते में हम तोहार चच्ची लागत है जानो। हमारे आगे हंगना-मूतना सीखे हो तुम। एक दिन तिवारिन ने अपनी पड़ोसिन से कहा, हमारी भंगन तो बड़ी कामचोर है, मुफ्त के पैसे लेती है। बिटिया के कान में यह वाक्य पड़ गया, गुस्से से आगबबूला होकर वह आंगन से कमरे के दरवाजे पर आकर बोली का कहन बहू जी, जरा फिर से बोलो हम कामचोरी करते हैं। दरवाजे पर उसे देख तिवारिन उत्तेजित हो गई, हट हट सारा घर गंदा कर दिया। बिटिया ने अपने शोषण का बदला लेते हुए पंचम स्वर में कहा- ठीक हो गई तो गुर्राए लगी। हमरे हाथ का गरमाया दूध-पानी सब तोहार पेट मा है। वो बखत भी हम एहि रहे कौनो अउर नाही। आप बड़ा नई हमसे छूत मानत है। तिवारिन के भरोसा ना करने पर बिटिया पंचम स्वर में बोली “सुन लो अच्छी तरह हम कौनो झूठ नहीं बोली। हमरे सच बोले से तोहार इज्जत चली जात है तो हम का करी। अरे तुम बाम्हनों की इज्जत का है, जाकर चार बूँद गंगाजल छींट लो आपन ऊपर आपन चूल्हे चोका पर वापस आ जाएगी इज्जत हम वा दिन पास न होती तो इज्जत तोहर बच जाती पर जान तो चली जाती।”<sup>31</sup> बिटिया निम्न वर्ग की होने पर भी किसी तरह का शोषण और दमन सहन नहीं करती।

‘बोलने वाली औरत’ कहानी की नायिका दीपशिखा को अपने घर में होने वाला शोषण असहनीय लगता है, वह समय-समय पर विरोध करती रहती है लेकिन सदैव उसे दबाने का प्रयास किया जाता है। दीपशिखा के अंदर इतना आक्रोश है, यदि उसे वह शब्दों में लिखे तो बहुत तेज एसिड का आविष्कार हो जायेगा। वह सोचती है तीखे नुकीले, कंटीले जहरीले, असहमति के अग्रलेख ये शब्द उसकी लड़ाई लड़ते हुए कहा पर्याय नहीं। ‘नरक दर नरक’ उपन्यास की उषा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक थी इसलिए वह किसी प्रकार का उत्पीड़न सहन नहीं करती थी। शादी के बाद पति के द्वारा शोषण दमन भी उसे असहाय था। वह सदैव इसका विरोध करती है। एक दिन जगन अपनी नौकरी की बात पर भड़ककर बोला- “मैं मर गया हूँ। अपाहिज हो गया हूँ तुम तो ऐसे बोल रही हो जैसे तुम्हारी सारी इज्जत टट्टी के रास्ते निकल गई है।”<sup>32</sup> अपने प्रति भाषा के इस वीभत्स प्रयोग से उषा बोखला गई, अनपढ़ों की तरह बोलते हो तभी निकाले गए जो अपनी औरत की इज्जत नहीं कर सकता, वह खाक नौकरी करेगा। लानत है। उषा उसके विरोध में आगे कहती है। “तुम सोचते हो, मैं

रूप के लिए लड़ रही हूँ? तुम मुझसे बोल कैसे रहे हो? ऐसे कोई नौकरों तक से नहीं बोलता आतंक से जड़ उषा ने जगन की ओर देखा निजी क्षणों में उत्कट एवं कोमल यह आदमी इस वक्त किस आसानी से उसे प्रताड़ित कर रहा है। जब जगन उससे तलाक के लिए कहता है तो उषा विरोध में कहती है अपने आपको तुम इस समय परफेक्ट सिद्ध करना चाहते हो, तुम बेदाग और महान रहना चाह रहे हो।”<sup>33</sup>

इसी उपन्यास में एक अन्य स्त्री सीता घर का सारा काम करती, उसके साथ-साथ वह एक स्कूल में शिक्षिका भी थी वह सारा दिन घर और नौकरी में इतनी व्यस्त थी कि उसे अपने लिए तो समय ही नहीं था लेकिन एक दिन घर आने में थोड़ी देर होने पर पति विनय उस पर शक करता है। सीता को उसके मन में दूर मोड़ पर दिखते इस पुरुष के प्रति तीव्र विरोध हुआ। वैवाहिक दुर्घटनाओं में आहत सीता की जो बची-खुची आकृति थी उसमें विवाहेतर प्रेम प्रसंग की कोई संभावना नहीं बची थी। अखबारों का कहना था, यह अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ग था। एक ओर सीता की ऐसी की तैसी की जा रही थी लेकिन उसकी पीड़ा को शाश्वत बनाने वाला कोई वाल्मीकि वहाँ मौजूद नहीं था विनय ने सीता को निर्देश दिए जो हुआ सो हुआ, आगे से सीधे कॉलेज जाया करो और सीधे घर आया करो समझी सीता ने विरोध में चीखते हुए कहा- “अब तक तो सीधी आया करती थी लेकिन अब नहीं जाया करूँगी समझे। सीता के जाने का कोई अन्य ठिकाना नहीं था फिर भी वह घर छोड़ने का मन बना लेती है। विनय अपने शक को मजाक बताते हुए सीता को रोक तो लेता है लेकिन सीता आत्मनिर्वासन और मौन विरोध से घिरी इस दायरे में एक असहमत उपस्थित थी। इसीलिए आने वाले कई दिनों तक उसने विनय की बिस्तर में साम्यवाद स्थापित करने की सब कोशिशें बेकार कर दी। उसे लगा विनय के साथ उसके संबंध में न सम है न भोग”<sup>34</sup> अंततः विनय को माफी मांगनी पड़ी। इस प्रकार ममता कालिया की नारी पात्र अपने अधिकारों के हनन का विरोध करती हुई नजर आती है।

### 3.4 प्रगतिशील चेतना से युक्त नारी का यथार्थ

ममता कालिया की कहानियाँ प्रगतिशील चेतना वाली महिलाओं की वास्तविकता को मार्मिक ढंग से दर्शाती हैं, उन्हें लचीला, मुखर और आत्मनिरीक्षण करने वाली के रूप में चित्रित करती हैं। उनकी कहानियाँ आधुनिक नारीत्व की

जटिलताओं में उतरती है ऐसे चरित्रों को प्रदर्शित करती है जो पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं और सामाजिक अपेक्षाओं को चुनौती देते हैं। ये महिलाएँ अक्सर पहचान स्वायत्तता और सशक्तिकरण के मुद्दों से जुड़ती हैं, जो उनके अधिकारों और इच्छाओं के प्रति गहरी जागरूकता को दर्शाता है।

कालिया के नायक अपने भाग्य के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं हैं इसके बजाय, वे पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के साथ व्यक्तिगत आकांक्षाओं को संतुलित करते हुए अपने भाग्य को फिर से आकार देने की सक्रिय रूप से कोशिश करते हैं। ज्वलंत कहानी और भरोसेमंद पात्रों के माध्यम से कालिया एक पितृसत्तात्मक समाज में समानता और आत्मपूर्ति के लिए प्रयास करने वाली महिलाओं के संघर्ष और विजय को उजागर करती है। उनका काम लैंगिक न्याय की चल रही खोज और समकालीन महिलाओं के जीवन में प्रगतिशील विचारों की परिवर्तनकारी शक्ति को रेखांकित करता है। कालिया की महिलाएँ बहुआयामी हैं, जो अक्सर परंपरा और आधुनिकता के बीच के नाजुक अंतर्संबंध को समझती हैं। उन्हें ऐसे व्यक्तियों के रूप में दर्शाया गया है जो सामाजिक बाधाओं का सामना करने के बावजूद अपनी वैयक्तिकता और आवाज को मुख करने के तरीके ढूंढ लेते हैं। चाहे पेशेवर चुनौतियों वैवाहिक कलह या व्यक्तिगत विकास से निपटना हो, ये पात्र एजेंसी और लचीलेपन की भावना को मूर्त रूप देते हैं।

कालिया का लेखन उनके आंतरिक संघर्षों और बाहरी लड़ाइयों को विशद रूप से दर्शाता है, जो तेजी से बदलती दुनिया में उनकी पहचान के असंख्य तरीकों पर प्रकाश डालता है। उनकी कहानियों में घरेलू स्थानों से लेकर कार्यस्थलों तक की सेटिंग महिलाओं के अनुभवों के व्यापक स्पेक्ट्रम को प्रतिबिंबित करती है। कालिया लैंगिक भेदभाव, यौन उत्पीड़न और सामाजिक मानदण्डों के अनुरूप होने के दबाव जैसे विवादास्पद मुद्दों को संबोधित करने से नहीं कतराती है। महिला मित्रता और एकजुटता का उनका चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

आधुनिक समाज में स्त्री विभिन्न प्रकार की समस्याओं से घिरी है। चाहे वह सामाजिक घरेलू या राजनीतिक स्तर पर हो। शिक्षित व बदलते समाज में भी स्त्री सुरक्षा का प्रश्न मूलभूत एवं चिंतनीय विषय बन जाता है। भारतीय संस्कृति के मूल्यों को सजोने में वह मां, बहन, पत्नी की भूमिका तो निभाती है। शिक्षित एवं जागरूक होने के साथ वह कामकाजी स्त्री बनती है। घर एवं समाज से स्त्री सुरक्षा एवं

आत्मनिर्भरता के लिए स्त्री की देह व अधिकारों का हनन होता है। इस संदर्भ में मृणाल पाण्डे ने कहा है कि- “यदि स्त्रियाँ तनिक हठ के साथ अपनी बेटी और खुद अपने स्वास्थ्य, सौंदर्य और सम्पत्ती के अधिकारों के प्रति स्त्री भर भी सचेत रुख दिखाये तो उन्हें स्वार्थी धनलोलुप या परिवार विरोधी करार दिया जाता है यही वजह है कि कई स्त्रियाँ सुरक्षा और सामाजिक वाहवाही के लालच में आकर खुद अपनी जाति की निंदक या उत्पीड़क बन जाती है। स्त्री मुक्ति के संदर्भ में पहले खुद स्त्रियों को इस भ्रांतिजाल को तोड़ना होगा और एक दूसरे के माध्यम से अपनी सही कीमत जांचनी होगी।”<sup>35</sup> किसी भी देश की सामाजिक संरचना व व्यवस्था मूलभूत होती है क्योंकि यही समाज स्त्रियों की वास्तविक स्थिति की परिचायक होती है देश की बदलती कानून व्यवस्था में स्त्रियों की स्थिति अन्य विकसित राष्ट्र की तुलना में उत्तम है। लेकिन वास्तविकता में उस कानून व्यवस्था का प्रयोग सही दिशा में होना अनिवार्य है। स्त्रियों की अशिक्षा व अज्ञानता से वे विभिन्न कानूनों का सीमित लाभ उठाने से वंचित रह जाती है। स्त्री विमर्श की लेखिका व समाज सेविका रमणिका गुप्ता ने लिखा है- सच है कि आजादी के पचास वर्षों में हमने एक प्रधानमंत्री, तीन चार मुख्यमंत्री और दो-तीन दर्जन मंत्री बनने का मौका स्त्रियों को दिया, लेकिन यह भी सच है कि आज भी हमारे देश में अमीना बेची जाती है। भंवरी बाई, फूलन देवी जैसी कई स्त्रियाँ रोज बलात्कार की शिकार होती है।

आधुनिक स्त्री घर-बाहर दोनों क्षेत्र में अपने कामकाज के स्तर को बखूबी संभाल रही है। वे शिक्षा लेखिका व खेल जगत में ही नहीं वरन् पुरुष प्रधान क्षेत्रों में भी उन्नति कर रही है। लेकिन ऐसी स्त्रियों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है। स्त्री सुरक्षा के सही मायने तभी है जब वे अपनी आत्मरक्षा स्वयं कर सकें। इस विषय में लता शर्मा ने कहा है- लड़की भी दौड़े, पेड़ पर चढ़े, नदी तालाब में तरे, उसे छुई मुई बनाकर तो हम स्वयं संकट को आमंत्रण दे रहे हैं। किशोरी कन्या को आत्मरक्षा के उपाय आने ही चाहिए, स्कूल, कॉलेज में भी यह शिक्षा लड़कियों के लिए वही चक्र, संगीत, चित्रकला और गृहविज्ञान, गृहविज्ञान तो ऐसा अनोखा विषय है कि आज तक कभी किसी लड़के को इस विज्ञान का चयन और अध्ययन करते नहीं देखा, क्यों? क्या लड़कों को इसकी जरूरत नहीं? वे घर में नहीं रहते? पेड़ों पर रहते हैं? युगों-युगों से सायास प्रक्रिया चल रही है लड़कियों को एक पूर्व-निश्चित भूमिका में बंद रखने की

उसे परतंत्र, परावलंबी और उपभोक्ता संस्कृति तक सीमित रखने की। हाँ अब परिवेश बदल रहा है इन विषयों में छात्र भी हिस्सा बन रहे हैं।

समाज के बदलते परिदृश्य में जहाँ स्त्री आलोचना की जाती है तो वही पुरुष सत्ता को स्त्रियों का बड़ा शुभ हितैषी माना जाता है। पुरुष मानसिकता की यह अभिव्यक्ति देता है कि स्त्रियाँ बाजार की चकाचौंध में पड़ गयी हैं। एवं उपभोक्तावादी संस्कृति का अधिक शोषण कर रही है। आज भी समाज के ऐसे विभिन्न पहलू हैं जहाँ स्त्रियों का पुरुषों द्वारा शोषण में कोई भूमिका नहीं है। प्रभा खेतान ने लिखा है 'जिन समाजों में औरतों को बड़े नियंत्रण में दबाकर रखा जाता है वहाँ औरतों के प्रति अजीब से भाव पाए जाते हैं। महिलाओं की लुटेरे पुरुषों से रक्षा की जानी चाहिए या उसका कौमार्य भंग कर देना चाहिए वरना उसकी कामुकता पुरुषों को बिगाड़ देगी।' बांग्लादेश में अक्सर बाल विवाह को उचित ठहराने के लिए तर्क दिया जाता है। कहा जाता है कि नवाकुंरित कुमारी की उपस्थिति भी पुरुषों को बलात्कार के लिए उकसाने का यथेष्ट कारण बन सकती है अतः बाल-विवाह कर उसे भावी बलात्कारियों से बचाया जा रहा है। इसी डर से महिलाओं को नजरबंदी में रखा जाता है। यदि वे पारम्परिक भूमिकाओं से बाहर निकलकर कुछ करना चाहती हैं तो उन्हें अच्छा शिकार समझा जाता है। यदि वे अपनी रुढ़िगत दायरों में रहती हैं तब उनका दमन करने वाली व्यवस्था वैध तथा सुदृढ़ होती है। "पुरुष की स्वेच्छावादिता एवं मर्यादा विहीनता स्त्री की सुरक्षा एवं नैतिकता के लिए विकट समस्या उत्पन्न करता है। जिसमें स्त्री की मुक्ति का प्रश्न भी आतंक से कम नहीं उभरता ममता कालिया ने अपने उपन्यासों एवं कहानियों में भय के आतंक को दर्शाया है।"<sup>36</sup>

राजनीतिक विचारों की प्रयोग शक्ति जब समाज के आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक जीवन में सुनियोजित ढंग से फलित नहीं होती है तो राजनीतिक भ्रष्टाचार को प्रश्रय मिलता है। वर्तमान युग में राजनीति में भ्रष्टाचार पर्याप्त रूप से विद्यमान है। भ्रष्टाचार की लहर समाज के प्रत्येक तबके से गुजर कर राजनैतिक सत्ता को अपने आगोश में लेती है। भ्रष्ट व्यवस्था के कारण शासन-प्रशासन के सभी अधिकारी वर्ग स्वतः ही इसमें लिप्त हो जाते हैं।

आधुनिक समाज की राजनीति में पूंजीपतियों, गुंडागर्दी एवं आपराधिक विचारधारा के व्यक्तियों ने भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया है। आज भ्रष्टाचार व राजनीति एक दूसरे का पूरक अंग बनते जा रहे हैं। परिणामतः भ्रष्टाचार छद्म रूप धारण कर समाज के प्रत्येक हिस्से को प्रभावित करता है। नरेंद्र मोहन ने लिखा है- भारतीय राजनीति आज जितनी छल-छद्म प्रदान हो चुकी है। ऐसी स्थिति राष्ट्रीय इतिहास में बहुत ही कम कालखण्डों में रही होगी छल-छद्म आवरण आज राजनीति का मुख्य अंग है और यही भ्रष्टाचार का कारण भी।

इक्कीसवीं शताब्दी में नारी का रूप बदल रहा है। पहली बार नारी घर की दहलीज पार करके पुरुषों के बराबर कंधे से कंधा मिलाकर स्वयं को समाज में स्थापित कर रही है। आज भारतीय समाज के पूर्वाग्रहों, समाज में फैली विसंगतियों से स्वयं को मुक्त करने का प्रयास किया है इस संबंध में प्रभा खेतान लिखती है कि “आज की स्त्री पारंपरिक नारी की भूमिका में स्वयं को पंगु नहीं बना देना चाहती किंतु इससे बाहर जाते ही उसे अपने नारीत्व का उल्लंघन करना पड़ता है। व्यस्त जिंदगी शुरू करने वाली स्त्री को पुरुष की भाँति सफलता की कोई परंपरा नहीं मिलती। समाज उसे नये अध्यायवसायी पुरुषों के बराबर महत्व नहीं देता। उसके साथ यह दुनिया एक नये परिप्रेक्ष्य में पेश आती है। एक स्वतंत्र मानव व्यक्ति की हैसियत से स्त्री होना आज भी विलक्षण समस्याओं से भरा हुआ है।”<sup>37</sup>

वर्तमान भौतिकतावादी संसार में नारी पुरुष वर्चस्व को स्वीकार नहीं करती बल्कि एक स्वतंत्र जीवन यापन करना चाहती है। ‘चिर-कुमारी’ कहानी की दिशा स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है इसलिए वह शादी भी नहीं करती। ‘लड़कियाँ’ उपन्यास की लड़कियों में पुरुषसत्तामक समाज के प्रति विरोध दिखाई पड़ता है। ‘दुःखम सुखम’ उपन्यास की विद्यावती अपने पति का विरोध करती नजर आती है। वर्तमान समाज की नारी समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, परतंत्रता आदि का विरोध करती दिखाई देती है।

भ्रष्ट राजनीति के चलते राजनेता राष्ट्र हित में भी स्वार्थ सिद्धि अपनाते हैं। वर्तमान युग में स्त्रियाँ राजनीतिक क्षेत्र में आने लगी हैं लेकिन धन शोषण से राजनेता स्त्री देह शोषण को अपनी उन्नति का मार्ग बना लेता है। राजनेता आम आदमी का शोषण करते रहते हैं। समाज की सेवा का ढोंग करते रहते हैं। उनकी सारी बातें खोखली होती हैं पदों पर साँप की तरह बैठे हुए वे दंश करते रहते हैं। त्याग की अपेक्षा वे भोग में विश्वास करते हैं। अपनी करतूतों को छिपाने में वे बड़े माहिर हैं।

वर्तमान भौतिकतावादी युग में भ्रष्टाचार की जड़े इतनी गहरी हो चुकी हैं कि भ्रष्ट नेता जनता के पैसों का भलाई के नाम पर स्वयं ही ग्रहण कर लेते हैं। रोटी, कपड़ा एवं मकान की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति मनुष्य की लालसा को बढ़ाती है जो उचित अनुचित का भेद भुलाकर मानवीयता का भी हरण कर देती है। भ्रष्टाचार की प्रभावी क्षमता ने आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक में स्त्री को अपना मुख्य हथियार बनाया है। इस संदर्भ में मस्तराम कपूर ने कहा है कि “आज देश में शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो वर्तमान स्थितियों से असंतुष्ट न हो और निराशा का बोझ मन में लिए न हो। राजनीति सिर्फ कुर्सियों का खेल है। शासन भ्रष्टाचार का पर्याय है। व्यापार उद्योग सभी लूट-खसोट, धोखाधड़ी और बेईमानी के अड्डे हैं। न्यायालय पैसे वालों की शरणस्थलियाँ हैं। राजनीतिक पार्टियाँ अपराधी तत्वों की आरामगाहें हैं। संसद और विधानसभाएँ व्यर्थ विवाद की जगह हैं।”<sup>38</sup>

अर्थ एवं राजनीति के क्षेत्र में भ्रष्टाचार ने सीमाएँ तोड़ दी हैं क्योंकि इसमें सत्ता एवं धन का लालच सर्वाधिक होता है पद एवं सम्मान प्राप्ति की एवज में व्यक्ति कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। जैसे समाज में अधिकार एवं शक्तियाँ बढ़ने लगी वैसे-वैसे इनका प्रयोग अवैध व अनैतिक रूप से किया जाने लगा। प्रायः राजनेता आपराधिक संघटनों से संबंध रखते हैं तथा भ्रष्टाचार करते हैं जिसमें स्त्रियों के लिए राजनीति क्षेत्र उदासीन रहा है एवं राजनीति पर पुरुष वर्ग का वर्चस्व स्थापित होता रहा है। हमारी सरकार सबसे पहले व्यक्तिगत सत्ता का शासन है जो नागरिकों को जहाँ तक संभव हो गैर-राजनीतिक बनाना चाहती है ताकि उनका कोई विरोधी न हो, काम से राजनीतिक समझ बढ़ती है। अगर स्त्रियाँ काम नहीं करती तो समाज में पूरी तरह से एक गैर-राजनीतिक क्षेत्र बनेगा और जब स्त्रियाँ राजनीति में कम रुचि लेती हैं, पुरुष भी कम मात्रा में राजनीतिक कदम उठाते हैं।

लेखिका ममता कालिया ने अपने कथा साहित्य में शिक्षा जगत में होने वाली भ्रष्ट राजनीति का उल्लेख किया है। उपन्यास ‘अंधेरे का ताला’ में नंदिता एक कुशल शिक्षक का नेतृत्व करते हुए छात्र हितों को ध्यान में रखकर भविष्य को संजोती है लेकिन “शैक्षिक जगत में व्याप्त भ्रष्टाचार से वह आहत होती है। जब छात्राओं द्वारा नकल करने पर भी अन्य शिक्षिका भी नंदिता का साथ न देकर व्यर्थ की बात सिद्ध करती है। जबकि नंदिता इस राजनीति का विरोध कर रही है।”<sup>39</sup>

आधुनिक युग में स्त्री-समाज के जिस स्वाभिमान, स्वावलंबन एवं स्वातंत्र्य को बल मिला है उसमें एक अंग आत्मनिर्भर बनकर आर्थिक क्षेत्र भी है स्त्री के अस्तित्व में स्वातन्त्र्य एक ऐसा कारक है जो स्त्री को उसकी महत्ता से अवगत कराकर उसे महान बनाता है। 'सिमोन द बुआ' ने यह घोषणा की थी कि आर्थिक स्वतंत्रता के अभाव में स्त्री की स्वतंत्रता अमूर्त तथा सैद्धांतिक रह जाती है। आर्थिक चेतना स्त्री की समस्त स्वतंत्रताओं का मार्ग है, आर्थिक रूप से सक्षम स्त्री-जीवन के सामाजिक स्तर की सभी समस्याओं का निराकरण हो जाता है। आधुनिक युग की स्त्री कठिन परिस्थितियों का सामना कर पर्याप्त रूप से आत्मनिर्भर बनी है। स्त्री विभिन्न भूमिकाओं जैसे माँ, बहन आदि को निभाकर पुरुषों के समकक्ष घर परिवार की जिम्मेदारी निभा रही है। हिन्दी के विख्यात समीक्षक रमेश कुंतल मेघ ने लिखा है- "आजकल नारी की कर्म भूमिकाएँ (गृहिणी, धात्री, जननी, परिचायिका तथा सेविका) बदल रही हैं। अब वह रसोई में ही केंद्रित नहीं है, वह घर के बाहर के काम धंधों को अपना रही है। घर की मजदूरी से स्वतंत्र हो रही है। घर की धुरी ढीली होने के साथ ही विवाह संस्था पर प्रश्न उठ रहे हैं, अब सारे सामंती आधार टूट रहे हैं।"<sup>40</sup>

आर्थिक चेतना से विकसित स्त्री ने पति की परतंत्रता एवं दमन के कुचक्र को तोड़ा है, स्त्री अपने स्वाभिमान व आत्मबल से अनेक घरेलू एवं सामाजिक खतरों से खेलने का साहस प्राप्त करने में सक्षम हुई है। स्वतंत्रता से पूर्व एवं स्वतंत्र्योत्तर युग की स्त्रियों की आर्थिकी में अनेक परिवर्तन हुए हैं, इस संदर्भ में कहा जा सकता है- स्वतंत्रता से पहले निम्न वर्ग की बहुत सी स्त्रियाँ उद्योगों द्वारा जीविका अर्जित करती थी, लेकिन मध्यम और उच्च वर्ग की स्त्रियों द्वारा कोई आर्थिक कार्य करना अनैतिकता के रूप में देखा जाता था। स्वतंत्रता के पश्चात् बड़ी संख्या में उच्च वर्ग और मध्यम वर्ग की स्त्रियों ने शिक्षा प्राप्त करके आर्थिक की ओर बढ़ना आरंभ कर दिया। आज शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योगों और कार्यालयों में स्त्रियों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। वास्तविकता तो यह है कि स्त्रियों को आर्थिक स्वतंत्रता मिल जाने के कारण उनका आत्मविश्वास कार्यक्षमता और मानसिक स्तर में इतनी प्रगति हुई है कि "उनके व्यक्तित्व की तुलना उस काल की स्त्री से किसी प्रकार नहीं की जा सकती जो आज से कुछ वर्ष पहले तक सम्पूर्ण लज्जा को अपने घूँघट में समेटे हुए पुरुषों के शोषण को सहन करती हुई घूँघट में ही अपना जीवन समाप्त करने के लिए अभिशप्त थी।"<sup>41</sup>

आज स्त्री भारतीय समाज में अपने पिता के आर्थिक क्षेत्राधिकार को प्राप्त है। वह समाज में पुरुष के समान भागीदारी एवं दोहरे योगदान की भूमिका को भी विस्तृत कर रही है। स्त्री के जीवन जीने की चाह में अपने आपको कामकाजी बनाना, लेखन कार्य करना आधुनिकता की दौड़ में आर्थिकी ही है। लेखिका ममता कालिया ने अपने उपन्यास 'लड़कियाँ' में स्त्री पात्र के माध्यम से कहा है- एक समय था, जब मैं जिंदगी में बहुत कुछ करना चाहती थी। मुश्किल यह थी कि जो कुछ मैं बनना चाहती थी, उसमें से कुछ भी न बनकर मैं यह बन गई थी। जब मैं हाई स्कूल में थी, डॉक्टर बनना चाहती थी, जब बी.ए. में थी लेखक बनना चाहती थी, जब मैं एम.ए. में आई, मैं शादी करना चाहती थी। मेरा एक इरादा पूरा नहीं हुआ था लेकिन इस वक्त विज्ञापन एजेंसी की इस नौकरी में मेरा वेतन तीन हजार था; अब मैंने अपने सारे इरादे भुला दिए थे। मेरे व्यक्तित्व का सर्वश्रेष्ठ अंग नौकरी को समर्पित था। मेरी समस्त संवेदना, कल्पनाशीलता और रचनात्मकता जिंगल और स्लोगन लिखने में लगी हुई थी।

### 3.5 आर्थिक दुर्बलता व स्त्री

ममता कालिया की कहानियाँ व उपन्यास अक्सर आर्थिक कमजोरी और महिलाओं पर इसके प्रभाव की पेचीदगियों को उजागर करती हैं, उनके संघर्षों को विस्तार और सहानुभूति के साथ दर्शाती हैं। उनकी कहानियाँ बताती हैं कि कैसे वित्तीय अस्थिरता महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को बढ़ाती है, उन्हें निर्भरता और भेद्यता के चक्र में फँसाती है। अपने पात्रों के माध्यम से ममता कालिया पितृसत्तात्मक की कठोर वास्तविकताओं को उजागर करती हैं। जहाँ आर्थिक अभाव महिलाओं की पसंद को सीमित करता है और उनकी आवाज को दबाता है। उनके नायक अक्सर व्यक्तिगत आकांक्षाओं के लिए प्रयास करते हुए पारिवारिक कर्तव्यों को बनाए रखने दबाव से जूझते हैं, इस तरह के विवश अस्तित्व को नेविगेट करने के लिए आवश्यक लचीलापन और धैर्य को उजागर करते हैं। इन मुद्दों पर प्रकाश डालते हुए कालिया की कहानियाँ न केवल महिलाओं के सामने आने वाली सामाजिक, आर्थिक चुनौतियों को दर्शाती हैं, बल्कि सामाजिक मानदंडों की गहरी समझ और परिवर्तन का आह्वान भी करती हैं।

अपनी रचनाओं में ममता कालिया अक्सर आर्थिक कमजोरी और लिंग के प्रतिच्छेदन को दर्शाती हैं। यह दिखाते हुए कि कैसे महिलाओं का जीवन वित्तीय और

सामाजिक दोनों बाधाओं से दोगुना बोझिल है। मध्यम वर्ग की गृहणियों, कामकाजी महिलाओं और ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले लोगों जैसे चरित्रों को सूक्ष्म यथार्थवाद के साथ चित्रित किया गया है, जो गरीबी और सामाजिक अपेक्षाओं के खिलाफ उनकी निरंतर लड़ाई को दर्शाता है। कालिया की कहानी मौन बलिदानों, उनके छिपे हुए श्रम और उनके परिवारों और समुदायों को दिए जाने वाले उनके अप्रतिष्ठित योगदान पर जोर देती है। उदाहरण के लिए उनकी कई कहानियों में महिलाओं की सीमित संसाधनों के साथ घरेलू वित्त का प्रबंधन करते हुए देखा जाता है, जो अक्सर अपनी जरूरतों और इच्छाओं का त्याग करते हुए अपने परिवार के अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए बहुत कुछ करती है। यह आर्थिक कमजोरी अक्सर उन्हें घर के अंदर और बाहर दोनों जगह शोषण के लिए अतिसंवेदनशील बनाती है। कालिया की कहानियाँ इन महिलाओं के लचीलेपन और एजेंसी को शक्तिशाली रूप से चित्रित करती हैं क्योंकि वे अपनी कठोर वास्तविकताओं को ताकत और सरलता के साथ नेविगेट करती हैं।”<sup>42</sup>

स्वातन्त्र्योत्तर युग में स्त्री-शिक्षा की जागरूकता अपने स्वतंत्र जीने की चाह को प्रबल बनाया है। “स्त्री अपने भविष्य एवं कैरियर के प्रति पूर्ण रूप से सचेष्ट हुई है क्योंकि वह अपने जीवन के प्रति प्रत्येक पहलू को श्रेष्ठ व आत्मनिर्भर बनना चाहती है। आर्थिक पक्ष को मजबूती के साथ अपनाकर वह किसी पुरुष के समक्ष झुकना नहीं चाहती। स्त्री चाहे ग्रामीण परिवेश की हो या गहरी परिवेश की वह नौकरी पेशा के कारण अपनी पहचान व अस्मिता बना लेती है।”<sup>43</sup> नौकरी पेशा स्त्रियाँ आर्थिक रूप से स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बन दोहरे दायित्व को कुशलता से निभा रही हैं। वह अपने पद के दायित्व के साथ-साथ घर परिवार के दायित्वों को भी निभाती हैं। जहाँ पुरुष की सहभागिता नगण्य रहती है। “शिक्षा जन-जागरूकता के बदलते आवरण में भारतीय समाज की स्त्री पूर्णतः बदल गई है। आधुनिक समाज स्त्री के दोहरे व्यक्तित्व की भूमिका को सहज ही स्वीकार कर रहा है जिसका आधार स्त्री का नौकरी पेशा बन आर्थिक मजबूती प्रदान करना है।”<sup>44</sup>

नौकरी पेशा स्त्री के बारे में घनश्याम दास भूतड़ा ने कहा है कि- “नौकरी के लिए घर से बाहर पैर रखते समय का सारा उत्साह कुछ ही वर्षों में धुल पुँछ जाता है और भीतर निर्माण होता है एक विराट खोखलापन जीवित रहने की सारी औपचारिकताएँ निभाते हुए यह प्रयत्न भी करती है कि कोई उसके हृदय में छिपे हुए

अभाव को न देख ले। परिणामस्वरूप आज की नारी का एक नया रूप उभर कर आता है वह है टूटी, हारी और कमजोर अपने जीवन में ताल-मेल न बिठा पाने के कारण वह बाहर भीतर के दोहरे बोझ से आतंकित है तथा एकांकी रह शापग्रस्त जीवन जीने को विवश है।

स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं को जीते हुए कभी-कभी अपने ममत्व के कारण और अपराध बोध की भावना से उद्वेलित हो जाती है। बच्चों की परवरिश, अनुशासन, संस्कार एवं उच्च शिक्षा देने के कारण स्त्री आर्थिक पक्ष को भी मजबूती प्रदान करती है लेकिन वह स्वयं अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए नौकरी पेशा बने रहना चाहती है। “ममता कालिया ने कहानी मंदिरा में स्त्री की मनः स्थिति को अभिव्यक्त किया है। लेखिका ने इस कहानी में स्त्री पात्र मंदिरा के लिए कहा है कि यूनिवर्सिटी में उसका जाना अर्थ रखता था।”<sup>45</sup>

घर व बाहर के बदलते परिवेश ने मंदिरा को जीवन जीने की नई किरण दी है क्योंकि वह एक तरफ घर में बेटे के चले जाने से मानसिक कष्ट से व्यथित है तो दूसरी तरफ विश्वविद्यालय जाना उसे मानसिक सुख भी प्रदान करता है।

देखा जाए तो मंदिरा केवल उतनी देर जीती थी जितनी देर वह यूनिवर्सिटी में रहती। तीन बजे क्लासों से छुट्टी पाकर वह रिक्षा में घर की ओर चल देती। कुछ देर तो मन उत्फुल्ल रहता छात्र-छात्राओं की ताजगी भरी यादें दिमाग में रहती, लेकिन जैसे ही उसे अपने घर के मोड़ पर बना वह सूखा कुण्ड नजर आता, दिल डूब जाता। रोज उसकी इच्छा होती रिक्षा वापस यूनिवर्सिटी ले जाये पर रोज रिक्षा उसे अपने दरवाजे पर खड़ा मिलता। सुस्त कदमों में वह अपने कमरे में घुस जाती।

नौकरीपेशा स्त्रियाँ चाहे किसी भी तबके की हो जैसे मजदूर, श्रमिक, सरकारी कार्यालयों या प्रेस में काम करने वाली अपनी स्वातन्त्र्य इच्छाओं के बावजूद व्यथित एवं पीड़ित हैं जिसके पीछे घर-परिवार की जिम्मेदारी है। दोहरे व्यक्तित्व के दबाव में स्त्रियाँ पीड़ित हैं। स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं में घिरे होने से कभी-कभी दूसरी स्त्रियों की आलोचना की भी शिकार हो जाती है। कहानी ‘पच्चीस साल की लड़की’ में ममता कालिया ने नौकरीपेशा ऐसी स्त्री पात्र को दर्शाया है जो नौकरी में व्यस्तता के कारण अविवाहित एवं स्वतंत्र जीवन चाहती है लेकिन ऑफिस में मिसेज शर्मा के व्यवहार से आहत होती है। समाज की आलोचनाओं से तनावपूर्ण जीवन के कारण वह सोचती है कि कैसे एक स्त्री दूसरी स्त्री को आहत पहुँचा सकती है। “मैं और भयभीत

हो उठी, वे अपने जप, तप और व्रत से ही क्यों नहीं सीधे-सीधे मुझे भस्म कर देती है? क्यों ऐसी की तैसी कर रही है। अगर मैं पापी हूँ तो उनके ताप से निश्चित जल जाऊँगी।”<sup>46</sup>

मैंने भस्म हो जाने के लिए खुद को तैयार किया ठीक है, लग जाने दो यही डाइंगरूम में, इस महँगे कालीन पर मेरी राख का ढेर पड़ा रहने दो मेरे वेतन का अगला पे-बिल, कल के सिनेमा के टिकट मेरे पर्स में पड़े फड़फड़ाने दो। आज एक सती अपने सतीत्व से मुझे नष्ट कर डालेगी। मुझे सिर्फ इतना अफसोस रहेगा कि कभी दिल खोलकर गुनाह भी न किया। मौके तो कई आये पर हर मौके को शादी के लालच ने पीछे धकेल दिया जैसे दफ्तर का ही वह नया फैक्स, जो अक्सर मुझे शाम को अपने स्कूटर पर लिफ्ट दिया करता था। अपने मोटे पेट और पके बालों के बावजूद वह अविवाहित था और रोमांस के होंसले उसने हारे नहीं थे। सिलसिला वहाँ जाकर एकदम टूट गया जब वह मेरे एफ.डी. की जानकारी चाहने लगा जबकि मैं उसकी वी.डी. की जानकारी चाहती थी। उसने तत्काल स्कूटर सेवा सस्पेंड कर दी और मैं बस के क्यू में शामिल होने लगी।<sup>47</sup>

नौकरीपेशा स्त्रियाँ जीवन में दोहरे दायित्वों को निभाकर आर्थिक पक्ष को मजबूती प्रदान कर रही हैं, लेकिन पारिवारिक धरातल पर प्रेम स्नेह में कमी अवश्य बनी रहती है। ममता कालिया ने ‘लगभग प्रेमिका’ में स्त्री पात्र के माध्यम से प्रेम व स्नेह की अपूर्णता को दर्शाया है साथ ही परस्पर सामंजस्य को स्थापित कर जीवन पहलू को श्रेष्ठ बनाने के लिए आर्थिक पक्ष की मजबूती को भी अनिवार्य माना है। वेश्यावृत्ति स्त्री-जीवन की विकट समस्याओं में से प्रमुख है। समाज द्वारा वेश्यावृत्ति का शिकार प्रायः निम्न एवं मध्यम वर्ग की स्त्रियाँ होती हैं जिनका प्रारूप कहीं न कहीं आर्थिक रूप भी होता है। निम्न एवं मध्यम वर्ग की स्त्रियों को जब अपने जीवन के आधार को देने के लिए कोई अन्य मार्ग नहीं मिलता तब वे प्रायः वेश्यावृत्ति के मार्ग का चुनाव करती हैं; जिसका मुख्य कारण अपना व अपने परिवार के पेट का भरण-पोषण करना है।

वेश्यावृत्ति के लिए मुख्यतः घरेलू एवं आर्थिक स्थितियाँ ही स्त्री को मजबूर करती हैं उन्हें समाज के द्वारा हीन दृष्टि से देखा जाता है और वे समाज के लिए कलंक मानी जाती हैं। वेश्यावृत्ति उन्मूलन कानून बनने के बाद आज भारत में इसके पहले कभी नहीं थी। मध्यकाल या रीतिकाल में भी नहीं। अंतर केवल जाहिर या छिपे रूप का ही है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा है कि 'जितनी भी बुराईयों के लिए मनुष्य उत्तरदायी है। उनमें से कोई भी इतनी आपत्तिजनक दुःखद और पाशविक नहीं है जितनी कि वेश्यावृत्ति महानगरों में वेश्यावृत्ति आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संकट का मुख्य द्योतक है'। आर्थिक विपन्नता को दूर करने के लिए स्त्रियों द्वारा सतीत्व का बाजारीकरण किया जा रहा है जिसके लिए वह स्वयं को असहज महसूस नहीं करती। वे अपने काम संतुष्टि के लिए वेश्यावृत्ति को सहज ही स्वीकार कर लेती हैं इस संदर्भ में राजेंद्र यादव ने कहा है- एक प्राकृतिक भूख और साथ की आवश्यकता के लिए आप यदि साथ खोजते हैं तो उसे किसी न किसी तरह सहा जा सकता है। जस्टीफाई किया जा सकता है, लेकिन इन दोनों मानवीय भावों को आप किसी घोर भौतिक स्वार्थ साधन के काम में लाये तो सचमुच यह वेश्यावृत्ति है।

स्त्रियाँ ही वेश्यावृत्ति में यौन व्यवसाय कर आजीविका ग्रहण कर लेती हैं। निर्धनता, सुरक्षा का अभाव कुरीतियाँ आदि वेश्यावृत्ति के प्रमुख कारण हैं:-

मैत्रेयी पुष्पा के शब्दों में 'वेश्या' ऐसा शब्द है जिससे स्त्री के कलंकित जीवन की ध्वनि निकलती है। इस वर्गगत नाम को धारण करने वाली स्त्री रति क्रिया का मूल मांगती है। महात्मा गाँधी जी ने वेश्यावृत्ति के लिए पुरुष सत्ता को भी दोषी माना है और इस संदर्भ में कहा है जो लोग वेश्याओं के यहाँ जाते हैं उनमें से अधिकांश विवाहित पुरुष होते हैं। अतः वे दुगुना पाप करते हैं वे अपनी स्त्रियों के लिए पाप करते हैं जिनके साथ वे प्रतिबद्ध हैं और इन बहनों के प्रति भी करते हैं जिनकी पवित्रता की रक्षा अपनी सगी बहनों की भाँति ही करने को वे बाध्य हैं उन्होंने वेश्यावृत्ति की तुलना पशुत्व से की और पुरुषों को चेतावनी देते हुए कहा हम स्त्रियों को माँ बहन या बेटा समझकर उनका आदर करना नहीं सीखे तब तक भारत का उद्धार नहीं होगा।<sup>48</sup>

कभी-कभी संतान प्राप्ति की चाह में स्त्रियाँ अन्य पुरुषों से संबंध बनाती हैं। यौन संबंधों का यह खुलापन उन्हें सहज स्वीकार्य है वेश्यावृत्ति का यह मार्ग स्त्रियों को रोजगार के साथ आर्थिक मजबूती भी देता है। मैत्रेयी पुष्पा ने इस संबंध में विचार दिया है- स्त्रियाँ एक उन्नत, समृद्ध एवं मजबूत समाज राष्ट्र की द्योतक हैं। आदि से आज तक के मानव जीवन के विकास में उनकी महती भूमिका की पहचान के कारण उन्हें अर्द्धांगिनी की संज्ञा दी गयी है।

किसी भी देश की ख्याति, प्रसिद्धि संस्कृति एवं परम्परा की उन्नति उस देश की स्त्रियों की दशा पर निर्भर होता है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि 'औरतों की स्थिति में सुधार लाये बिना दुनिया का कल्याण संभव नहीं है एक पंख से चिड़िया उड़ान नहीं भर सकती'। स्त्रियों की दशा व समानता के पक्ष को आधार देकर सन् 1925 में गाँधी जी ने कहा था जब तक महिलायें भारत के सार्वजनिक जीवन में हिस्सा नहीं लेती हैं। देश का उद्धार नहीं हो सकता। वास्तव में नारी की सुदृढ़ एवं सम्मानजनक स्वातन्त्र्योत्तर भारत में स्त्रियों को राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ते स्तर के लिए आरक्षण दिया जा रहा है। समान वेतन के अधिकार ने आज भी अपनी भूमिका समृद्ध की है। स्त्रियों से संबंधित वेतन समानता के अधिकार से आज भी वे वंचित हैं बाहुल्य संस्कृति वाले भारतीय समाज में धर्म का व्यवसायीकरण हो रहा है जिसका प्रभाव कहीं न कहीं स्त्रियों की आर्थिकी पर भी पड़ा है। डॉ. कुंवरपाल सिंह ने लिखा है कि "पूँजीवादी पद्धति में बहु धर्म रहते हैं लेकिन उनके भीतर की कट्टरता की ओर सांप्रदायिकता की धारा कुंठित हो जाती है। धर्म का व्यवसायीकरण हो जाता है ताकि एक धर्म का व्यक्ति दूसरे धर्म व वर्ग के व्यक्तियों का निर्मम शोषण अच्छी तरह जारी रख सके। पूँजीपति के सामने व्यापारी के सामने हिन्दू ग्राहक, मुसलमान ग्राहक या ईसाई ग्राहक जैसी कोई बात नहीं रहती वह सबसे मुनाफा कमाना चाहता है।"<sup>49</sup>

पुरुष वर्ग की संकीर्ण मानसिकता भी वेतन असमानता का कारक है। स्त्री-पुरुष के समकक्ष कार्य करने पर भी समान वेतन की अधिकारिणी नहीं बन पाती है। पुरुष स्त्री को अपने समकक्ष कमजोर व असाध्य मानता है जिस कारण स्त्री के प्रतिपल कार्य करने की क्षमता के अनुसार उसके वेतन में कटौती अवश्य ही की जाती है। मीडिया में नए विश्व का निर्माण कर समाज को नवीन धरातल से जोड़ दिया है जिससे मीडिया समाज के बदलाव का अभिप्राय बनने में सफल हुआ है। मीडिया के क्षेत्र में प्रचार-प्रसार के माध्यमों के द्वारा स्त्रियों ने नये आकाश को छुआ है। परिणामस्वरूप स्त्रियों को संभावनाओं का एक नवीन मार्ग दिखता है।<sup>50</sup>

मीडिया आधुनिकता की दौड़ में विश्व जनमत के प्रभावीकरण का सफल माध्यम बना है। आधुनिक मीडिया के बढ़ते प्रचार-प्रसार के माध्यमों से सम्पूर्ण परिदृश्य बदला है। सामाजिक विकास में मीडिया के प्रभावीकरण ने ज्ञान, शिक्षा एवं चिंतन के आयाम स्थापित किये।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय स्त्रियों की स्थिति एवं आज के परिवेश में हो रहे विश्व सूचना प्रौद्योगिकी के विविध माध्यमों के द्वारा सामाजिक और राजनीतिक चेहरा इस मीडिया क्रांति की ही देन है। सूचना प्रसारण के माध्यम से एक नई पहल की गई है। जिसमें भारतीय स्त्रियों में हो रहे बदलाव एवं उनके बदलते हुए सामाजिक सरोकारों को विभिन्न घटनाओं के माध्यम से देखने का प्रयास भी किया है। इस नई भारतीय मीडिया संस्कृति ने भारतीय महिलाओं के लिए खुला संसार पैदा कर दिया है जहाँ से वे अपने आप पूरे विश्व को देख सकती हैं अपनी सोच को एक नई परवाज दे सकती हैं आज के सामाजिक परिवेश के बदलते संदर्भों में स्त्री घर-परिवार के साथ-साथ आचार-व्यवहार, रहन-सहन, पहनावे तक का बदलता स्वरूप दिखाई दे रहा है। नोबल पुरस्कार विजेता टोनी मारिसन का मानना है- “इस नई शताब्दी की महिला एक बदले हुए रूप में कुछ नए अर्थों में इस विश्व को नया रास्ता दिखाएगी और वह है जनसंचार और प्रसारण माध्यम जैसे टी.वी., रेडियो, अखबार इत्यादि परंतु इनके दुष्प्रभाव भी होंगे। इस शताब्दी के शुरू में महिलाएँ अब एक बदली हुई भूमिका में पूरे विश्व को रास्ता दिखा रही हैं। मेरा मानना है कि यह शताब्दी महिलाओं की ही होगी।”<sup>51</sup>

### 3.6 सामाजिक जीवन व स्त्री

ममता कालिया की कहानियाँ सामाजिक जीवन की बारीकियों और उसमें महिलाओं की स्थिति को बहुत ही बारीकी से बुनती हैं, उनके संघर्षों, आकांक्षाओं और लचीलेपन का एक विशद चित्रण प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियाँ अक्सर पारंपरिक सामाजिक अपेक्षाओं और समकालीन परिवेश में महिलाओं की बदलती भूमिकाओं के बीच के द्वंद्व को उजागर करती हैं। कालिया के पात्र आम तौर पर मजबूत, मुखर महिलाएँ हैं जो पितृसत्तात्मक मानदण्डों को चुनौती देती हैं और सामाजिक दबावों के बीच अपनी पहचान बनाने की कोशिश करती हैं। अपनी अंतर्दृष्टिपूर्ण कहानी कहने के माध्यम से, कालिया लैंगिक असमानता, पारिवारिक दायित्वों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की खोज के विषयों पर गहराई से चर्चा करती हैं। उनकी रचनाएँ महिलाओं की सीमित करने वाली सामाजिक संरचनाओं की आलोचनात्मक जाँच करती हैं, साथ ही इन बाधाओं को दूर करने में उनकी दृढ़ता और एजेंसी का जश्न भी मनाती हैं। अपनी महिला नायिकाओं के रोजमर्रा के जीवन और आंतरिक दुनिया पर ध्यान केंद्रित करके, कालिया न केवल महिलाओं के अनुभवों की जटिलताओं को दर्शाती है, बल्कि

उनके अस्तित्व को आकार देने वाले सांस्कृतिक और सामाजिक रीति-रिवाजों के पुनर्मूल्यांकन का भी आह्वान करती है। ममता कालिया अक्सर महिलाओं के सामने आने वाली बेतुकी बातों और अन्याय को रेखांकित करने के लिए यथार्थवादी और कभी-कभी व्यंग्यात्मक लहजे का इस्तेमाल करती है। वह उनके जीवन के सांसारिक और असाधारण क्षणों को जीवंत रूप में कैद करती है, उनके भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक परिदृश्यों का प्रामाणिक चित्रण प्रस्तुत करती है। उनकी महिला पात्र कई तरह की भूमिकाओं में हैं- बेटियों और पत्नियों से लेकर पेशेवरों और कार्यकर्ताओं तक प्रत्येक इन पहचानों के साथ आने वाली सामाजिक अपेक्षाओं से जूझती है।

कालिया की कहानियाँ अक्सर पुरानी पीढ़ियों द्वारा बनाए गए पारंपरिक मूल्यों और युवा महिलाओं के अधिक प्रगतिशील दृष्टिकोणों के बीच पीढ़ीगत संघर्षों का पता लगाती हैं। यह तनाव एक आवर्ती रूपांकन है, जो लैंगिक समानता के लिए चल रहे संघर्ष और सामाजिक परिवर्तन की धीमी गति को उजागर करता है। उनकी कहानियाँ केवल व्यक्तिगत लड़ाईयों के बारे में नहीं हैं बल्कि महिलाओं की सामूहिक दुर्दशा के बारे में भी हैं, जो दहेज घरेलू हिंसा और सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में महिलाओं के हाशिए पर रहने जैसे व्यापक सामाजिक मुद्दों को दर्शाती हैं।

अपनी गहरी टिप्पणियों और सहानुभूतिपूर्ण चरित्र चित्रण के माध्यम से कालिया महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में निहित विरोधाभासों को उजागर करती है। वह दर्शाती है कि कैसे सामाजिक मानदंड अक्सर महिलाओं को प्रतिबंधात्मक भूमिकाओं तक सीमित कर देते हैं, फिर भी उनके पात्र अक्सर इन सीमाओं को पार करने में लचीलापन और संसाधनशीलता प्रदर्शित करते हैं। कालिया की कथाएँ समाज के लिए एक दर्पण और आशा की किरण दोनों के रूप में कार्य करती हैं, जो एक अधिक न्यायसंगत और समावेशी दुनिया की वकालत करती हैं जहाँ महिलाएँ अपने भाग्य को परिभाषित करने के लिए स्वतंत्र हैं। उनकी रचनाएँ पाठकों के साथ प्रतिध्वनित होती हैं, लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए आवश्यक सुधारों पर चिंतन और संवाद को प्रेरित करती हैं।

ममता कालिया का सामाजिक जीवन और महिलाओं का चित्रण परिवार के भीतर और बाहर दोनों जगह रिश्तों की पेचीदगियों में भी उतरता है। वह माताओं और बेटियों, पतियों और पत्नियों और दोस्तों के बीच जटिल गतिशीलता के कुशलता से नेविगेट करती है, यह बताती है कि ये रिश्ते महिलाओं की पहचान और अनुभवों को

कैसे आकार देते हैं। उनके पात्र अक्सर अपने रिश्तों द्वारा लगाई गई सीमाओं का सामना करते हैं, सामाजिक अपेक्षाओं के सामने स्वायत्तता और आत्म-अभिव्यक्ति के लिए प्रयास करते हैं।

कालिया की कथाएँ महिला मित्रता और एकजुटता के अपने समृद्ध, सूक्ष्म चित्रण के लिए जानी जाती हैं। वह इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि कैसे ये बंधन महिलाओं को भावनात्मक समर्थन, शक्ति और समुदाय की भावना प्रदान करते हैं, जिससे वे उन पितृसत्तात्मक संरचनाओं का विरोध करने और उन्हें चुनौती देने में सक्षम होती हैं जो उन्हें प्रताड़ित करना चाहती हैं। इन रिश्तों को सशक्तिकरण के स्रोत के रूप में चित्रित किया गया है, जो पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के अक्सर अलग-अलग अनुभवों के लिए एक प्रति-कथा प्रस्तुत करता है।

इसके अलावा, कालिया अपने पात्रों द्वारा अनुभव किए जाने वाले आंतरिक संघर्षों और आत्म-संदेह को चित्रित करने से नहीं कतराती हैं। वह एक ऐसे समाज में रहने के मनोवैज्ञानिक बोझ को दर्शाती हैं जो लगातार महिलाओं की जांच और न्याय करता है, उनके आत्म-मूल्य पहचान और अपनेपन के साथ संघर्ष को उजागर करता है। उनके पात्रों की यात्रा अक्सर आत्म-खोज और सशक्तीकरण की होती है क्योंकि वे एक ऐसी दुनिया में अपने अधिकारों और इच्छाओं का दावा करना सीखते हैं जो अक्सर उन्हें चुप कराना चाहती हैं।

ममता कालिया के कथा-साहित्य में स्त्री के विमर्श का सामाजिक पक्ष यह है कि उसे सामाजिक रूढ़ियों, वर्जनाओं एवं पितृसत्तात्मक समाज से मुक्ति चाहिए। स्त्री शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता होते हुए भी स्त्री को अनेक विसंगतियों का सामना करना पड़ता है। लेखिका के द्वारा स्त्री के समग्र सामाजिक पक्ष को अभिव्यक्त किया गया है। भारतीय समाज की आधार संरचना साझा संस्कृति एवं मूल्यों पर टिकी है जो एक अद्वितीय विशेषता है। भारतीय समाज में विभिन्न जाति, रीति-रिवाज, परंपराओं का समावेश है। हजारों वर्षों से भारतीय समाज में स्त्री की जीवंत उपस्थिति एवं उसके योगदान से मुहँ नहीं मोड़ा जा सकता। “भारतीय सभ्यता एवं उसके उत्कर्ष की कहानियाँ आज भी मूल्यवान हैं। भारत का स्त्री जाग्रत हो चुका है जिसमें पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भी विद्यमान है।”<sup>52</sup>

हमारा भारतीय समाज विविध अनेक परंपराओं पर आधारित है। जिसके प्राचीनकाल से अपने सामाजिक मानदण्ड रहे हैं। सामाजिक मानदण्ड किसी न किसी

व्यवस्था से जुड़ रहे हैं। यह व्यवस्था व्यक्तियों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन से जुड़े रीति-रिवाज, आचार-विचार, खान-पान होते हैं। व्यक्ति, परिवार एवं समाज की व्यवस्था के सहयोग से सामाजिक पृष्ठभूमि का निर्माण होता है।

भारतीय समाज प्रारंभ से ही पुरुष प्रधान रहा है। भारतीय समाज में यद्यपि 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमयन्ते तत्र देवता' कहकर स्त्री को सैद्धांतिक पक्ष से ऊपर रखा है लेकिन व्यावहारिक पक्ष में उसे हीन एवं उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया है। प्राचीन ग्रंथों में स्त्री को पुरुष की भोग्या माना गया है।

डॉ. नगेंद्र के अनुसार "भारतीय स्त्री के जीवन में समय एवं काल के अनुसार बदलाव हुआ है। पूर्व वैदिक काल में जिन स्त्रियों का उल्लेख मिलता है। वह किसी वर्ग विशेष से संबंधित एवं गिनी-चुनी थी उन्हें शिक्षा एवं सम्मान के क्षेत्र में ख्याति भी मिली है। लेकिन साधारण स्त्री का कोई विशेष स्थान नहीं था।"<sup>53</sup>

ऋग्वेद में रोमशा लोपामुद्रा, श्रद्धा, कामायनी, वैवस्वती उषा, इला, निश्ववारा, अपाला घोषा, सूर्य, चर्मा ब्राह्मणी एवं शाश्वती आदि ऋषिकाओं के नाम मंत्र दृष्टा के रूप में प्राप्त होते हैं समाज में उसको कभी देवता के उदात्त स्थान पर विभूषित किया गया था तो कभी उसके साथ दासी जैसा व्यवहार किया गया था तो कभी उसका मूल्य मन बदलाव के खिलौने से अधिक नहीं माना गया।

भारतीय स्त्री के जीवन में अनेक सामाजिक समस्याएँ होती हैं सामाजिक समस्याओं से तात्पर्य उन समस्याओं से है जो कि मनुष्य के वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में असमंजस्य एवं असंतुलन उत्पन्न करती हैं। स्पष्ट है कि जो परिस्थितियों और कार्य सामाजिक आदर्शों एवं प्रतिमानों की अवहेलना या उल्लंघन करने के लिए प्रेरित करते हैं, सामाजिक अनुकूलन को अवरुद्ध या कम करते हैं उन्हें ही सामाजिक समस्याओं को संज्ञा दी जाती है, सामाजिक समस्या वस्तुतः मानवीय संबंध से संबंधित है जो सम्पूर्ण समाज के लिए अत्यंत गंभीर स्थिति उत्पन्न करती है या जो व्यक्तियों की महत्वपूर्ण आकांक्षाओं की पूर्ति या प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करती है। "स्त्रियों का सम्मान एवं उसके हितों की रक्षा करना समाज में पुरानी संस्कृति रही है। एक तरफ स्त्री को शक्ति नवदुर्गा के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है तो दूसरी तरफ स्त्री के लिए समाज ने अनेक बंधन भी उत्पन्न भी किये हैं जिस कारण उसे अबला कहा जाने लगा पुरुष प्रधान समाज के कारण ही स्त्री संबंधी सामाजिक समस्याओं ने गंभीर रूप धारण किया।"<sup>54</sup>

आधुनिक युग में स्त्रियाँ अब भी समाज में पूर्ण रूप से वह स्थान प्राप्त नहीं कर सकी जो उन्हें मिलना चाहिए। बाल विवाह, अनमेल विवाह जैसी समस्याएँ तो समाज में विद्यमान थीं ही लेकिन लिंग भेद एवं दहेज प्रथा की समस्या ने स्त्री संबंधी समस्या का एक ज्वलंत विषय बन गया है। इन समस्याओं के कारण अधिकांश स्त्रियाँ मृत्यु के कगार पर पहुँची हैं। सदियों से चलती आ रही विसंगतियों एवं विडम्बनाओं के बीच स्त्री जीती है तो लेकिन उसके अस्तित्व का कोई स्थान नहीं रह जाता। समाज के साथ-साथ वह पारिवारिक संबंधों सहचरी माँ, अर्धांगिनी सभी रूप में उसका शोषण होता है। स्त्री-शिक्षा की उपेक्षा, बाल-विवाह, कन्यादान का आदर्श एवं पुरुषों पर आर्थिक निर्भरता ने स्त्री समस्याओं को बढ़ावा दिया जिससे स्त्री की मानसिक शारीरिक एवं आर्थिक दशा भी निम्न हो गई।

भारतीय समाज में विधवा स्त्री की स्थिति के बारे में बताया गया है। वैधव्य की स्थिति अत्यधिक करुणा से भरी होती है, हिन्दू धर्म में पति की मृत्यु के पश्चात पत्नी को पुनर्विवाह की अनुमति नहीं है। यह विश्वास किया जाता है कि पत्नी पति से अनन्य भाव से प्रेम करे। “पतिव्रत धर्म यही माना जाता है विधवा को लोक में अशुभ माना जाता है, शुभ महत्वपूर्ण संस्कार आदि में वह आगे नहीं बढ़ सकती है तथा रांड शब्द का प्रयोग उसके लिए किया जाता है।”<sup>55</sup> हिन्दू धर्म ग्रन्थों में स्त्रियों के लिए पतिव्रता धर्म का पालन करने सतीत्व रक्षा करने की बात कही गयी है। अतः स्त्री द्वारा अपने पति को त्यागने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसका परिणाम यह होता है कि बहुत सी स्त्रियों को अपने पति के अत्याचारों के कारण काफी नारकीय जीवन व्यतीत करना पड़ता है, हाँ अब शिक्षा के कारण स्थितियाँ बदल रही हैं, सोच में परिवर्तन आ रहा है।

मैत्रेयी पुष्पा ‘खुली खिड़कियों’ में विधवा जीवन की समस्या के बारे में कहती विधवा जीवन समाज की विकराल समस्या है क्योंकि ऊँची जातियों में विधवा विवाह का रिवाज नहीं कहा जाता है कि ईश्वर ने औरत को कोई सत्ता नहीं दी, इसीलिए उसकी सत्ता पुरुष है, पुरुषों ने जो कुछ तय किया वही उसके जीवन का कानून है। कानून आज तक कायम है क्योंकि पुरुष वर्चस्व बाकायदा है, नहीं तो वह औरत को नियंत्रित करने के लिए उसे जिंदा जलाना जरूरी क्यों समझता? संभावित कलंकारी बोझ से छुटकारा पाने के लिए ही न?

भारतीय समाज में सामाजिक नैतिकता बोध को अधिक महत्व दे दिया है क्योंकि हमारा सामाजिक परिवेश जात-पात। परम्पराओं एवं रूढ़िवादी मान्यताओं में जकड़ा हुआ है। नैतिकता बोध स्त्री के लिए अलग एवं पुरुष के लिए अलग है। इसका प्रमुख कारण पुरुष सत्तात्मक समाज का वर्चस्व है।<sup>56</sup> सीमोन द बोउवार के अनुसार पुरुष ने सभ्यता के आदिकाल से ही अपने शारीरिक शक्ति के कारण अपनी श्रेष्ठता स्थापित की। उसने धर्म बनाए जिन मूल्यों को गढ़ा, जिन आचरणों को मान्यता दी, ये सब उसकी सुविधा के लिए थे उसके इस एकछत्र राज्य को औरत ने पहले कभी चुनौती नहीं दी। कहीं-कहीं कुछ महिलाओं ने व्यक्तिगत रूप में आवाज उठाई, कुछ आंदोलन भी हुए किन्तु पुरुष ने औरत का सब कुछ अपने हाथ में रखा। उसने स्त्री के स्वार्थ में उसकी नियती नहीं गढ़ी बल्कि अपनी परियोजनाओं और जरूरतों से वह नियोजित हुआ।

विरासत में मिली परंपरा एवं मूल्यों के कारण ही भारतीय समाज ने स्त्री के लिए सामाजिक मानदण्ड अलग-अलग बना दिए जिसका मुख्य कारण यह रहा है कि देश में अलग-अलग जातियों, माता-पिता के द्वारा ही विवाह, दहेज प्रथा, एक बार विवाह हो जाने पर पति-पत्नी को छोड़ नहीं सकता लेकिन शिक्षा एवं स्वातंत्र्य आंदोलन के चलते स्त्री-नैतिक बोध में बदलाव आया परिवार के मेल से ही समाज का निर्माण होता है। समाज में स्त्री शिक्षा को एक ओर बढ़ावा दिया जाता है। सम्मान देने की बात कही जाती है वहीं दूसरी ओर स्त्री को घर में ही कोई अधिकार नहीं कोई आदर नहीं तो इस अनादर की भावना के कारण ही अन्य पुरुषों के द्वारा भी वह छली जाती है सामाजिक मापदण्ड भिन्न कर दिए जाते हैं। पुरुष कुछ भी करें तो उसे मर्दानगी व साहसी जैसे शब्दों से अभिहित किया जाता है लेकिन स्त्री कुछ करें तो कुलच्छनी बना दी जाती है।

आधुनिक स्त्री ने अपनी स्वतंत्र इच्छा के चलते नैतिक प्रतिमान बदले। 'लगभग प्रेमिका' कहानी में नायिका स्वतंत्र अस्तित्व मुक्त है वह शादीशुदा होने के उपरांत भी ऐसे व्यक्ति का साथ चाहती है जो केवल प्रेमी है इस प्रेम में वह अपने पारिवारिक जीवन को भी जोखिम में नहीं डालना चाहती है।<sup>57</sup> मैं अपने को कुछ-कुछ व्यवस्थित पा रही थी, यानि रोटी, कपड़ा और मकान तीनों अपने ओनै-पौने रूप में मयस्सर हो रहे थे। अकेली रातों का सहारा वियोग और विरह था। समस्या थी बाकी वक्त की अपनी क्लासों और अपने शरीर की देखभाल के बाद भी कई घण्टे फालतू

बच जाते। शाम के वक्त हॉस्टल में अकेले छूट जाना उदास से अधिक शर्मिंदा कर देता। इस समस्या पर बहुत सोचने के बाद मुझे महसूस हुआ कि यह अकेलापन सिर्फ एक चीज से भरा जा सकता है सोच लेने के बाद मुझे ताज्जुब हुआ कि डेढ़ महीने से वह सीधी सी बात मेरी समझ में क्यों नहीं आयी, खामख्वाह अपने को बेवकूफ बनाती, मैं तेरह नंबर के मनहूस कमरे में बैठी रही, मैं जो अपने को साहित्य की अफलातून मानती हूँ इतना तक न समझ पायी कि साहित्य में किन स्त्रियों को अमरता प्राप्त हुई है। “अन्ना कैरिनीना मैडम बोवेरी, लेडी टरली और मीराबाई मेरा वर्तमान जीवन एक छोटे से प्रेम प्रसंग से सार्थक और आकर्षक बन सकता था।”<sup>58</sup>

स्त्री शिक्षा व व्यवसायों में बढ़ती स्त्रियों की सजगता इसी का परिणाम है यौन संबंधों के प्रति स्त्री स्वयं अपनी इच्छा या अनिच्छा को अभिव्यक्त करती है। घर से बाहर आने के बाद वह भोग्या होने की नियति को दरकिनार कर स्वतंत्र व्यक्तित्व से जीने की इच्छा करने लगी, आधुनिक स्त्री मन इच्छा से पुरुष संबंध से पूर्ण एवं संतुष्टिपूर्ण चाहती है तो वह परिवार की मर्यादा और मातृत्व की गरिमा को भी सहन नहीं करती वरन् विरोध में खड़ी हो जाती है।<sup>59</sup> ‘अपत्नी’ कहानी में लीला ऐसी स्त्री का प्रतिबिम्ब है जो बिना विवाह के भी अन्य पुरुष के साथ रहती है। कहानी की अन्य पात्र को यह बात सहज नहीं लगती क्योंकि जिसके साथ लीला रहती है उस व्यक्ति का तलाक भी नहीं हुआ था। लीला अपने इस संबंध को लेकर निश्चित थी।

## निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ममता कालिया के सम्पूर्ण कथा साहित्य में स्त्री जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। इनके कथा साहित्य में स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष करती हुई दिखाई पड़ती है। ममता जी ने अपने कहानी उपन्यासों के माध्यम से समाज की स्त्रियों को संदेश दिया है कि महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति सचेत और सजग होना चाहिए तथा समाज में अपनी सुदृढ़ स्थिति कायम करनी चाहिए। ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य में स्त्री शोषण, उपेक्षित स्त्री, प्रगतिशील चेतना से युक्त स्त्री व आर्थिक रूप से दुर्बल स्त्री तथा समाज में स्त्री की भूमिका के महत्व का उल्लेख किया है।



## संदर्भ सूची

1. ब्रह्मवर्चस्व, इक्कीसवीं सदी नारी सवी मधुरा, अखण्ड ज्योति संस्थान 1998, पृ.सं.-148
2. महादेवी वर्मा, 'श्रृंखला की कड़िया', पृ.सं.-23
3. कुमुद शर्मा, आधी दुनिया का सच, लेख हिंसा की वेदी पर महिलाएँ, पृ.सं.-13
4. ज्ञानेंद्र रावत, कंस समाज में औरत, लेख छोटे परिवारों में कन्याओं की चाह नहीं, सुषमा वर्मा, पृ.सं.-46
5. किशोर राज, स्त्री के लिए जगह, पृ.सं.-59
6. उद्धृत जैन, अरविंद, न्याय क्षेत्रे अन्याय क्षेत्रे, पृ.सं.-93
7. ममता कालिया एक पत्नी के नोट्स, पृ.सं.-31
8. ममता कालिया, दुःखम-सुखम, पृ.सं.-97
9. ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड-1, पृ.सं.-120
10. ममता कालिया बेघर, पृ.सं.-84-86
11. ममता कालिया बेघर, पृ.सं.-10
12. अग्रवाल, सतीश, मन के रोग, पृ.सं.-105
13. जोशी, चण्डी, हिंदी उपन्यास समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ.सं.-333
14. नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, पृ.सं.-27
15. नैय्यर, रेणुका, नारी स्वतंत्रता के बदलते रूप, पृ.सं.-29
16. मालती, के.एम., स्त्री विमर्श भारतीय परिप्रेक्ष्य, पृ.सं.-62-63
17. राजकिशोर, स्त्रीत्व का उत्सव, 45
18. ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड-2, पृ.सं.-257
19. ममता कालिया, मेरे साक्षात्कार, पृ.सं.-35-36
20. ममता कालिया, दुःखम-सुखम, पृ.सं.-253
21. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-117

22. ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड-1, पृ.सं.-200
23. ममता कालिया, काके दी हट्टी, पृ.सं.-100
24. ममता कालिया, काके दी हट्टी, पृ.सं.-100-101
25. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-99
26. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-99
27. ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड-1, पृ.सं.-90
28. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-184
29. ममता कालिया, तील लघु उपन्यास, पृ.सं.-171
30. ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड-2, पृ.सं.-298
31. ममता कालिया, तील लघु उपन्यास, पृ.सं.-93
32. ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड-1, पृ.सं.-125
33. ममता कालिया, नरक दर नरक, पृ.सं.-7
34. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-14
35. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-78
36. ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड-1
37. प्रभा खेता, स्त्री उपेक्षिता, पृ.सं.-39
38. ममता कालिया, काके दी हट्टी, पृ.सं.-54
39. ममता कालिया, बोलने वाली औरत, पृ.सं.-54
40. ममता कालिया, बोलने वाली औरत, पृ.सं.-12
41. ममता कालिया, नरक दर नरक, पृ.सं.-79
42. ममता कालिया, रिश्तों की बुनियाद, पृ.सं.-312
43. ममता कालिया, रिश्तों की बुनियाद, पृ.सं.-313
44. बिटिया, ममता कालिया की कहानियाँ, पृ.सं.-387
45. बिटिया, ममता कालिया की कहानियाँ, पृ.सं.-387

46. ममता कालिया, नरक दर नरक, पृ.सं.-60
47. द सेकेण्ड सेक्स, सीमोन द बोउवार, पृ.सं.-09
48. लगभग प्रेमिका, ममता कालिया की कहानियाँ, पृ.सं.-132
49. अपत्नी, ममता कालिया की कहानियाँ, पृ.सं.-491
50. डॉ. मंजूलता तिवारी, मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी, पृ.सं.-91
51. कविता शर्मा, स्त्री सशक्तीकरण के आयाम, पृ.सं.-40-161
52. मनहूसाबी, ममता कालिया की कहानियाँ, पृ.सं.-342
53. कविमोहन, ममता कालिया की कहानियाँ, पृ.सं.-302
54. कविमोहन, ममता कालिया की कहानियाँ, पृ.सं.-302
55. फर्क नहीं, ममता कालिया की कहानियाँ, पृ.सं.-127
56. जगदीश्वर चतुर्वेदी, स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, पृ.सं.-296
57. वसुधा, पृ.सं.-56
58. चित्रा मुद्गल, भूमिका (समकालीन महिला लेखन), पृ.सं.-07
59. ममता कालिया, दर्पण कहानी, पृ.सं.-39

## चतुर्थ अध्याय

ममता कालिया के कथा-साहित्य में  
सामाजिक, सांस्कृतिक यथार्थ

## चतुर्थ अध्याय

### ममता कालिया के कथा-साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक यथार्थ

मनुष्य सामाजिक प्राणी होता है। सामाजिक संबंधों का ऐसा ताना-बाना जिसमें व्यक्ति अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्व का निर्वहन करता है। साधारण रूप से समाज में सामाजिक संबंधों, समाज की संस्कृति, भाषा आदि का निर्वाह होता है। मानवीय संबंधों का समूह ही समाज कहलाता है। बिना समाज के व्यक्ति अपना विकास नहीं कर सकता क्योंकि मानव और समाज एक-दूसरे का पूरक होता है जहाँ उसे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आदान-प्रदान करना होता है। हिंदी साहित्य के इतिहास में सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों, स्थिति आदि का बखूबी उल्लेख किया है। हिंदी साहित्य में भारतीय समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं को हम रचनाओं के माध्यम से जान सकते हैं। समाज विकासशील होता है। जहाँ नित नए परिवर्तन होते रहते हैं। यदि मानव भी समय अनुसार गतिशील नहीं होगा तो आधुनिक समाज में वह पिछड़ जायेगा। इस अध्याय के अंतर्गत ममता कालिया के कथा-साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक रूपों के उठाए गए पहलुओं का विस्तृत व्याख्या की गई है, जिसे विभिन्न छोटे-छोटे बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है- सामाजिक संदर्भ, लैंगिक भेदभाव तथा मानवीय मूल्यों का हनन, कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा, पारिवारिक विघटन व टूटन, पाश्चात्य संस्कृति व वर्तमान परिवेश, अस्तित्व संघर्ष व स्त्री आदि विभिन्न पहलुओं के माध्यम से ममता कालिया के कथा साहित्य को समझा जा सकता है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है जिसमें समाज में घटने वाली समस्त घटनाओं को एक साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से शब्दों का रूप देता है।

#### 4.1 सामाजिक संदर्भ

मनुष्य सामाजिक प्राणी होता है। वह सामाजिक व्यवस्था एवं तत्संबंधी मूल्यों का निर्वाह करते हुए समाज की विकासशील प्रक्रिया का हिस्सा बनता है। प्रत्येक साहित्यकार को समय की डगर पर जीवन के प्रवाह से संलग्न होना पड़ता है। कोई भी कथाकार युगीन परिवेश से कटकर अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करने में समर्थ

नहीं हो पाता। किसी भी भाषा का साहित्य उसके समाज का दर्पण होता है। समाज में रहते हुए रचनाकार को सामाजिक नियमों का पालन करना पड़ता है। समाज में रहते हुए वह अनेक सामाजिक समस्याओं का भी सामना करता है, उन्हीं सामाजिक समस्याओं को साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से अपने साहित्य में प्रस्तुत करता है। वह उन समस्याओं पर चिंतन कर, उनका हल प्रस्तुत करने का भी प्रयास करता है। सामाजिक व्यवस्था तथा मूल्य न तो निरपेक्ष होते हैं और न ही शाश्वत, समयानुसार उनमें परिवर्तन आवश्यक होता है।

बद्रीनारायण जी को दिए गए एक साक्षात्कार में ममता जी भी इस तथ्य की पक्षधर दिखाई देती हैं कि “जब समाज में यथास्थिति जड़े जमने लगती हैं तो कोई न कोई आंदोलन उस यथास्थिति को तोड़ता है। जब-जब समाज करवट लेता है, सामाजिक आंदोलन पैदा होते हैं। ये आंदोलन ही हमें जड़ता, मूढ़ता और आत्म-मुग्धता से बचा लेते हैं। एक बात और इन आंदोलनों को बुद्धिजीवी आँख मूँदकर स्वीकृति नहीं देता, इन्हें उलट-पुलट कर इतनी बार जाँचता है कि उनमें एक पारदर्शिता आ जाती है। यह पारदर्शिता परिवर्तन का कारण बनती है। ऐसा न होता तो हमारे समाज में अब तक बाल-विवाह, सती-प्रथा, विधवा उत्पीड़न, रूढ़ अर्थों में चलता रहता। मैं ऐसा सोचती हूँ कि एशियाई देशों विशेषकर भारत में, आने वाले समय में दहेज और बालिका शिशु के विषय में पूर्वाग्रह के विरुद्ध जोरदार जनआंदोलन चलने चाहिए।”<sup>1</sup> अपने मतानुसार ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य में हर वर्ग की अलग-अलग प्रकार की सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है। उनके कथा-साहित्य में चित्रित समस्याओं को हम विभिन्न बिन्दुओं में देख सकते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक नियमों तथा बंधनों का पालन करते हुए सामाजिक स्थितियों का सामना करना पड़ता है। समाज में विभिन्न वर्गों तथा धर्मों के लोग रहते हैं। उनकी पारिवारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, स्थितियाँ भिन्न होती हैं, परंतु फिर भी समाज में रहते हुए सभी को सामाजिक नियमों का पालन करना पड़ता है। इस संबंध में डॉ. सॉनप कहती हैं कि “व्यक्ति से परिवार एवं परिवार से समाज का क्रमबद्ध विकास रहा है। सामाजिक दबाव व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। व्यक्तित्व का पारिवारिक संबंधों पर प्रभाव पड़ता है। कई बार समाज और व्यक्ति में इतना वैषम्य हो जाता है कि स्थिति बहुत बिगड़ जाती है। सामाजिक मान्यताओं के दबाव में व्यक्ति भीतर ही भीतर टूटन महसूस करता है।”<sup>2</sup> किसी भी व्यक्ति को

विशेष दिशा में मोड़ देने के लिए सामाजिक स्थितियाँ उत्तरदायी होती हैं जैसे समाज द्वारा उसकी अवहेलना, प्रताड़ित करना, समाज के लोगों द्वारा उपेक्षित होना समाज में घटने वाली अमानवीय, अप्रत्याशित घटनाएँ स्थितियाँ व्यक्ति को विशेष दिशा में मोड़ देने में सहायक होती हैं।

## 4.2 लैंगिक भेदभाव तथा मानवीय मूल्यों का हनन

भारतीय समाज आज शिक्षा के मार्ग पर अग्रसर है किंतु फिर भी अपने परंपराओं रूढ़िगत विचारों में जकड़ा जा रहा है। आधुनिक समाज में पुरुष व महिलाओं को बराबर का स्थान प्राप्त है, किंतु फिर भी इस पुरुष सत्तात्मक समाज में कुछ घटनाएँ ऐसी घटती हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य शिक्षित होने के बावजूद भी अशिक्षित बना हुआ है। स्त्री की उपेक्षा के लिए काफी हद तक सामाजिक परिस्थितियाँ उत्तरदायी होती हैं। जिससे समाज में स्त्री को हमेशा से ही पुरुष से कमतर समझा जाता रहा है।

पितृसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति आज भी वही है जो सदियों पहले थी रीति-रिवाज प्रारंभ से ही उसकी सामाजिक स्वतंत्रता के विरोधी रहे हैं। घर-परिवार, रीति-रिवाज, सामाजिक नियम सभी जगह स्त्री की उपेक्षा होती हैं आज भी समाज में लड़के के जन्म पर खुशियाँ तथा लड़की के जन्म पर दुःख प्रकट किया जाता है। लड़की को जन्म से पहले ही भ्रूण हत्या का शिकार होना पड़ता है। डॉ. गनेस दास के अनुसार “पितृसत्तात्मक व्यवस्था यथावत रूप से चली आ रही है। इसलिए पुरुष की परंपरागत मनोवृत्तियों में बदलाव नहीं आया है।”<sup>3</sup> स्त्री की सामाजिक स्थिति की उपेक्षा को ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य में उकेरा है। उन्होंने सुशिक्षित-अशिक्षित विवाहित-अविवाहित, युवा-प्रौढ़, वृद्ध सभी वर्गों की स्त्रियों की समाज में स्थिति से परिचित कराया है।

‘दर्पण’ कहानी की नायिका ‘बानी’ अपने पति की उपेक्षा का शिकार होती है। वह सुंदर शिक्षित स्त्री है, लेकिन शादी के पहले परिवार के कारण अपनी इच्छाएँ पूरी नहीं कर पाती है तथा शादी के बाद पति के कारण अपनी इच्छाएँ पूर्ण नहीं कर पाती है और वह अपनी इच्छाओं को दबा देती है। शादी से पहले वह नौकरी करती थी, लेकिन उसकी सारी कमाई घर खर्च में चली जाती है, उसकी माँ हमेशा सारे नियम केवल उस पर थोपती थी। शादी के बाद जब ससुराल आती है उसके पति द्वारा उसके नौकरी करने पर एतराज जताया जाता था और वह गृहस्थी में फँसकर रह

जाती है। उसकी इच्छा होती है एक बड़े दर्पण में अपना सौंदर्य देखने की परंतु वह जब भी अपने पति से दर्पण खरीदने के लिए कहती है तो वह व्यर्थ चीज बताकर मना कर देता है। इस प्रकार वह स्वयं को उपेक्षित महसूस करती है।

‘मनहूसाबी’ कहानी की उषा बचपन से ही अपने रंग-रूप के कारण उपेक्षित जीवन जीती है। लड़की यदि असुंदर हो तो समाज में उसकी स्थिति ओर अधिक विकट हो जाती है। इसी का यथार्थ चित्रण अपनी कहानी में किया है।

‘उमस’ कहानी की नायिका ‘रानी’ स्वयं को परिवार में उपेक्षित महसूस करती है। सास उसे बात-बात पर ताने सुनाती है, डाँटती है और उसका पति भी उससे असंतुष्ट रहता है उमस कहानी में कथन है कि- “वे तब तानाशाह की तरह रानी से काम करवाती और साथ ही हर काम पर अपनी टिप्पणी लगाती जाती न करो तो काम बड़ा है, करो तो कुछ भी नहीं है, तेरी उमर पर मैं आधी-आधी रात कपड़े धोया करती थी, चक्की चलाना, भैंस की सानी-पानी करना, कढ़ी बनाना, सीना-पिरोना इस सब की तो गिनती ही नहीं थी। औरत का काम प्यारा होता है, चाम नहीं। तुझे तो हिरनी की तरह होना चाहिए, बारहसिंगे की तरह नहीं कि बस सींग अड़ाती डोले।”<sup>4</sup> इस प्रकार ‘रानी’ को अपनी सास द्वारा ताने सुनाये जाते हैं। आज समाज में नारी के शिक्षित होने पर भी यही स्थिति बनी हुई है। ‘एक पति की मौत’ कहानी की नायिका ‘सिया’ प्राध्यापिका होते हुए भी पति की उपेक्षा का शिकार होती है। पति उसे तलाक दे देता है लेकिन तलाक के बाद भी उसकी सास उसे पत्नी धर्म निभाने की बात कहती है। ‘सिया’ की बेटी भी उसका निरादर करती है। तलाक हो जाने पर ‘सिया’ का पति शादी कर लेता है किंतु ‘सिया’ को समाज में अकेलेपन का शिकार होना पड़ता है। किस प्रकार समाज में स्त्री की मानवीय भावनाओं को दबाकर उसे हर समय उसे हीन भावना का शिकार बनना पड़ता है।

इस प्रकार ममता कालिया ने समाज में नारी के संघर्ष व उसकी स्थिति का चित्रण किया है। आधुनिक नारी शिक्षित होते हुए भी समाज में पुरुष के बराबर का दर्जा प्राप्त नहीं कर पाई है। आज भी वह अपने बारे में सोचती है। समाज के निर्माण में नारी की अहम भूमिका है। स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने के बावजूद कर्तव्यों की बेड़ियों में जकड़ी हुई है। स्त्री के अस्तित्व को लेकर समाज की दोहरी मानसिकता को ममता कालिया ने अपने कथा साहित्य में चित्रित किया है।

आज वर्तमान समय में शिक्षा का विकास होने के बावजूद गुरु शिष्य के संबंधों में सम्मान का भाव समाप्त होता जा रहा है-

**गुरु गोविंद दोउ खड़े  
काके लागू पाय  
बलिहारी गुरु आपने  
जिन गोविंद दियो मिलाय।**

कबीर जी का यह दोहा आज आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर लागू नहीं होता है। प्राचीनकाल में गुरु को भगवान से भी ऊपर का दर्जा प्राप्त था। गुरु के प्रत्येक आदेश का पालन करना शिष्य अपना कर्तव्य व सौभाग्य समझता था। शिष्य के मन में गुरु के प्रति केवल आदर भावना ही नहीं बल्कि गहन आस्था व निष्ठा थी लेकिन संवाद के अभाव में मूल्य परिवर्तित हुए हैं। ज्ञान की अनन्त खिड़कियाँ खुली होने से गुरु शिष्य के सम्बन्ध भी प्रभावित हुए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं को ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य का अभिन्न अंग बनाया है क्योंकि ममता कालिया स्वयं अध्ययन कार्य से जुड़ी हुई थी। उन्होंने शिक्षकों व छात्रों का निकट से अवलोकन किया है।

शिक्षार्थी आजकल अपने शिक्षकों का सम्मान नहीं करते हैं इसका चित्रण ममता कालिया ने 'अंधेरे का ताला' उपन्यास में किया है। इस उपन्यास में एक छात्र प्राचार्य के पेपरवेट मारकर भाग जाता है और असभ्य तरीके से शिक्षक से बात करता है। अधिकतर छात्र स्वयं नोट्स न बनाकर बने-बनाये नोट्स खरीदते हैं। लड़कियाँ भी शर्म का दामन छोड़कर आधुनिक बनती जा रही हैं। वे अपने प्रेमी को भाई बताने में जरा भी नहीं झिझकती। हमारी संस्कृति तथा शिक्षा पर पाश्चात्य शैली का प्रभाव बढ़ता जा रहा है तथा नैतिक मूल्यों का पतन होता जा रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार किस प्रकार फैल गया है इस बात का पता हमें 'मुखौटा' कहानी में श्रवण के माध्यम से पता चलता है। श्रवण शहर के एम.पी. के जरिये ओबीसी का झूठा प्रमाण पत्र हासिल कर लेता है। इस कहानी के माध्यम से ममता जी ने समाज में गिरते मानवीय मूल्यों की ओर इशारा किया है। श्रवण के साथ भी ऐसा ही होता है, उससे कम अंक पाने वाले छात्र भी अच्छे कॉलेज में दाखिल हो गए इसलिए श्रवण को अनैतिक कदम उठाना पड़ा था, जिसका बाद में उसे पश्चाताप भी होता है।

‘नरक दर नरक’ उपन्यास के नायक जोगेंदर को केवल अंग्रेजी विषय के कारण अड़तालीस प्रतिशत नंबर होने के बावजूद नौकरी मिल जाती है। उषा के पिता के साथ घटित घटना के माध्यम से शिक्षा जगत में फैले भ्रष्टाचार का पता चलता है। उसके पिता विश्वकर्मा कॉलेज के प्राचार्य थे। एक छात्र के पिता अपने बेटे की योग्यता बढ़ाने के लिए उन्हें रिश्वत के रूप में घी का पीपा देने का प्रयत्न करते हैं परंतु वे इंकार कर देते हैं। परिणामस्वरूप एक दिन मैदान में कोई पीछे से उन पर लाठी से वार करता है। जब वे अस्पताल से लौटे तो उनके मैनेजर चिरंजीीलाल अपने निजी स्वार्थ के लिए तीन दिन तक कॉलेज बंद करवाने और बिल्डिंग खाली करवाने के लिए कहते हैं। उषा के पिता इंकार कर देते हैं और इस्तीफा दे देते हैं। इस प्रकार एक आदर्शवादी प्राचार्य को निकलवाने के लिए किस प्रकार के अमानवीय कृत्य किये जाते हैं इन घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट हो जाता है। आजकल विद्यार्थी ही नहीं बल्कि शिक्षक भी अपने कर्तव्य से विमुख नजर आते हैं। प्रो. शाह ऐसे ही शिक्षक हैं। दस साल से वे विद्यार्थियों को वही नोट्स लिखवा देते हैं, जो उन्होंने अपनी नियुक्ति के प्रथम वर्ष में बनाए थे। खाली समय में वे ट्यूशन के माध्यम से अपनी जेब गरम करते हैं।

‘नायक’ कहानी के अध्यापक डॉ. मोहन दीक्षित (एम.डी.) अपने विचारों से छात्रों को प्रभावित करके वरिष्ठ प्रोफेसर नित्यानंद का घेराव करवा देते हैं। वे उन्हें तेरह घंटे बंदी बनाकर रखते हैं। कहानी का ‘नायक’ उनके विचारों से प्रभावित होकर घर छोड़कर एम.डी. के साथ दक्षिण यात्रा पर निकल जाता है। यात्रा के दौरान एम.डी. का रहन-सहन तथा आचरण उसे देखकर समझ आता है कि उनकी कथनी और करनी में कितना अंतर है यह उस छात्र को अपने गुरु से घोर वितृष्णा होती है। कहानी में प्रतिभा का दुरुपयोग करने वाले तथा विद्यार्थियों को गुमराह करने वाले शिक्षक का चित्रण किया है। प्रतिस्पर्धा के कारण बच्चों की क्षमता की अवहेलना कर उनको इतना गृहकार्य दिया जाता है कि उनके पास खेलने के लिए समय नहीं होता है। इसका वर्णन ममता कालिया ने ‘शक’ कहानी में इस प्रकार किया है कि “सुबह-सुबह बच्चे यूनिफार्म, पहन, भारी-भरकम बस्तों पीठ पर लादे निकल जाते और शाम सुस्त चाल से और भी लदे-फदे लौटते। होम वर्क का बोझ पब्लिक स्कूलों का होमवर्क, जो बच्चों की शक्ति, क्षमता और धैर्य तीनों की अवहेलना कर उनका शरीर मेज पर ऐसा झुकता कि रात दस बजे तक उठ पाता।”<sup>5</sup>

‘एक रंगकर्मी की उदासी’ में भी ममता कालिया ने गिरते मानवीय मूल्यों का उल्लेख करते हुए हमारी शिक्षा व्यवस्था तथा विश्वविद्यालयों की त्रुटियों पर प्रकाश डाला है। विश्वविद्यालयों में खाली पड़े पदों के कारण बच्चों का भी भविष्य दाँव पर लग जाता है। प्रो. मिश्रा रिटायर होने के चार साल बाद भी विश्वविद्यालय जाकर क्लास लेते हैं और वाइस चांसलर को कोसते हैं। इसका वर्णन इस प्रकार है “ऐसा है मैं न जाऊँ तो बच्चों का कोर्स कैसे पूरा होगा। मुखर्जी ने मुझे रिटायर कर दिया और मेरी जगह कोई अगला रखा ही नहीं। मेरे विभाग में सात पद पहले से ही खाली पड़े हैं। यह बच्चों का कसूर नहीं है कि वे बाँटनी में एम.एस.सी कर लेते हैं पर चार पादप नहीं पहचानते। टीचर हैं बस वाइवा और एकजाम के जुगाड़ में लगे रहते हैं। फिर हम कहते हैं बच्चे कोचिंग क्लास में क्यों जाते हैं।”<sup>6</sup>

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से ममता कालिया ने हमारी शिक्षा व्यवस्था का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है। शिक्षा जगत से जुड़े रहने के कारण ही उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में गिरते मानवीय मूल्यों को बखूबी देखा परखा।

**अधिकारियों द्वारा पद का दुरुपयोग** - आधुनिक भारतीय समाज के अधिकारियों ने ‘जिसकी लाठी उसकी भैंस’ लोकोक्ति को चरितार्थ कर दिया है, प्रत्येक क्षेत्र में अधिकारी वर्ग अधिकतर भ्रष्ट, बेईमान, स्वार्थी तथा लोभी है। अधिकारी लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए अपने पद का दुरुपयोग करने में जरा भी नहीं हिचकते। उनके अधीनस्थ काम करने वाली स्त्रियों की स्थिति भी दयनीय है। ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य में अधिकारियों द्वारा शोषित नारी का चित्रण किया है ‘जाँच अभी जारी है’ कहानी की नायिका ‘अपर्णा’ बैंक में बेवजह अधिकारियों द्वारा प्रताड़ित की जाती है। अपर्णा उसके पिता जी के खराब स्वास्थ्य के कारण बैंक से ली अग्रिम राशि समय पर नहीं लौटा पाती है लेकिन अधिकारी को फोन पर यह सूचना दे देती है कि वह घूमने नहीं जा पाई और पिता जी की सेहत के कारण वह अभी आने में सक्षम नहीं है। जब दस दिन बाद उससे स्पष्टीकरण मांगा जाता है तो वह शाखा प्रबंधक को कहती है कि मैंने तो आपको पहले ही फोन पर सूचित किया था लेकिन वह घूरकर कहता कि मुझे कोई फोन नहीं मिला। किस प्रकार मानव झूठ बोलकर अपने मानवीय नैतिकता के पतन में गिरता है। ‘आपको जो भी कहना है, लिखित में कहे’। अपर्णा इस निराधार आरोप के कारण दफ्तरों तथा अधिकारियों के बेवजह चक्कर लगाती है लेकिन बैंक में फैले भ्रष्टाचार के कारण वह फँसती चली जाती है। बैंक के सभी छोटे-

बड़े अधिकारी अपर्णा के साथ घनिष्ठता बनाना चाहते थे। दफ्तर में अनुभवी महिलाएँ समय-समय पर अपर्णा को सतर्क करते हुए कहती हैं कि “संभलकर रहना अपर्णा ये शादीशुदा मर्द बड़े खतरनाक होते हैं। पहले आतुर बनेंगे, फिर कातर और फिर शातिर, एकदम पन्नालाल है सब के सब।”<sup>7</sup>

ममता जी ने अधिकारियों की स्त्री लंपटता का यथार्थ चित्रण अपनी रचनाओं में किया है कि किस प्रकार मानव समाज में स्त्री के प्रति लंपट होता जा रहा है, स्त्री को केवल अपनी हवस का शिकार बनाता हुआ अपने मानवीय मूल्यों को गिराता है, स्त्री लंपटता के संबंध में ममता कालिया ने कहानी के माध्यम से दर्शाया है कि “आज शाम आप क्या कर रही हैं? यह सवाल धीरे-धीरे बैंक का हर छोटा-बड़ा अधिकारी अपर्णा से पूछ चुका था। अपर्णा बुद्धि नहीं थी माँ की बीमारी, पिता का प्रवास उसके रक्षा कवच थे। अपनी शाम साबूत सुरक्षित बचाने का उसके पास यही उपाय था। लेकिन एक शाम वह चपेट में आ ही गयी।”<sup>8</sup> इस प्रकार हमारा समाज अपने मानवीय मूल्यों को खोता जा रहा है और अवनति के गर्त में गिरता जा रहा है।

इसी प्रकार ‘एक पत्नी के नोट्स’ उपन्यास का नायक संदीप भी अपने पद का दुरुपयोग करता है। वह अपनी पहुँच का प्रयोग कर अपनी पत्नी को नौकरी दिलवाकर अपने पद का दुरुपयोग करता है। स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है। अपने पद का प्रयोग वह स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए भी करता है।

‘बसंत-सिर्फ एक तारीख’ कहानी की नायिका अपनी पहचान की प्राचार्य से नौकरी पाने की इच्छा से मिलने जाती है। वे पहले उसकी प्राध्यापिका रह चुकी थी। उनकी चापलूसी के लिए नायिका उनके द्वारा लिखे गए गीत कंठस्थ कर उन्हें सुनाती है। चंदा अभी प्राचार्या के पास बैठी बातें कर रही थी कि तभी एक गर्भवती अध्यापिका उनसे अवकाश माँगने आती है। गर्भावस्था के अंतिम चरण में डॉक्टर ने उसे काम करने के लिए मना किया था प्राचार्या को उस पर बिल्कुल तरस नहीं आता और उसे डॉक्टर इस्तीफा देने के लिए कहती है। अध्यापिका निराश होकर वहाँ से चली जाती है तो प्राचार्या चंदा से कहती है कि “अरे चंदा, तुम्हारी नौकरी का इंतजाम तो मैंने कर ही दिया है, संपर्क बनाए रखना। ये श्रीमती जी ज्यादा से ज्यादा एक हफ्ते ही मेहमान है। भई तुम पुरानी छात्रा हो, तुम्हारी मदद हम नहीं करेंगे तो क्या गैर करेंगे।”<sup>9</sup>

ममता कालिया प्राचार्या शांता सक्सेना के माध्यम से ममता जी ने एक महिला अधिकारी द्वारा दूसरी महिला को पीड़ित दर्शाया है, आज केवल पुरुष ही महिला को नहीं सताता बल्कि महिलाएँ भी अर्थात् स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती हैं वे भी अपने पद लोलूप प्रवृत्ति से बाज नहीं आती। एक महिला को संवेदन शून्य व गिरते मानव मूल्यों का हनन करते दिखाया गया है। चंदा द्वारा अपनी प्रस्तुति से प्राचार्या शांता सक्सेना अभिभूत हो जाती है। एक गर्भवती स्त्री की पीड़ा को अनदेखा कर देती है। अपने पद का मद उस पर इस कदर छाया है कि वह असंवेदनशील हो जाती है। वह कॉलेज की लड़कियों को प्यासी रहने के लिए मजबूर करती है। चंदा को यह सब देखकर आत्मग्लानी होती है कि वह क्यों उनसे मिलने आई? उसे उस गर्भवती अध्यापिका के प्रति भी सहानुभूति होती है। प्राचार्य का व्यवहार चंदा के मन में उसके प्रति घृणा पैदा कर देता है।

इस प्रकार ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य में अपने आस-पास घटने वाली अमानवीय घटनाओं व मानवीय मूल्यों के होते हनन का यथार्थ चित्रण कालिया ने अपनी रचनाओं में किया है।

### 4.3 कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा

भारतीय समाज में विभिन्न संप्रदायों, धर्मों, भाषाओं के लोग रहते हैं। गतिशील समाज में समय-समय पर परिवर्तन आवश्यक है। कई जगह परिवारों में भारतीय भले ही आर्थिक और शैक्षणिक उन्नति कर ले पर अपनी दकियानूसी सोच को कभी त्याग नहीं सकता। समाज में अनेक सामाजिक समस्याओं का आज भी बोलबाला है जैसे दहेज की समस्या बेरोजगारी, भ्रूण हत्या, भ्रष्टाचार, यौन शोषण, महंगाई, जातिवाद आदि। दैनिक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति इनमें से किसी एक समस्या से जूझता नजर आता रहा है। ऐसे सामाजिक परिवेश में एक साहित्यकार भला इनसे कैसे अछूता रह सकता है। ममता जी ने अपने व्यक्तिगत जीवन में जिन सामाजिक समस्याओं का सामना किया उन्हीं को अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य में चित्रित करने का प्रयास किया है।

**भ्रूण हत्या** - भारतीय समाज आज उन्नति की ओर अग्रसर है किन्तु आज भी भारतीय समाज में जब बेटा होता है तो घर में थाली बजाई जाती है और आस-पड़ोस को मिठाईयाँ बाँटी जाती है घर में जैसे उत्सव छा जाता है किन्तु अगर बेटे का जन्म

होता है तो घर में स्थिति ऐसी हो जाती है जैसे कोई चला गया हो, घर में मातम की स्थिति हो जाती है इसी प्रकार का चित्रण ममता कालिया ने मनहूसाबी कहानी के माध्यम से समाज की यथार्थता को चित्रित किया है, मनहूसाबी जिसका असली नाम उषा होता है, इसकी बड़ी बहन का नाम आशा है इसलिए इसका नाम उषा रख दिया जाता है पर इसे घर में सब मनहूस मानकर इसे मनहूसाबी कहते हैं। घर में इससे पहले इसकी बड़ी बहन का जन्म हो जाता है और दूसरी भी लड़की हो जाने के कारण उषा को मनहूसाबी नाम दे दिया जाता है इस कहानी के माध्यम से ममता कालिया कहती है कि “मनहूसाबी का नाम उषा है, दरअसल नाम रखने में किसी ने भी माथा-पच्ची करने की जरूरत नहीं समझी। अपनी बहन से वह सिर्फ ग्यारह महीने छोटी है। उसने माँ से सुना है जब वह पेट में आई, माँ को बहुत गुस्सा आया था, एक बच्ची गोद में, ऊपर से फिर बच्चा। माँ ने उसे मिटाने के लिए सब कुछ किया, अपने पेट पर जोर-जोर से मुक्के मारे, मेथी उबाल कर पी, कुनैन खाई पर उसे कुछ न हुआ। आखिर हथियार डालकर दादी ने कहा चल हो जाने दे, जो बेटा हो गया तो क्या कहने। अगर बेटी हुई जो घूरे पे डाल देंगे या अस्पताल में ही छोड़ आयेंगे।”<sup>10</sup> इस प्रकार ममता जी ने अपने कहानियों के लेखन से समाज की संकीर्ण सोच का उल्लेख किया है। कई परिवारों में जहाँ घर में बेटी जन्म लेती है वे शाम को चूल्हा तक नहीं जलाते। बेटी होने से पहले ही उन्हें उसकी शादी की पढ़ाई की चिंता सताने लगती है। आज स्त्री-स्त्री की दुश्मन बनती जा रही है एक माँ भी इस समाज में संवेदनाहीन होती जा रही है वह भूल जाती है कि वह भी एक स्त्री है ऐसी ही स्थिति ममता कालिया के ‘बेघर’ उपन्यास में ममताजी ने चित्रित की है रमा, परमजीत की पत्नी है जो गर्भवती है, वह चाहती है उसे बेटी नहीं बेटा हों क्योंकि वह सोचती है अगर बेटी हुई तो वह हमारे ऊपर बोझ बन जायेगी उपन्यास में रमा कहती है कि “नहीं जी मेरी नाक कट जायेगी और फिर खर्च कितना बढ़ जायेगा।”<sup>11</sup> इस प्रकार समाज में बेटी को अभिशाप की तरह माना जाता है।

ममता कालिया ने इसी तरह ‘फर्क नहीं’ कहानी में भी लड़की के जन्म की समस्या का चित्रण किया है। यह संकीर्ण सोच रखने वाले लोग सोचते हैं कि बेटी घर पर बोझ होती है और बेटा घर का बोझ कम करता है। ‘फर्क नहीं’ कहानी की नायिका तेजिंदर और उसकी माँ के मध्य संवाद कम ही होते हैं जब कभी वह अपनी माँ का

रसोई में हाथ बटाने की कोशिश करती है तो उसकी माँ बुदबुदाती हुई कहती है कि “जन्मी थी औलाद! लड़का होता तो बुढ़ापे में काम आता।”<sup>12</sup> इस प्रकार समाज आज चाहे कितना ही आगे बढ़ जाये पर एक लड़की के प्रति संकीर्ण सोच को कभी मिटाया नहीं जा सकता।

ममता कालिया ने अपनी प्रखर लेखनी के माध्यम से अपने साहित्य में अनेक कुप्रथाओं का विरोध किया है, समाज में बेटी के जन्म को कलंक अभिशाप, दुर्भाग्य मानते हुए लोग पेट में ही भ्रूण की जांच करवाकर बेटी होने पर उसे संसार में आने से पहले ही मार दिया जाता है इस प्रकार की मानसिकता ममता जी के ‘बेघर’ उपन्यास में दिखाई पड़ती है जिसमें रमा बेटी के जन्म लेने पर स्वयं को अपमानित महसूस करती है। ममता कालिया ने अपने जीवन में आस-पास के वातावरण को आधार बनाकर, समाज की रूढ़ियों को देखकर उनके प्रति घृणा व्यक्त की है। जहाँ नारी की पूजा होती है व जिस देश में देवी के नौ अवतारों की पूजा की जाती है, उसी देश में एक भ्रूण जांच के द्वारा बेटी के जन्म से पूर्व ही मार दिया जाता है। इस प्रकार समाज उन्नति की अग्रसर होते हुए भी स्वयं अपनी अवनति करता नजर आता है। स्वयं ममता कालिया भी इस समस्या से गुजर चुकी है इसी कारण उन्होंने अपनी ‘जन्म’ कहानी में इस प्रकार का यथार्थ अंकन किया है। ममता जी के स्वयं बड़ी बहन थी प्रतिभा घरवाले लड़का चाहते थे परंतु उनके घर लड़की (ममता) का जन्म हो जाता है। ‘बेघर’ उपन्यास में परमजीत कहता है मुझे तो लड़की चाहिए किंतु रमा हमेशा चिंतित रहती है, सुस्त रहती है और कहती है- “नहीं जी मेरी नाक कट जाएगी और फिर खर्च भी कितना बढ़ जाएगा।” इस प्रकार का एक स्त्री ही स्त्री के प्रति दुश्मन बनती जा रही है।

भारतीय समाज में फैली कुरीतियों के कारण कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा मिल रहा है। लड़की का जन्म होगा तो उसकी शादी में दहेज वर्तमान समाज की एक ज्वलंत समस्या बन रही है इसी यथार्थ को ममता कालिया ने पाठक वर्ग के समक्ष रखा है। इस प्रकार की समस्या का समाधान अत्यंत आवश्यक हो गया है ‘नरक-दर-नरक’ उपन्यास में दहेज की प्रथा का यथार्थ चित्रण हुआ है। बेजनाथ की छोटी बहन जो कुरूप थी, उसके चेहरे पर अतिरिक्त चेचक के निशान होने की वजह से अतिरिक्त दहेज देना पड़ेगा। दहेज की अतिरिक्त राशि जमा करनी पड़ेगी। “दहेज में अतिरिक्त दस हजार का धक्का”।

इस प्रकार दहेज प्रथा के कारण पूरा परिवार मानसिक रूप से पीड़ित रहता है। ममता कालिया ने अपनी लेखनी से अनेक कुप्रथाओं का यथार्थ चित्रण करने का सफल प्रयास किया है।

**भ्रष्टाचार** - आधुनिक भारतीय समाज में प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार बढ़ा है। कई जगह आम आदमी को अपना काम करवाने के लिए नीचे से ऊपर तक सभी अधिकारियों की मुट्ठी गरम करनी पड़ती है। अगर वह ऐसा नहीं करता है तो उसे दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती है। चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी से लेकर प्रथम श्रेणी के कर्मचारी सबको रिश्वत देकर काम निकलवाना पड़ता है। शैक्षणिक संस्थान, अस्पताल, बैंक, सरकारी दफ्तर, निजी संस्थान, पुलिस आदि सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार ने अपनी जड़े जमा ली हैं। ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य में इसके जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किये हैं।

‘प्रेम कहानी’ पहला ऐसा उपन्यास है, जिसमें अस्पताल में फैले भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया गया है। ममता जी की माँ अधिकतर बीमार रहती थी इसलिए उन्हें भी उनके साथ अस्पताल में रहना पड़ता था। अस्पताल की दुनिया को इतना करीब से देखने के कारण ही वे उनमें फैले भ्रष्टाचार को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर करने में सफल रही हैं। मरीज डॉक्टरों पर भगवान की तरह आँख, मूंदकर विश्वास करते हैं लेकिन आधुनिक काल के डॉक्टर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए मरीज की जिंदगी से खिलवाड़ करने से नहीं चूकते। इसका चित्रण डॉ. गुप्ता के माध्यम से किया गया है। डॉ. गुप्ता को बच्चों का जादूगर कहा जाता है और उसी का फायदा उठाकर वे मरीज से मनचाही फीस लेते हैं। सरकार उन्हें अस्पताल में काम करने के लिए वेतन देती है परंतु वे मरीजों को शाम को अपने बंगले पर बुलाते हैं और मोटी फीस लेते हैं। उनकी इसी बात से चिढ़कर डॉ. गिनेस कहते हैं कि “न जाने किस-किसकी मजबूरी से मुड़े-तुड़े नोटों से ऐश करते हैं ये लोग? यह क्या कि जो फीस दे सकता है, वह छींक का इलाज भी वी.आई.पी. ढंग से करा ले और जो नहीं दे सकता, वह दमा, लकवा तपेदिक को भी किस्मत का हिस्सा मानकर सब्र कर ले।”<sup>13</sup> इसी प्रकार जब डॉ. गुप्ता महंगी दवाई प्रिस्क्रीब करता है तो डॉ. गिनेस को गुस्सा आता है। डॉ. गुप्ता जान बूझकर अपने फायदे के लिए वह दवाई मरीज को देता है। उसे पता है कि मरीज के स्वास्थ्य पर उसका कितना बुरा असर पड़ेगा लेकिन वो अपने फायदे के लिए मरीज के जीने मरने की नहीं सोचता।

डॉ. गिनेस के माध्यम से लेखिका ने उनके स्वार्थ का चित्रण करते हुए लिखा है कि “उस दवा कंपनी का प्रतिनिधि इनके पास न जाने क्या-क्या भेंट छोड़ जाता है। तभी इन्हें वह दवा कंपनी इतनी प्यारी है।”<sup>14</sup> पैसों के लिए डॉक्टर कितना नीचा गिर सकते हैं, इसका यथार्थ चित्रण ये पंक्तियाँ हमारे सामने डॉक्टर का एक विकृत रूप प्रस्तुत करती हैं।

बैंक क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार अछूता नहीं है। ममता कालिया की कहानी ‘जाँच अभी जारी है’ में फैले भ्रष्टाचार का चित्रण किया गया है कहानी की नायिका अपर्णा को बैंक अधिकारी सिर्फ इसलिए एक केस में उलझा देता है, क्योंकि उसने उनका कहना नहीं माना था। अपर्णा पर्स में अग्रिम राशि लिए एक ऑफिस से दूसरे ऑफिस के चक्कर काटती रहती है परंतु यह केस और अधिक उलझता ही चला जाता है। कहानी के अंत तक कोई परिणाम नहीं निकलता और जाँच चलती रहती है।

‘इक्कीसवीं सदी’ कहानी पुलिस के भ्रष्टाचार को उजागर करती है। कहानी का नायक विनोद और उसकी पत्नी रेखा एक होटल में चाय पीने जाते हैं। वहाँ के बाथरूम से रेखा गायब हो जाती है। विनोद होटल में खूब शोर मचाता है परंतु कोई उसकी बात नहीं सुनता। वह रिपोर्ट दर्ज कराने थाने पहुँचता है, तो वहाँ का थानेदार उसकी रिपोर्ट लिखने से मना कर देता है। वह कहता है कि रिपोर्ट लिखने वाला मुंशी नहीं है, बाद में आना। रेखा के पिता के आने के बाद वह रिपोर्ट लिखता है और रेखा को ढूँढने होटल जाते हैं। होटल का मैनेजर दरोगा को अपने कमरे में बुलाकर रिश्वत देता है और रेखा के घरवालों को थाने बुलाता है। इस प्रकार पुलिस की लापरवाही से रेखा की जान चली जाती है।

इसी तरह पुलिस का भ्रष्टाचार दर्शाती एक और कहानी है ‘वर्दी’। जिसमें ममता जी ने पुलिस की सोच का खुलासा किया है कैसे पुलिस वाला अपनी वर्दी का दुरुपयोग करता है और घर में रोब जमाता है। ‘वर्दी’ का रोब दिखाकर मुफ्त की चीजें खरीदता है। हालांकि आशा को कभी-कभी उसकी वर्दी का प्रभाव अच्छा भी लगता था। इस कहानी में द्रष्टव्य है कि “आशा पर वर्दी का रौब गालिब हो गया। वर्दी की ताकत जानने के बाद तो उसे लगने लगा कि रमाशंकर आटा भी पिसवाने जाए तो वर्दी पहनकर जाए। आशा को रमाशंकर की वर्दी जादू की पोशाक जान पड़ती जिसे पहनकर वह मुश्किल से मुश्किल काम निपटा डालता। जिन औरतों के पति वर्दी नहीं पहनते थे, उन्हें आशा अभागा मानती। वर्दी के बूते पर उसके पति को हर चीज मुफ्त

में हासिल हो जाती।”<sup>15</sup> वर्दी पहनकर रमाशंकर कभी-कभी हैवान बन जाता था। वह घर पर भी वर्दी का रोब दिखाता था और अपने बेटे को भी अपराधियों की तरह पीटता था। राजू को लगने लगा कि उस वर्दी में कुछ ना कुछ जादू है जिसके कारण उसके पापा जालिम सिपाही बन जाते हैं। राजू सोचने लगा कि “छिः कितनी चिढ़ हो गयी है राजू को खाकी रंग से। उसके सभी दोस्तों के पापा इंसानों वाला रंग पहनते हैं। सिर्फ उसके पापा यह हैवानों वाला रंग पहनते हैं, इसे पहनकर खुद हैवान बन जाते हैं।”<sup>16</sup> रमाशंकर के माध्यम से ममता जी ने एक पुलिस वाले की गुंडागर्दी तथा भ्रष्टाचार को चित्रित किया है, उसके दुर्व्यवहार से उसका बेटा तथा पत्नी अत्यधिक परेशान हैं। उसके बेटे को वर्दी से नफरत होती है तो वह उसे जला देता है।

इस प्रकार ममता कालिया ने समाज व्याप्त भीषण समस्याओं को अपने लेखन का आधार बनाया है।

**दहेज प्रथा** - दहेज प्रथा भारतीय समाज के लिए अभिशाप बनकर उभर रही है और आज शिक्षित समाज में ज्यादा बलवती होती जा रही है। प्राचीनकाल से चली आ रही यह समस्या आधुनिक काल में और अधिक विकट हो गई है। दहेज के लिए समाज में होने वाली अमानवीय घटनाएँ दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही हैं जैसे दहेज के लिए जिंदा जला देना आदि घटनाएँ आम हो गयी हैं। अनपढ़ ही नहीं शिक्षित समाज भी इस समस्या से जूझ रहा है। दहेज हत्या एक दण्डनीय अपराध है इसके बावजूद यह रूकने का नाम नहीं ले रही है। उच्च शिक्षित स्त्री भी घरेलू हिंसा का शिकार हो रही है। बेटी के पैदा होते ही माता-पिता को उसके दहेज की चिंता सताने लगती है। ममता जी ने अपने कथा-साहित्य में दहेज प्रथा का बखूबी चित्रण किया है।

‘बिटिया’ कहानी में ममता जी ने दहेज की प्रथा को उजागर किया है। मधुरिमा के पिता बिश्वेश्वर बाबू लड़के वालों को दहेज देने के लिए लिस्ट बनाते हैं। लड़के वाले उसमें दो-तीन चीजें और संलग्न करके जवाब भेजते हैं। ममता कालिया ‘बिटिया’ कहानी में कहती है कि “हफ्ते भर में वरपक्ष के यहाँ से जवाब आ गया। जवाब के साथ उनकी भेजी सूची संलग्न थी। वर के पिता ने बड़े स्नेह से लिखा था और तो सब ठीक है सक्सेना साहब, बस लड़के ने अपने हाथ से आपकी लिस्ट में तीन छिटपुट चीजें लिख दी हैं। उन्हें भी शामिल कर सके तो लड़के का मन रह जाएगा। ये सब तो आजकल आम चीजे हैं, स्कूल मास्टर तक दिया करते हैं, फिर आप तो बाकायदा सरकारी अफसर हैं। बिश्वेश्वर बाबू ने कागज पर नजर डाली ये छिटपुट

चीजें थी, स्कूटर, फ्रिज और टेलीविजन।”<sup>17</sup> वर पक्ष की मांग घर वालों पर वज्र की तरह गिरी बिश्वेश्वर बाबू अत्यन्त दुःखी और उदास हो गए। अपनी बेटी की खुशी के लिए वे माँग पूरी करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। बिश्वेश्वर बाबू के मनोभावों के माध्यम से चिंतित पिता का चित्रण अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से ममता कालिया ने किया है कि “उन्हें लगा अगले महीने की बीस तारीख को कोई लूटेरा बँड बजाता, पटाखे छोड़ता, मशालें थाम, अपने दल-बल समेत उन्हें लूटने आएगा। एफ.आई.आर. लिखानी तो दूर, वे उसकी खूब खातिरदारी करेंगे उस लुटेरे के लिए शामियाना गड़वाएंगे, कनात लगवाएंगे, हलवाई बुलवाएंगे शहनाई बजवाएंगे, फिर अपने हाथ-पैर जोड़कर उससे कहेंगे तुम मेरी बीवी के गहने ले लो, मेरा इंश्योरेंस ले लो। मेरे बैंक की पासबुक ले लो, मेरा प्रोविडेंट फंड ले लो, मेरी हँसी ले लो, मेरी खुशी ले लो। बस तुम प्रसन्न होकर आओ मेरी इज्जत का झुनझुना न बजवाओ।”<sup>18</sup> ममता जी ने अपने इस कहानी से ही इस सामाजिक समस्या का विकृत रूप प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने प्रथम उपन्यास ‘बेघर’ में भी दहेज प्रथा की समस्या का यथार्थ चित्रण किया है। उपन्यास में नायक परमजीत की माँ लड़की वालों से चार हजार नकद, पंद्रह तौला सोना तथा अन्य समान की मांग करती है, बाद में दहेज में मिलने वाले समान से अपनी बेटी विम्मों का दहेज तैयार करती है और विम्मों की शादी करती है।

‘लड़कियाँ’ कहानी के माध्यम से भी इस समस्या का चित्रण किया गया है। आशा और सुधा की बातचीत के माध्यम से इसका वर्णन कहानी में द्रष्टव्य है कि “सुधा हँस पड़ी अब से शादी में लड़के वाले न सिर्फ फ्रिज, स्कूटर और टी.वी. वरन् बंदूक और दरबान भी मांगा करेंगे, ‘और मिट्टी का तेल?’ वह क्यों? ‘बहू को जलाने के लिए’ तुम्हारे पंजाब में तो बहुओं को एक ही बार जलाकर खाक कर डालते हैं। हमारे उत्तर प्रदेश की बनिया बिरादरी में तो बहुओं को बाकायदा धीरे-धीरे तिल-तिल कर जलाया जाता है। सारी उक्त सुलगो, न बुझने, न भभको।”<sup>19</sup> इस प्रकार समाज में दहेज प्रथा के गंभीर रूप का चित्रण किया गया है।

**यौन शोषण** - प्रगतिशील समाज में नारी की प्रगति के द्वार खुले हैं लेकिन पुरुष प्रधान समाज में नारी आज भी असुरक्षित है। सदियों पहले भरी सभा में द्रोपदी का जैसे चीरहरण हुआ था, ऐसे ही आज स्त्री के साथ बलात्कार, यौन शोषण, सामूहिक दुष्कर्म होता है।

आज पुरुष की पशु प्रवृत्ति का शिकार केवल महिलाएँ ही नहीं नाजुक छोटी-छोटी बच्चियाँ भी होती हैं आये दिन ये खबरें विभिन्न अखबारों की सुर्खियों में रहती हैं। संवेदनशील सामाजिक समस्या को ममता जी ने अपनी रचनाओं में बखूबी उठाया है। 'इक्कीसवीं सदी' कहानी में रेखा अपने पति के साथ एक होटल में बारिश से बचने के लिए जाती है। जब वह टॉयलेट में जाती है, तो वहाँ से वापस ही नहीं आती। उसके पति द्वारा मैनेजर को शिकायत करने, पुलिस को खबर करने पर कुछ भी प्रतिक्रिया नहीं होती और अंत में रेखा का क्षत-विक्षत शव बोरे में बंद रेल की पटरियों पर मिलता है।

'चिर कुमारी' कहानी में भी इसका उल्लेख किया गया है। कहानी की नायिका दिशा विश्वविद्यालय में जंतुविज्ञान की प्राध्यापक थी। जब लड़कियाँ उसके पास शिकायत लेकर आती हैं तो उसकी सहकर्मी दिशा को समझाते हुए कहती हैं कि "इन लड़कियों की हालत कभी नहीं सुधारेगी। आज उन्हें विश्वविद्यालय के परिसर की छेड़छाड़ से बचाओगी, कल ये किसी रिश्तेदार की छेड़छाड़ का शिकार बन जाएगी, परसों नौकरी में इनका बॉस इन पर हाथ मरेगा। तुम क्या एक्टिविस्ट हो जो जुटी रहती हो।"<sup>20</sup> इस प्रकार यौन शोषण भी समाज में एक गंभीर समस्या बना हुआ है।

'आपकी छोटी लड़की' कहानी में भी ममता कालिया ने इस प्रकार के शोषण का उल्लेख किया है। तेरह वर्ष की दुनिया जब अपने पड़ोसी के यहाँ पानी भरने जाती है तो उनका नौकर रामजी अकेला घर में था इसी का फायदा उठाकर रामजी दुनिया के साथ अश्लील हरकत करता है इसके उल्लेख ममता कालिया किया है कि "दुनिया ने एक बार और नल खोलने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि रामजी ने अपने पजामे की ओर इशारा किया और अश्लील ढंग से मुस्कराकर कहा, लो इससे भर लो। दुनिया कुछ समझ नहीं पायी, पर जो कुछ उसने देखा उससे घबराकर वह दहशत से चीखती भाग खड़ी हुई।"<sup>21</sup>

इस प्रकार ममताजी ने समाज में व्याप्त अश्लील स्थिति का तथा पुरुष की कुत्सित मनोवृत्ति का उल्लेख अपनी रचनाओं में किया है।

**लिंग भेद** - पितृसत्तात्मक समाज में लिंग भेद एक भयानक समस्या है। स्त्रियों के रूप में पुत्ररत्न की कामना लिंग भेद का ही परिणाम है। अशिक्षित समाज की नहीं बल्कि शिक्षित सभ्य समाज भी इस मानसिकता का शिकार है। भारतीय समाज में हमेशा पुरुष को ही महत्त्व दिया जाता रहा है। नारी को पुरुष की छाया बनकर ही जीना पड़ता है।

ममताजी स्वयं एक स्त्री है, इसलिए इस सामाजिक समस्या को उन्होंने स्वयं महसूस किया है। उन्होंने अत्यंत गंभीरता से इस समस्या का वास्तविक चित्रण किया है। 'दुःखम-सुखम' उपन्यास में इन्द्र जब दूसरी बेटी को जन्म देती है तो उसकी सास कहती है कि देखो "दादी का चेहरा पीला पड़ गया। अब तक ऑपरेशन थिएटर के दरवाजे से सटी खड़ी थी, अब धम्म से बेंच पर बैठ गयी। उनकी आँखों में अँधेरा छा गया, हलक में आँसूओं का नमक महसूस हुआ।"<sup>22</sup> इस प्रकार लड़की के जन्म पर घर परिवार में दुःख उत्पन्न हो जाता है और एक प्रकार से घर में शोक की स्थिति उत्पन्न हो जाती है इसका चित्रण ममता कालिया ने इस प्रकार किया है। "जिस दिन वह पैदा हुई घर में कोई उत्सव नहीं मना, लड्डू नहीं बंटे, बंधावा नहीं बंधा, उलटे घर की मनहूसियत ही बढ़ी। दादी ने चूल्हा तक नहीं जलाया।"<sup>23</sup> इस प्रकार ममता जी ने लड़की की समाज में आज भी वही स्थिति बनी हुई इन समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

इस प्रकार की समस्या 'प्रेम कहानी' उपन्यास में भी दिखाई पड़ती है। डॉ. गिनेस शहर की गृहणियों तथा कामकाजी स्त्रियों से साक्षात्कार करता है, तो हतप्रभ रह जाता है। डॉ. गिनेस ने पाया कि "ये स्त्रियाँ अपनी गर्भावस्था का समय एक विशेष तनाव में बिताती हैं। तनाव का सर्वप्रथम कारण होता है कि कहीं लड़की ना हो जाए। यहाँ तक कि जिस औरत के तीन बेटे थे, वह भी चौथा बेटा ही चाहती थी, बेटी नहीं। जिसके पहला शिशु होना था, उसकी चाह भी बेटे की थी। झुगगी-झोपड़ी से लेकर कोठी-बँगले तक गिनेस को पुत्र के प्रति यह आग्रह देखने को मिला।"<sup>24</sup> इस प्रकार लिंग भेद की समस्या भी गंभीर बनी हुई है।

ममता जी ने जितनी सामाजिक समस्याओं का चित्रण अपने कथा-साहित्य में किया है। ममता कालिया पारिवारिक परिधि से निकलकर व्यापक सामाजिक समस्याओं की ओर अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने गंभीर तथा संवेदनशील सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण बखूबी किया है।

#### 4.4 पारिवारिक विघटन व टूटन

विभिन्न परिवार मिलकर समाज का निर्माण करते हैं। समाज में रहते हुए पारिवारिक सदस्यों को सामाजिक नियमों का पालन पड़ता है। प्रत्येक परिवार की आर्थिक स्थिति, नियम संस्कार भिन्न होते हैं। इसलिए उनकी पारिवारिक समस्याएँ

भी भिन्न होती है। डॉ. सानप कहती है कि “परिवार विधि-विधान सम्मत स्वरूप या सामाजिक संस्था मात्र नहीं है, इससे कहीं अधिक वह ऐसी भावात्मक इकाई है जिसमें भविष्य का स्वरूप निर्धारित होता है, एक ओर परिवार परंपरा के माध्यम से अतीत से जुड़ा होता है तो दूसरी ओर वह सामाजिक दायित्व से बंधा है।”<sup>25</sup> प्राचीन समय में संयुक्त परिवारों का वर्चस्व था। जिसमें एक मुखिया होता था, सभी उसका आदर सम्मान करते थे, उसके आदेशों की पालना, करते थे किंतु वर्तमान में संयुक्त परिवारों का विघटन होता जा रहा है आज समाज में हर शिक्षित स्त्री-पुरुष एकल परिवार चाहते हैं वे परिवार की जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहते हैं जिससे समाज में तलाक, पारिवारिक विघटन, कुंठा, तनाव आदि समस्याओं ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है।

आज समाज में वर्तमान व्यवस्था इतनी विकृत हो रही है, जिससे पारिवारिक विघटन व परिवार टूटने की नौबत आ गयी है। स्त्री-पुरुष में आपस में अहम् भावना ने घर कर लिया है जिससे दोनों के अहम् भाव आपस में टकराते हैं और परिवार विघटन में क्षण भर का समय भी नहीं लगता। आधुनिक समय में समाज तो उन्नति कर रहा है परंतु समाज में पारिवारिक स्थिति बिगड़ती जा रही है। रिश्तों की बुनियाद कहानी के अंतर्गत भाई-बहन के मध्य की स्थिति का यथार्थ अंकन किया है। पति-पत्नी के मध्य अविश्वास की कमी भी पारिवारिक विघटन का प्रमुख कारण बनती जा रही है। एक पत्नी के नोट्स उपन्यास में ‘कविता’ अपने पति के अविश्वास के कारण अवसाद ग्रस्त रहती है और स्थिति परिवार टूटने तक आ जाती है। कविता कॉलेज में देर से आती है संदीप और कविता में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। शादी से पूर्व संदीप जैसा था शादी के बाद वह विपरीत व्यवहार करता है। इस प्रकार पारिवारिक विघटन का यथार्थ चित्रण ममता कालिया ने अपने साहित्य में किया है।

**तलाक** - तलाक आज प्रत्येक परिवार की गंभीर समस्या बना हुआ है। ममता कालिया ने जब अपना प्रेम विवाह किया तब समाज इस तलाक के दौर से गुजर रहा था तब उनके घर वालों ने भी उनसे यही कहा कि तुम्हारी शादी ज्यादा नहीं चल पायेगी किंतु ममताजी ने सभी चुनौतियों को पछाड़ कर अपने दाम्पत्य जीवन को हमेशा संजोये रखा। ममता जी ने तो अपना घर बचा लिया किंतु आज यह समस्या आपसी समझ के अभाव में गंभीर समस्या बनती जा रही है।

‘एक पति की मौत’ कहानी में ममता कालिया ने एक परित्यक्ता शिक्षित स्त्री ‘सिया’ के माध्यम से तलाक के बाद स्त्री की मानसिक स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है, इसमें उन्होंने तलाक के कारण उत्पन्न हुई कुण्ठा, तनाव, वेदना आदि का यथार्थ चित्रण किया है। ‘सिया’ का पति उसे जब छोड़कर विदेश में जुड़िथ से शादी कर लेता है। उसकी बेटी का ख्याल भी उसे नहीं आता। बेटी का पालन-पोषण उसने कैसे किया। ‘सिया’ जब ‘नमन’ की मौत की खबर सुनती है उसे पिछली स्मृतियाँ याद आती हैं तब वह सोचती है कि तलाक नमन ने लिया इसका वर्णन ममताजी इस प्रकार करती है कि “संबंध तो नमन ने तोड़ दिया था, माचिस की तीली की तरह दो टूक पर उस पर अपना कब्जा कहाँ छोड़ा था वह बार-बार उस कीमत की याद दिलाता जो उसने तलाक की खातिर अदा की थी।”<sup>26</sup> उसके रहते सिया ना सधवा थी न विधवा। वह दिन-रात मानसिक प्रताड़ना झेलती थी। उसकी सास उसे तलाक देने के बाद भी पत्नी धर्म निभाने को कहती है। उसकी बेटी भी उसका सम्मान नहीं करती है। उसे याद आता है कि पारिवारिक परिस्थितियों के कारण ही नमन उसे दूर हुआ था वह उस दिन को सोचती है कि “उसे उन दिनों अपनी अनिच्छा भी याद आई। परिवार की दिनचर्या ने उसके जिस्म के कई हिस्से बर्फ बना दिये थे। जिन क्षणों में नमन को एक उत्कट प्रिया की सख्त जरूरत थी। उसे मिली एक थकी, पिसी झुंझलाई औरत, इन्हीं क्षणों में नमन ने उसे पाया और उसने नमन को खोया था।”<sup>27</sup> इसमें ममता कालिया ने यह दर्शाने की कोशिश की है कि यदि स्त्री पति को समय नहीं दे पाती है तब भी तलाक की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

‘सपनों की होम डिलिवरी’ उपन्यास में ममता कालिया ने तलाक की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है, नायिका ‘रुचि’ अपने पति की गलत आदतों से परेशान होती है उसका पति लंपट प्रवृत्ति का है जो दूसरी औरतों को भी अपनी वहशी आदतों का शिकार बना लेता है। वह स्वयं ‘रुचि’ के साथ मारपीट करता है साथ ही जब वह अपने बच्चे गगन को गलत आदतों के लिए रोकती है तो वह उसमें अपने बच्चे का साथ देता है। एक बार तो रुचि अपने बच्चे को स्कूल छोड़ने जाती है और उसका पति काम करने वाली बाई को भी शिकार बनाना चाहता है इस कारण रुचि अपना घर छोड़कर चली जाती है और उसके पति के साथ तलाक हो जाता है।

‘अपत्नी’ कहानी में भी प्रबोध बिना तलाक लिए दूसरी औरत के साथ रहता है। ‘एक पत्नी के नोट्स’ उपन्यास में संदीप अपनी पत्नी कविता को इतना परेशान करता है, उस पर शक करता है, उसकी तरक्की से उसे जलन होती है जिससे परेशान होकर कविता घर छोड़कर चली जाती है।

**पारिवारिक संबंधों में कटुता** - आधुनिक भारतीय परिवारों के विघटन का प्रमुख कारण पैसा, तनाव, काम की व्यस्तता तथा आपसी अहं का टकराव है। आजकल पैसे का महत्व इतना बढ़ गया है कि परिवार में आपसी संबंधों में कटुता आ गई है। रिश्तों में सहनशीलता का स्थान क्रोध ने ले लिया है। काम के बोझ के कारण मानसिक तनाव बढ़ गया है। पारिवारिक विघटन मानसिक तनाव आदि का वर्णन ममता कालिया ने अपनी ‘गुस्सा’ कहानी में गुस्से के दुष्परिणाम उजागर किए हैं। कहानी की नायिका ‘माया’ अपने गुस्से, झुंझलाहट के कारण अपने सभी करीबी रिश्ते खो देती है। उसके लड़के तो पहले ही नौकरियों के कारण अलग रहते हैं। माँ-बाप के प्रति उनकी संवेदनशीलता समाप्त हो गई है। इसका वर्णन ममता कालिया ने इस प्रकार किया है कि “उसके दोनों लड़के अपने बीवियों और नौकरियों में मशगूल थे, उन्हें कभी ख्याल ही नहीं आया कि उनके माँ-बाप अपना वक्त कैसे काटते होंगे। कभी उन्हें ज्यादा लिखते कि उनकी याद आ रही है, तो वे एक मनीऑर्डर भेज देते हैं।”<sup>28</sup>

इन पंक्तियों से हमें सम्बन्धों की गर्माहट का अभाव दिखाई देता है। बच्चे माँ-बाप की बुढ़ापे की जरूरत होते हैं जबकि बच्चे इसे पैसे से पूर्ण करना चाहते हैं। जो उचित नहीं है। आधुनिक समय में बच्चे माँ-बाप के प्यार को पैसे से तोलने लगे हैं। उनके मन प्रेम व संवेदना मरती जा रही है। अहं के टकराव तथा गुस्से के कारण पति-पत्नी के संबंधों में भी कटुता आ जाती है। इसका चित्रण ममता कालिया करती है कि “देख लेना, जिस दिन मैं तुम्हारी इस किच-किच से तंग आ गया तो बस, उठा अपनी रामायण लेकर चला जाऊंगा पीछे मुड़कर भी नहीं देखूंगा एक बार।”<sup>29</sup> ‘माया’ की इस प्रकार की हरकतों से उसका पति भी उसे छोड़कर चला जाता है।

‘बीमारी’ कहानी में ममता कालिया ने पैसों का महत्व बताते हुए पारिवारिक टूटन के कारणों का उल्लेख किया है। एक भाई अपनी बहन के बीमार होने पर भी उससे अजनबियों की तरह मिलता है। वह उसके लिये लाए गए फलों के भी पैसे बहन से मांग लेता है। उसकी भाभी उसके चरित्र पर संदेह करती है।

‘प्रेम कहानी’ उपन्यास में गिनेस अपनी काम की समस्या के कारण जया को समय नहीं दे पाता जिसके कारण ‘जया’ दुःखी रहने लगती है। इसमें गिनेस की व्यस्तता के कारण ‘जया’ और गिनेस के संबंधों में कटुता आ जाती है। ‘नरक दर नरक’ उपन्यास में भी काम की व्यस्तता के कारण परिवार में, पारिवारिक झगड़ों की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

‘बातचीत बेकार है’ कहानी में भी पति-पत्नी, अपने-अपने काम में इतने व्यस्त हैं कि उन्हें आपस में बात करने का समय भी नहीं मिलता है। बाद में उन्हें बात करना भी अच्छा नहीं लगता और उनके संबंधों में कटुता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

‘काके दी हट्टी’ में भी पति-पत्नी को काम के कारण एक-दूसरे के लिए समय ही नहीं मिलता। कहानी की नायिका ‘पिंकी’ कॉल सेंटर में काम करती है। वह शाम चार बजे से सुबह चार बजे तक नौकरी करती है दिनभर वह सोती है जिसके कारण उसकी सास को गुस्सा आता है। उसकी शिकायत वह अपने बेटे से करती है। झगड़ों से तंग आकर पिंकी अपने मायके चली जाती है इस कहानी में कथन द्रष्टव्य है कि “एक दिन अपने सारे कपड़े सैंडीले और पर्स संभालकर पिंकी जी ब्लाक चली गयी, जाते-जाते चंदर की बाहं दबाकर कह गयी कि मिलने की तड़प् उठे तो आ जाना जी बी-ब्लॉक।’ रात दस बजे काके की हट्टी बढ़ाते वक्त काके को कभी-कभी अपनी बाहं पर दबाव महसूस हो जाता पर वह मन मसोस कर बी-ब्लॉक, अपने घर पहुँच जाता। उसे पता था पिंकी कॉल सेंटर गयी हुई होगी। ऐसे में सिर्फ शनि, इतवार की तड़प ही चैन पा सकती थी।”<sup>30</sup> इस प्रकार पारिवारिक विघटन काम की व्यस्तता आदि का ममता कालिया ने यथार्थ चित्रण किया है।

**बच्चों का एकाकीपन** - पारिवारिक विघटन के कारण बच्चों को इन समस्याओं का शिकार होना पड़ता है। आज के समाज में संयुक्त परिवार विघटित होकर एकल परिवार में बदलते जा रहे हैं। संबंधों के सिकुड़ते दायरों ने इस नवीन पारिवारिक समस्या को जन्म दिया है। नौकरियों के कारण पारिवारिक विघटन से सबसे ज्यादा बच्चे प्रभावित होते हैं। संयुक्त परिवार में बच्चों के पालन-पोषण अच्छी तरह से होते थे परंतु आजकल जीवन की भागदौड़ तथा पैसों के महत्व के कारण बच्चों की उपेक्षा की जाने लगी है। कामकाजी महिला अपने बच्चे को उतना समय नहीं दे पाती,

जितना कि बच्चे के बेहतर विकास के लिए आवश्यक है। नौकरी से थक हारकर माँ-बाप के पास इतना समय नहीं है कि वे बच्चों की बातें सुने, उनके साथ खेले या उनकी समस्याओं का निवारण करें। इसी कारण बच्चे अपना अधिकतर समय टी.वी., कम्प्यूटर, वीडियो गेम के साथ बिताने लगते हैं।

ममता कालिया स्वयं एक कामकाजी महिला है उन्होंने इस प्रकार की समस्या को बखूबी महसूस किया है। 'राजू' कहानी में ममता कालिया ने बच्चे की समस्या का चित्रण किया है, परिवार में सब राजू को अपशकुनियाँ कहते हैं। उसके होते ही उसके पिता की मृत्यु हो जाती है, उसकी माँ की लापरवाही की वजह से उसकी एक आँख खराब हो जाती है। सभी राजू की अवहेलना करते हैं।

'प्रेम कहानी' उपन्यास में डॉ. गुप्ता को दो बच्चे हैं आकार व आधार वे शिमला के एक हॉस्टल में पढ़ते हैं जब वे घर आते हैं तो भी डॉ. गुप्ता अपने काम में इतने व्यस्त होते हैं कि उनके लिये समय नहीं निकाल पाते इसकी शिकायत वे डॉ. गिनेस से करते हैं कि 'अंकल', जब आप छोटे थे, आपके डैडी आपसे बोलते थे?..... आकार बिगड़ जाता है और हमारे पापा हैं जब देखो अस्पताल क्लीनिक, विजिट, फोन, हमें स्टेशन से लाने और स्टेशन छोड़ आने के कारण अलावा जैसे उनका हमसे कोई मतलब नहीं।"<sup>31</sup> इस प्रकार ममता कालिया ने पारिवारिक विघटन के कारण बच्चों के मानसिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का यथार्थ चित्रण किया है। बच्चों के मनोविज्ञान का यथार्थ चित्रण मिलता है। पारिवारिक समस्याओं के कारण बच्चे अपने को अकेला महसूस करते हैं।

'आपकी छोटी लड़की' कहानी में ममता ने बाल मनोविज्ञान के अंतर्द्वंद्वों को अपनी कहानी में उकेरा है। कहानी में टुनिया की बड़ी बहन से सभी प्रेम करते हैं उसे रानी की तरह रखते हैं किंतु टुनिया को अपने घर के सभी काम करने होते हैं, टुनिया हर काम में अच्छी होते हुए भी अपनी बड़ी बहन के कारण घर में उपेक्षा का पात्र बनी हुई है। जिससे उसके अन्तर्मन पर गहरा आघात लगता है। टुनिया की मनःस्थिति का सुंदर चित्रण ममता कालिया ने इस प्रकार किया है कि "दीदी के साथ तो ऐसा नहीं करती मम्मी, दीदी उनका एक भी काम नहीं करती, फिर भी उसके सामने मम्मी कभी शिकायत नहीं करती। वह तो कांदा-बटाटा लेने बाजार नहीं जाती, उसे पानी लाने डॉ. जगतियानी के यहाँ नहीं भेजा जाता, बिजली का बिल जमा कराने की कतार में दीदी तो कभी नहीं लगी।"<sup>32</sup> इस प्रकार ममता कालिया ने बालमन के अन्तर्द्वंद्वों को अपनी कहानियों उपन्यासों में उकेरा है।

**पुरुष का वर्चस्व** - पारिवारिक विघटन में समाज में बढ़ते पुरुष वर्चस्व के कारण भी समस्या उत्पन्न हो रही है। स्त्री समाज में शिक्षित होते हुए उपेक्षा का पात्र बन जाती है जिससे परिवार में अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। आज समाज में एक पढ़ी-लिखी स्त्री नौकरी करेगी या नहीं यह पुरुष द्वारा तय किया जाता है। 'एक पत्नी के नोट्स' में संदीप कविता का सबके सामने अपमान करता है उसे बात-बात में नीचा दिखाने का प्रयत्न करता है।

'दर्पण' कहानी में भी बानी का पति उसे नौकरी छोड़ने के लिए कहता है। वह एक बड़े दर्पण में अपना सौंदर्य देखना चाहती है। परंतु उसका पति दर्पण पर पैसे खराब नहीं करना चाहता। वह शाम को पति का दफ्तर से लौटने का इंतजार करती है परंतु वह उसे एक नजर देखता भी नहीं है।

'मनहूसाबी' कहानी में भी उषा के घर में उसके पति का वर्चस्व है। 'उमस' कहानी में भी रानी का पति भी उसकी छोटी-छोटी बातों पर नाराज रहता है। इस प्रकार पारिवारिक विघटन की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

**आर्थिक स्थिति** - आर्थिक स्थिति के कारण भी पारिवारिक विघटन की समस्या उत्पन्न होती है। स्वयं ममता जी अपने जीवन में आर्थिक समस्याओं का सामना किया है और आर्थिक समस्या के कारण बिगड़ते परिवारों को देखकर उन्होंने अपनी रचनाओं में उसका उल्लेख किया है। फैमिदा बिजापुरे कहती है कि "वैसे देखा जाए तो पैसा ही मनुष्य के सुख तक पहुँचने की राह का उत्तम साधन नहीं है अपितु आधुनिक काल में पैसे के बल पर समाज दो वर्गों में विभाजित हो गया है। पहला अमीर या उच्च वर्ग जिसे प्राचीन काल में शोषक कहा जाता था आज इन दोनों के बीच के एक वर्ग जो औद्योगिक क्रांति की देन है, तैयार हो रहा है मध्यम वर्ग। इन वर्गों में अमीर वर्ग को आर्थिक समस्या निर्माण होने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। लेकिन मध्य वर्ग और गरीब या निम्न वर्ग आर्थिक समस्याओं की चपेट में आता रहा है।"<sup>33</sup> आधुनिक काल में आर्थिक स्थितियाँ विषम हो गई हैं। अमीर, अमीर होता जा रहा है, गरीब, गरीब हो रहा है। मध्यम वर्ग को भी बेरोजगारी, महँगाई आदि का शिकार होना पड़ता है।

#### 4.5 पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

ममता कालिया ने अपने कहानियों उपन्यासों में पाश्चात्य सभ्यता का भारतीय संस्कृति पर बढ़ते प्रभावों का बखूबी चित्रण किया है। भारतीय समाज पर पाश्चात्य

संस्कृति का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है जिससे अकेलेपन की समस्या, अविवाहित रहना, शादी से पूर्व यौन संबंध स्थापित करना, बेरोजगारी बढ़ना आदि समस्याओं को बढ़ावा मिला है।

‘मनोविज्ञान’ कहानी में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव दिखाई पड़ता है। इसमें नवीन को पारंपरिकता पसंद नहीं है। नवीन आधुनिकीकरण में जीना पसंद करता है। इस कहानी में नवीन को भौतिकता पसंद थी वह चाहता है कविता आधुनिक तरीके से रहे इस कथन से दृष्टव्य है कि “सबसे पहले नवीन ने कविता का आधुनिकीकरण किया। उसके चिकने, चपटे चिपचिपे बाल कटवा कर छोटे, छितरे और चुलबुले बनवाये। अब उनका तार-तार गिना जा सकता था। थोड़ी सी आनाकानी के बाद कविता ने पार्लर में जाकर वैक्सिंग, थ्रेडिंग और ब्लीचिंग भी मंजूर कर ली।”<sup>34</sup> इस कथन से दृष्टव्य है कि मानव आजकल भौतिकतावादी होता जा रहा है। उस पर पाश्चात्य संस्कृति हावी होती जा रही है।

**अवैध संबंध** - पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण आज वर्तमान समान में स्त्री पुरुष अवैध संबंध बनाने से कतराता नहीं है। आज आधुनिक युग में स्त्री पुरुष इसे एक शौक के रूप में स्वीकार करते हैं। ‘नरक दर नरक’ उपन्यास में अवैध संबंधों का यथार्थ चित्रण किया गया है। जहाँ उषा और जगन के मध्य अवैध संबंध बन जाते हैं।

इसी प्रकार ‘बेघर’ उपन्यास में ममता कालिया पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का यथार्थ चित्रण करती है। उपन्यास का नायक परमजीत और नायिका संजीवनी एक दूसरे को प्रेम करते हैं और एक दिन परमजीत संजीवनी के साथ अवैध संबंध बना लेता है। भारतीय संस्कृति में शादी से पूर्व अवैध संबंधों की अवहेलना की जाती है किंतु आज भारतीय समाज पर पाश्चात्य सभ्यता का दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

‘पिछले दिनों का अंधेरा’ कहानी में भी ‘रुचि’ नायक के साथ अवैध संबंध बनाती है। इस प्रकार ‘सुनी’, ‘दो जरूरी चेहरे’ आदि में भी इस प्रकार की समस्या का यथार्थ चित्रण किया गया है।

**शिक्षा का बढ़ता प्रभाव** - आज समाज जितना शिक्षित होता जा रहा है उस पर उतना ही पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है। भौतिकता की दौड़ में मनुष्य केवल बाहरी रूप से आकर्षित होता है। मनुष्य जितना शिक्षित हुआ है उससे उसमें प्रेम विवाह,

अंतर्जातीय विवाह आदि समस्याओं ने जन्म दिया है। पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते प्रभाव के कारण मनुष्य अकेला रहना पसंद करने लगा है।

पाश्चात्य संस्कृति ने समाज में बेकारी की समस्या को जन्म दिया है, लोग अपने पुश्तैनी कार्य को करने में कतराते हैं 'बसंत एक तारीख' की नायिका चंदा उच्च शिक्षित है उसके बावजूद भी बेकारी की समस्या से ग्रसित है। वह एक दिन दस बजे घर से बाहर निकली तो उसे अचंभा हुआ कि सभी लोग कहाँ जा रहे हैं वह देखती है सब दफ्तर जा रहे हैं और सोचती है कि "बेकार रहते रहते मैं भूल चुकी थी उस बजे का समय दफ्तर जाने का होता है। वर्षों से हमारे घर से कोई दफ्तर नहीं गया था। बेरोजगारी हमारा पुश्तैनी रोजगार था। फिर भी हमारा गुजर किसी तरह होता ही था।"<sup>35</sup>

**पार्टियाँ** - पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव का दुष्परिणाम भारतीय में यथार्थ रूप में दिखाई पड़ता है ममता कालिया ने अपने कहानी उपन्यासों में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव दिखाया है आज समाज इतना आधुनिक हो गया है कि पार्टियाँ करना उसका एक शौक बनता जा रहा है। 'बेघर' उपन्यास में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव दिखाई पड़ता है। जहाँ परमजीत के ऑफिस में कलर्क सुधाकर शिंदे अपनी शादी की पार्टी का आयोजन करता है। शिंदे की पार्टी में सभी सज धज कर आते हैं। किंतु परमजीत कहता है कि "परमजीत को अपने बुशर्ट में पहुँच जाना अचानक अजीब सा लगा क्योंकि सभी सूट पहने हुए थे।"<sup>36</sup> इस प्रकार आज का मानव भौतिकता के दौर में गुजर रहा है जहाँ पाश्चात्य संस्कृति स्पष्ट दिखाई पड़ती है। फैशन और दिखावे की होड़ मची हुई है।

#### 4.6 भारतीय संस्कृति व वर्तमान परिवेश

भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से चली आ रही है जहाँ विभिन्न प्रकार की संस्कृति का विकास होता रहा है। भारत को सांस्कृतिक देश माना जाता रहा है। पेट की भूख ऐसी है जो मनुष्य को कुकृत्य करने पर मजबूर कर देती है। गरीब व्यक्ति त्रस्त होकर चोरी जैसे अपराध भी कर बैठता है। ममता कालिया की 'चोटिटन कहानी' में इसका वर्णन किया गया है। कहानी में एक छोटी लड़की सुखिया पेट भरने के लिए चोरी तक करती है। उसकी माँ का किसी के घर माँजना उसे पसंद नहीं है किंतु वर्तमान परिवेश में गरीबी इस कदर छायी हुई है कि व्यक्ति को छोटे-छोटे काम भी करना पड़ता है इस कारण 'सुखियाँ' की माँ दूसरों के घरों में बर्तन माँजती हैं

‘अनुभव’ कहानी में भी रामू को नौकर होने के कारण अपमान सहन करना पड़ता है। आज भारतीय समाज में नौकरों को हेय दृष्टि से देखा जाता है जिसके कारण रामू को अपमान सहना पड़ता है। रामू की सच बोलने की आदत के कारण रामू को अपनी कई नौकरियों से हाथ धोना पड़ता है क्योंकि आज वर्तमान में भारतीय संस्कृति के मूल्य गिरते जा रहे हैं और समाज में झूठ, कपट, धोखाधड़ी वर्तमान समाज में व्याप्त हो गए हैं।

वर्तमान भारतीय समाज में गरीबी भी एक अभिशाप बनकर उभर रही है। ‘अनुभव’ कहानी में उस औरत की गरीबी का जिसके पास ठण्ड में ओढ़ने को पर्याप्त बिस्तर नहीं है का मार्मिक चित्रण ममता कालिया इस प्रकार करती है कि “बच्चा उसने पूरी तरह गोद में छुपा लिया था मानों उसे वापस गर्भ में पहुँचा रही हो। फिर भी वह रो रहा था। औरत की नजर सहसा रामू की नजर से मिली। वह लपककर उसके आस-पास आई और घिघियाते हुए बोली, “मुन्ना मर जाएगा बाबू, इसे अपने साथ सुला लो। बच्चे के फटे चीथड़े कर रामू उसे दुत्कारने ही वाला था कि औरत ने उसकी अनुमति का इंतजार किए बिना बच्चा उसकी रजाई में लिटा दिया।.....बच्चे में शायद रोने की ताकत खत्म हो चली थी। वह थोड़ी देर मिनमिनाकर, हाथ-पाँव पटकता रहा। रजाई के ऊपर से उसकी माँ उसे थपकती रही, फिर शायद बच्चा सो गया।”<sup>37</sup>

**वर्तमान में राजनैतिक स्थितियाँ** - साहित्यकार समाज का प्रतिनिधि है और वह अपनी साहित्य कृतियों में जीवन की व्याख्या करता है। साहित्य और राजनीति एक दूसरे के पूरक हैं। मनुष्य की भावना से राजनीति की जड़े जुड़ी रहती हैं। इसी वजह से जीवन के हर क्षेत्र में राजनीति व्याप्त रहती है। इस संदर्भ में डॉ. कमल गुप्ता ने लिखा है कि “स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् व्यक्ति की राजनैतिक चेतना विविध स्वार्थी प्रवृत्तियों के रूप में प्रस्फुटित हुई। सदा के लिए आपाधापी ने राजनीतिक भ्रष्टाचार को जन्म दिया। भ्रष्टाचार के कारण प्रत्येक व्यक्ति निम्न और उच्च स्तर पर सत्तात्मक राजनीति की शतरंज में अपनी गोटी बैठने के प्रयत्न में संलग्न हो गया। व्यक्तिगत स्वार्थी ने दल-बदलू राजनीति को जन्म दिया है। राजनीतिक दलों के नेता एक के बाद दूसरा दल बदलते रहे हैं।”<sup>38</sup>

डॉ. कमल गुप्ता के कथन से स्पष्ट है कि राजनीति में भ्रष्टाचार ने अपनी जड़े इतनी मजबूत कर ली है कि उसका निवारण असंभव हो गया है। यदि एक बार कोई व्यक्ति सत्ता में आ जाता है तो उसकी आने वाली कई पीढ़ियों का भला हो जाता है।

**सांस्कृतिक स्थितियाँ** - वर्तमान में समाज में अनेक रीति-रिवाज, परम्पराओं का विकास भारतीय संस्कृति में व्याप्त है। किसी भी देश की संस्कृति उसमें रहने वाले लोगों के धर्म रीति-रिवाजों, परंपराओं, संस्कारों, भाषा आदि पर निर्भर करती है। संस्कृति को परिभाषित करते हुए दिनकर जी ने लिखा है कि “संस्कृति जिंदगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसलिए जिस समाज में हम पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज में हम जी रहे हैं, उसकी संस्कृति हमारी है।”<sup>39</sup>

भारत में विभिन्न संप्रदायों के लोग रहते हैं। प्रत्येक धर्म की अपनी मान्यताएँ हैं, अंधविश्वास हैं। भगवान के प्रति श्रद्धा व्रत त्योहार, संस्कार आदि हमारी संस्कृति का अहम हिस्सा है। हमारा संस्कृति में धर्म के प्रति इतनी श्रद्धा है कि उसका लोग गलत फायदा उठाते हैं।

भारतीय संस्कृति में कई रूढ़ियाँ तथा अंधविश्वास अभी भी प्रचलित हैं। जैसे किसी की नजर लगना विधवा के हाथ से कोई शुभ कार्य न करवाना, गृहप्रवेश में दायँ पैर पहले अंदर रखना, पति की लंबी आयु के लिए व्रत रखना आदि।

‘दुःखम-सुखम’ उपन्यास में बेबी जिस दिन दूध नहीं बीती तो विद्यावती उसकी नजर उतारती है। ममता जी लिखती है कि “तब दादी लोहे की छोटी डिबिया से फिटकरी का टुकड़ा निकालकर जलते-कोयले पर रखती है। फिटकारी पिघलकर मुड़-तुड़ जाती है दादी बताती है “जे देख है न बिल्कुल रामों की शक्ल, यह उसका सिर, यह धोती का पल्ला और उसका हाथ। सबको वाकई फिटकरी में रामों नजर आने लग, बारी-बारी से उसे चप्पल से पीटते हैं।”<sup>40</sup> इस प्रकार ममता कालिया समाज में व्याप्त अंधविश्वास को अपनी रचनाओं में उतारते हैं।

इसी प्रकार ‘आपकी छोटी लड़की’ कहानी में भी अंधश्रद्धा के नमूने दिखाई पड़ते हैं। “क्या हमारे देश में कभी ईश्वर से विश्वास खत्म हो सकता है? अभी मैं चौराहे के बीचों-बीच एक बौडम-सा पत्थर रख दूँ सिंदूर में रंगकर और खुद उस पर जाकर दो फूल चढ़ा आऊँ। फिर देखना तुम अपने लोगों की कितनी आस्था है।”<sup>41</sup>

आधुनिक यांत्रिक जगत में भारतीय संस्कृति के संस्कार पिछड़ गए हैं। उस पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हावी होने लगा। लोगों के बदलाव में खुलापन आ गया है। महानगरों में पति-पत्नी आमतौर पर पार्टियाँ करते हैं, सिगरेट पीते हैं आदि।

#### 4.7 अस्तित्व संघर्ष व स्त्री

वर्तमान समाज में भी स्त्री अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई पड़ती है। आज समाज में स्त्री-पुरुष ने बराबर शिक्षा प्राप्त कर ली है। महिला कदम से कदम मिलाकर चल रही है किंतु फिर भी महिला इस समाज की संकीर्ण सोच का शिकार बन ही जाती है। आज भी इस पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों को हीन दृष्टि से ही देखा जाता है। आज समाज में युवा, अधेड़, प्रौढ़, वृद्ध कई रूप महिलाओं के देखे जा सकते हैं। आधुनिक समाज में नौकरीपेशा अविवाहित, नौकरीपेशा विवाहित नारी, आशिक्षित नारी प्रत्येक जगह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती दिखाई देती है।

‘बेघर’ उपन्यास में ममता कालिया ने नारी की समस्या का यथार्थ चित्रण किया है जिसमें परमजीत ‘वालिया’ के प्रति घृणा वाली दृष्टि रखता है और उसे वितृष्णा करता है। परमजीत अपना पुरुष वर्चस्व दिखाता है। परमजीत के माध्यम से ममता कालिया कहती है कि “यह लड़की समझती क्या है अपने को जब दफ्तर में आई थी, हाथों में नसे चमकती थी। शकल देखकर लगता है हफ्तों से रोटी नहीं खाई है, मैंने रेनोपेट करके रख दिया है। इसे वरना इसमें है क्या, इसके दाँत तक अपने नहीं हैं। ओठ बाहर लटकते थे। मैंने सारा डैंचर बदलवाया। मुझे जवाब देती है, इसे पता नहीं है मैं ही मैं हूँ। मेरे आगे औरत, औरत रहेगी।”<sup>42</sup> इस प्रकार ममता कालिया के बेघर उपन्यास में अस्तित्व के प्रति संघर्ष करती स्त्री का यथार्थ चित्रण दिखाई पड़ता है।

**बेरोजगार स्त्री की समस्या** - वर्तमान में बहुत सी महिलाएँ हैं जो अपनी पारिवारिक समस्याओं के कारण पढ़ नहीं पाती हैं, वे अपने पति आश्रित होती हैं। जिसके कारण वे अपनी इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर पाती हैं और समाज, परिवार में उपेक्षित बनी हुई रहती हैं। ऐसी महिलाओं को समाज में एक घरेलू काम करने वाली औरत समझते हैं।

‘आजादी’ कहानी में दादी अशिक्षित है जिसके कारण उसे अपने पति के सामने हर चीज के लिए हाथ फैलाने पड़ते हैं। दादी को रोज सामान के लिए अपने पति के आगे हाथ फैलाना पड़ता है जो आज भी कई जगह ऐसा होता है।

ममता कालिया की माँ कहानी में भी नायिका का पति आगरा में पढ़ता है। नायिका को अपने घर का सारा काम करना, रात को सास के पैर दबाना उसके बाद भी सास की उपेक्षिता बनकर रहना पड़ता है घर का सारा खर्च सास के हाथ में होता है।

समाज में अशिक्षित बेरोजगार नारी को केवल घर का काम करने वाली और बच्चे पैदा करने वाली समझा जाता है। ममता कालिया की राएवाली कहानी में भी नववधू को परिवार के द्वारा प्रताड़ित होना पड़ता है। उसे अपने पीहर नहीं जाने दिया जाता। कहानी की नायिका 'कालिंदी' सुबह जल्दी उठकर सारा दिन काम करती है फिर भी परिवार में सब उसे लड़ते रहते हैं। कालिंदी काम करके थककर सो जाती है जिसके कारण उसका पति वेश्यागामी हो जाता है।

**विवाहित नौकरीपेशा नारी की समस्या** - ममता कालिया ने विवाहित कामकाजी नारी की समस्या का यथार्थ रूप अपनी कहानियों में चित्रित किया है। 'शहर शहर की बात' कहानी में ममता कालिया ने महिला के नौकरी पेशा होने के कारण होने वाली समस्या का चित्रण किया है। ममता जी कहती है कि "मैं सुबह-सुबह बीस मील सफर करके स्कूल जाती हूँ। अक्सर प्रिंसिपल मुझे घूर कर देखती। जब मैं गुडमॉर्निंग कहती तो उस पर कोई अनुकूल असर न होता।"<sup>43</sup>

**एकाकीपन की समस्या** - भारतीय समाज में नारी को एकाकीपन की समस्या का शिकार होना पड़ता है। शादी करने के पश्चात कई बार पति-पत्नी के संबंध अच्छे नहीं होने पर या पति-पत्नी को छोड़ देता है या पत्नी पति को तलाक दे देती है। इसी प्रकार 'सपनों की होम डिलीवरी' उपन्यास में रुचि अकेलेपन का शिकार होती है, वह अपने पति की लंपट प्रवृत्ति के कारण उसे त्यागकर अपने अस्तित्व को बचाती है। पाककला विशेषज्ञ बन जाती है। अपने अस्तित्व को स्थापित करने के बावजूद उसमें कही ना कहीं खालीपन होता है क्योंकि वह परिवार से वंचित रहती है। वह अपने बेटे से भी उसके भावनात्मक लगाव नहीं हो पाते हैं। नारी उत्पीड़न की दासता प्राचीनकाल से ही चली आ रही है। इसका वर्णन ममता कालिया ने बड़ी सूक्ष्मता से किया है।

**नारी की आर्थिक स्थिति** - भारतीय समाज में आज भी अधिकतर स्त्रियाँ आर्थिक रूप से कमजोर हैं। जो अपने पति पर ही निर्भर रहती हैं। पुरुष प्रधान समाज की सोच होती है कि यदि नारी नौकरी भी करें तो भी उसे घर को संभालना ही है। जैसे एक गृहिणी अपने कर्तव्यों का निर्वहन करती है। आधुनिक स्त्री तनाव से ग्रसित है। ज्ञान

प्रकाश विवेक का कथन है कि “ममता कालिया की कहानियों में स्त्रियाँ वाचक हैं वे अपनी निजता, आत्मगौरव, आत्मसंघर्ष को अभिव्यक्त करती हैं। उनके बहुत छोटे-छोटे भय हैं। देर से दफ्तर पहुँचने का भय। देर से वापस घर आने का भय। दस रूपयों का नोट भुनाने का भय रिफिल घिसने का भय।”<sup>44</sup> ममता कालिया के कथा-साहित्य में स्त्रियाँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र रहना चाहती हैं। वे पराश्रित नहीं रहना चाहती।

‘दर्पण’ कहानी की नायिका ‘बानी’ भी ऐसी है। जो आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना चाहती है। दर्पण कहानी की बानी उसके पति की उपेक्षा से तंग आ जाती है। बानी सुंदर स्त्री है शादी से पहले वह नौकरी करती थी। शादी के पश्चात् उसकी स्थिति का वर्णन करते हुए ममता कालिया लिखती है कि “बानी के लिए जो वर ढूँढा गया, वह स्वस्थ, सुंदर और कमाऊँ था उसे अपने तीनों गुणों पर नाज था, इतना कि बानी के गुणों को उसने बड़े ठंडे और ठोस ढंग से कबूल कर लिया। स्त्रियों में बड़बोलापन और सक्रियता से उसे चिढ़ थी सबसे पहले उसने बानी की नौकरी छुड़वा दी। एक बंधे बँधाए रूटीन से हटना कुछ समय के लिए बानी को अच्छा नहीं लगा। उस समय उसे यह नहीं पता था कि वह एक नए रूटीन में इतनी जल्दी फंस जाएगी।”<sup>45</sup> इस प्रकार पुरुष द्वारा स्त्रियों को आर्थिक कमजोर बनाने की प्रवृत्ति का चित्रण है।

‘दुःखम-सुखम’ उपन्यास में भगगो अपने पिताजी के मना करने के बावजूद पढ़ाई पूरी करती है और नौकरी भी करती है।

इस प्रकार ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्रियाँ अपने संघर्ष अस्तित्व के संघर्ष के लिए लड़ती दिखाई देती हैं। ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी प्रेम की समस्या, अकेलेपन की समस्या, विधवा नारी की समस्या आदि अनेक रूपों का यथार्थ चित्रण मिलता है।



## संदर्भ सूची

1. लमही पत्रिका, जुलाई-सितंबर, 2011 पृ.सं.-51
2. डॉ. सानप शाम, ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना, पृ.सं.-72
3. डॉ. गनेस दास, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नारी के विविध रूप,  
पृ.सं.-81-82
4. कालिया ममता, जाँच अभी जारी है, पृ.सं.-20
5. कालिया ममता, काके दी हट्टी, पृ.सं.-55
6. कालिया ममता, मुखौटा, पृ.सं.-55
7. कालिया ममता, जाँच अभी जारी है, पृ.सं.-30
8. कालिया ममता, जाँच अभी जारी है, पृ.सं.-31
9. कालिया ममता, श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.सं.-145
10. कालिया ममता, उसका यौवन, पृ.सं.-58
11. कालिया ममता, बेघर, पृ.सं.-161
12. कालिया ममता, सीट नंबर छह, पृ.सं.-28
13. कालिया ममता, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-157
14. कालिया ममता, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-159
15. कालिया ममता, जाँच अभी जारी है, पृ.सं.-122
16. कालिया ममता, जाँच अभी जारी है, पृ.सं.-126
17. कालिया ममता, उसका यौवन, पृ.सं.-104
18. कालिया ममता, उसका यौवन, पृ.सं.-111,112
19. कालिया ममता, मुखौटा, पृ.सं.-107
20. कालिया ममता, मुखौटा, पृ.सं.-9
21. कालिया ममता, चर्चित कहानियाँ, पृ.सं.-11
22. कालिया ममता, दुःखम-सुखम, पृ.सं.-9

23. कालिया ममता, दुःखम-सुखम, पृ.सं.-7
24. कालिया ममता, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-156
25. डॉ. सानप श्याम, ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना, पृ.सं.-158
26. कालिया ममता, काके दी हट्टी, पृ.सं.-99
27. कालिया ममता, काके दी हट्टी, पृ.सं.-103
28. कालिया ममता, श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.सं.-129
29. कालिया ममता, श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.सं.-131
30. कालिया ममता, काके दी हट्टी, पृ.सं.-10
31. कालिया ममता, तीन लघु उपन्यास, पृ.सं.-168-169
32. कालिया ममता, चर्चित कहानियाँ, पृ.सं.-12
33. डॉ. फैमिदा बिजापुरे, ममता कालिया : व्यक्तित्व-कृतित्व, पृ.सं.-188
34. कालिया ममता, उसका यौवन, पृ.सं.-83-84
35. कालिया ममता, चर्चित कहानियाँ, पृ.सं.-28
36. कालिया ममता, बेघर, पृ.सं.-136
37. कालिया ममता, जाँच अभी जारी है, पृ.सं.-98
38. डॉ. फैमिदा बिजापुरे, ममता कालिया : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ.सं.-196-197
39. श्री रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृ.सं.-653
40. कालिया ममता, दुःखम-सुखम, पृ.सं.-8
41. कालिया ममता, चर्चित कहानियाँ, पृ.सं.-24
42. कालिया ममता, बेघर, पृ.सं.-95
43. कालिया ममता, छुटकारा, पृ.सं.-81
44. लमही पत्रिका, जुलाई-सितम्बर, 2011, पृ.सं.-37
45. कालिया ममता, उसका यौवन, पृ.सं.-122

# पंचम अध्याय

ममता कालिया के कथा-साहित्य में  
राजनीतिक एवं आर्थिक यथार्थ

## पंचम अध्याय

### ममता कालिया के कथा-साहित्य में राजनीतिक एवं आर्थिक यथार्थ

ममता कालिया की कहानियाँ उस समय की आर्थिक और राजनीतिक वास्तविकताओं का पता लगाती हैं, जो व्यापक सामाजिक परिस्थितियों में सामने आने वाली जटिलताओं और चुनौतियों पर जोर देती हैं। कालिया की कहानियाँ व उपन्यास दर्शाते हैं कि कैसे सत्ता, विशेषाधिकार और असमानता राजनीति और अर्थशास्त्र को आकार देते हैं। कालिया द्वारा राजनीतिक वास्तविकता का अध्ययन शासन, भ्रष्टाचार और सत्ता को कवर करता है। वह सार्वजनिक कर्तव्य और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा पर लिखती है, आम तौर पर राजनेताओं और नौकरशाहों के नैतिक दुविधाओं की आलोचना करती है। सामाजिक परिवर्तन के लिए अवज्ञा और गतिविधि पर प्रकाश डाला गया है, कालिया अन्याय के पीड़ितों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए कुशलता से आर्थिक वास्तविकताओं को समझती है। वह गरीबी, बेरोजगारी और आर्थिक उथल-पुथल का सामना कर रहे विभिन्न पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को दर्शाती है। उनकी कहानियों के माध्यम से वह दिखाती है कि कैसे आर्थिक नीतियाँ, वैश्वीकरण और धन असमानता लोगों को नुकसान पहुँचाती हैं।

कालिया द्वारा राजनीतिक एवं आर्थिक वास्तविकताओं का परिष्कृत चित्रण उनके परस्पर जुड़ाव पर जोर देता है। वह सामान्य व्यक्तियों पर उच्च स्तरीय नीतिगत निर्णयों के परिणामों का अध्ययन करती है, जीविकोपार्जन की उनकी क्षमता, संसाधन और सफलता के मार्ग शामिल हैं। उनकी कहानियाँ पाठकों को सामाजिक आर्थिक प्रणाली की संरचनात्मक असमानताओं का पता लगाने के लिए शिक्षित करती हैं, जो समावेशी विकास और न्यायसंगत विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। ममता कालिया की लेखनी जटिल राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों को पकड़ती है। उनकी रचनाएँ पाठकों को शक्ति और मानवीय भावना की क्षमता से रूबरू कराती हैं। “उनकी रचनाएँ इसलिए गूँजती हैं क्योंकि वे भविष्य की समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए नैतिक नेतृत्व निष्पक्षता और आर्थिक वितरण की वकालत करती हैं।”<sup>1</sup>

## 5.1 स्वार्थ-लोलुप राजनीति का यथार्थ

ममता कालिया की स्वार्थी राजनीति की जांच में कठोर तथ्यों की जांच की गई है, जो अक्सर काल्पनिक कहानियों से छिप जाते हैं उनके लेखन में आत्ममुग्धता और अवसरवाद पर प्रकाश डाला गया है, जो राजनीतिक पेंतरेबाजी को संचालित करता है, जहाँ निजी लाभ अक्सर आम भलाई पर हावी हो जाता है। ममता कालिया अपनी रचनाओं में सत्ता की गतिशीलता के जटिल जाल और व्यक्तिगत लाभ के नाम पर किए गए बलिदानों पर प्रकाश डालती है। राजनीतिक क्षेत्र में उन्हें इस बदसूरत वास्तविकताओं का सामना करना पड़ता है; कि स्वार्थ और महत्वाकांक्षा अक्सर निस्वार्थता पर हावी हो जाती है। पार्टी और व्यक्तिगत एजेंडे के सामने नैतिक शासन को बनाए रखने की कठिनाइयों को कालिया के विवेकपूर्ण विश्लेषण द्वारा स्पष्ट रूप से उजागर किया गया है। ममता कालिया स्वार्थी राजनीति की जांच करते हुए लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और शासन पर नकारात्मक परिणामों पर प्रकाश डालती है। वह उन तरीकों की जांच करती है जिनसे नापाक लक्ष्य मतदाताओं के बीच दरार पैदा कर सकते हैं, सरकार में विश्वास को नुकसान पहुँचा सकते हैं और सार्थक बदलाव को बाधित कर सकते हैं। कालिया इस बात पर जोर देती है कि राजनीति में नेताओं को ईमानदार, खुला और जवाबदेह होना चाहिए। उनका आह्वान ऐसी नीतियों को आगे बढ़ाने का है जो व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर सार्वजनिक हित को रखती हो तथा राजनीतिक कृत्यों के पीछे के कारणों का आलोचनात्मक विश्लेषण करती हो।

कालिया द्वारा बताई गई कहानियाँ विभिन्न सांस्कृतिक परिवेशों और भौगोलिक स्थानों में स्व-केंद्रित राजनीति की व्यापकता पर अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। अपने काम के माध्यम से वह इस बात पर प्रकाश डालती है कि सत्ता की इच्छा अक्सर लोकतांत्रिक मानदंडों को कमजोर कर सकती है और आम लोगों की आवाज को कम कर सकती है, भले ही संबंधित सरकार लोकतांत्रिक हो या सत्तावादी। कालिया इन सूक्ष्मताओं पर प्रकाश डालकर और उन्हें प्रकाश में लाकर राजनीति के क्षेत्र में व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और सामुदायिक कल्याण के बीच नाजुक अंतर्क्रिया की अधिक समझ विकसित करती है। ममता कालिया द्वारा की गई स्वकेंद्रित राजनीति की जांच सामाजिक गतिविधियों में अधिक समझ विकसित करती है। पाठक को वर्तमान स्थिति पर सवाल उठाने, अपने नेताओं से जिम्मेदारी की मांग करने और एक ऐसे राजनीतिक माहौल के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया जाता है, जो

अधिक समान और समावेशी हो, जिसमें सभी लोगों के हितों का वास्तव में प्रतिनिधित्व और महत्व हो। नीति निर्माण और शासन के परिणामों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी जांच ममता कालिया द्वारा की गई है। “उदाहरण के तौर पर वह दर्शाती है कि कैसे व्यक्तिगत लाभ या किसी राजनीतिक दल के प्रति समर्पण से प्रेरित कार्य ऐसी नीतियों को जन्म दे सकते हैं जो समझौतेपूर्ण है और समाज की वास्तविक आवश्यकताओं को पर्याप्त रूप से पूरा नहीं करती है। इस विकृति के परिणामस्वरूप अक्सर संसाधनों का अपव्ययी आवंटन महत्वपूर्ण परिवर्तन की संभावनाओं का नुकसान और मौजूदा सामाजिक, आर्थिक असमानताओं की स्थिति और खराब हो जाती है।”<sup>2</sup>

कालिया स्वार्थी राजनीति के नैतिक निहितार्थों की जांच करती है, उन नेताओं की नैतिक ईमानदारी पर सवाल उठाती है जो समान के लिए दीर्घकालिक लाभों से पहले अल्पकालिक लाभ को प्राथमिकता देते हैं। किसी चीज की सिर्फ आलोचना करने से संतुष्ट न होकर, वह मौजूदा राजनीतिक संस्कृति और प्रक्रियाओं का पुनर्मूल्यांकन करने का भी सुझाव देती है। नैतिक नेतृत्व की ओर बदलाव जो व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की तुलना में ईमानदारी और सार्वजनिक भलाई को अधिक महत्व देता है, वह कुछ ऐसा है जिसकी वह वकालत करती है। “कालिया द्वारा किए गए शोध में राजनीतिक व्यवहार के विचारों को ढालने की प्रक्रिया में मीडिया और सार्वजनिक बहस के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। वह एक ऐसी जनता की आवश्यकता पर जोर देती है जो सतर्क और अच्छी तरह से सूचित हो और जो निर्वाचित नेताओं को उनके कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराने में सक्षम हो। कालिया का मानना है कि यदि पारदर्शिता और नागरिक भागीदारी की संस्कृति विकसित की जाए तो स्वार्थी राजनीति के नकारात्मक प्रभावों को कम करना तथा अधिक संवेदनशील और जिम्मेदार राजनीतिक माहौल विकसित करना संभव है।”<sup>3</sup>

“ममता कालिया द्वारा स्वार्थी राजनीति की अवधारणा की जांच के परिणामस्वरूप पाठकों को राजनीति के दायरे में व्यक्तिगत और सामूहिक कृत्यों के व्यापक प्रभावों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया जाता है। सत्ता की गतिशीलता की पेचीदगियों और शासन की जिम्मेदारी संभालने वालों के नैतिक कर्तव्यों पर उनके अवलोकन से आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा मिलता है। दिन के अंत में कालिया का काम नैतिक नेतृत्व और नीतियों को बढ़ावा देने की हमेशा मौजूद जरूरत की एक

शक्तिशाली याद दिलाता है जो वास्तव में समाज के सभी सदस्यों के हितों की सेवा करती है। ममता कालिया द्वारा की गई स्वार्थी राजनीति की जांच एक साधारण आलोचना से आगे बढ़कर इस घटना के संस्थागत कारणों और सामाजिक नतीजों की अधिक गहन जांच में जाती है। राजनीतिक संस्थाओं के संदर्भ में, वह उन तरीकों पर जोर देती है जिनसे निहित स्वार्थ भ्रष्टाचार, संरक्षण और भाई-भतीजावाद के चक्र को बनाए रख सकता है। यह न केवल है कि ये प्रक्रियाएँ लोकतांत्रिक मूल्यों को कमजोर करती हैं, बल्कि वे आमजनता के लाभ से ऊपर अभिजात वर्ग के संकीर्ण हितों को वरीयता देकर सामाजिक-आर्थिक विकास को भी बाधित करती हैं। कालिया द्वारा किए गए अध्ययन में राजनीति उद्देश्यों को पूरा करने के लिए जनमत और चुनाव प्रक्रियाओं में हेरफेर पर प्रकाश डाला गया है, जो स्वार्थ से प्रेरित है। वह उन तरीकों पर प्रकाश डालती है, जिनमें प्रचार और बयानबाजी का इस्तेमाल जनमत को प्रभावित करने, सच्चाई को छिपाने और उनके इस्तेमाल के जरिए सत्ता को मजबूत करने के लिए किया जा सकता है। इसे हेरफेर के परिणामस्वरूप, लोकतांत्रिक संस्थाओं में विश्वास अक्सर खत्म हो जाता है और सरकार की वैधता कम हो जाती है, जो पूरे समाज में विभाजन को और मजबूत करती है।”<sup>4</sup>

विभिन्न देशों और क्षेत्रों में स्वार्थी राजनीति के प्रकट होने के तरीकों की जांच के माध्यम से कालिया इस घटना के वैश्विक पहलुओं की जांच करती है। वह राजनीतिक संस्कृतियों के बीच तुलना करती है जिसमें स्वार्थी कार्यों को आदर्श माना जाता है और वास्तविक परिवर्तन और समावेशी विकास को पूरा करने के संदर्भ में इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों के बीच। “कालिया न केवल स्वार्थ से प्रेरित राजनेताओं द्वारा किए जाने वाले नुकसान की आलोचना करती है, बल्कि वह संरचनात्मक परिवर्तनों और नागरिक जीवन में अधिक भागीदारी की भी वकालत करती है। वह लोकतांत्रिक संस्थाओं के निर्माण, पारदर्शिता और जवाबदेही उपायों को बढ़ाने और नैतिक नेतृत्व और सार्वजनिक सेवा को महत्व देने वाली संस्कृति को बढ़ावा देने की समर्थक है। कालिया का मानना है कि स्वार्थी राजनीति के नकारात्मक परिणामों को कम करना और एक ऐसे समाज की ओर प्रगति करना संभव है जो अधिक निष्पक्ष और न्यायसंगत हो, अगर कोई अधिक समावेशी और उत्तरदायी राजनीतिक माहौल बनाने के लिए काम करता है। राजनीति की जांच के परिणामस्वरूप पाठकों को सरकार में शक्ति विशेषाधिकार और जिम्मेदारी की अस्थिर

वास्तविकताओं का सामना करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। उनका कार्य वार्तालाप और कार्रवाई के लिए उत्प्रेरक का काम करता है, जिसका लक्ष्य ऐसी राजनीतिक संस्थाओं का निर्माण करना है जो अधिक मजबूत और नैतिक हो तथा जो सभी लोगों के सामूहिक कल्याण और आकांक्षाओं को महत्व दे।”<sup>5</sup>

## 5.2 गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव

ममता कालिया के काम में अक्सर गाँधीवादी सिद्धांत का गहरा प्रभाव दिखता है, उनकी कहानियों में सादगी, सामाजिक न्याय और अहिंसा के विषय शामिल हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि गाँधीवादी विचारधारा बहुत प्रभावशाली है। कालिया द्वारा लिखी गई कहानियों में एक गहन नैतिक और नैतिक अंतर्धारा है जो उनके पात्रों के कार्यों और परिस्थितियों को प्रभावित करती है। यह अंतर्धारा महात्मा गाँधी द्वारा अपनाए गए मूल्यों से ली गई है। ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को कालिया द्वारा दिया जाने वाला महत्व गाँधीवादी सिद्धांत की सबसे प्रमुख विशेषताओं में से एक है जिसे उनके साहित्य में देखा जा सकता है। जब व्यक्तिगत लाभ और समाज की भलाई के बीच तनाव को प्रबंधित करने की बात आती है, तो उनके पात्र खुद को नैतिक निर्णय और नैतिक निर्णय लेने की स्थिति में पाते हैं। कालिया ने व्यक्तिगत व्यवहार और सार्वजनिक जीवन दोनों में मार्गदर्शक मूल्यों के रूप में ईमानदारी सत्यनिष्ठा और निस्वार्थता के महत्व पर जोर दिया है क्योंकि उन्होंने जो साहसिक कार्य किए हैं कालिया का काम आम तौर पर केंद्रित होता है, जो अपेक्षित आबादी के सशक्तिकरण के लिए गाँधी की लड़ाई की याद दिलाता है। “वह अपने उपन्यासों में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले व्यक्तियों के चरित्र-चित्रण के माध्यम से समाज में मौजूद अन्याय और असमानताओं पर ध्यान केंद्रित करती है। कालिया इन अनुभवों के माध्यम से सहानुभूति और एकजुटता को प्रेरित करती है और वह अपने काम के माध्यम से एक ऐसे समाज के निर्माण की दिशा में सहयोगी प्रयास का आह्वान करती है जो अधिक समतावादी और समावेशी हो।”<sup>6</sup>

मानवीय अंतःक्रियाओं और सामाजिक चुनौतियों का कालिया का चित्रण अहिंसा की अवधारणा के साथ शक्तिशाली रूप से प्रतिध्वनित होता है, जो गाँधीवादी दर्शन का एक और मौलिक सिद्धांत है। उनके पात्र अक्सर मुद्दों को हल करने के लिए शांतिपूर्ण तरीकों की तलाश करते हैं, संचार के पक्ष में आक्रामक और टकराव वाले तरीकों से बचते हैं और दूसरे पक्ष की समझ विकसित करते हैं। यह विषयगत सूत्र

कठिनाई पर काबू पाने की प्रक्रिया में करुणा और सुलह की परिवर्तनकारी शक्ति में कालिया के विश्वास को उजागर करता है। “गाँधीवादी दर्शन की एक विस्तृत जाँच ममता कालिया की कल्पना द्वारा प्रदान की जाती है, जो विभिन्न दृष्टिकोणों से सत्य सामाजिक न्याय, अहिंसा और सहानुभूति जैसी अवधारणाओं को एक साथ बुनती है। कालिया न केवल अपनी लिखी कहानियों के माध्यम से गाँधी के विचारों के प्रति सम्मान प्रकट करती है, बल्कि वह पाठकों को आधुनिक समय में इन अवधारणाओं की निरन्तर प्रासंगिकता तथा व्यक्तियों के जीवन और समग्र रूप से समाज में अच्छे बदलाव लाने की उनकी क्षमता पर चिंतन करने के लिए भी प्रोत्साहित करती है।”<sup>7</sup>

गाँधीवादी विचारधारा धार्मिक और सामाजिक विचारों का समूह है जिसे महात्मा गाँधी ने अपनाया और विकसित किया, सबसे पहले 1893-1914 तक दक्षिण अफ्रीका में और बाद में भारत में। महात्मा गाँधी सत्य और शांति के मंत्री की तरह थे। उनका उन पर दृढ़ विश्वास था। उन्होंने कहा कि शांति ही मानव जाति का नियम है। उनके अनुसार सत्य में ईश्वर है। सत्य को आराधना और शांति के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इन सभी को गाँधी की विचारधारा कहा जाता है। गाँधी जी ने सत्याग्रह का प्रयोग संकटों का सामना करने तथा राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किया। इसका उद्देश्य स्वयं को परास्त करना है लेकिन मस्तिष्क को चोट नहीं पहुँचाना है। इससे विरोधी का मस्तिष्क जीता जाता है तथा उसकी आत्मा को झकझोरा जाता है। गाँधी ने सत्याग्रह के लिए असहयोग, सामूहिक विद्रोह तथा उपवास आदि अनेक तरीकों का उल्लेख किया है। गाँधी जी सरल राजनीतिक जीवन चाहते थे। “उनके अनुसार लक्ष्य तथा साधन के बीच मधुर संबंध है। यदि लक्ष्य धार्मिक है, तो साधन भी नैतिक होने चाहिए। गाँधी जी ने स्पष्ट रूप से माना है कि राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पवित्र साधन आवश्यक है। गाँधी जी ने स्पष्ट रूप से मतदाता प्रणाली पर विश्वास किया। वे प्रतिनिधि संस्थाओं के पक्षधर थे। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रशासन को लोगों की इच्छा के अनुसार ही काम करना चाहिए। गाँधी जी समाज के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने हरिजनों के उत्थान के लिए जोरदार तरीके से काम किया वे आम तौर पर उनके इलाकों में रहते थे। वे उनके साथ बैठकर खाना खाते थे।”<sup>8</sup>

गाँधी जी एक महान समाज सुधारक भी थे। उन्होंने शराब के सेवन, बाल विवाह और दास प्रणाली के खिलाफ लड़ाई लड़ी। गाँधी जी ने स्वदेशी का समर्थन किया और उसका पालन भी किया। उन्होंने सभी अनुयायियों को खादी पहनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने चरखे की सार्वजनिक छवि को हाथ के काम का प्रतीक बनाया। उन्होंने विदेशी उत्पादों का बहिष्कार किया और ऐसी दुकानों पर धरना दिया। गाँधी जी मानवता की बंधुता में पूरी तरह विश्वास करते थे वह सभी से प्यार करते थे। उनका मानना था कि हिन्दू मुस्लिम एकता देश की प्रगति के लिए जरूरी है। महात्मा गाँधी हमेशा व्यावसायिक शिक्षा पर जोर देते थे। उनका मानना था कि सभी को जीडीपी में योगदान करने में सक्षम होना चाहिए। वह चाहते थे कि बड़े पैमाने पर विनिर्माण न हो, बल्कि आम जनता द्वारा उत्पादन हो।

गाँधीजी की विचारधारा का प्रभाव ममता कालिया के 'दुःख-सुख' उपन्यास में प्रमुखता से दिखाई पड़ता है। उन्होंने तत्कालीन परिवेश को यहाँ चित्रित किया है। 'दुःख-सुख' उपन्यास का नायक 'कविमोहन' गाँधीजी से प्रभावित होता है। कविमोहन ने अंग्रेजी में एम.ए. किया वह पिता के पुश्तैनी व्यापार को अपना नहीं चाहता था। जब वह एम.ए. कर रहा था उस समय मथुरा में गाँधीजी की विचारधारा नौजवानों को प्रभावित कर रही थी "वह समय गाँधीजी के आदर्शों का भी समय था। मथुरा के नौजवानों में गाँधीवादी विचारों का गहरा आदर था। देश की आजादी के लिए मर मिटने का एक सीधा-सादा नक्शा था जो हरेक की समझ में आता-खादी पहनों, ब्रह्मचर्य से रहो, नमक बनाओ, सरकारी नौकरियों का बहिष्कार करो। कवि के अंदर ये सभी आदर्श हिलोरे लेते हैं।"<sup>9</sup>

ममता कालिया के कथा साहित्य के मर्म को समझने के लिए उन पर पड़े गाँधीवादी दर्शन के प्रभाव के लिए यहाँ गाँधीवादी विचारधारा को समझना आवश्यक है।

### **प्रमुख गाँधीवादी विचारधाराएँ**

**सत्य और अहिंसा** - "ये गाँधीवादी विचारों के दो मुख्य मानक हैं। गाँधी जी के लिए सत्य शब्द और कर्म में ईमानदारी की सामान्य वास्तविकता है और मामले का शुद्ध तथ्य एक निश्चित वास्तविकता यह परम सत्य ईश्वर है (क्योंकि ईश्वर भी सत्य है) और गहन गुण-नैतिक नियम और संहिता इसका आधार है। शांति साधारण शांति या स्पष्ट हिंसा की कमी से बहुत दूर, महात्मा गाँधी द्वारा सक्रिय प्रेम के रूप में माना

जाता है- प्रत्येक अर्थ में बर्बरता का विपरीत शांति या प्रेम को मानव जाति का सबसे ऊँचा नियम माना जाता है। सत्याग्रह- गाँधी जी ने शांतिपूर्ण गतिविधि के लिए अपनी सामान्य रणनीति को सत्याग्रह कहा। इसका अर्थ है सभी बुरे रूपों उत्पीड़न और धोखाधड़ी के खिलाफ सबसे निर्दोष आत्मा शक्ति की कार्रवाई यह निजी दुःख से विशेषाधिकार प्राप्त करने और दूसरों को नुकसान न पहुँचाने की एक तकनीक है। सत्याग्रह की शुरुआत उपनिषदों में तथा बुद्ध महावीर और टॉलस्टॉय तथा रस्किन सहित अन्य महान लोगों की शिक्षाओं में देखी जा सकती है।”<sup>10</sup>

**सर्वोदय** - व्यापक उत्थान या ‘सभी की प्रगति’ यही शब्द का अर्थ है। इस शब्द को सबसे पहले गाँधी जी ने जॉन रस्किन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर लिखी गई कहानी ‘अनट दिस लास्ट’ की व्याख्या के शीर्षक के रूप में लिखा था।

**स्वराज** - हालाँकि स्वराज शब्द का अर्थ स्वशासन है, लेकिन गाँधी जी ने इसे जीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त महत्वपूर्ण अशांति का तत्त्व प्रदान किया। गाँधी जी के लिए व्यक्तियों के स्वराज का अर्थ लोगों के स्वराज (स्वशासन की सम्पूर्णता था) “इसलिए उन्होंने समझाया कि उनके लिए स्वराज का अर्थ स्वशासन और आत्म-नियंत्रण है और इसे मोक्ष या मुक्ति के समान माना जा सकता है।”<sup>11</sup>

**ट्रस्टीशिप** - यह एक ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा धनी व्यक्ति ट्रस्टों के कानूनी प्रशासक होंगे जो समग्र रूप से व्यक्तियों की सरकारी सहायता का ख्याल रखेंगे। यह मानक गाँधी जी की आध्यात्मिक विकास को दर्शाता है जिसका श्रेय वे कुछ हद तक अपने गहन योगदान और थियोसोफिकल लेखन और भगवद् गीता के अध्ययन को देते हैं।

**स्वदेशी** - ‘स्व’ का अर्थ है स्वयं या अपना और देश का अर्थ है- देश। इसलिए स्वदेश का अर्थ है अपना देश। स्वदेशी अपने देश के लिए वर्णनात्मक संरचना और विध है, लेकिन इसे कई स्थितियों में स्वतंत्रता के रूप में समझा जा सकता है। स्वदेशी, अपने स्थानीय क्षेत्र के भीतर और बाहर रणनीतिक और आर्थिक रूप से कार्य करने पर जोर है। “गाँधीजी का मानना था कि इससे स्वतंत्रता (स्वराज) मिलेगी, क्योंकि भारत पर ब्रिटिश नियंत्रण उसके मूल व्यवसायों के नियंत्रण में स्थापित हो गया था। स्वदेशी भारत की स्वतंत्रता का मार्ग था और इसे चरखे या घूमने वाले पहिये द्वारा संबोधित किया गया था, जो महात्मा गाँधी के सहायक कार्यक्रम का स्थानीय विश्व समूह का केंद्र बिन्दु था।”<sup>12</sup>

**गाँधी और सत्याग्रह** - गाँधी के पास मानव जीवन के बारे में एक समग्र दृष्टिकोण था जिसे केवल नैतिक रूप से जिया जा सकता था। यह नैतिकता उनके जीवन के सभी पहलुओं में व्याप्त थी व्यक्तिगत, राजनीतिक और सामाजिक। सत्याग्रह गाँधी की अहिंसक सक्रियता की तकनीक है। हालांकि गाँधी के लिए यह केवल संघर्ष करने का एक तरीका नहीं था, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका भी था सत्य में जीना, जन्मसिद्ध अधिकार और कर्तव्य। यह केवल एक राजनीतिक तकनीक नहीं थी, बल्कि अस्तित्व का एक सम्पूर्ण कार्यक्रम था, जिसमें उचित भोजन, पोशाक, शाकाहार, ब्रह्मचर्य और स्वच्छता शामिल थे। गाँधी जी सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए सत्याग्रह की तकनीक का इस्तेमाल किया।

सत्याग्रह के अपने सिद्धांत को विस्तार से बताते हुए गाँधी ने ब्रह्माण्ड की मौलिक एकता पर बहुत जोर दिया। उन्होंने मनुष्य को मूल रूप से अच्छा और दैवीय शक्तियों से सम्पन्न माना। सच्चा सत्याग्रह दैवीय चिंगारी को प्रज्वलित कर सकता है जो विरोधी की अंतरात्मा को जगाएगा और उसे नैतिक विश्वास दिलाएगा। हालाँकि यह तभी संभव है जब सत्याग्रही अपने विरोधी का सामना विश्वास के आधार पर अहिंसा से करें, न कि सुविधा के आधार पर अहिंसा (निष्क्रिय प्रतिरोध) से। यही वह अंतर है जिसे गाँधी जी ने 'शक्तिशाली की अहिंसा' (सत्याग्रह) और कमजोर की अहिंसा के बीच किया था।

### **5.3 सत्याग्रह आंदोलन का यथार्थ एवं युद्ध की त्रासदी**

ममता कालिया द्वारा लिखित कथा साहित्य में सत्याग्रह आंदोलन का प्रभाव और युद्ध की त्रासदी के साथ उस आंदोलन का जुड़ाव एक महत्वपूर्ण विषय वस्तु के रूप में ऊपर कर आता है। कालिया के उपन्यास अक्सर सत्याग्रह के मूल्यों को जोड़ता है, जिसमें सत्य अहिंसा और सविनय अवज्ञा शामिल है, युद्ध और युद्ध के विनाशकारी प्रभावों के साथ जो व्यक्तियों और समुदायों दोनों पर पड़ते हैं। कालिया के बनाए गए पात्रों के माध्यम से अहिंसक प्रतिरोध और युद्ध की भयावहता दोनों में निहित नैतिक पहेलियों की खोज करती है। उन लोगों के चित्रण में जो भारतीय व्यक्तिगत बलिदान और दुर्भाग्य के बावजूद भी अहिंसक तरीकों से अत्याचार और अन्याय का मुकाबला करना चुनते हैं, वह सत्याग्रह के मूल्यों से जुड़ती है, जिन्हें महात्मा गाँधी ने आगे बढ़ाया था। कालिया युद्ध की मानवीय लागत और दुःख की

यथार्थवादी तस्वीर पेश करती है, जो लोगों परिवारों, समुदायों पर संघर्ष के विनाशकारी प्रभावों को दर्शाती है। युद्ध की विभीषिका में फंसे लोगों को झेले जाने वाले विस्थापन हानि और दर्द की भयानक वास्तविकता को अक्सर उनकी रचनाओं में दिखाया गया है। ये कहानियाँ हिंसा के कारण होने वाली निरर्थकता और विनाश को दर्शाती हैं। “अपने पात्रों के व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से कालिया युद्ध के मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक पहलुओं में उतरती है, संकट के समय मानव स्वभाव की पेचीदगियों में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। वह दुःख के सामने लचीलापन, अस्तित्व और आशावाद जैसे विषयों की खोज करती है, पाठकों के सामने सशस्त्र संघर्ष की क्रूर वास्तविकता का सामना करने की चुनौती पेश करती है, साथ ही शांति और न्याय प्राप्त करने की दिशा में अदम्य भावना का भी सम्मान भी करती है। ममता कालिया के कथा साहित्य में कठिनाइयों का सामना करते हुए मानवीय बहादुरी, नैतिकता और दृढ़ता की सूक्ष्म जांच प्रस्तुत करता है। वह सत्याग्रह आंदोलन के मूल्यों को त्रासदी के साथ जोड़कर ऐसा करती है। अपनी कहानियों के माध्यम से वह पाठकों को सामाजिक असमानताओं से लड़ने और एक ऐसे ग्रह को बढ़ावा देने के संदर्भ में अहिंसा और करुणा के शाश्वत महत्व पर चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करती है जो अधिक शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण हो।”<sup>13</sup>

सत्याग्रह, उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में गाँधी जी के दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए कानून भंग शुरू करने तक संसार निशस्त्र प्रतिकार अथवा निष्क्रिय प्रतिरोध (पैसिव रेजिस्टेन्स) की युद्धनीति से ही परिचित था। इसकी वजह केवल काले गोरे के बीच भेदभाव था। यदि प्रतिपक्षी की शक्ति हमसे अधिक है तो सशस्त्र विरोध का कोई अर्थ नहीं रह जाता वे अहिंसा को मानते थे इसलिए वे यह लड़ाई लड़ रहे थे। सबल प्रतिपक्षी से बचने के लिए “निःशस्त्र प्रतिकार की युद्धनीति का अवलंब किया जाता था। इंग्लैंड में स्त्रियों ने मताधिकार प्राप्त करने के लिए इसी निष्क्रिय प्रतिरोध का मार्ग अपनाया था। “इस प्रकार प्रतिकार में प्रतिपक्षी पर शस्त्र से आक्रमण करने की बात छोड़कर उसे दूसरे हर प्रकार से तंग करना छल कपट से उसे हानि पहुँचाना अथवा उसके शत्रु से संधि करके उसे नीचा दिखाना आदि उचित समझा जाता था।”<sup>14</sup> गाँधी जी को दुर्नीति पसंद नहीं थी। दक्षिण अफ्रीका में उनके आंदोलन की कार्यपद्धति बिल्कुल भिन्न थी उनका

सारा दर्शन ही भिन्न था अतः अपनी युद्ध नीति के लिए उनको नए शब्द की आवश्यकता महसूस हुई। सही शब्द प्राप्त करने के लिए उन्होंने एक प्रतियोगिता की जिसमें स्वर्गीय मगन लाल गाँधी ने एक शब्द सुझाया सदाग्रह जिसमें थोड़ा परिवर्तन करके गाँधी जी ने इस शब्द को स्वीकार किया।

प्रस्तुत उपन्यास में ममता जी ने विस्तार से 'सत्याग्रह' को स्पष्ट किया है। सत्याग्रह आंदोलन का प्रभाव सम्पूर्ण देश में व्याप्त हो गया था, देश के सभी स्त्री, बच्चे, नौजवानों में सत्याग्रह आन्दोलन की लहर छायी हुई थी। महात्मा गाँधी जी के एक आदेश पर जनता मंत्रमुग्ध हो जाती और सत्याग्रह आन्दोलन में कूद पड़ती। यहाँ तक की छोटे-छोटे बच्चे भी पीछे नहीं रहते। "छठी-सातवीं कक्षा तक पढ़ने वाले बच्चों ने वानर सेना बनायी हुई थी। विदेशी कपड़ा बेचने वाली दुकानों के सामने जाकर शोर मचाकर दुकान बंद करवाना इनका प्रिय काम था। वानर सेना महात्मा गाँधी के नौजवान दल की पिछलग्गू दल थी। विदेशी कपड़ों की होली जलाते समय ये बच्चे इतने जोश में आ जाते कि अपनी सूती कमीज भी उतारकर आग में झोंक देते। जब ये घर पहुँचते इन्हें मार पड़ती लेकिन इनके जोश में कमी न आती।"<sup>15</sup>

"सत्याग्रह शब्द उस प्रक्रिया से मिलता जुलता था 'सत्याग्रह' का मूल अर्थ है सत्य के प्रति आग्रह सत्य को पकड़े रहना और इसके साथ अहिंसा को मानना। अन्याय का सर्वथा विरोध (अन्याय के प्रति विरोध इसका मुख्य वजह था) करते हुए अन्यायी के प्रति वैरभाव न रखना, सत्याग्रह का मूल लक्षण है। हमें सत्य का पालन करते हुए निर्भयतापूर्वक मृत्यु का वरण करना चाहिए और मरते भी जिसके विरुद्ध सत्याग्रह कर रहे हैं, उसके प्रति वैरभाव या क्रोध नहीं करना चाहिए।"<sup>16</sup> 'सत्याग्रह' में अपने विरोधी के प्रति हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। वे अहिंसावादी थे। धैर्य एवं सहानुभूति से विरोधी को उसकी गलती से मुक्त करना चाहिए, क्योंकि जो एक को सत्य प्रतीत होता है, वही दूसरे को गलत दिखाई दे सकता है। धैर्य का तात्पर्य कष्ट सहन से है। इसलिए इस सिद्धांत का अर्थ हो गया, विरोधी को कष्ट अथवा पीड़ा देकर नहीं, बल्कि स्वयं कष्ट उठाकर सत्य का रक्षण। महात्मा गाँधी ने कहा था कि सत्याग्रह में एक-एक पद प्रेम अध्याहत है। सत्याग्रह की संधि में मध्यम पद का लोप है।

गाँधीजी ने लार्ड इंटर के सामने सत्याग्रह की संक्षिप्त व्याख्या इस प्रकार की थी यह ऐसा आंदोलन है जो पूरी तरह सच्चाई पर कायम है और हिंसा के उपायों के एवज में चलाया जा रहा। अहिंसा सत्याग्रह दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है, क्योंकि सत्य तक पहुँचने और उन पर टिके रहने का एकमात्र उपाय अहिंसा ही है। गाँधी जी के शब्दों में अहिंसा किसी चोट को चोट न पहुँचाने की नकारात्मक वृत्तिमात्र नहीं है बल्कि वह सक्रिय प्रेम की विधायक वृत्ति है। सत्याग्रह में स्वयं कष्ट उठाने की बात है- “सत्य का पालन करते हुए मृत्यु के वरण की बात है। सत्य और अहिंसा के पुजारी के शस्त्रागार में ‘उपवास’ सबसे शक्तिशाली शस्त्र है। जिसे किसी रूप में हिंसा का आश्रय नहीं लेता है, उसके लिए उपवास अनिवार्य है। मृत्यु पर्यन्त कष्ट सहन और इसलिए मृत्यु पर्यन्त उपवास भी, सत्याग्रही का अंतिम अस्त्र है। परन्तु अगर उपवास दूसरों को मजबूर करने के लिए आत्मपीड़न का रूप ग्रहण करें तो वह त्याज्य है आचार्य विनोबा जिसे सौम्यतम सत्याग्रह कहते हैं। उस भूमिका में उपवास का स्थान अंतिम है।”<sup>17</sup>

ममता कालिया ने अपने उपन्यास ‘दुःखम-सुखम’ के अन्तर्गत विद्यावती पर गाँधीजी के सत्याग्रह आन्दोलन, स्वाधीनता आन्दोलन का प्रभाव दिखाई देता है। मथुरा नगरी में बसे लाला नत्थीमल के परिवार पर इसका प्रभाव दिखाई देता है। विद्यावती नत्थीमल की पत्नी है। नत्थीमल के रोकने-टोकने के बावजूद भी विद्यावती गाँधीजी की सभाओं में भाग लेती है, चरखा समिति जाने लगती है, खादी पहनती है और अपने पति से छुपकर यह स्वयंसेवकों के लिए आटा इकट्ठा करती है। विद्यावती के साथ-साथ उसके आस-पास की औरतों ने भी ऐसा इंतजाम किया कि- “जब गाँधीजी की विशाल सभा हुई तो यही आटा स्वयंसेवकों के काम आया। जाने कितने नौजवान नौकरी की परवाह न कर स्वाधीनता आन्दोलन में कूद पड़े थे महात्मा गाँधी एक संदेश देते और सब मंत्रमुग्ध होकर उसका पालन करने दौड़ पड़ते हैं। सुबह-सुबह सड़कों पर प्रभात फेरियाँ निकाली जाती। बड़े सुर में गाते हुए सुराजियों का जत्था निकल पड़ता। “नई रखनी सरकार जालिम नई रखनी” कभी जनता के ऊपर नमक बनाने का जुनून सवार हो जाता। सत्याग्रही नौजवान जत्थे बना लेते। हलवाई खुशी-खुशी अपनी कड़ाही और कौंचा दे देते। पुलिस की मौजूदगी में ही नमक बनाने की तैयारी होती और स्वयंसेवक नमक कानून तोड़कर कड़ाही में कौंचा चलाते।”<sup>18</sup> ममता कालिया जी का सम्बन्ध मथुरा से रहा है। अतः उन्होंने अपने

बचपन की स्मृतियों, तत्कालीन परिवेश, राजनीतिक स्थितियों सभी को सत्याग्रह आन्दोलन में अपनी दृष्टि से चित्रित किया है। जिसमें समस्त देशवासियों की भावना, आजादी के संघर्ष, जुनून सब समाहित हैं।

सत्याग्रह एक प्रतिकार पद्धति ही नहीं है, एक विशिष्ट जीवनपद्धति भी है जिसके मूल में अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह अस्तेय, निर्भयता, ब्राह्मचर्य, सर्वधर्म समभाव आदि एकादश वृत्त हैं। जिसका व्यक्तिगत जीवन इन व्रतों के कारण शुद्ध नहीं है, वह सच्चा सत्याग्रही नहीं हो सकता। इसीलिए विनोबा इन व्रतों को सत्याग्रह निष्ठ कहते हैं। “सत्याग्रह और निरुशस्त्र प्रतिकार में उतना ही अंतर है, जितना उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव में। निरुशस्त्र प्रतिकार की कल्पना एक निर्बल के अस्त्र के रूप में की गई है और उसमें अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए हिंसा का उपयोग वर्जित नहीं है, जबकि सत्याग्रह की कल्पना परम शूर के अस्त्र के रूप में की गई है और इसमें किसी भी रूप में हिंसा के प्रयोग के लिए स्थान नहीं है। इस प्रकार सत्याग्रह निष्क्रिय स्थिति में नहीं है। वह प्रबल सक्रियता की स्थिति है। सत्याग्रह अहिंसक प्रतिकार है परंतु वह निष्क्रिय नहीं है।”<sup>19</sup>

अन्यायी और अन्याय के प्रति प्रतिकार का प्रश्न सनातन है। अपनी सभ्यता के विकासक्रम में मनुष्य ने प्रतिकार के लिए प्रमुख चार पद्धतियों का अवलंबन किया-

- ♦ पहली पद्धति है बुराई के बदले अधिक बुराई। इस पद्धति से दण्डनीति का जन्म हुआ जब इससे समाज और राष्ट्र की समस्याओं के निराकरण का प्रयास हुआ तो युद्ध की संस्था का विकास हुआ।
- ♦ दूसरी पद्धति है बुराई के बदले समान बुराई अर्थात् अपराध का उचित दण्ड दिया जाए।
- ♦ तीसरी पद्धति है बुराई के बदले भलाई। यह बुद्ध, ईसा एवं गाँधी आदि संतों का मार्ग है। इसमें हिंसा के बदले अहिंसा का तत्त्व अंतर्निहित है।
- ♦ चौथी पद्धति है बुराई की उपेक्षा।

आचार्य विनोबा कहते हैं- “बुराई का प्रतिकार मत करो बल्कि विरोधी की समुचित चिंतन में सहायता करो। उसके सदविचार में सहकार करो। “शुद्ध विचार करने, सोचने समझने, व्यक्तिगत जीवन में उसका अमल करने और दूसरों को समझाने में ही हमारे लक्ष्य की पूर्ति होनी चाहिए। सामने वाले के सत्यक् चिंतन में

मदद देना ही सत्याग्रह का सही स्वरूप है। इसे ही विनोबा सत्याग्रह को सौम्यतर और सौम्यतम प्रक्रिया कहते हैं। सत्याग्रह प्रेम की प्रक्रिया है उसे क्रम-क्रम अधिकाधिक निखरते जाना चाहिए।”<sup>20</sup> सत्याग्रह कुछ नया नहीं है, कौटुंबिक जीवन का राजनीतिक जीवन में प्रसार मात्र है। गाँधी जी की देन यह है कि उन्होंने सत्याग्रह के विचार का राजनीतिक जीवन में सामूहिक प्रयोग किया। कहा जाता है लोकतंत्र में जहाँ सारा काम “लोक की राय से लोकप्रतिनिधियों के माध्यम से चल रहा है। सत्याग्रह के लिए कोई स्थान नहीं है। विनोबा कहते हैं- वास्तव में सामूहिक सत्याग्रह की आवश्यकता तो उस तंत्र में नहीं होगी, जिसमें निर्णय बहुमत से नहीं, सर्वसम्मति से होगा परन्तु उस दशा में भी व्यक्तिगत सत्याग्रह पड़ौसी के सम्यक् चिंतन में सहकार के लिए तो हो ही सकता है। परंतु लोकतंत्र में जब विचार स्वातंत्र्य और विचारप्रधान के लिए पूरा अवसर है तो सत्याग्रह को किसी प्रकार के दबाव, घेराव अथवा बंद का रूप नहीं ग्रहण करना चाहिए ऐसा हुआ तो सत्याग्रह की सौम्यता नष्ट हो जाएगी। सत्याग्रही अपने धर्म से च्युत हो जाएगा।”<sup>21</sup>

आज दुनिया के विभिन्न कोनों में सत्याग्रह एवं अहिंसक प्रतिकार के प्रयोग निरंतर चल रहे हैं। द्वितीय महायुद्ध में हजारों युद्ध विरोधी सेना में भरती होने के बजाय जेलों में गए हैं। “नीग्रो नेता मार्टिन लूथर किंग के बलिदान की कहानी सत्याग्रह संग्राम की अमर गाथा बन गई है। इटली के डैनिलो डोलची के सत्याग्रह की कहानी किसको रोमांचित नहीं कर जाती। ये सारे प्रयास भले ही सत्याग्रह की कसौटी पर खरे न उतरते हो, परंतु ये शांति और अहिंसा की दिशा में एक कदम अवश्य है।”<sup>22</sup> सत्याग्रह का रूप अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष में कैसा होगा, इसके विषय में आचार्य विनोबा कहते हैं- मान लीजिए, आक्रमणकारी हमारे गाँव में घुस जाता है, तो मैं कहूँगा कि तुम प्रेम से आओ उनसे मिलने हम जाएंगे, डरेंगे नहीं। परंतु वे कोई गलत काम कराना चाहते हैं तो हम उनसे कहेंगे हम यह बात मान नहीं सकते हैं। चाहे तुम हमें समाप्त कर दो। सत्याग्रह के इस रूप का प्रयोग अभी अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए नहीं हुआ है परंतु यदि अणुयुग की विभीषिका से मानव संस्कृति की रक्षा के लिए, हिंसा की शक्ति को अपदस्त करके अहिंसा की शक्ति को प्रतिष्ठित होना है। तो सत्याग्रह के इस मार्ग के अतिरिक्त प्रतिकार का दूसरा मार्ग नहीं है।

## 5.4 आर्थिक विषमता का यथार्थ

ममता कालिया की कहानियाँ व उपन्यास में आर्थिक असमानता की कठोर वास्तविकता को स्पष्ट रूप से व्यक्त करती हैं। कालिया अपनी कहानी के माध्यम से अमीर और वंचितों के बीच मौजूद गहरी खाई को दर्शाती हैं। वह उन तरीकों की ओर ध्यान दिलाती हैं जिनसे समृद्धि और विशेषाधिकार किसी व्यक्ति के जीवन की संभावनाओं और परिणामों को प्रभावित करते हैं। कालिया के उपन्यासों में आर्थिक असमानता को कई तरह से दिखाया गया है। इनमें रहने की परिस्थितियों और बुनियादी जरूरतों तक पहुँच में अत्यधिक असमानताएँ, साथ ही असमान शैक्षिक कार्य संभावनाएँ शामिल हैं जो गरीबी और विशेषाधिकार के चक्र को बनाए रखती हैं। लोगों के अपने चित्रण में वह उन लोगों के बीच तुलना करती हैं जो धन और शक्ति से सुरक्षित हैं, दूसरों के साथ जो दैनिक आधार पर गुजारा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अपने काम में “कालिया आर्थिक असमानता के मनोवैज्ञानिक प्रभाव की खोज करती हैं, यह दर्शाती हैं कि यह कैसे सामाजिक-आर्थिक असंतुलन के परिणाम स्वरूप बहिष्कृत लोगों के बीच क्रोध, अलगाव और अन्याय की भावना को जन्म दे सकती हैं।”<sup>23</sup>

ममता कालिया अपने पात्रों के माध्यम से मानव गरिमा और सामाजिक सामंजस्य पर असमानता के व्यापक प्रभावों पर प्रकाश डालती हैं। उनके पात्रों को अक्सर कठिन नैतिक मुद्दों और नैतिक समझौतों का सामना करना पड़ता है जो उनकी आर्थिक परिस्थितियों द्वारा उन पर थोपे जाते हैं। ममता कालिया ने ‘चोटिन’ कहानी के अन्तर्गत आर्थिक विषमता का यथार्थ चित्रण किया है। ‘चोटिन’ कहानी की नायिका सुखिया अपनी गरीबी के कारण अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं को पूर्ण नहीं कर पाती है। आर्थिक विषमता इस कदर उसके घर में व्याप्त है कि उसके पास पहनने के लिए भी कपड़े नहीं हैं जिसके कारण वह नहाँ भी नहीं पाती। “एक बार उसका मन हुआ, वह नहाँ डाले पर नहाने के लिए उसे फ्रॉक उतारनी पड़ती और जाँघिया उसने पहना हुआ नहीं था। जाँघिया उसके पास था ही नहीं। पिछले हफ्ते से नहीं था। सिर्फ एक तो था, वह भी चिथड़ा होकर खत्म हो गया। फ्रॉक भी तो बस यही है। होली पर जब अम्मा ने खरीदी थी तो इसकी छींट कैसी चमकती थी। अब तो सभी रंग मैल में छिप गए हैं। तीन जगह से सीवन उधड़ गई है। हुक तो पहले ही महीने में गायब हो गये थे।”<sup>24</sup> इस प्रकार ममता कालिया का उद्देश्य पाठकों को सत्ता

की गतिशीलता और सामाजिक संरचनाओं के बारे में परेशान करने वाली वास्तविकताओं का सामना करने के लिए मजबूर करना है जो आर्थिक असमानता के निरंतर अस्तित्व में योगदान करते हैं। जब इन अंतरालों को संबोधित करने और व्यवस्थित परिवर्तन का आह्वान करने की बात आती है, तो वह लोगों और संगठनों के नैतिक और नैतिक कर्तव्यों के बारे में सोच को उकसाती है। ममता कालिया द्वारा लिखी गई काल्पनिक रचनाएँ आर्थिक असमानता की सर्वव्यापी प्रकृति पर एक शानदार प्रतिबिंब के रूप में काम करती हैं। “यह पाठकों को आर्थिक असमानता के मानव जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभावों और एक ऐसे समाज की खेती करने की मौलिक आवश्यकता पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करती है जो अधिक निष्पक्ष और न्यायपूर्ण हो।”<sup>25</sup>

आर्थिक असमानता बलस्तर असमानता और ऐतिहासिक रूप से वंचित आबादी पर आर्थिक परिणामों के विकास के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक स्थिति, नस्ल जातीयता और अन्य कारकों के अंतर्संबंधित मुद्दों के आर्थिक परिणामों पर ध्यान केंद्रित करता है। क्लस्टर अनुसंधान दो प्राथमिक क्षेत्रों में फिर बैठता है। सबसे पहले हम मात्रात्मक और नृवंशिक विधियों का उपयोग करके इस मुद्दे पर साक्ष्य और तथ्य आगे बढ़ा रहे हैं और अंतरिक्ष और समय के साथ असमानता का दस्तावेजीकरण कर रहे हैं। दूसरा क्लस्टर के सदस्य कठोर शोध प्रदान करते हैं जो नीतियों और अन्य कारकों की पहचान करने का प्रयास करते हैं जो असमानता को कम कर सकते हैं और अवसर बढ़ा सकते हैं। इसका सरकारी नीतियों, व्यावसायिक प्रथाओं, परिसंपत्तियों तक पहुँच, परिवहन या वितरण मुद्दों और पर्यावरण संबंधी चिंताओं पर प्रभाव पड़ता है।

1980 से खासकर चीन के पूँजीवादी रास्ते पर चले जाने और 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद से जोर-शोर से समझाया जा रहा था कि उच्च विकास दर ही गरीबी, बेरोजगारी जैसी सभी समस्याओं का एकमात्र हल है। पूरी दुनिया में मतैक्य था कि उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियाँ ही तेज विकास की कुंजी हैं लेकिन गैरबराबरी पर जो वर्तमान चर्चा शुरू है, उसके केंद्र में पिछले कुछ समय से जारी विकास नीतियाँ और उसके परिणाम हैं। “कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार ये नीतियाँ ही न केवल बढ़ती गैरबराबरी के लिए जिम्मेदार हैं, बल्कि इन्हीं नीतियों की उपज 2007-08 का वित्तीय संकट भी था, ऑक्सफैम की

2015 की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि आज की दुनिया के 62 परिवारों के पास कुल आबादी के 50 फीसदी जितनी संपत्ति है। इन 62 परिवारों की संपत्ति दुनिया के 350 करोड़ आबादी की संपत्ति के बराबर है।<sup>26</sup> इसी प्रकार “पिछले 30 सालों में कई देशों में विषमता बहुत तेजी से बढ़ी है। अमेरिका में ऊपर के 1 प्रतिशत लोगों को जाने वाला राष्ट्रीय आय का हिस्सा 1980 में 10 प्रतिशत था। वह अब दोगुना होकर 20 प्रतिशत तक पहुँच गया है। यह कोई अमेरिका या अमीर देशों की ही कहानी नहीं है। चीन में ऊपरी 10 लोग तकरीबन 60 प्रतिशत आय के मालिक है।”<sup>27</sup> कुछ ऐसी तस्वीर भारत की भी है। अक्टूबर 2015 में क्रेडिट सुइस (भारत में कार्यरत एक वित्तीय सेवा कंपनी) द्वारा जारी रिपोर्ट में बताया गया है कि चोटी के दस प्रतिशत व्यक्ति भारत में 76 संपत्ति के मालिक है। चर्चित दुनिया के सबसे धनी 62 परिवारों की सूची में हमारे देश के चार परिवार मुकेश अंबानी, अजीज प्रेमजी, दलीप सांघवी तथा पलोनजी मिस्त्री शामिल है। आर्थिक विषमता से सामाजिक संदर्भों में देखा जाये तो प्रभाव पड़ता है, आपसी सद्भाव, आक्रोश, अपराध पनपते हैं। सामाजिक सोहार्द समाप्त होता है। आर्थिक विषमता के कारण कई लोग हीन भावना के शिकार हो जाते हैं। आर्थिक अभाव में विकास की गति अवरुद्ध होती है। कई बार आवश्यक वस्तुओं से वंचित होना पड़ता है। आर्थिक मंदी बढ़ती है ममता कालिया ने अपने कथा साहित्य में इन कारणों का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया है। यहाँ ‘अपने शहर की बतियाँ’, ‘वर्दी’, ‘चोटिटन’, ‘जाँच अभी जारी है’ आदि कहानियाँ उल्लेखनीय है।

बढ़ती विषमता के विरुद्ध एक नैतिक तथा मानवीय तर्क तो हमेशा से ही रहा है। वास्तव में सभी महत्वपूर्ण दार्शनिकों तथा धर्मों ने धन का पीछा करने के खिलाफ चेतावनी दी है तथा उसे कम भाग्यशाली सदस्यों के साथ साझा करने की सलाह दी है। कुरान ने सूदखोरी पर रोक लगाई और अमीर समुदाय को अपनी संपत्ति के एक हिस्से को बाँटने की भी सलाह दी। गाँधी जी ने कहा था “पृथ्वी हर आदमी की जरूरत को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन एक भी इंसान के लालच को पूरा नहीं कर सकती।” वैसे भी स्वतंत्रता, मातृत्व और समानता का नारा सन् 1789 की फ्रांसीसी क्रांति के बाद से ही मानवता की धरोहर रहा है और दुनिया के मेहनतकश लोगों को प्रेरणा देता रहा है। “मार्क्सवादी, समाजवादी विचारधारा से प्रेरित बुद्धिजीवी, कार्यकर्ता तो बढ़ती विषमता के विरुद्ध हमेशा से ही कहते रहे हैं कि पूँजीवाद अति लाभ की अपनी चाह में ऐसे असाध्य अंतर्विरोधों को जन्म देता है कि ऐसी समाज

व्यवस्था का ध्वंस और एक समाजवादी व्यवस्था से उसका प्रतिस्थापन अनिवार्य है लेकिन आज जब पूँजीवाद अपने चरम पर है, नेता तथा बुद्धिजीवियों का वर्ग चिंतित भी है। बढ़ती विषमता आर्थिक मंदी को जन्म देती है। ऐसा इसलिए क्योंकि अधिक लोगों की गरीबी माँग को कमजोर करती है और यदि माँग ही नहीं होगी तो उत्पादक बेचेगा किसे और लाभ कहाँ से कमाएगा।”<sup>28</sup>

यह देखा गया है कि जब भी विषमता में तेजी से बढ़ोतरी हुई है, अर्थव्यवस्था में मंदी का दौर आया है। 1930 के दशक की महामंदी एक हद तक बढ़ते लालच और गहराती विषमता का ही परिणाम थी। अमेरिका में मंदी से मुक्ति के लिए राष्ट्रपति रूजवेल्ट के ‘न्यू डील’ प्रोग्राम के अंतर्गत असमानता और निहित स्वार्थों पर लगाम लगाई थी। ये कदम बाद में यूरोप में भी दोहराए गए। इन कदमों ने पश्चिमी दुनिया में अगले तीन दशक के आर्थिक विकास और खुशहाली की नींव रखी। पर्यावरण की रक्षा की अनिवार्य शर्त है कि ग्रीनहाउस गैसों विशेषकर कार्बन के उत्सर्जन में भारी कटौती की जाए, जिसके लिए जीवाश्म ईंधन (कोयला, पेट्रोल डीजल तथा प्राकृतिक गैसों) के इस्तेमाल में भारी कटौती की जरूरत है लेकिन लाभ की हवस में मुनाफाखोरों ने ऊँची क्रयशक्ति वाले मुट्ठीभर धनाढ्यों में अमर्यादित भोग-विलास की संस्कृति को खूब बढ़ावा दिया है। धनी उच्च वर्ग कार्बन के उत्सर्जन में नित नया मानक बनाता है। अनुमान है कि अमेरिका में ऊपरी आबादी के लोग आम अमेरिकी आबादी के मुकाबले 10,000 गुना ज्यादा कार्बन का इस्तेमाल करते हैं। दूसरी तरफ गरीबी भी पर्यावरण के विनाश में योगदान करती है। गरीब लोगों के पास इसके सिवा कोई चारा नहीं होता कि वे ईंधन की अपनी जरूरतों के लिए वन संपदा का दोहन करें। विश्व बैंक के शोध दर्शाते हैं कि समान समाजों में पर्यावरण की बेहतर रक्षा हो सकती है। वे कार्बन के उत्सर्जन में महत्वपूर्ण कटौती कर सकते हैं।

बढ़ती असमानता सामाजिक विभाजन को बढ़ाती है। यदि आप बढ़ते हुए विषम-समाज में गरीब परिवार में पैदा हुए हैं तो तय है कि आप उस दशा को पार नहीं कर पाएंगे। राज्य द्वारा दी जाने वाली सामाजिक सेवाएँ जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य में कटौती यह निश्चित कर देती है कि एक गरीब परिवार में पैदा हुआ इंसान गरीबी की बेड़ियों को काट नहीं पाएगा आजादी के बाद हमारा अपना अनुभव इसका गवाह है। “हम में से कितने लोग गरीबी से मुक्ति पाकर आज सार्थक जीवन व्यतीत कर पा रहे हैं, तो इसका श्रेय सीमित ही सही, राज्य पोषित शिक्षा और

स्वास्थ्य तथा अन्य सुविधाओं को जाता है।<sup>29</sup> समाज में बढ़ती गैर-बराबरी राज और समाज नीति पर धनी वर्ग का वर्चस्व स्थापित करती है। यह स्थिति कई नकारात्मक प्रवृत्तियों को पैदा करती है। बढ़ती असमानता कई अलग-अलग सामाजिक बुराइयों जैसे हिंसा, वेश्यावृत्ति, मानसिक स्वास्थ्य अपराध के लिए एक हद तक जिम्मेदार है और समाज में सामाजिक तनाव और अशांति को जन्म देती है। ममता कालिया ने जीवन के इस कटु यथार्थ को अपने कथा साहित्य में शब्दबद्ध किया है। परिवेश के चित्रण के साथ उन्होंने आर्थिक संघर्ष और उससे बढ़ते असंतोष को कई कहानियों में चित्रित किया है। 'वर्दी', 'रोशनी की मार', 'एक अकेला दुख', 'मनहूसाबी', 'आहार', इसी प्रकार की कहानियाँ हैं।

कोई आश्चर्य नहीं कि यह असमानता आज दुनिया के प्रभावशाली लोगों को वर्तमान स्थायित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा लगता है। जब आईएमएफ के अध्यक्ष और बैंक ऑफ इंग्लैंड के गवर्नर माँग करते हैं कि "इस गैरबराबरी पर लगाम लगाने के लिए कुछ किया जाना चाहिए, वरना स्थायित्व को खतरा है, तो स्पष्ट है कि शासक वर्ग को गैर बराबरी से पैदा होने वाली हड़ताल विद्रोह या क्रांति की आशंकाएँ परेशान कर रही हैं।"<sup>30</sup> इस प्रकार कहा जा सकता है कि दुनिया में आर्थिक विषमता व्याप्त है।

## 5.5 मध्यमवर्गीय परिवारों की आर्थिक स्थिति

मध्यमवर्गीय परिवारों की आर्थिक स्थिति की ममता कालिया की जांच समकालीन समाज के भीतर उनकी चुनौतियों और महत्वाकांक्षाओं की सूक्ष्म समझ प्रदान करती है। अपने गहन विश्लेषण के माध्यम से वह उस महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालती है जो मध्यम वर्ग की आर्थिक स्थिरता और सामाजिक एकजुटता में निभाता है। कालिया मध्यमवर्गीय परिवारों द्वारा की जाने वाली जटिलताओं पर प्रकाश डालती हैं, जो हमेशा स्वयं को उर्ध्वगामी गतिशीलता की आकांक्षाओं और आर्थिक बाधाओं की वास्तविकताओं के बीच भटकते हुए पाते हैं। वह पता लगाती है कि कैसे मुद्रास्फीति, स्थिर मजदूरी और बढ़ती रहने की लागत जैसे कारक घरेलू वित्त पर दबाव डाल सकते हैं, जिससे बचत शिक्षा, खर्च और जीवन को समग्र गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है।

ममता कालिया राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्थाओं पर मध्यम वर्ग के आर्थिक स्वास्थ्य के व्यापक प्रभावों पर भी प्रकाश डालती है। वह चर्चा करती है कि कैसे उनके उपभोग पैटर्न आर्थिक विकास और स्थिरता को संचालित करते हैं और उन नीतियों के महत्व पर जोर देते हैं जो उनकी वित्तीय सुरक्षा और उध्वगामी गतिशीलता का समर्थन करते हैं। कालिया का काम मध्यम वर्ग के भीतर सामाजिक-आर्थिक विविधता को भी संबोधित करता है, यह पहचानते हुए कि जहाँ कुछ परिवार सापेक्ष आराम का अनुभव कर सकते हैं। वहीं अन्य आर्थिक अनिश्चितताओं के सामने पैर जमाने के लिए संघर्ष करते हैं। “वह ऐसी नीतियों की वकालत करती है जो मध्यम वर्ग को बढ़ावा देने और उनकी निरंतर सामाजिक-आर्थिक उन्नति सुनिश्चित करने के लिए समावेशी विकास, किफायती आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच को बढ़ावा देती है।”<sup>31</sup> ममता कालिया द्वारा मध्यम वर्गीय परिवारों की आर्थिक स्थिति की खोज सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है। उनकी अंतर्दृष्टि इन परिवारों के सामने आने वाली चुनौतियों की गहन समझ को प्रोत्साहित करती है और ऐसी नीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करती है जो समाज के सभी वर्गों के लिए समावेशी समृद्धि और समान अवसरों को बढ़ावा देती है।

सामाजिक वर्ग एक महत्वपूर्ण कारक है जो अन्य चीजों के अलावा किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवनशैली को प्रभावित करता है। हालांकि कोई मानक आय आधारित पैमाना नहीं है जो अध्ययनों में तुलना के लिए व्यक्तियों को विभिन्न सामाजिक वर्गों में वर्गीकृत कर सके। सामाजिक वर्ग आय, शिक्षा और व्यवसाय के आधार पर आर्थिक और सामाजिक स्थिति को दर्शाता है। किसी वर्ग को स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित करता है। क्योंकि उच्च वर्गों के पास अधिक संसाधन होते हैं, जबकि निम्न वर्गों का स्वास्थ्य खराब करने वाली बाधाओं का सामना करना पड़ता है। “इन बाधाओं में सीमित स्वास्थ्य देखभाल पहुँच, अधिक जोखिम और वित्तीय सामाजिक तनाव शामिल हैं। वर्गों को आय, शिक्षा जैसे उपायों से वस्तुनिष्ठ रूप से और व्यक्तिपरक रूप से भी अलग किया जाता है। हालांकि स्पष्टता की कमी के कारण जटिलता कभी-कभी अस्पष्टता का कारण बनती है। इस

बात पर अभी भी बहस जारी है कुल मिलाकर, मध्यम वर्ग उच्च और निम्न वर्गों के बीच सामाजिक आर्थिक मध्य में रहता है। क्षेत्र के आधार पर सामाजिक वर्ग को परिभाषित करने के अलग-अलग तरीके हैं।<sup>32</sup>

ममता कालिया ने अपनी कहानियों में स्वास्थ्य, कुपोषण का चित्रण किया है 'नया त्रिकोण' कहानी में वृद्धावस्था में होने वाली समस्याओं को दिखाया है किस प्रकार उम्र के ढलने पर मानव शरीर बीमारियों से घिर जाता है। इसी तरह 'राजू' कहानी में ममता कालिया ने एक छह साल के बच्चे की स्थिति का चित्रण किया है। माँ की छोटी सी गलती के कारण राजू की एक आँख चली जाती है, राजू की अम्मा ने उसकी एक आँख में ही दवाई डाली थी कि अचानक राजू दर्द के मारे छटपटा गया। "गलती से आले में रखी टिंकचर, आयोडीन टपका दी थी अम्मा ने। उन्होंने आँख को ठण्डे पानी से बहुत धोया, बहुत फूँका पर राजू की यंत्रणा कम न हुई। डॉक्टर की सारी कोशिश के बावजूद राजू की बायीं आँख की रोशनी गुल होती गयी पुतली भी अपनी जगह सरक गयी।"<sup>33</sup> इस प्रकार ममता कालिया ने अपने साहित्य में पात्रों के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है।

किसी भी देश में सामाजिक वर्ग का निर्धारण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। वर्गों में संसाधनों के वितरण को जानने से सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में अंतर्दृष्टि मिलती है। इससे नीति निर्माताओं को असमानताओं की पहचान करने और उनके सामाजिक वर्ग के आधार पर कमजोर समूहों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लक्षित कार्यक्रम विकसित करने की अनुमति मिलती है। सामाजिक वर्ग को धारणाओं के आधार पर व्यक्तिपरक रूप से या व्यवसाय, शिक्षा और आय जैसे मापने योग्य मानदण्डों का उपयोग करके वस्तुनिष्ठ रूप से निर्धारित किया जा सकता है। अधिकांशतः समाजशास्त्री इन चारों के संबंध में व्यक्तियों की स्थिति के अनुसार वर्गीकृत करने की वस्तुनिष्ठ विधि को प्राथमिकता देते हैं।

सामाजिक वर्ग का निर्धारण एक जटिल कार्य है, क्योंकि यह शिक्षा और सांस्कृतिक पूँजी जैसे आय से परे कारकों से प्रभावित होता है। उच्च आय लेकिन सीमित शिक्षा या सांस्कृतिक पूँजी वाला कोई व्यक्ति निम्न वर्ग से संबंधित हो सकता है। अपूर्ण होते हुए भी आय का उपयोग हमेशा बड़े अध्ययनों में एक प्रॉक्सी के रूप में किया जाता है जहाँ अन्य डेटा सीमित होता है।

सामाजिक वर्ग के स्तरीकरण के अन्तर्गत बायोमेडिकल अध्ययनों में तुलना करते समय सामाजिक वर्ग अक्सर एक महत्वपूर्ण कारक होता है। सामाजिक वर्ग को परिभाषित करने के लिए दो मुख्य दृष्टिकोणों का उपयोग किया जाता है। पहले में एक धन सूचकांक की गणना करना शामिल है, जो घरेलू सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रॉक्सी उपाय के रूप में कार्य करता है। धन सूचकांक एक समग्र, बहुआयामी संकेतक है जो संपत्ति के स्वामित्व पर जानकारी को शामिल करता है। यह डेटा को धन पंचम द्वारा अलग करने की अनुमति देता है, जिससे सेवाओं और स्वास्थ्य परिणामों तक पहुँच के मामले में कुछ जनसंख्या खण्डों को असमान रूप से प्रभावित करने वाले मुद्दों को उजागर करने में मदद मिलती है। हालांकि धन सूचकांक का निर्माण करने के लिए विभिन्न परिसंपत्तियों पर विस्तृत डेटा की आवश्यकता होती है, जो इसमें लगने वाले समय के कारण उत्तरदाताओं को रोक सकता है। दूसरा दृष्टिकोण मध्यम वर्ग के आधार पर सामाजिक वर्ग स्तरीकरण पर विचार करता है। “यह विधि उच्च और निम्न वर्गों को परिभाषित करने के लिए बेंचमार्क के रूप में कार्य करती है। चूंकि इसमें अपेक्षाकृत कम जानकारी की आवश्यकता होती है। इसलिए यह शोध उद्देश्यों के लिए व्यावहारिक उपकरण प्रदान करता है। मध्यम वर्ग के संदर्भ में सामाजिक वर्ग को परिभाषित करने से सीमित डेटा संग्रह का उपयोग करके सामाजिक वर्ग श्रेणियों का निर्माण करने की अनुमति मिलती है। दोनों विधियों में गुण है, लेकिन बाद वाला तब बेहतर हो सकता है जब समय या डेटा की कमी सामाजिक वर्ग को एक कारक के रूप में शामिल करने वाले अध्ययनों के लिए चिंता का विषय हो। यह न्यूनतम व्याख्यात्मक चर का उपयोग करके एक व्यवहार्य विकल्प प्रदान करता है।”<sup>34</sup> ममता कालिया के कथा साहित्य में आर्थिक असमानता, सामाजिक समस्याएँ सभी का यथार्थ चित्रण उपर्युक्त संदर्भों में सूक्ष्मता से किया गया है।

मध्यम वर्ग की एक परिभाषा जिसे शोध में लागू किया गया है, वह राष्ट्रीय औसत आय के स्तर के आस-पास प्रतिशत सीमा पर आधारित है। विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में किए गए एक अध्ययन में मध्यम वर्ग को उन लोगों के रूप में परिभाषित किया जिनकी आय राष्ट्रीय औसत आय के 75-125 के बीच होती है। यद्यपि इस परिभाषा को विकसित देश के संदर्भ में विकसित और परीक्षण किया गया था 2010 के एक अन्य अध्ययन ने भी इसी परिभाषा को विकासशील देशों पर लागू किया जब उनकी मध्यम वर्ग की आबादी को चिह्नित करने का प्रयास किया गया। इस परिभाषा के तहत मध्यम वर्ग में उन नागरिकों को शामिल किया गया है।

## 5.6 अंतर्द्वंद्व व तनाव

संघर्ष और तनाव ममता कालिया की कहानियों में व्याप्त है, जो उनकी कहानियों को जटिलता और भावनात्मक गहराई की परतों से समृद्ध करते हैं। चाहे पारस्परिक संबंधों की खोज हो या व्यापक सामाजिक गतिशीलता की कालिया दबाव में मानवीय अंतःक्रियाओं की पेचीदगियों को कुशलता से दर्शाती है। अपने उपन्यासों में कालिया अक्सर कई स्तरों पर संघर्ष को चित्रित करती है। नैतिक दुविधाओं से जूझते पात्रों के भीतर आंतरिक संघर्ष या सामाजिक विभाजनों द्वारा संचालित बाहरी टकराव। ये संघर्ष चरित्र विकास के लिए उत्प्रेरक का काम करते हैं, उनकी कमजोरियों, इच्छाओं और प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने में उनके द्वारा किए गए विकल्पों को प्रकट करते हैं। पारस्परिक स्तर पर कालिया अपने पात्रों के बीच गलतफहमियों, विश्वासघात और अलग-अलग दृष्टिकोणों से उत्पन्न संघर्षों की खोज करती है। ये तनाव, प्रेम हानि और लालसा के सार्वभौमिक विषयों को उजागर करते हैं, जो मानवीय संबंधों की नाजुकता और लचीलेपन में मार्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। ममता कालिया सामाजिक अन्याय, राजनीतिक उथल-पुथल और सांस्कृतिक टकराव जैसे मुद्दों पर विचार करते हुए व्यापक सामाजिक तनावों में उतरती है। उनकी कहानियाँ विचारधाराओं परंपराओं और आकांक्षाओं के टकराव को दर्शाती हैं जो सामाजिक कलह को बढ़ावा देती हैं और सामूहिक पहचान को आकार देती हैं। इन संघर्षों के माध्यम से कालिया पाठकों को सत्ता की गतिशीलता, प्रणालीगत असमानता और अपूर्ण दुनिया में न्याय की खोज के बारे में असहज सच्चाइयों का सामना करने के लिए प्रेरित करती है। कालिया के उपन्यासों में तनाव न केवल कथानक को आगे बढ़ाता है बल्कि मानवीय अनुभव की जटिलताओं के बारे में आत्मनिरीक्षण और संवाद को भी भड़काता है। “संघर्ष का सीधा सामना करके, वह पाठकों को विविध दृष्टिकोणों से सहानुभूति रखने, दबाव में किए गए विकल्पों के परिणामों पर विचार करने और लचीलेपन और सामंजस्य की परिवर्तनकारी क्षमता की सराहना करने के लिए आमंत्रित करती है। ममता कालिया की अपनी कहानियों में संघर्ष और तनाव की खोज महज कहानी कहने से परे है, जो मानवीय स्थिति और हमारे जीवन को आकार देने वाली ताकतों के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। उनकी कहानियाँ सार्वभौमिक संघर्षों और आकांक्षाओं पर शक्तिशाली प्रतिबिंबों के रूप में प्रतिध्वनित होती हैं।”<sup>35</sup>

तनाव के बगैर जिंदगी की कल्पना नहीं की जा सकती है। एक हद तक मनोवैज्ञानिक तनाव हमारे जीवन का एक ऐसा हिस्सा होता है, जो सामान्य व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक साबित हो सकता है। हालांकि यदि ये तनाव अधिक मात्रा में उत्पन्न हो जाए तब मनोचिकित्सा की आवश्यकता पड़ सकती है अन्यथा ये आपको मनोवैज्ञानिक रूप से बीमार बना सकते हैं और आप में मनोव्यथा उत्पन्न कर सकते हैं। सामान्यतः असामान्य मनोविज्ञान पर तनाव के महत्व का अच्छा प्रमाण पाया गया है। यद्यपि इससे पैदा होने वाले विशेष जोखिम और सुरक्षात्मक प्रणालियों के बारे में अधिक जानकारी नहीं है। नकारात्मक या तनावपूर्ण जीवन की घटनाओं से कई प्रकार के मानसिक व्यवधान पैदा होते हैं। जिनमें मूड़ तथा चिंता से जुड़े व्यवधान शामिल हैं। यौन शोषण, शारीरिक दुर्व्यवहार, भावनात्मक दुर्व्यवहार घरेलू हिंसा तथा डराने-धमकाने समेत बचपन और वयस्क उक्त में हुए दुर्व्यवहार को मानसिक व्यवधान के कारण माने जाते हैं जो एक जटिल सामाजिक, पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक तथा जैव वैज्ञानिक कारकों के जरिए पैदा होते। मुख्य खतरा ऐसे अनुभवों के लंबे समय तक जमा होने से पैदा होता है, हालांकि कभी-कभी किसी एक बड़े आघात से भी मनोविकृति उत्पन्न हो जाती है, जैसे जैव। ऐसे अनुभवों के प्रति लचीलेपन में अंतर देखा जाता है और व्यक्ति पर किन्हीं अनुभवों के प्रति कोई असर नहीं पड़ता, पर कुछ अनुभव उनके लिए संवेदनशील साबित होते हैं। लचीलेपन में भिन्नता से जुड़े लक्षणों में शामिल हैं- जेनेटिक संवेदनशीलता, स्वभावगत लक्षण, प्रज्ञान समूह, उबरने के पैटर्न तथा अन्य अनुभव।

तनाव को किसी ऐसे शारीरिक, रासायनिक या भावनात्मक कारक के रूप में समझा जा सकता है, जो शारीरिक या रासायनिक कारक जो तनाव पैदा कर सकते हैं- “तनाव के भावनात्मक कारक तथा दबाव कई सारे हैं और अलग-अलग प्रकार के होते हैं। कुछ लोग जहाँ ‘स्ट्रेस’ को मनोवैज्ञानिक तनाव से जोड़कर देखते हैं तो वही वैज्ञानिक और डॉक्टर इस पद को ऐसे कारक के रूप में दर्शाने में इस्तेमाल करते हैं जो शारीरिक कार्यों की स्थिरता तथा संतुलन में व्यवधान पैदा करता है। जब लोग अपने आस-पास होने वाली किसी चीज से तनाव ग्रस्त महसूस करते हैं, तो उनके शरीर में रक्त कुछ रसायन छोड़कर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। ये रसायन लोगों को अधिक ऊर्जा तथा मजबूती प्रदान करते हैं।”<sup>36</sup>

हल्के मात्रा में दबाव तथा तनाव कभी-कभी फायदेमंद होता है। उदाहरण के लिए कोई प्रॉजेक्ट या असाइनमेंट पूरा करते समय हल्का दबाव महसूस करने से प्रायः अपना काम अच्छी तरह से पूरा कर पाते हैं और काम करते समय हमारा उत्साह भी

बना रहता है। “तनाव के दो प्रकार होते हैं यूस्ट्रेस (सकारात्मक तनाव) तथा डिस्ट्रेस (नकारात्मक तनाव) जिसका सामान्य अर्थ चुनौती तथा अधिक बोझ होता है या अनियंत्रित हो जाता है, तब यह नकारात्मक प्रभाव दिखाता है।”<sup>37</sup> तनाव के सामान्य स्रोत भी विभिन्न हैं जैसे जीवन रक्षा तनाव, आंतरिक तनाव आदि जीवन रक्षा तनाव जिसे सर्वाइकल स्ट्रेस भी कहते हैं। जब किसी व्यक्ति को इस बात का भय हो कि कोई व्यक्ति या कोई चीज उसे शारीरिक रूप से चोट पहुँचा सकता है, तब उसका शरीर स्वाभाविक रूप से ऊर्जा अतिरेक के साथ प्रतिक्रिया प्रदर्शित करता है ताकि वह उस खतरनाक परिस्थिति में बेहतर रूप से जीने में सक्षम हो जाए या पूरी तरह से उससे पलायन ही कर जाए। यह जीवन बचाने का तनाव है।

आंतरिक तनाव वह तनाव है जहाँ लोग स्वयं को तनावग्रस्त बना डालते हैं। प्रायः जब हम ऐसी चीजों के प्रति डर जाते हैं जिन पर हमारा नियंत्रण न हो या हम स्वयं को तनाव पैदा करने वाली परिस्थिति में डाल दे तो, प्रायः आंतरिक तनाव उत्पन्न होता है। “कुछ लोग भाग-दौड़, तनावग्रस्त जीवन पद्धति के आदी हो जाते हैं, जो दबाव में जीने की वजह से पैदा होता है। वे तब तनावपूर्ण स्थितियों की तलाश में रहते हैं और यदि उन्हें तनावग्रस्त स्थिति न मिले तो वे इस बात से तनाव महसूस करने लगते हैं।”<sup>38</sup>

पर्यावरणीय दबाव में उन चीजों के प्रतिक्रिया स्वरूप पैदा होता है, जो तनाव पैदा करता है, जैसे शोर-शराबा, भीड़-भाड़ तथा कार्य या परिवार की ओर से दबाव। “इन पर्यावरणीय दबावों की पहचान कर और उनसे बचने या उनसे मुकाबला करने के बारे में सीखने से हमें तनाव के स्तर को कम करने में मदद मिल सकती है।”<sup>39</sup> इसी प्रकार का तनाव लंबे समय के बाद पैदा होता है और इसका आपका शरीर पर गंभीर असर पड़ सकता है। यह अपनी नौकरी, स्कूल या घर में अत्यधिक काम करने से पैदा होता है। आप यदि समय का नियोजन नहीं कर पाते हैं। “आप आराम या सुस्ताने के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं तो यह उस स्थिति में पैदा होता है। यह एक प्रकार का कठिन तनाव है जिससे बचा जाना चाहिए क्योंकि लोग इसे अपने नियंत्रण से बाहर मानते हैं।”<sup>40</sup>

तनाव पैदा करने वाले कारकों को छोटी अवधि या लंबी अवधि के रूप में वर्णित किया जाता है-

- छोटी अवधि का तनाव तुरंत पैदा होने वाले खतरे के प्रति प्रतिक्रिया होता है, जिसे युद्ध या युद्धक प्रतिक्रिया भी कहते हैं। यह तब होता है जब मस्तिष्क का प्रारंभिक हिस्सा और मस्तिष्क के अंदर के कुछ रसायन संभावित हानिकारक दबाव कारक या चेतावनी के प्रति अपनी प्रतिक्रिया प्रदर्शित करते हैं।
- लम्बी अवधि के तनाव कारक ऐसे दबाव होते हैं जो लड़ाई करने की चाहत दब जाने के बाद चालू रहते हैं और आगे भी जारी रहते हैं। क्रमिक तनाव कारकों में शामिल होते हैं वर्तमान में जारी दबावपूर्ण कार्य वर्तमान में जारी संबंध से जुड़ी समस्या, अलगाव तथा निरंतर वित्तीय चिन्ताएँ।

तनाव के प्रति किसी व्यक्ति की संवेदनशीलता को किसी एक या इन सभी कारकों द्वारा प्रभावित किया जा सकता है, यानि इसका मतलब है कि हर व्यक्ति का तनाव के कारकों के प्रति सहनशीलता अलग-अलग होती है और ये कारक उनके लिए निश्चित नहीं रहते अतः समय के साथ हरेक व्यक्ति की तनाव सहनशीलता बदलती रहती है जैसे बचपन का अनुभव, व्यक्तित्व, जेनेटिक्स, रोगनिरोधी असामान्यता, लाइफस्टाइल, तनाव पैदा करने वाले कारकों की अवधि तथा उनकी तीव्रता। तनाव की उपस्थिति के लिए त्वरित जांच के सूचक निद्रा व्यवधान, भूख की कमी, अपर्याप्त एकाग्रता या अपर्याप्त याददाश्त, प्रदर्शन में कमी, अलक्षणात्मक त्रुटियाँ या पूरी न की गई समय सीमा, क्रोध या चिड़चिड़ापन, हिंसक या समाज के खिलाफ व्यवहार, भावनात्मक आवेग, शराब या ड्रग की आदत, घबराहट की आदत। मनुष्य के शरीर पर विभिन्न तनाव के प्रभाव देखे जाते हैं जैसे शारीरिक प्रभाव मुख्यतः न्यूरो-एंडोक्राइनो-इम्यूनोलॉजिकल मार्ग से उत्पन्न होते हैं। तनाव के कारक की जो भी प्रकृति हो पर उनके प्रति शरीर की प्रतिक्रिया सदैव एक समान रहती है। जैसे- धड़कन, हृदय का स्पंदन बढ़ जाता है, सांस बढ़ जाती है। थरथराहट, जुकाम, अत्यधिक चिपचिपाहट, पसीना छूटना, गीली भौंह, बाल झरना आदि।

वर्तमान में मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास किसी भी विषय पर सोचने समझने तक का समय नहीं है। आज की जिंदगी भाग-दौड़ भरी हो गयी है। मनुष्य के मन में किसी विषय को लेकर अन्तर्द्वंद्व बना रहता है एक विषय पर

अलग-अलग विचार हावी हो जाते हैं और उसे किसी निर्णय पर पहुँचने में बाधा उत्पन्न करते हैं। अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति के कारण आज मानव जीवन तनाव से ग्रसित हो रहा है। मनुष्य के सम्मुख अनेक प्रकार की समस्याएँ चुनौतियाँ बनकर खड़ी हो गयी हैं जिनसे बाहर निकलने की पेशेपेश में मनुष्य तनाव भरी जिंदगी जी रहा है। ममता कालिया ने अपने लेखन के माध्यम से आज मानव की तनाव भरी जिंदगी को शब्दबद्ध करने का बखूबी प्रयास किया है, उन्होंने 'जिंदगी सात घण्टे की' कहानी के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है कि आत्मीया नाम की लड़की जो अविवाहित और नौकरीपेशा है। शुरु में वह उन्मुक्त जीवन जीना चाहती है किंतु जैसे-जैसे उम्र गुजरती है वैसे-वैसे वही अकेलापन उसे अखरता है। वह जब ऑफिस में होती है, तब तक उसका समय आसानी से गुजर जाता है किंतु जब शाम को घर जाने का समय आता है तो उसके मन में अलग-अलग विचार आना शुरू हो जाते हैं, वह तनाव से ग्रसित हो जाती है कि अब शाम पाँच बजे के बाद का समय वह कैसे बिताएँ “सुबह दस बजे का उत्साह, शाम पाँच बजे का 'डिप्रेशन' अपनी ड्राअर लॉक करते हुए उसे लगता है पाँच बज भी गए अब से लेकर कल दस बजे का समय वह और देवनगर का उसका फ्लैट और कुछ नहीं.....।”<sup>41</sup>

ममता कालिया ने आत्मीया के माध्यम से आज के युवा वर्ग में फैले अन्तर्द्वन्द्व व तनाव को चित्रित किया है। समाज में महँगाई, आर्थिक विपन्नता, बेकारी, आधुनिक जीवन में कामकाजी दम्पती के मध्य तनाव की स्थिति बढ़ती ही जा रही है। इन सब समस्याओं से लड़ते-लड़ते मानव जीवन इतना तनाव युक्त हो गया है कि उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ रही है, ममता कालिया के 'अंधेरे का ताला' उपन्यास की चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी ननकी तनाव से ग्रसित रहती है। कॉलेज की प्राचार्या नंदिता सभी अध्यापिकाओं से रुपये एकत्र करके 'ननकी' के लिए नया शॉल खरीदकर लाती है किंतु जब ननकी शॉल को ओढ़ाकर आती है तो बात-बात पर कॉलेज की अध्यापिकाएँ उस पर व्यंग्य करती हैं। ननकी जब तिवारी मैडम को चाय देने जाती है तो गलती से चाय उनकी शॉल पर गिर जाती है। “तिवारी मैडम गुस्से से पागल गयी” ननकी, तुमने तो हद कर दी। खुद नया शॉल का ओढ़ लिया, दूसरों के कपड़ों को टाट पट्टी समझने लगी। शरम नहीं आती, चाय गिरा दी। मेरा पाँच सौ का शॉल खराब कर दिया।”<sup>42</sup>

मानसिक प्रभाव मनुष्य के शरीर में कई रूप में दिखाई पड़ता है- “भावनात्मक तनाव को यदि दूर न किया गया तो यह इससे मानसिक कष्ट उत्पन्न हो सकता है और उससे शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है।”<sup>43</sup> अन्य सामान्य मानसिक प्रभाव जैसे एकाग्र करने में अक्षम होना, निर्णय न ले पाना, आत्मविश्वास की कमी, चिड़चिड़ापन या बार-बार गुस्सा आना। अत्यधिक लोभ वाली लालसा, बेवजह चिंता करना, असहजता तथा चिंता। बेवजह भय सताना, घबड़ाहट का दौरा, गहरे भावनात्मक तथा मूड विचलन।

तनाव के व्यवहारगत प्रभावों में ऐसे तरीके शामिल हैं, जिनमें कोई व्यक्ति तनाव के प्रभाव में कार्य करते हैं और व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। अत्यधिक धूम्रपान, नर्वस होने के लक्षण, मन का कहीं खो जाना, जब-जब दुर्घटना का शिकार होना। “यह देखा गया है कि व्यवहारगत तनाव के काफी खतरनाक प्रभाव होते हैं और इससे अभिव्यक्ति तथा सामाजिक संबंध प्रभावित होते हैं, कुछ क्रानिक तथा अधिक आंतरिक तनाव अकेलेपन, गरीबी, वियोग, भेदभाव के कारण पैदा होने वाले अवसाद व हताशा से उपजते हैं, जिससे विषाणु के आक्रमण से लड़ने की शरीर की क्षमता कम हो जाती है और जुकाम, हर्पीस से लेकर एड्स व कैंसर जैसी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं।”<sup>44</sup> तनाव अन्य हार्मोनों, मस्तिष्क अन्य हिस्सों में थोड़े अतिरिक्त रसायनिक संदेशों के साथ ही अहम एजाइम सिस्टम व चयापचय क्रियाओं पर अपने प्रभाव छोड़ सकता है, जिनके बारे में पूरी जानकारी नहीं है।

नये शॉल के कारण ननकी तनाव से ग्रसित हो जाती है। अन्त में वह परेशान होकर शॉल को नंदिता को वापस कर देती है। ममता कालिया ने इस उपन्यास के द्वारा एक चतुर्थ कर्मचारी ही मनोदशा का स्थिति का चित्रण किया है। आर्थिक कमी रिश्तों में दूरिया बढ़ा देती है। आर्थिक स्थिति मजबूत न होने पर पारिवारिक जीवन तनाव ग्रस्त हो जाता है, पति-पत्नी के मध्य अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, पैसों की तंगी दाम्पत्य जीवन को निरस बना देती है, दाम्पत्य जीवन तनाव युक्त हो जाता है इस प्रकार की समस्या ममता कालिया की कहानी ‘तस्की के हम न रोये’ कहानी के अन्तर्गत दिखाई पड़ता है। इस कहानी में आशा नाम की नायिका व उसके पति के मध्य आर्थिक तंगी के कारण उनका गृहस्थ जीवन तनाव से ग्रस्त हो जाता है। पति-पत्नी के तनाव ग्रस्त जीवन को इस कहानी में सफलता के साथ ममता कालिया ने दिखाया है।

ममता कालिया ने अपने उपन्यास, कहानियों में वर्तमान जीवन के यथार्थ का चित्रण किया है आज के समय में पति-पत्नी अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखना पसंद करते हैं। पति-पत्नी कामकाजी होने के कारण दोनों के मध्य तनाव की स्थिति बनी रहती है। दंपती एक-दूसरे के साथ समय व्यतीत नहीं कर पाते हैं जिससे उनके रिश्तों में तनाव बना रहता है इन सब स्थिति के मध्य एक बच्चे के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, माता-पिता के आपसी कलह के कारण बच्चे की परवरिश को सही दिशा नहीं मिल पाती उसका भविष्य अंधकार की ओर बढ़ जाता है। इस प्रकार की स्थिति का चित्रण ममता कालिया ने अपने उपन्यास 'सपनों की होमडिलीवरी' के अन्तर्गत करने का सफलतम प्रयास किया है उपन्यास की नायिका 'रुचि' एक प्रसिद्ध पाक कला विशेषज्ञ होती है किंतु अपने पति से तलाक होने के कारण उसके बच्चे पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है, गगन गलत आदतों का शिकार हो जाता है, वह सिगरेट, शराब का आदी हो जाता है जिससे रुचि तनाव से ग्रसित हो जाती है। गगन की गलत आदतों के कारण रुचि व सर्वेश के रिश्तों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। रुचि के मन में अन्तर्द्वंद्व की स्थिति बन जाती है। उसके मन में कई विचार पनपने लगते हैं सर्वेश रुचि से कहता है- "तुमने क्या सोचा। मुझे पता नहीं चलेगा। मैं खोजी कुत्ता, मेरे घर में सेंध लग रही और मैं ही अनजान हूँ, लानत है मेरी जॉब पर। मेरी बीवी अचानक एक पला-पलाया, हट्टा-कट्टा साँड मेरे सामने लाकर खड़ा कर कह रही है यह उसका बेटा है।"<sup>45</sup>

समाज में फैली अनेक प्रकार की समस्याओं को ममता कालिया ने अपने लेखन में उतारा है। समाज में व्याप्त कुरतियों ने समाज को अपंग कर दिया है। अंधविश्वास, भ्रष्टाचार दहेज आदि कुरतियाँ समाज पर हावी होती नजर आ रही हैं जिससे मानव तनाव ग्रस्त हो रहा है। 'उसका योवन' कहानी संग्रह में संकलित ममता कालिया की 'बिटिया' कहानी के अन्तर्गत तनाव का सफलतम चित्रण ममता जी ने किया है। कहानी के अन्तर्गत बिश्वेश्वर बाबू के चार बेटिया होने के कारण उनकी शादी करना उनके तनाव का विषय बना हुआ है। सरकारी अफसर होते हुए भी वे अपनी बेटी की शादी अच्छी तरह से नहीं कर पाते हैं। इसका प्रमुख कारण दहेज है जिसके बिना वह अपनी बेटी की शादी नहीं कर सकते। रात-दिन उनको यह समस्या

सताये रहती है बेटी की शादी एक पिता का सपना होता है किंतु पैसों की कमी के कारण वे तनाव ग्रस्त रहते हैं। मुश्किल से एक रिश्ते वाले तैयार होते हैं किंतु वह भी लिस्ट बनाने की बात करते हैं जिससे बिश्वेश्वर बाबू और उनकी पत्नी तनाव ग्रसित रहते हैं- “फिर लड़की के जेवर नए सोने के बनवाने पड़ेगे। दो हजार रुपए तोला चल रहा है। आजकल! कैसे होगा।’ शारदा का चेहरा तनाव से सुन्न हो गया। बस ले देकर उसके ब्याह का सेट है, उसी पर नजर लगी रहती है, ‘मैं तो नहीं देने की, कर ले जो मर्जी’ उसने मन ही मन जिद पकड़ी। लेकिन खाने के समय जब उसकी लावण्यमयी बिटिया मधुरिमा उसके सामने आ बैठी तो उसकी सारी जिद हवा हो गई। उसने मन जी मन भगवान से प्रार्थना की, मेरी जान भी चली जाए पर इसे अच्छे घर भेज दे। यहाँ क्या सुख पाया इसने कभी हाथ भर चूड़िया भी नहीं पहना पाई सावन में।”<sup>46</sup>

इस प्रकार माता-पिता के मन में बेटी के प्रति प्रेम होने के कारण वह उसकी अच्छी शादी करना चाहते हैं परंतु आर्थिक तंगी के कारण माता-पिता तनाव ग्रस्त हो जाते हैं।

इस प्रकार ममता कालिया की रचनाओं में पात्रों के मध्य अंतर्द्वंद्व व तनाव की स्थिति बनी रहती है। समाज में मोहल्ले में कई ऐसे कारण होते हैं जो मानव मन को आंदोलित करते रहते हैं, जिससे किसी विषय के प्रति मानव सही निर्णय पर नहीं पहुँच पाता तथा मन में ऊहा पोह की स्थिति बनी रहती है। ममता कालिया ने बेकारी, बेरोजगारी, महानगरीय जीवन की मानसिकता, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों के कारण समाज में फैले अन्तर्द्वंद्व व तनाव को पात्रों के माध्यम से बखूबी दर्शाया है।

## निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ममता कालिया के कथा साहित्य में राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र का यथार्थ रूप से अध्ययन किया गया है। उनके साहित्य में नारी पर आर्थिक क्षेत्र व राजनीतिक क्षेत्र की प्रगति का प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि व आत्मनिर्भर होकर नारी ने अपने परिवार व समाज को भी गौरवान्वित किया है।



## संदर्भ सूची

1. कालिया ममता, 'बेघर', पृ.सं.-24
2. कालिया ममता, 'नरक दर नरक', पृ.सं.-22
3. कालिया ममता, 'तीन लघु उपन्यास', 2008
4. कालिया ममता, 'कालिया की कहानियाँ', खण्ड-1, पृ.सं.-12
5. कालिया ममता, 'कालिया की कहानियाँ' खण्ड-2, पृ.सं.-12
6. कालिया ममता, 'दुःखम-सुखम', पृ.सं.-13
7. कालिया ममता, 'उसका यौवन', पृ.सं.-13
8. कालिया ममता, 'जांच अभी जारी है', पृ.सं.-16
9. कालिया ममता, 'दुःखम-सुखम', पृ.सं.-32
10. कालिया ममता, 'छुटकारा', पृ.सं.-16
11. कालिया ममता, 'खुश किस्मत', पृ.सं.-16
12. ममता कालिया, 'नई सड़क की पहचान', पृ.सं.-6
13. शुक्ल उमा, 'भारतीय नारियाँ, अस्मिता की पहचान', पृ.सं.-11
14. खेतान, प्रभा, 'अपने-अपने चेहरे', पृ.सं.-12
15. कालिया ममता, 'दुःखम-सुखम', पृ.सं.-53
16. राठौर गिरधर, 'ऊहापोह : साहित्य समाज संस्कृति आज', पृ.सं.-10
17. शरण, गिरिराज, 'सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य', पृ.सं.-15
18. कालिया ममता, 'जांच अभी जारी है', पृ.सं.-128
19. डॉ. रुमानी शेख, 'हिंदी उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तन', पृ.सं.-18
20. खेतान प्रभा, 'पीली-आँधी', पृ.सं.-19
21. जैन मंजु, 'कार्यशील महिलाएँ एवं सामाजिक परिवर्तन', पृ.सं.-112
22. राजकुमार (संपादक), 'नारी शोषण : समस्याएँ एवं समाधान', पृ.सं.-113
23. पुष्पा मैत्रेयी, 'खुली खिड़कियाँ', पृ.सं.-114
24. कालिया ममता, 'जांच अभी जारी है', पृ.सं.-128

25. सिंह निशान, 'अपराध अस्मिता और औरत', पृ.सं.-121
26. निहोरा, आशारानी, 'औरत कल आज और कल', पृ.सं.-123
27. शर्मा नासिरा, 'औरत के लिए औरत' पृ.सं.-130
28. चिद् कांता, 'अपने-अपने कोणार्क', 1995
29. चिद् कांता, 'अंतिम साया', संस्करण-2006, पृ.सं.-120
30. गीताश्री, 'स्त्री के आकांक्षा के मानचित्र', पृ.सं.-122
31. बीजापुरे डॉ. फेमिदा, 'ममता कालिया : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पृ.सं.-123
32. शर्मा डॉ. सानप, 'ममता कालिया के कथा-साहित्य में नारियों की चेतना', पृ.सं.-126
33. कालिया ममता, 'उसका यौवन', पृ.सं.-53
34. पोतदार डॉ. कृष्णा, 'अंतिम दशक के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श', पृ.सं.-128
35. तिवारी डॉ. रामचंद्र, 'हिंदी का गद्य साहित्य', चतुर्थ संस्करण-2004, पृ.सं.-166
36. पाटिल डॉ. रेखा, 'समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी', प्रथम संस्करण-2013, पृ.सं.-166
37. पुष्पा मैत्रेयी, 'इदनम्', प्रथम संस्करण-1996, पृ.सं.-167
38. खंडेलवाल, दया, 'कड़वे सच', प्रथम संस्करण-1996, पृ.सं.-180
39. परवेज मेहमूदा, 'उसका घर', प्रथम संस्करण-1978, पृ.सं.-190
40. भंडारी मन्नु, 'आपका बंटी', द्वितीय संस्करण, पृ.सं.-191
41. ममता कालिया, 'छुटकारा', पृ.सं.-59
42. ममता कालिया, 'अँधेरे का ताला', पृ.सं.-66
43. स्वयंवदा उषा, 'कितना बड़ा झूठ', द्वितीय संस्करण-1974, पृ.सं.-196
44. सेवती निरूपमा, 'आतंक बीज', प्रथम संस्करण-1975, पृ.सं.-16
45. ममता कालिया, 'सपनों की होमडिलिवरी', पृ.सं.-83
46. ममता कालिया, 'उसका यौवन', पृ.सं.-106

उपसंहार

## उपसंहार

साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक हैं। संवेदनशील साहित्यकार अपने परिवेश से असंपृक्त नहीं रह सकता, प्रस्तुत शोध के सम्पूर्ण पाँच अध्यायों को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है लेखक समाज में जो कुछ देखता है, अनुभव करता है उसे वह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है, अपने आस-पास के वातावरण की वास्तविक घटनाओं को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करके समाज का यथार्थ चित्रण करता है। इसे ही यथार्थ कहते हैं। यथार्थवादी विचारधारा, सिद्धांतों तथा शब्दों की अपेक्षा वस्तुओं व पदार्थों को अधिक महत्व देती है। यही विचारधारा हमारे अनुभवों के गुणों को यथार्थ रूप में स्वीकार करती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह संसार के अन्य जीवों से भिन्न है। जब से सृष्टि का सूत्रपात हुआ है तब से सर्वश्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट प्राणी का स्थान मनुष्य को ही मिला है क्योंकि मनुष्य ने बुद्धि का सहारा लेकर उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है। मनुष्य के रूप में एक साहित्यकार समाज में होने वाली प्रत्येक गतिविधि को अपने नेत्रों से देखता और बिना किसी पक्षपात के अपनी रचनाओं में ज्यों का त्यों चित्र प्रस्तुत करता है। इसीलिए साहित्य को समाज का दर्पण माना गया है। साहित्य में समाज के यथार्थ रूप का चित्रण होता रहता है। यथार्थ साहित्य का मुख्य विषय रहा है इसलिए साहित्य वही माना जाता है जिससे मानव जीवन का, समाज का यथार्थ निहित होता है। परिस्थितियों के अनुसार यथार्थ भी बदलता रहता है। जरूरी नहीं की जो वर्तमान में है वह भूतकाल में था और भविष्य में भी ऐसा ही हो। यथार्थ का संबंध कल्पना जगत से न होकर वास्तविकता से होता है।

यथार्थ शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है यथा+अर्थ अर्थात् जो जैसा है उसी रूप में उसका अर्थ। इसमें वास्तविकता को बिना किसी लाग लपेट के पाठकों के समक्ष परोसा जाता है तथा समाज के प्रति सजग किया जाता है। यथार्थ की अनेक विद्वानों ने अलग-अलग परिभाषाएँ दी जिनमें शिवकुमार मिश्र, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, त्रिभुवन इत्यादि विद्वानों ने परिभाषाओं के माध्यम से यथार्थ की पृष्ठभूमि को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

साहित्य जगत में ममता कालिया एक महिला लेखिकाओं में प्रमुख हस्ताक्षर है जिन्होंने अपने साहित्य लेखन में यथार्थ का सहारा लेकर समाज की समस्याओं से पाठकों को अवगत कराने का सफल प्रयास किया है। ममता कालिया ने कहानी, उपन्यास, संस्मरण कविता आदि सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने समाज में स्त्री-पुरुष की स्थिति का यथार्थ चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। ममता जी स्वयं एक स्त्री होने के बावजूद उन्होंने कभी स्त्री-विमर्श का बोझ नहीं ढोया बल्कि निष्पक्ष होकर स्त्री व पुरुष दोनों की स्थिति-परिस्थिति का यथार्थ लेखन अपनी रचनाओं में किया है। ममता कालिया ने कभी घोर स्त्रीवादी होने की घोषणा नहीं की बल्कि स्त्री विमर्श से हटकर सम्पूर्ण समस्याओं को अपने साहित्य में अंकित किया है इसीलिए निःसंदेह आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य में यथार्थवादी महिला साहित्यकारों में ममता कालिया का स्थान सर्वोपरि है। बहुमुखी प्रतिभा की धनी ममता कालिया ने कथाकार के रूप में अधिक ख्याति अर्जित की है। उन्होंने कहानी तथा उपन्यास के अतिरिक्त नाटक, एकांकी, कविता की रचना तथा संपादन व अनुवाद कार्य भी किया है। कभी शिक्षा और कभी नौकरी के लिए वे दिल्ली, कलकत्ता, मुंबई, इलाहाबाद जैसे नगरों में रही जिसका प्रभाव उनके लेखन कार्य में दृष्टिगत होता है।

शिक्षा जगत से जुड़ी होने के कारण उन्होंने शिक्षा क्षेत्र से संबंधित समस्याओं का चित्रण अपने लेखन कार्य में किया है। उन्होंने केवल स्त्री-विमर्श एवं पारिवारिक संबंधों पर साहित्यिक रचनाएँ नहीं की अपितु आधुनिक सामाजिक समस्याओं का भी यथार्थ चित्रण अपने कथा-साहित्य में किया है। ममता कालिया उन बुद्धिजीवियों में से हैं जो समाज सुधार के लिए कार्य करते हैं। सामाजिक समस्याओं को देखकर मूक दर्शक नहीं बने रहते बल्कि उन समस्याओं का हल निकालने के लिए तत्पर रहते हैं। भ्रष्टाचार, महँगाई, यौन शोषण, दहेज प्रथा, कन्या के जन्म पर निराशा, नारी उपेक्षा, नारी उत्पीड़न, शिक्षा का गिरता स्तर, बेरोजगारी, गरीबी इत्यादि का चित्रण इनके कथा साहित्य में प्रमुखता से मिलता है।

उन्होंने आधुनिक मध्यमवर्गीय परिवारों की समस्याओं का चित्रण भी अपने कथा साहित्य में किया है। उन्होंने पति-पत्नी द्वारा बच्चों की उपेक्षा, पति अधीनस्थ पत्नी, पुरुष की संकीर्ण परंपरागत विचारधारा आदि का भी वास्तविक चित्र अंकित किया है।

पात्रों की सजीवता तथा यथार्थवाद के लिए ममता जी को प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाने वाली कथाकार माना गया है। इसीलिए उन्हें 'लमही' सम्मान देकर पुरस्कृत किया गया है। वे सातवें दशक से अब तक के लेखन कार्य से जुड़ी हुई हैं। अपने जीवन के निजी अनुभवों को उन्होंने अपने कथा-साहित्य में उतारा है। ममता जी काल्पनिक पात्र नहीं गढ़ती। 'आपकी छोटी लड़की' कहानी इसका प्रमाण है क्योंकि ममता जी ने एक साक्षात्कार में यह बात स्वीकार की है कि यह कहानी उनके निजी जीवन पर आधारित है। उनके घर में उनकी बड़ी बहन को अधिक और उनको कम महत्व मिलता था। 'बेघर' और 'प्रेम कहानी' उपन्यास के पात्र भी उनसे ऐसे ही कहीं टकरा गए थे।

जब मैंने शोधार्थी के रूप में ममता कालिया के रचना संसार का अध्ययन किया तो पता चला कि ममता जी केवल कथाकार ही नहीं बल्कि एक कवयित्री, संपादक और अनुवादक भी हैं। उन्होंने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में अपनी दक्षता सिद्ध की है। अनुवाद और संपादन कार्य उनका हिंदी और अंग्रेजी भाषा ज्ञान को प्रदर्शित करता है। उन्होंने अपने लेखन कार्य का प्रारंभ काव्य से किया था और बोल्ट्स किस्म की कविताएँ लिखकर सबका ध्यान आकर्षित करने में सफल रही थी। उन्होंने अंग्रेजी में कविताएँ लिखी हैं लेकिन पहचान उन्हें कथाकार के रूप में अधिक मिली है। उनका प्रथम उपन्यास 'बेघर' बहुत दिनों तक आलोचकों में चर्चा का विषय रहा है। कौमार्य के मिथक को तोड़ने वाला संभवतः यह प्रथम उपन्यास है। इसमें उन्होंने शिक्षित भारतीय पुरुष की लड़की के कुंवारेपन से संबंधित परंपरागत संकीर्ण विचारधारा को चित्रित किया है। 'नरक दर नरक' उपन्यास में उन्होंने सांप्रदायिक हिंसा, बेरोजगारी, पति-पत्नी के अहं का टकराव, जातिवाद जैसी समस्याओं को चित्रित किया है। उनका 'प्रेम कहानी' उपन्यास संभवतः इकलौता ऐसा उपन्यास है जिसमें भारतीय चिकित्सालयों में फैली अनियमितता तथा भ्रष्टाचार को उजागर किया है। इसमें उन्होंने चिकित्सकों की असंवेदनशीलता तथा लालच को भी यथार्थ रूप से दर्शाया है। यौन शोषण, प्रेम विवाह की असफलता तथा बच्चों की उपेक्षा आदि विषय भी ममता जी ने इसमें अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किये हैं।

ममता कालिया का सम्पूर्ण कथा साहित्य प्रेम की नई अवधारणा का दस्तावेज है, जिसमें उन्होंने आधुनिक जगत में समाज में व्याप्त यथार्थ का चित्रण अपने लेखन कार्य में उकेरा है। उन्होंने अपने उपन्यास 'एक पत्नी के नोट्स' में एक

सुशिक्षित, सभ्य, आत्मनर्भर नारी भी किस प्रकार अपने पति के अधीनस्थ रहती है इसका बखूबी चित्रण किया है। युवाओं के संघर्ष, उपभोक्तावादी सोच, तनाव, यथार्थवादी सोच को प्रदर्शित करता उपन्यास 'दौड़' ममता कालिया की महत्वपूर्ण कृति है जिसमें इन्होंने आधुनिक समाज के शिक्षित युवाओं तथा उनके माता-पिता की मनोदशा से अवगत करने में ममता जी अत्यंत सफल दिखाई पड़ती है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले तथा बाद की स्थिति को उजागर करना 'दुःखम-सुखम' इनका उपन्यास है। इसमें उन्होंने तीन पीढ़ियों की सोच, द्वंद्व को चित्रित किया है।

ममता कालिया की कहानियों का अध्ययन करने पर हमने पाया है कि विषय की विविधता ममता जी की कहानियों का प्रमुख गुण है। वे केवल नारी या परिवार को ही नहीं अपितु व्यापक सामाजिक संदर्भ को भी महत्व देती हैं। उनकी कहानियों में बेरोजगारी भ्रष्टाचार, महँगाई, दहेज प्रथा, विधवा उत्पीड़न, तलाक, पति अधीनस्थ पत्नी, रिश्तों में दरार, स्त्री उपेक्षा, स्त्री शोषण, प्रगतिशील चेतना से युक्त नारी, सामाजिक जीवन में स्त्री की स्थिति, आर्थिक दुर्बलता से युक्त स्त्री, स्त्रियों के अधिकारों के हनन आदि का यथार्थ रूप में चित्रण किया गया है। ममता कालिया ने अपने लेखन में राजनीतिक और आर्थिक यथार्थ का चित्रण किया है। उन्होंने समाज में स्वार्थ से युक्त राजनीति, आर्थिक विषमता, समाज में व्याप्त रिश्तों के मध्य तनाव व अंतर्द्वंद्व का चित्रण किया है। 'दुःखम-सुखम' उपन्यास में उन्होंने गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव, सत्याग्रह आंदोलन की स्थिति व उस समय की मानसिकता का यथार्थ अंकन अपने साहित्य में किया है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, अवैध संबंध आदि का वर्णन उनके कथा साहित्य में मिलता है।

'जांच अभी जारी है' कहानी में उन्होंने बैंकिंग क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार को उजागर किया है। 'उसका यौवन' कहानी में बेरोजगारी 'आपकी छोटी लड़की में बच्चों की उपेक्षा से उनकी मनः स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ता है, 'बिटिया' कहानी दहेज प्रथा, 'सुरक्षा का आतंक' कहानी में आतंकवाद की समस्या, शॉल तथा चोटिटन कहानी अर्थाभाव, 'दर्पण' कहानी में पत्नी की उपेक्षा का चित्रण किया है।

'मनहूसाबी' कहानी में उन्होंने कन्या के जन्म पर निराशा तथा लड़की के कम सुंदर होने पर उसकी समाज में स्थिति को अत्यंत गंभीरता से चित्रित किया है। सेमिनार कहानी में साहित्यकारों की समस्याएँ, 'दो जरूरी चेहरे' में मायके और ससुराल के द्वंद्व को झेलती स्त्री की समस्या का उल्लेख किया है। बड़े दिन की पूर्व

साँझ में नवविवाहित दंपति पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव दिखाई पड़ता है तथा 'अपत्नी' कहानी में अवैध संबंध का चित्रण मिलता है। 'मुखौटा' कहानी में आरक्षण तथा भ्रष्टाचार की समस्या का उल्लेख किया है। 'एक पति की मौत' कहानी में तलाक के बाद एक स्त्री की मनोदशा तथा उसकी भारतीय समाज में स्थिति तथा 'लड़के' कहानी में बेरोजगारी भ्रष्टाचार तथा नेताओं व अफसरों द्वारा अपने पद तथा सरकारी साधनों का दुरुपयोग अत्यंत रोचक प्रभावी एवं व्यंग्यात्मक ढंग से ममता जी ने प्रस्तुत किया है।

साठोत्तर काल में हिंदी कथा-साहित्य को समृद्ध बनाने में महिला कथाकारों का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने नारी मन की आंतरिक पीड़ाओं को महसूस किया तथा उनको शब्द दिये हैं। कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, चंद्रकांता, सूर्यबाला, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल तथा ममता कालिया आदि कथाकार हिंदी कथा-साहित्य के संवेदनशील कथाकारों की श्रेणी में आती हैं।

समकालीन महिला कथाकारों में ममता कालिया प्रमुख हस्ताक्षर कही जा सकती है, क्योंकि ये केवल परिवार व नारी को ही नहीं अपितु सामाजिक संदर्भ को भी महत्व देती हैं। अध्ययन करने पर मैंने पाया कि ममता जी के समकालीन अधिकतर महिला कथाकारों ने स्त्री-विमर्श को ही अधिक महत्व दिया है जबकि ममता कालिया ने नारी चेतना के साथ-साथ पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का भी चित्रण अपने कथा-साहित्य में किया है।

कथावस्तु एवं भाषा शैली में रोचकता उनके साहित्य के प्रमुख गुण हैं। पहले वाक्य से ही उनकी रचना पाठक के मन को आकर्षित कर लेती है तथा अंत तक उसमें रुचि बनाए रखती है उनकी कथाओं में रोचकता का गुण विद्यमान है। वास्तविक चरित्र-चित्रण तथा तीखे व्यंग्य उनके कथा-साहित्य को विशिष्टता प्रदान करते हैं। प्रत्येक साहित्यकार अपने परिवेश से प्रभावित होता है। ममता जी अधिकतर महानगरों में रही जिसका प्रभाव उनके साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। शिक्षण जगत की त्रुटियों तथा महानगरीय समस्याओं का उन्होंने सजीव चित्र अंकित किया है।

ममता कालिया ने भाषा की विभिन्न शैलियों का प्रयोग करते हुए पात्रानुकूल भाषा का चयन किया है। मुहावरे, लोकोक्तियों तथा विभिन्न भाषा व बोलियों के शब्दों ने इनकी रचनाओं में विविधता का संचार किया है। ममता जी ने स्त्री के लिए बनाए गए कोष्ठक को तोड़कर विभिन्न, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक पारिवारिक

तथा सांस्कृतिक समस्याओं का अत्यंत सजीव चित्रण किया है। बुद्धिजीवी सामाजिक चिंतक होने के नाते उन्होंने एक संवेदनशील साहित्यकार का कर्तव्य निभाते हुए विभिन्न सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण अपनी रचनाओं में किया है।

कहते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। यह दर्पण दिखाने में साहित्यकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ममता जी एक नौकरीपेशा महिला हैं, जिसके कारण समाज के विभिन्न वर्गों से उनका परिचय होता है उनका हर रोज अनेक सामाजिक बुराइयों से साक्षात्कार होता है इसीलिए वे जो देखती हैं, उसी को कलमबद्ध करती हैं। उन्होंने विभिन्न सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से लोगों में सामाजिक चेतना जागृत करने का प्रयास किया है। एक तरफ उनका 'प्रेम कहानी' उपन्यास भारतीय चिकित्सालयों में फैले भ्रष्टाचार को उजागर करता है तो दूसरी तरफ 'नरक दर नरक' शिक्षा जगत में फैले भ्रष्टाचार, बेरोजगारी व जातिवाद को प्रस्तुत करता है। 'जांच अभी जारी है' कहानी, बैंकों में भ्रष्टाचार तथा 'दिल्ली' व 'लड़के' कहानियाँ सरकारी पद का दुरुपयोग, सरकारी सुविधाओं में फैले भ्रष्टाचार को प्रदर्शित करती हैं। 'मुखौटा', 'चिरकुमारी' व 'अंधेरे का ताला' रचनाएँ शिक्षा के गिरते स्तर को दर्शाती हैं। 'लड़कियाँ' व 'इक्कीसवीं सदी' कहानी में बलात्कार तथा असुरक्षा की समस्या को चित्रित किया गया है। 'बेघर' उपन्यास व 'बिटिया' कहानी दहेज प्रथा तथा 'वर्दी' कहानी पुलिस का भ्रष्टाचार उजागर करती हैं। आधुनिक भारत की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या, जातिवाद तथा सांप्रदायिक हिंसा को ममता जी ने 'नरक दर नरक' व 'दुःखम-सुखम' उपन्यास में चित्रित किया है। एकाकी परिवारों से उत्पन्न नई पारिवारिक समस्याओं का चित्रण ममता जी ने अत्यंत वास्तविकता के साथ किया है। उनके कथा-साहित्य में आधुनिक परिवारों की स्थिति स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। ममता जी के विस्तृत रचना संसार का अध्ययन करने के पश्चात् मेरे दृष्टिपटल पर जो पारिवारिक समस्याएँ उभरी उनमें प्रमुख हैं- तलाक, बच्चों का एकाकीपन, अवैध संबंध, काम की व्यस्तता तथा तनाव, पति-पत्नी में अहं का टकराव, पति का वर्चस्व संबंधों में कटुता आदि। आधुनिक परिवारों में एक-दूसरे के प्रति सम्मान व प्रेम की भावना समाप्त हो गई है। लोगों में बढ़ती स्वार्थ प्रवृत्ति के कारण परिवारों का विघटन हो रहा है। इन सभी पारिवारिक समस्याओं का अलग ही रूप ममता जी ने प्रस्तुत किया है।

ममता जी की 'शॉल', 'चोटिटन' तथा 'अनुभव' कहानियाँ अर्थाभाव को अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रकट करती हैं। भारत में महँगाई दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जिसके कारण समाज के निम्न व मध्यवर्ग का जीवन दूभर हो गया है। गरीब व्यक्ति के लिए बच्चों की शिक्षा तो दूर, वह अपने लिए चिकित्सा सुविधा तथा भोजन की व्यवस्था भी नहीं कर पा रहा है। इसी का चित्रण ममता जी ने 'प्रेम कहानी' उपन्यास में अत्यंत संवेदनशीलता के साथ किया है। मध्यम वर्ग की आर्थिक समस्याएँ जैसे बेरोजगारी, महँगाई अर्थाभाव का चित्रण भी ममता कालिया ने अपनी रचनाओं में किया है। 'उसका यौवन', 'काली साड़ी' व 'बसंत सिर्फ एक तारीख' इसके उत्तम उदाहरण हैं।

राजनीति में भ्रष्टाचार के कारण परिस्थितियाँ इतनी प्रतिकूल हो गई हैं कि आम आदमी को कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है। सत्ताधारी व्यक्ति अपने पद का इतना दुरुपयोग करता है कि उसकी आने वाली पीढ़ियाँ बैठकर खा सकती हैं। 'लड़के' व 'मेला' कहानियों में ममता जी ने नेताओं पर अत्यंत व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ की हैं। ममता जी ने आतंकवाद, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिक हिंसा नेताओं द्वारा सरकारी सुविधाओं का दुरुपयोग आदि राजनीतिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण अपने कथा साहित्य में किया है। भगवान के प्रति विश्वास, श्रद्धा, प्राचीन रूढ़ियाँ, परम्पराएँ, व्रत त्योहार भारतीय संस्कृति का अहं हिस्सा हैं। ममता जी विभिन्न शहरों में रही जिसके कारण उन्हें विभिन्न धर्मों को जानने व समझने का अवसर प्राप्त हुआ। वे स्वयं भी व्रत व पूजापाठ में विश्वास करती हैं। उनकी रचनाओं पर हिन्दू धर्म का प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने 'मेला' कहानी में गंगा स्नान का पाखण्ड व चरनी मौसी जैसे लोगों की अंधश्रद्धा को चित्रित किया है। भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भी उन्होंने अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। ममता कालिया का उपन्यास 'कल्चर-वल्चर' 2016 में आया था। यह उपन्यास वर्तमान संदर्भ में समग्र रूप से एक नये दृष्टिकोण को हमारे सम्मुख रखता है। इसके संबंध में स्वयं लिखती हैं जब भी कोई नई संस्था उठ खड़ी होती और कला साहित्य, संस्कृति का राग अलापती हुई अपनी पारदर्शिता का दम भरती है तो यह मुझे उनके नाट्य के पीछे वे अदृश्य हाथ दिखाई देने लग जाते हैं। इसी प्रकार उनका 2016 में एक ओर उपन्यास आता है 'सपनों की होम डिलीवरी' जो नए जमाने में करवट बदलते रिश्तों को केंद्र में रखकर लिखा गया है। इस उपन्यास में रिश्ता चाहे पति-पत्नी का हो, माता-पिता का हो या प्रेमी-प्रेमिका का हो हर रिश्ता नए रिश्ते व वक्त के साथ ताल-मेल बिठाने की कोशिश करता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पारिवारिक समस्याएँ ममता कालिया के साहित्य की केंद्र-बिन्दु रही हैं। उन्होंने अन्य समस्याओं का भी चित्रण किया है। लेकिन उन्होंने अपने साहित्य में समाज के यथार्थ रूप को चित्रित करने का बखूबी प्रयास किया है। एक साहित्यकार के नाते समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह उन्होंने बखूबी किया है और आगे भी करती रहेगी क्योंकि सेवानिवृत्त होने के बाद भी वे लेखन कार्य से लगातार जुड़ी हुई हैं। ममता जी ने 2020 में 'अन्दाज ए बया उर्फ-रवि कथा' एक संस्मरणात्मक उपन्यास लिखा इसमें उन्होंने अपने पति रविन्द्र कालिया से जुड़ी प्रमुख यादों को अपने लेखन में उकेरा है। 2021 में ममता जी ने 'जीते जी इलाहबाद' रचना का लेखन किया जिसमें उन्होंने इलाहबाद से जुड़ी स्वयं व रवींद्र कालिया की यादों को चिरसंचित करने का प्रयास किया तथा इलाहबाद के परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है। वर्तमान में भी कालिया जी लेखन कार्य में सजग होकर लेखन कार्य की ओर प्रेरित हैं और लेखन कार्य कर रही हैं। समाज के संदर्भ में उनका योगदान अतुलनीय है।

समाज में नारी की स्थिति का अध्ययन भी ममता जी ने अत्यंत सूक्ष्मता से किया है। उनके कथा-साहित्य में नारी के सभी रूपों जैसे माँ, बेटी, पत्नी, बहू, सास, प्राचार्या आदि की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ स्त्री ने अपनी दक्षता न सिद्ध की हो। आधुनिक स्त्री जो नौकरी करती है, उसके कार्य क्षेत्र में वृद्धि होने के कारण वह स्वयं को परिस्थितियों वश असहज महसूस करती है कार्यभार की अधिकता के कारण उसे अत्यधिक तनाव झेलना पड़ता है। घर के बाहर भले ही स्त्री, पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले परंतु घर में उसकी भूमिका आज भी वही है जो सदियों पहले थी। भारतीय समाज में कन्या के जन्म पर आज भी कई परिवारों में मातम मनाया जाता है। 'दुःखम-सुखम' उपन्यास में ममता जी ने इसका सजीव चित्रण किया है।

ममता जी ने आर्थिक रूप से स्वतंत्र व परतंत्र दोनों प्रकार की स्त्रियों का चित्रण अपने कथा-साहित्य में किया है। कुछ स्त्री पात्र ऐसे भी हैं जो अपनी स्वतंत्रता के लिए अविवाहित रहने का निर्णय करते हैं। 'चिरकुमारी' कहानी की दिशा 'सीट नंबर छह' कहानी की नायिका 'लड़कियाँ' उपन्यास की नायिका, 'जिंदगी-सात घण्टे बाद की' कहानी की आत्मीया आदि ऐसे आत्मनिर्भर अविवाहित स्त्री पात्र हैं।

ममता जी की कथाओं में रुढ़िग्रस्त सास का भी यथार्थ चित्रण हुआ है। उन्होंने पति अधीनस्थ पत्नी का चित्रण भी किया है। उन्होंने समाज में स्त्री की स्थिति के विविध आयामों पर प्रकाश डालते हुए नारी स्वातंत्र्य एवं नारी चेतना के लिए अपनी आवाज प्रखर की है। ममता जी के कथा-साहित्य में स्त्री अपनी स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत दिखाई देती है।

समग्रतः हम कह सकते हैं कि बहुमुखी प्रतिभा की धनी ममता कालिया का नाम हिंदी साहित्य में अग्रगण्य महिला कथाकार के रूप में लिया जाता है। उन्होंने अपनी दक्षता प्रत्येक क्षेत्र में सिद्ध की है। अपने चिर-संचित ज्ञान व जीवनानुभवों को कलमबद्ध कर उन्होंने विशाल साहित्य की रचना की है। उन्होंने कहानी तथा उपन्यास के अतिरिक्त कविता, नाटक, एकांकी, अनुवाद एवं संपादन कार्य भी किया है। उनकी रचनाओं का केंद्र बिंदु समाज रहा है। साठोत्तर काल में नई विधाओं की रचना करने तथा महिला कथाकारों के लिए बनाए गए दायरे को तोड़ने में ममता जी की अहम भूमिका रही है। उन्होंने कई साहसपूर्ण रचनाएँ लिखी हैं। उन्होंने प्राचीन परिपाटी को परिवर्तित करते हुए हिंदी साहित्य में नवीनता का संचार किया है। विषय की विविधता, तीखे व्यंग्य, चुटीले जुमले, बिंबात्मकता, यथार्थवादिता, रोचकता, सजीवता आदि उनकी साहित्यिक कृतियों की विशेषता है। समाज की विभिन्न समस्याओं को प्रदर्शित करने में ममता जी काफी हद तक सफल दिखाई देती है। एक रचनाकार के रूप में समाज के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह उन्होंने अत्यंत ईमानदारी एवं संवेदनशीलता से किया है। वे अपनी रचनाओं को उनके उद्देश्य तक पहुँचाने में सफल रही हैं।



♦  
**सारांश**

## सारांश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है क्योंकि मनुष्य संसार के अन्य जीवों से भिन्न है। जब से सृष्टि का आविर्भाव हुआ है तब से लेकर आज तक संसार में सर्वश्रेष्ठ व उत्कृष्ट प्राणी का स्थान मनुष्य को ही मिला है क्योंकि सम्पूर्ण जीवों में, प्राणियों में बौद्धिक संपदा केवल मनुष्य को ही प्राप्त हुई है जो उसे अन्य जीवों से सर्वश्रेष्ठ व अलग करती है। जो संसार हमारे चारों ओर है, वह यथार्थ का संसार है, न कि छाया का संसार यह विचारधारा स्वीकार करती है कि हमारे अनुभवों के गुण यथार्थ स्वतंत्र बाह्य संसार के तथ्य है। यह विचारधारा जगत को उसी रूप में स्वीकार करती है जिस रूप में वह दिखाई या जिस रूप में हम उसका अनुभव करते हैं। इस विचारधारा की मान्यता है कि केवल इंद्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान ही सत्य है। यथार्थवादी किसी वस्तु के अस्तित्व को तभी स्वीकार करेगा जब वह निरीक्षण तथा परीक्षण की कसौटी पर कसा जा सके। मनुष्य ने बुद्धि का सहारा लेकर उन्नति के मार्ग पर निरंतर बढ़ना सीखा है तथा आज के वैज्ञानिक तकनीकी युग में अपने आपको बुद्धि के बल पर स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। बुद्धि मनुष्य को यथार्थ से जोड़ती है तथा मनुष्य ने स्वयं को वर्तमान युग में स्थापित कर लिया। संसार के प्राचीन साहित्य और कला रूपों को देखने से मालूम होता है कि सूचनाकार और कलाकार भी यथार्थ से विमुख नहीं है। साहित्य हमेशा से यथार्थ का माध्यम रहा है। साहित्य और कला में यथार्थ का चित्रण हमेशा हुआ है। प्रत्येक भाषा के साहित्य में प्रारंभिक काल से ही यथार्थ का चित्रण होता रहा है तथा यथार्थ साहित्य में मानव जगत की सच्ची घटनाओं को आधार बनाकर साहित्य सृजन किया जाता है, इसलिए साहित्य वही अच्छा माना जाता है जिसमें जीवन का यथार्थ निहित होता है।

ममता कालिया जी ने भी अपने उपन्यास कहानियों में इसी यथार्थवादी दृष्टिकोण को जगह प्रदान की है जो समाज व उसके आस-पास घटित होती रही है। परिवर्तन ही समाज का, जीवन का विकास है। जिस प्रकार समय के साथ-साथ समाज बदलता रहता है, ठीक उसी प्रकार समाज का सत्य भी बदलता है। परिस्थितियों के अनुसार यथार्थ भी निरंतर बदलता रहता है, क्योंकि जो भूतकाल में था वह वर्तमानकाल में नहीं और जो वर्तमानकाल में है आवश्यक नहीं कि वही भविष्य में भी

होगा क्योंकि समय परिवर्तनशील होता है और यदि मनुष्य समय के साथ नहीं चलता तो वह अपने जीवन में पिछड़ जाता है। इसी तरह साहित्यकार भी समाज के बदलते हुए स्वरूप का यथार्थ बोध करते हुए उसे अपनी रचनाओं के केंद्र बिन्दु में रखकर साहित्य सृजन करें। साहित्यकार समाज की परिस्थितियों तथा समाज युगीन सच्चाई को बिना किसी लाग-लपेट के अभिव्यक्त करता है तो वह समाज का यथार्थ चित्रण करता है।

प्रतिभा की धनी, प्रज्ञासम्पन्न ममता जी ने अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण द्वारा अपनी लेखनी से सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक यथार्थ को समाज व पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है। 'यथार्थ' दो शब्दों के योग से बना है यथा+अर्थ अर्थात् यथा-जैसा देखा वैसा चित्रण करना यथार्थ का संबंध वास्तविकता से है, जो वास्तव में है वह यथार्थ है। मानव जीवन से जुड़ा प्रत्येक पहलू यथार्थ की श्रेणी में आता है। कोई भी साहित्यकार अपनी कोरी कल्पना के आधार पर समाज का साक्षात् चित्रण प्रस्तुत नहीं कर सकता वह साहित्य में तभी सफल होता है जब साहित्यकार अपनी रचना में मानव-जीवन के वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता है। यदि वह समाज की वास्तविक घटनाओं का चित्रण करता है तथा समाज के सत्य को उद्घाटित करता है तो उसे समाज के विरोधों व संघर्षों का सामना करना पड़ता है। किसी भी घटना या दृश्य का ज्यों त्यों चित्रण कर पाना टेढ़ी खीर है। एक प्रतिभाशाली साहित्यकार अपनी प्रतिभा से समाज का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है।

साहित्यकार का उद्देश्य मानव समाज में फैली बुराईयों को यथार्थ रूप में चित्रित करना नहीं बल्कि समाज के सकारात्मक व नकारात्मक पक्ष को समान रूप से चित्रित करना साहित्यकार का उद्देश्य होता है। समाज में मानव भिन्न-भिन्न संस्कृति का दोहन करता है, क्योंकि भारतीय समाज में अलग-अलग पंथ निवास करते हैं तो उनकी संस्कृति उनके त्योहार रीति-रिवाज भिन्न होते हैं उन सबको यथार्थ में चित्रित करना ही साहित्यकार का उद्देश्य होता है केवल समाज में फैली बुराईयों को ही चित्रित करना यथार्थ नहीं है, बल्कि मानव से जुड़ी प्रत्येक घटना यथार्थ है।

साहित्य मानव जीवन के विकास में विघटन में बाह्य एवं आंतरिक परिवेश में जो जैसा है, वैसा ही वर्णन करना यथार्थवाद कहलाता है। इसमें समाज की विशेषताओं एवं कमियों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। यथार्थवाद आदर्शवाद से विपरीत है जिसमें

केवल आदर्श की स्थापना मुख्य होती है परन्तु यथार्थ में जगत का सत्य चित्रण होता है। ममता जी ने अपने साहित्य में व्यक्ति के संघर्षों, उसकी सामाजिक, राजनैतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थितियों का सत्य का चित्रण किया है।

पश्चिमी भारत में यथार्थ से संबंधित विवेचन दो रूपों में मिलता है एक ओर जहाँ वर्कले दार्शनिक भूमि के आधार पर यथार्थ का अस्तित्व मानसिक स्तर पर मानता है, वहीं दूसरी ओर अन्य यथार्थवादी दार्शनिकों का मत इसके विपरीत यह प्रमाणित करने का रहा है कि बाह्य जगत व बाहरी पदार्थों का अस्तित्व मन से स्वतंत्र अपनी वस्तुगत स्थिति में यथार्थ है। मूलतः यथार्थवादी रचनाकार साहित्य का संबंध भी इसी बाह्य जगत उसके विभिन्न रूपों से मानता है। ममता कालिया के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक यथार्थ को अपनी लघु बुद्धि के द्वारा प्रस्तुत करने का मैंने यथासंभव प्रयास किया है। अपने शोध द्वारा ममता कालिया के उपन्यास, कहानियों में व्याप्त पात्रों की पीड़ा मानव मन की आंतरिक मनःस्थिति समाज में यथार्थ का महत्व, उसके विभिन्न पहलुओं को अवगत कराने का छोटा सा प्रयास किया है।

मैं अपनी अल्प बुद्धि से अपने शोध कार्य में कितनी सफल हुई हूँ इसका निर्णय तो साहित्य के ज्ञाताओं और उनकी शोधपरक विश्लेषण दृष्टि ही कर पायेगी। प्रस्तुत शोध 'ममता कालिया के कथा-साहित्य में यथार्थ बोध : एक अध्ययन' प्राक्कथन तथा उपसंहार सहित कुल पाँच अध्यायों में विभक्त है। अन्त में परिशिष्ट में मेरे द्वारा लिया साक्षात्कार ममता जी के सृजन के अनेक पक्षों को उद्घाटित करता है। मेरे द्वारा प्रस्तुत शोधकार्य का अध्यायवार सारांश निम्नानुसार है-

### **प्रथम अध्याय : यथार्थ की अवधारणा एवं स्वरूप**

शोध यात्रा के इस प्रथम अध्याय के अंतर्गत यथार्थ की अवधारणा एवं स्वरूप की विस्तृत चर्चा की गई है यथार्थ के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है जो शोध कार्य को एक दिशा देने में सहायक सिद्ध हुआ है।

यथार्थ का अंग्रेजी शब्द 'रियल' से है जिसका अर्थ होता है सत्य, वास्तविक। 19वीं शताब्दी में एक आंदोलन का रूप पाकर यह यथार्थवाद के रूप में लेखन जगत में अवतरित हुआ है। इससे पहले लेखन जगत में यथार्थ, सत्य घटना से हटकर काल्पनिकता मनोरंजन को विषय बनाकर लेखन कार्य किया जाता था परन्तु 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आते-आते लेखन में एक मोड़ आया और लेखक समाज की

सच्ची घटना व आस-पास घटित होने वाली घटनाओं को आधार बनाकर लेखन करने लगा। यथार्थवाद की अवधारणा का उदय पश्चिम से ही माना जाता रहा है। जहाँ इसका विवेचन ही विभिन्न रूपों में किया जाता है- (1) दर्शन की भूमि पर (2) दूसरा कला तथा साहित्य की भूमि पर। यथार्थवाद के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए इसे पाँच सह अध्यायों में विभक्त किया है। इन सह अध्यायों को विभक्त करते हुए यथार्थवाद की विवेचना प्रस्तुत की गई है। प्रमुख पाँच सह अध्याय- 1.1 यथार्थबोध, 1.2 यथार्थ : अर्थ एवं परिभाषा, 1.3 यथार्थ का स्वरूप, 1.4 यथार्थवाद का उद्भव एवं विकास, 1.5 यथार्थ एवं यथार्थवाद की अवधारणा।

इस प्रकार इनका विभाजन किया गया है तथा यथार्थ के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

### **द्वितीय अध्याय : ममता कालिया : व्यक्ति और कथाकार (उपन्यास, कहानी और व्यक्ति परिचय)**

शोध यात्रा के द्वितीय अध्याय में प्रतिभा की धनी, प्रज्ञासम्पन्न ममता कालिया जी के व्यक्ति और कथाकार पर प्रकाश डाला गया है। ममता कालिया हिंदी साहित्य की एक प्रगतिशील रचनाकार रही हैं जो पिछले छह दशक से हिंदी साहित्य को लेखन से समृद्ध कर रही हैं और आज तक सक्रिय हैं। बीसवीं शताब्दी को हिंदी साहित्य में महिला उत्थान का युग माना जाता है जिसमें महिला घर की दहलीज को पार करके पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाती हुई समाज में अपना स्थान प्राप्त कर रही हैं। जिनका स्थान साठोत्तरी काल के यथार्थवादी रचनाकारों में विशेष रूप से अपनी अलग से सत्ता स्थापित किए हुए हैं। ममता जी छह दशकों से लेखन में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। साठोत्तरी महिला साहित्यकारों कृष्णा सोबती, इन्दु बाला, शिवानी मन्न् भण्डारी, सूर्यबाला, मृणाल पाण्डे, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग आदि साहित्यकारों में ममता कालिया एक यथार्थवादी साहित्यकार के रूप में अपनी छवि बनाए हुए हैं। जिनका रचना लेखन पाठकों को यथार्थ के धरातल से संपृक्त करता है तथा समाज का सच्चा दर्पण दिखाता है। ममता कालिया ने कभी घोर स्त्रीवादी होने का दावा नहीं किया बल्कि समाज में स्त्री-पुरुष को समानता की कसौटी पर परखते हुए यथार्थ का चित्रण किया है। ममता कालिया का बचपन भी साहित्यिक परिवेश में ही गुजरा है इस अध्याय में ममता कालिया के व्यक्तित्व कृतित्व को विभिन्न बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं। ममता कालिया व्यक्तित्व और कथाकार को पाँच अध्याय में विभक्त करते हुए लेखन को समझने में आसानी हो सकती है।

2.1 हिन्दी उपन्यास और ममता कालिया, 2.2 हिन्दी कहानी और ममता कालिया यात्रा, 2.3 ममता कालिया : जन्म और शिक्षा, 2.4 ममता कालिया : परिवार और परिवेश, 2.5 ममता कालिया : संक्षिप्त साहित्यिक परिचय, पुरस्कार और सम्मान। इस प्रकार विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए ममता कालिया के जीवनवृत्त व साहित्यिक लेखन को समझा परखा जा सकता है।

वर्तमान समाज भारतीय नारी की वास्तविक स्थिति का आंकलन कर ममता कालिया ने अपने उत्कृष्ट सृजन से नारी में विभिन्न समस्याओं के प्रति जागृति लाने का प्रयास किया है। इनके द्वारा रचित उपन्यासों की श्रृंखला अनवरत रूप से चल रही है जो वर्तमान समाज में प्रासंगिक है। 1. बेघर (1971), 2. नरक दर नरक (1975), 3. प्रेम कहानी (1980), 4. लड़कियाँ (1981), 5. एक पत्नी के नोट्स (1997), 6. दौड़ (2000), 7. अंधेरे का ताला (2009), 8. दुःखम-सुखम (2009), 9. सपनों की होमडिलीवरी (2016), 10. कल्चर वल्चर (2017) ।

बेघर उपन्यास सन 1971 में प्रकाशित ममता कालिया का प्रथम उपन्यास है। अत्यंत गंभीर एवं गहन विषय चित्रित इस उपन्यास में नारी की स्थिति का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। इस उपन्यास का केंद्रीय विषय नारी की कौमार्यावस्था और उसके व नारी संबंध में समाज की गलत धारणाओं का यथार्थ चित्रण ममता कालिया ने अपने लेखनी से किया है। यह उपन्यास मध्यमवर्गीय लोगों की समाज की संकीर्णता विचारों का पिछड़ापन व अंधश्रद्धा को व्यक्त करता है। किसी भी रचना लेखन के पश्चात उस रचना पर आलोचकों के द्वारा सकारात्मक व नकारात्मक टिप्पणी होना सहज है, उसी प्रकार ममता के बेघर उपन्यास को भी इसका शिकार होना पड़ा।

‘नरक-दर-नरक’ उपन्यास ममता जी का दूसरा उपन्यास है जिसका प्रकाशन 1975 में हुआ। यह उपन्यास आधुनिक मध्यमवर्गीय जीवन में व्याप्त सामाजिक यथार्थ को चित्रित करता है। 207 पृष्ठों में लिखा यह उपन्यास वर्तमान शिक्षित युवकों को सताने वाली गंभीर समस्या बेरोजगारी का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। बेरोजगारी के कारण समाज में पारिवारिक स्थिति और एक युवा की मानसिक स्थिति का चित्रण किया गया है। इसी प्रकार इनका ‘प्रेमकहानी’ उपन्यास जो 1980 में प्रकाशित एक लघु उपन्यास है। 107 पृष्ठों में रचित यह उपन्यास जिसमें अनेक सामाजिक, पारिवारिक, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं को अपने उपन्यास का आधार

बनाया है। इस कहानी की नायिका जया है और नायक गिनेस है। नायिका जया पढ़ाई में अक्वल आने वाली लड़की है। वह उच्च शिक्षा प्राप्त करती है इसके लिए वह अपने चाचा के घर दिल्ली में रुकती है परंतु अपने चाचा के द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार करने के कारण वह हॉस्टल चली जाती है। इस समाज में स्त्री को भोग की वस्तु मानकर रिश्तों को तार-तार कर देने वाले समाज की स्थिति का चित्रण किया है। मनुष्य अपने विवेक को भूलकर वासना में लिप्त होकर किस प्रकार रिश्तों की अहमियत खो देता है इसका यथार्थ चित्रण उपन्यास में हुआ है। लड़कियाँ (1987) में रचित ममता कालिया का उपन्यास है। इसमें आधुनिक, अविवाहित सुशिक्षित युवा नारियों को नये आयाम के साथ प्रस्तुत करते हुए मुम्बई जैसे महानगर की विज्ञापनों का प्रभाव दर्शाया है। 61 पृष्ठों में रचित यह एक लम्बी कहानी या औपन्यासिक कृति के रूप में लिखित है। इस उपन्यास में मुम्बई महानगर में घटित घटनाओं व विज्ञापनों की दुनिया से प्रभाव ग्रहण कर उसका 'लड़कियाँ' रूप में सृजनात्मक चित्रण किया है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है इस उपन्यास की नायिका लल्ली है जो अविवाहित है तथा सहनायिका ऑफशा है वह भी अविवाहित है। दोनों अविवाहित नायिका व सहनायिका की जीवन शैली विचारों को इस लघु उपन्यास में चित्रित किया गया है। इस उपन्यास के संबंध में रवीन्द्र कालिया का कथन है कि- आधुनिक नगर बोध के साथ-साथ जीवन की स्पर्धा व्यक्त करने वाला लघु उपन्यास 'लड़कियाँ' व्यक्ति-मन के मर्मस्थल की इ.सी.जी. रिपोर्ट भी प्रस्तुत करता है। ममता कालिया ने मुम्बई नगर के विज्ञापन जगत को करीब से देखकर जो भाव ग्रहण किए 'लड़कियाँ' उसका सृजनात्मक रूप है।

उपन्यासों की श्रृंखला की कड़ी में ममता कालिया का एक ओर उपन्यास 'एक पत्नी के नोट्स' 1997 में लिखा गया है। इस उपन्यास की कथावस्तु प्रेम-विवाह पर आधारित है। इसके माध्यम से दिखाया गया है कि इस समाज में नारी चाहे कितनी शिक्षित हो जाए किंतु पुरुष की मानसिक सोच को कभी बदला नहीं जा सकता। एक शिक्षित पुरुष भी यही चाहता है कि नारी हमेशा उससे पीछे ही रहे ऐसी सोच की प्रेम कहानी इस उपन्यास में चित्रित की गई है जो पुरुष मानसिकता को उजागर करती है। इसमें नायक 'संदीप' जो साहित्य प्रेमी है। वह आई.ए.एस. की तैयारी करता है और नौकरी लग जाता है। 'संदीप' की सोच भी इसी पुरुष मानसिकता को उद्धृत करती है। संदीप भी 'कविता' को अपने से कमतर आंकता है।

ममता जी का 'दौड़' उपन्यास 2000 में प्रकाशित होता है जिसमें आधुनिक शिक्षित रेखा और राकेश समाज की मर्यादा को लांघकर प्रेमविवाह करते हैं और उनसे उत्पन्न दो पुत्र पवन व सघन भी बड़े होकर इसी राह पर चलते हैं। 'दौड़' उपन्यास में आज के दौर के बारे में लेखिका पात्रों और उनकी जीवनगत परिस्थितियों के माध्यम से वर्तमान ओद्यौगिक परिवेश में युवा प्रतिभा के मानसिक द्वंद्व, तनाव के जीवनगत परिणामों को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। इस रचना को कई आलोचकों ने प्रामाणिक आलोचना कहा है। उपन्यास की भूमिका में समीक्षक कृष्ण मोहन का मत ममताजी के शब्दों में प्रस्तुत है- युवा समीक्षक कृष्ण मोहन लिखते हैं यह बीसवीं सदी के अंत में भारतीय समाज सबसे गहरे सांस्कृतिक संकट का आख्यान है।

महिला लेखन की सशक्त हस्ताक्षर ममता कालिया का एक प्रमुख उपन्यास 'दुःखम-सुखम' भी है जिसका प्रकाशन वर्ष 2009 है। इस उपन्यास की कथावस्तु का थोड़ा आभास ममता कालिया के जीवन से संबंधित प्रतीत होता है। इसमें यशस्वी कथाकार ममता कालिया ने तीन पीढ़ियों के मध्य सक्रिय समय समाहित एवं समाज की विशिष्ट गाथा को चित्रित किया है। इस उपन्यास का ताना बाना ममता जी ने मथुरा, मुंबई और दिल्ली जैसे शहरों के इर्द-गिर्द बुना है। अलग-अलग शहरों से गुजरती रचना प्रक्रिया में ममताजी ने मध्यमवर्गीय परिवार के समस्त जीवन की जटिलताओं को यथार्थ वाणी दी है। इस उपन्यास के संबंध में सुशील सिद्धार्थ का कथन है कि लेखिका का 'जीवनानुभव अपनी सर्वोत्तम रचनाशीलता के साथ दुःखम-सुखम में आकार पा सका है। अमृतलाल नागर के उपन्यास खंजन-नयन के बाद ब्रज भाषा की मिठास टीस और अर्थ व्याप्ति का सबसे सार्थक उपयोग इस उपन्यास में हुआ है।'

'अँधेरे का ताला' उपन्यास में ममता जी ने अपने चिर-परिचित परिवेश कॉलेज की अध्यापिकाओं, छात्राओं तथा अन्य कर्मचारियों की मानसिकता को चित्रित करने का प्रयास किया है। यह उपन्यास 2009 में प्रकाशित हुआ जिसका प्रारंभ निराला की 'अँधेरे का ताला' कविता की पंक्तियों को सामने रखते हुए 'अँधेरे का ताला' खोलने वाली की असलियत को अपने विनोदपूर्ण व्यंग्य भरे शब्दों में व्यक्त करती है। वर्तमान भारतीय सामाजिक परिदृश्य में सुशिक्षित कार्यरत नारी के बदलते परिवेश का सजीव चित्रण इसमें किया गया है। इस उपन्यास में ममता कालिया ने वर्तमान में व्याप्त शिक्षा प्रणाली, कॉलेज शिक्षा की मानसिकता व कॉलेज भवन में होने वाले कार्यों का यथार्थ चित्रण इसमें प्रस्तुत किया है।

‘सपनों की होमडिलिवरी’ उपन्यास 21वीं सदी में लिखा गया है। यह उपन्यास वर्तमान आधुनिक जगत में पुरुष-स्त्री अर्थात् पति-पत्नी के मध्य संबंधों के बीच एक संतान के खोते हुए बचपन को दर्शाता है इसका प्रकाशन 2016 में होता है। इस उपन्यास में बिगड़ते दाम्पत्य जीवन, तलाकशुदा स्त्री और कामकाजी स्त्री-पुरुष की मानसिकता का यथार्थ चित्रण किया गया है। ममता कालिया ने इस उपन्यास का कथानक उनके सामने घटने वाली अप्रत्याशित घटना को आधार बनाकर उसे वर्तमान जगत में व्याप्त स्त्री-पुरुष संबंधों के इर्द-गिर्द बुना है। इस उपन्यास में एक मशहूर पाक कला विशेषज्ञ व उसके पति के झगड़े की सरेआम चर्चा का चित्रण उन्होंने अपने कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जिसमें पति द्वारा पत्नी का गला दबाने की तस्वीर कैमरे में कैद कर ली जाती है।

कलकत्ता की पृष्ठभूमि पर लिखा गया ‘कल्चर-वल्चर’ उपन्यास है जिसमें ममता कालिया ने कलकत्ता शहर में पनपने वाली हर नई संस्था का चित्रण यथार्थ रूप में किया है। इस प्रकार उभरने वाली संस्थाओं से लेखिका को थोड़ा आघात लगता है कि किस प्रकार संस्थाएँ आजकल कारोबार बनती जा रही हैं। ममता कालिया ने न केवल उपन्यास बल्कि कहानी विधा में भी अपना परचम लहराया है और अपनी लेखनी से कहानी विधा को भी सुशोभित किया है। आपका कहानी लेखन विभिन्न आयामों को छूता हुआ समाज के यथार्थ को चित्रित करता है। अपने कहानी लेखन के माध्यम से समाज में व्याप्त नारी संघर्ष, संत्रास, मध्यम वर्ग का चित्रण, आधुनिक जीवन की दौड़-भाग में कामकाजी महिलाओं की समस्या व आधुनिक यांत्रिक मानव जीवन का चित्र अपनी कहानियों में उकेरा है। आपकी कहानियों में अधिकतर नारी जीवन ही केंद्र बिन्दु रहा है। आपने अनेक कहानी संग्रहों का लेखन व प्रकाशन किया है। साहित्य की प्रत्येक विधा पर आपने अपनी लेखनी चलाई है-

ममता जी ने अनेक कहानी संग्रह हैं- छुटकारा 1969, एक अदद औरत 1975, सीट नंबर छह 1976, प्रतिदिन 1983, उसका यौवन 1985, जाँच अभी जारी है 1989, बोलने वाली औरत 1998, मुखौटा 2003, निर्मोही 2004, थिएटर रोड के कौवे 2006, पच्चीस साल की लड़की 2006, खुशकिस्मत 2010, काके दी हट्टी 2010, दस प्रतिनिधि कहानियाँ 2013।

ममता कालिया का प्रथम कहानी संग्रह ‘छुटकारा’ है जिसका प्रथम प्रकाशन 1969 में हुआ जबकि इसका चतुर्थ संस्करण 1983 में प्रकाशित हुआ। ममता

कालिया कहानी की भूमिका में कहती है कि मेरी पहली कहानी 'छुटकारा' में कच्ची धान की बाली की गंध है लेकिन भावुकता नहीं। सन् साठ के बाद के लेखकों की तरह मैंने भी भावुकता का बोझ उतार फेंक कर ही कहानी की दुनिया में कदम रखा। नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर कर इस कहानी संग्रह में पाश्चात्य सभ्यता को दर्शाने तथा अनैतिक संबंधों का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाया है। छुटकारा कहानी संग्रह में अनेक कहानियाँ समाहित हैं जैसे बड़े दिन की पूर्व साँझ, अपत्नी, पिछले दिनों का अँधेरा में इन्हीं समस्याओं पर प्रकाश डाला गया।

ममता कालिया का दूसरा कहानी संग्रह 'एक अदद औरत' में नायिका के द्वंद्व नारी मन की कुण्ठाओं को दर्शाया गया है। इसी प्रकार 'राए वाली' कहानी में परिवार के साथ-साथ सांसारिक जीवन में भी प्रताड़ित होने वाली नारी का चित्रण किया गया है। 'खाली होता हुआ घर', 'तस्की को हम न रोये', 'बसंत सिर्फ एक तारीख' इस कहानी में ममता कालिया ने नारी के तनाव ग्रस्त जीवन को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। आधुनिक काल में मनुष्य इतना व्यस्त है कि वह ऋतुओं का भी आनंद नहीं लेता और यांत्रिक जीवन जीता चला जाता है।

'सीट नंबर छह' कहानी संग्रह में ममता कालिया की 13 कहानियों का संकलन है। इस कहानी संग्रह में ममताजी ने पारिवारिक समस्याओं को सूक्ष्मता से दर्शाकर नारी जीवन की विभिन्न मनोदशाओं की अभिव्यक्ति की है। ममता कालिया ने नारी के विविध पक्षों का उद्घाटन इस कहानी संग्रह में किया है। इसमें 'पीली लड़की', 'लगभग प्रेमिका', 'प्यार के बाद', 'उपलब्धि' आदि कहानियों में प्रेम तथा पारिवारिक तनाव के मध्य स्त्री की मनोदशा का चित्रण किया गया है। 'बातचीत बेकार' है कहानी में अकेली स्त्री की मनःस्थिति का मार्मिक चित्रण समाहित है। 'फर्क नहीं' कहानी आत्म-कथात्मक शैली में लिखी गई है। इसमें समाज की लड़की के प्रति गलत धारणाओं का यथार्थ चित्रण किया गया है।

ममता कालिया ने अपनी रचनाओं से पाठक वर्ग के मस्तिष्क को उद्वेलित किया है। ममता कालिया को बचपन से लेकर अपनी शादी के पश्चात भी साहित्यकारों के सान्निध्य में रहने का पूर्ण अवसर मिलता रहा है, जिसका असर उनकी रचनाओं में निखरता रहा है। ममता कालिया का लेखन कभी अपने परिवार, बच्चों के कारण कभी अवरुद्ध नहीं हुआ बल्कि निर्बाध गति से चलता रहा है और वे अपनी रचनाओं में हमेशा जीवंतता प्रदान करती रही है।

‘प्रतिदिन’ कहानी संग्रह में ममता कालिया ने महानगरीय जीवन में नारी की स्थिति का चित्रण किया है। इसमें वर्तमान जीवन की जटिलताओं के मध्य नारी जीवन की मनोदशा का यथार्थ चित्रण किया गया है। यथार्थ के व्यापक धरातल पर नारी जीवन की त्रासदी को तार-तार करता यह कहानी संग्रह वर्तमान जीवन की जटिलताओं को प्रस्तुत करता है।

ममता जी की लेखनी की अनवरत धारा में रचित ‘उसका यौवन’ कहानी संग्रह जो 1985 में प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह में ममता कालिया ने अपनी स्मृति की अनेक घटनाओं, स्वप्न, अनुराग-विराग और आशा आकांक्षाओं को यथार्थ वाणी प्रदान की है। इस कहानी संग्रह में ‘उसका यौवन’, ‘नयी दुनिया’, ‘अपने शहर की बतियाँ’, ‘आहार’, ‘पच्चीस साल की लड़की’, ‘राजू’, ‘मनहूसाबी’, ‘मुहब्बत से खिलाड़’, ‘अट्ठानवाँ साल’, ‘मनोविज्ञान’, ‘अलमारी’, ‘बिटिया’, ‘दर्पण’ आदि कहानियाँ संग्रहित हैं।

‘जाँच अभी जारी है’ कहानी संग्रह में 16 कहानियों का संकलन है जैसे- ‘सेमिनार’, ‘उमस’, ‘रजत जयंती’, ‘इक्कीसवीं सदी’, ‘दाम्पत्य’, ‘नया त्रिकोण’, ‘प्रिया पाक्षिक’, ‘अनुभव’, ‘पहली तारीख’, ‘नायक’, ‘वर्दी’, ‘चोटिटन’, ‘झूठ’, ‘शॉल’, ‘इरादा’ इत्यादि कहानियों का इसमें संकलन किया गया है। ममता जी ने अपनी सुलेखनी से नारी तथा सामाजिक समस्याओं भ्रष्टाचारों को परिलक्षित कर वर्तमान समाज के दृश्य को उभारा गया है। सरकारी तंत्र व भ्रष्टाचार, नौकरीपेशा नारी की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया गया है।

‘बोलने वाली औरत’ कहानी संग्रह में 13 कहानियों का संकलन किया गया है। जिनमें नारी की समस्त समस्याओं को उद्घाटित किया है। वर्तमान में सामाजिक जीवन की सूक्ष्म जटिलताओं को स्पर्श कर उसे व्यक्त किया है इस कहानी संग्रह का प्रकाशन बीसवीं सदी के अंतिम दशक में होता है। इसमें ‘एक अकेला दुख’, ‘मुखौटा’, ‘मेला’, ‘जनम’, ‘सेवा’, ‘तासीर’, ‘किताबों में कैद आदमी पर्याय नहीं’, ‘अर्द्धांगिनी’ आदि कहानियों का संग्रह किया गया है।

‘मुखौटा’ 2003 में कहानी संग्रह प्रकाशित होता है। ममता कालिया की बेबाक अभिव्यंजना शैली को प्रदर्शित करता है। इसमें 18 कहानियों का संकलन है। इसमें ‘चिर कुमारी’, ‘परदेस’, ‘श्यामा’, ‘प्रतिप्रश्न’, ‘बाल-बाल बचने वाले’, ‘सफर’, ‘रोग’, ‘सीमा’, ‘एक दिन अचानक’, ‘रिश्तों की बुनियाद’, ‘दूसरा देवदास’, ‘बाण गंगा’ आदि कहानियों का संकलन है।

‘निर्मोही’ कहानी संग्रह का प्रकाशन सन 2004 में हुआ। इसमें 17 कहानियों का संकलन है। वर्तमान जीवन में नारी की समस्याओं को अनुभव द्वारा अभिव्यक्त करके ममता कालिया ने नारी के अंतर्मन की अनुभूति व्यक्त की है। इस कहानी में नारी की त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया गया है। इसमें ‘सुलेमान ऐसा ही था’, ‘दिल्ली’, ‘बांगडू’, ‘वह मिली थी बस में’, ‘बाथरूम’, ‘सिकंदर’, ‘नमक’, ‘पिकनिक’ इस तरह की अनेक कहानियों का संकलन है।

‘थिएटर रोड़ के कौवे’ कहानी संग्रह 2006 में प्रकाशित होता है। आधुनिक समाज में नौकरीपेशा स्त्री किसी का गतिरोध पसंद नहीं करती इसी समस्या का चित्रण इसमें किया गया है इसमें अनेक कहानियों को समाहित किया गया है जैसे छोटे गुरु, नए दोस्त, उनका जाना आदि। ‘थिएटर रोड़ के कौवे’ कहानी में अविवाहित नौकरीपेशा स्त्री का यथार्थ चित्रण है। इसमें नायक सैकत व नायिका सत्ताईस साल की बेला है। बेला एक कंपनी में जॉब करती है। सैकत एक महीने के लिए लंदन जा रहा है। बेला उसके साथ नहीं जाना चाहती है। वह सोचती है सैकत चला जाएगा तो वह कुछ दिनों की छुट्टियाँ लेकर अपनी रचनाओं को पूर्ण करेगी। उसे सैकत की रोक-टोक पसंद नहीं है। बेला के माता-पिता का निधन होने के पश्चात् वह इलाहाबाद से कोलकाता के थिएटर रोड़ के फ्लेट में आ जाती है जहाँ उसे हमेशा कौए की काँव-काँव ही सुनाई पड़ती है। आधुनिक समाज में नौकरीपेशा स्त्री किसी का गतिरोध पसंद नहीं करती।

‘पच्चीस साल की लड़की’ 2006 में प्रकाशित होने वाली ममता जी की प्रमुख कहानी संग्रहों में से एक है। नारी समस्याओं के प्रति गहन चिंतन कर गंभीरतापूर्वक ममता कालिया ने अपने कहानी संग्रह में सुशिक्षित, अविवाहित, नारियों का यथार्थ चित्रण किया है। ‘पच्चीस साल की लड़की’ कहानी में एक अफसर की बीवी की मानसिक रुग्णता का चित्रण किया गया है जो अपने पति के दफ्तर में काम करने वाली हर लड़की को शंका की नजर से देखती है। अफसर पति के गांव चले जाने पर जब एक स्टेनो उसके हस्ताक्षर के लिए घर आती है तो वह उस पर शक करती है। पच्चीस साल की उम्र में शादी न करने पर उसे भला बुरा सुनाती है। इस प्रकार इस समाज में शिक्षित व अशिक्षित कोई भी हो स्त्री के प्रति उनकी वास्तविक संकीर्ण सोच का यहाँ यथार्थ चित्रण किया गया है।

‘खुशकिस्मत’ कहानी संग्रह 2010 में प्रकाशित होता है इसमें बगिया इत्यादि कहानियों का संग्रह है। खुशकिस्मत इस कहानी में कॉलेज व विद्यार्थी के मध्य के मानसिक अंतर्द्वंद्व को व्यक्त किया है। तीन बहनों का भाई जो अपनी बहन का अभिभावक बनकर कॉलेज में आता है, कुछ नियमों के कारण उसका प्रवेश न होये पर वह प्राध्यापिका पर हमला कर देता है, वह खून से लथपथ हो जाती है। इस प्रकार ममता कालिया ने अपने कथा साहित्य में कहानियों उपन्यासों के माध्यम से यथार्थ अंकन किया है।

ममता कालिया हिंदी साहित्य की सशक्त रचनाकार, लेखिका रही है जिनके पिता श्री विद्याभूषण अग्रवाल व माता श्रीमती इंदुमति की द्वितीय संतान के रूप में ममता कालिया का जन्म 2 नवंबर 1940 में वृंदावन के मिशन अस्पताल में इनका जन्म हुआ। ममता जी का सम्पूर्ण जीवन मथुरा में बीता। ममता के दादाजी का मथुरा में आदत का व्यापार था और इस पुश्तैनी व्यापार को आगे बढ़ाने में जिम्मेदारी पिताजी पर थी पर पिताजी ने पुश्तैनी व्यापार से बगावत करके नौकरी शुरू कर दी। पिता की नौकरी के चलते ममता जी की शिक्षा नागपुर, मुंबई, पूणे, इंदौर, दिल्ली के विश्वविद्यालयों में हुई। आपने अंग्रेजी में एम.ए. करके सर्वप्रथम दिल्ली के दौलतराम कॉलेज में प्राध्यापक की नौकरी पायी। 1973 से 2001 तक इलाहाबाद के एक डिग्री कॉलेज में प्राचार्य के रूप में कार्यरत रहकर निरन्तर लेखन के प्रति समर्पित रही।

ममता जी का विवाह भी एक प्रसिद्ध साहित्यकार रवीन्द्र कालिया से हुआ जिसके कारण उनके लेखन को गति मिलती रही। 12 दिसम्बर 1965 को ममताजी का विवाह समानधर्मी साहित्यकार रवीन्द्र कालिया से हुआ।

ममता कालिया के दो पुत्र अनिरुद्ध और प्रबुद्ध हैं जिनसे वे अत्यंत प्रसन्न रहती हैं। ममताजी के व्यक्तित्व में सादगी, सरलता एवं व्यवस्थित पहनावे का प्रभाव दिखाई देता है। स्वभाव से वह हंसमुख मिलनसार गुणों से युक्त है। ममता जी अपने पारंपरिक रूप माँ, पत्नी, अध्यापिका आदि का त्याग करके रात्रि में एकांत में बिना अवरोध के लिखना पसंद करती हैं। उनकी लेखन प्रक्रिया इतनी सुदृढ़ और गतिमान है कि वे एक साथ दो-दो कहानियाँ लिखने में सक्षम हैं। एक घर में दूसरी कॉलेज में। अपनी साहित्यिक कृतियों पर निरंतर पुरस्कार एवं सम्मान की प्राप्ति में ममता कालिया की लेखन प्रक्रिया में अद्भुत प्रेरणा का कार्य किया है। ममता जी को

सर्वश्रेष्ठ कहानीकार का पुरस्कार, 1985 को उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान की ओर से 'उसका यौवन' कहानी संग्रह पर 'यशपाल सम्मान' घोषित हुआ। इस प्रकार ममता कालिया का जीवन व्यक्तित्व काफी सुखदपूर्वक रहा। उन्होंने जीवन की आने वाली कठिनाईयों का सामना करते हुए जीवन को सुखप्रद बनाने का भरपूर प्रयास किया है।

### तृतीय अध्याय : ममता कालिया के कथा-साहित्य में स्त्री जीवन का यथार्थ

नारी को देवी का स्वरूप माना जाता रहा है। नारी की सुरक्षा के लिए कायदे कानून बनाए गए हैं परंतु फिर भी नारी असुरक्षित है। राह पर चलते हुए, स्कूल, कॉलेज तथा कार्यालय जाते हुए सदैव उसके मन में असुरक्षा का भाव उमड़ता रहता है भगवान ने नारी को सुकोमल तन और मन तो दिया परंतु शोषण का जहर पीने का अभिशाप भी दिया।

तृतीय अध्याय को पाँच उपबिन्दुओं में बांटा गया है। जिसमें स्त्री शोषण का यथार्थ, उपेक्षित स्त्री का यथार्थ, स्त्री अधिकारों के हनन का अधिकार, प्रगतिशील चेतना से युक्त नारी का यथार्थ, आर्थिक दुर्बलता की शिकार पर प्रस्तुत अध्याय में विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

हम सदैव से सुनते आ रहे हैं कि नारी की स्थिति वैदिक काल से महाभारत युग तक सही थी तथा बाद में अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण हुई है, परंतु इस तथ्य पर कौन प्रश्न चिह्न लगा सकता है कि स्वयं माता सीता को भी अग्नि परीक्षा देनी पड़ी थी। क्या यह शोषण नहीं क्या नारी के साथ अन्याय नहीं। मनहूसाबी कहानी में उषा को उषा मनहूसा कहकर प्रताड़ित करना और हमेशा पति व परिवार द्वारा प्रताड़ित होती रहती है।

यदि आज के संदर्भ में देखे तो नारी का जीवन एक गंभीर समस्या बनता जा रहा है। छोटे लड़कों से लेकर अर्धे उक्त के पुरुष तक सभी उसका शोषण करने को तैयार रहते हैं। अब न उम्र का लिहाज है, न संस्कारों की शर्म। उनके साथ कहीं पर बदसलूकी होती है तो कहीं पर अभद्र एवं अश्लील टिप्पणी होती है। आये दिन बलात्कार। अपहरण एवं कत्ल की घटनाएँ घटती रहती है नारी का मानसिक शोषण होता है। शादी के पश्चात नारी के जीवन में एक अलग तरह का मोड़ आता जिससे वह स्वतंत्र रूप से अपनी उड़ान नहीं भर पाती। दुःखम-सुखम उपन्यास की विद्यावती भी अपने जीवन में निराश रहती है उसके माता-पिता उससे किनारा कर लेते हैं। विद्यावती देश की आजादी में बढ़चढ़कर हिस्सा लेना चाहती है परंतु अपने पति की धौंस के कारण व कुछ नहीं कर सकती।

पितृप्रधान समाज में पुरुष ने अपने स्वार्थ हेतु अनेक नियम प्राचीन समय से ही बनाए थे। जिनके कारण स्त्री उसके किसी कार्य में दखल नहीं दे सकती थी उसकी सीमा घर की चारदीवारी ही थी और आज यह शोषण घर की चारदीवारियों में भी हो रहा है। कहीं कोई पति अपनी पत्नी को प्रताड़ित करता, मारपीट करता है तो कहीं कोई अपनी ही बेटी से नाजायज संबंध स्थापित करने की गलत कोशिश करता है। इस प्रकार की घटनाएँ समाचार पत्रों में पढ़ने व सुनने को मिलती हैं। 'एक पत्नी के नोट्स' में कविता अपने पति से परेशान हो जाती है। संदीप कविता को स्वयं से आगे बढ़ता हुआ नहीं देख पता है उसे ईर्ष्या, जलन करता है। कविता संदीप के कड़वे शब्दों से प्रताड़ित होती रहती है। कविता सोचती है कि इस भयानक माहौल में वह कैसे अपना जीवन बिता पायेगी। भारतीय समाज में पीड़ित नारी की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए एक पत्रकार ने कहा है- भारत की स्त्रियाँ घर परिवार में उसी प्रकार स्थित रहती थी, जैसे किसी स्थान पर साज सजावट का सामान सजा रहता है और सुंदर वस्तुओं के शोपीस रखे जाते हैं। यह नारी जीवन की विडंबना ही रही है कि चाहे वह समाज को एक महत्वपूर्ण इकाई अर्थात् परिवार की नींव है जिस पर गृहस्थ व समाज के समस्त सदाचार टिके हुए हैं परंतु उसे कहीं भी उसका उचित स्थान नहीं दिया जाता। उस पर दुनिया भर के कर्तव्यों को लाद दिया जाता है पर अधिकार कभी नहीं दिया जाता। वह परिवार का पोषण करती है, सभी पर अपना सर्वस्व न्योछावर करती है परंतु उससे ही पोषित होकर सभी उसी का शोषण करते हैं।

#### **चतुर्थ अध्याय : ममता कालिया के कथा-साहित्य में सामाजिक सांस्कृतिक यथार्थ**

मनुष्य सामाजिक प्राणी होता है। सामाजिक संबंधों का ऐसा ताना-बाना जिसमें व्यक्ति अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्व का निर्वहन करता है। साधारण रूप से समाज में सामाजिक संबंधों, समाज की संस्कृति भाषा आदि का निर्वाह होता है। मानवीय संबंधों का समूह ही समाज कहलाता है। बिना समाज के व्यक्ति अपना विकास नहीं कर पाता क्योंकि मानव एक-दूसरे का पूरक होता है जहाँ उसे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आदान-प्रदान करना होता है। हिंदी साहित्य के इतिहास में सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों, स्थिति आदि का बखूबी उल्लेख किया है। हिंदी साहित्य में भारतीय समाज की सामाजिक सांस्कृतिक विशेषताओं को हम रचनाओं के माध्यम से जान सकते हैं। समाज विकासशील होता है। जहाँ नित नए परिवर्तन होते रहते हैं। यदि मानव भी समय अनुसार गतिशील नहीं होगा तो आधुनिक समाज में वह पिछड़

जाएगा। इस अध्याय के अंतर्गत ममता कालिया के कथा-साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक रूपों के उठाए गए पहलुओं की विस्तृत व्याख्या की गई है। जिसे विभिन्न छोटे-छोटे बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है। प्रस्तुत अध्याय को सामाजिक संदर्भ, लैंगिक भेदभाव तथा मानवीय मूल्यों का हनन, कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा, पारिवारिक विघटन व टूटन, पाश्चात्य संस्कृति व वर्तमान परिवेश आदि उपबिन्दुओं में बांट कर विश्लेषण किया गया है जिससे स्त्री जीवन के अस्तित्व संघर्ष व स्त्री आदि विभिन्न पहलुओं के माध्यम से ममता कालिया के कथा साहित्य को समझा जा सकता है।

ममता जी ने समाज में नारी के संघर्ष व उसकी स्थिति का चित्रण किया है। आधुनिक नारी शिक्षित होते हुए भी समाज में पुरुष के बराबर दर्जा प्राप्त नहीं कर पाई है। आज भी वह अपने बारे में सोचती है। समाज निर्माण में नारी की अहम भूमिका होती है। स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने के बावजूद कर्तव्यों की बेड़ियों में जकड़ी हुई है। स्त्री के अस्तित्व को लेकर समाज की दोहरी मानसिकता को ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य में चित्रित किया है।

आज वर्तमान समय में शिक्षा का विकास होने के बावजूद गुरु-शिष्य के संबंधों में सम्मान का भाव समाप्त होता जा रहा है-

**गुरु गोविंद दोउ खड़े**

**काके लागू पाय**

**बलिहारी गुरु आपने**

**जिन गोविंद दियो बताय।**

कबीर जी का यह दोहा आज आधुनिक शिक्षा प्रणाली में मानो अप्रासंगिक हो गया है। प्राचीन काल में गुरु को भगवान से भी ऊपर का दर्जा प्राप्त था। गुरु के प्रत्येक आदेश का पालन करना शिष्य का अपना कर्तव्य व सौभाग्य समझता था। शिष्य के मन में गुरु के प्रति केवल आदर भावना ही नहीं बल्कि गहन आस्था व निष्ठा थी लेकिन आजकल समाज में शिक्षा के गिरते स्तर ने गुरु को भी नीचे गिरा दिया है। संवाद के अभाव में गुरु शिष्य के सम्बन्ध प्रभावित हुए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया है। शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं को ममता

कालिया ने अपने कथा साहित्य का अभिन्न अंग बनाया है क्योंकि वे स्वयं अध्ययन कार्य से जुड़ी हुई थी। उन्होंने शिक्षकों व छात्रों का निकट से अवलोकन किया है।

ममता कालिया ने अपनी कहानियों, उपन्यासों में पाश्चात्य सभ्यता का भारतीय संस्कृति पर बढ़ते प्रभावों का बखूबी चित्रण किया है। भारतीय समाज पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है जिससे अकेलेपन की समस्या, अविवाहित रहना, शादी पूर्व यौन संबंध स्थापित करना, बेरोजगारी बढ़ना आदि समस्याओं को बढ़ावा मिला है। इस प्रकार ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्रियाँ अपने संघर्ष, अस्तित्व के संघर्ष के लिए लड़ती दिखाई देती हैं। ममता कालिया के कथा-साहित्य में स्त्रियों में नारी की प्रेम की समस्या, अकेलेपन की समस्या, विधवा नारी की समस्या आदि अनेक रूपों का यथार्थ चित्रण मिलता है। भारतीय संस्कृति और समाज में नारी एक विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित रही है। भारतीय संस्कृति ने उसे माता के रूप में उपस्थित कर इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि व मानव के भोग की सामग्री न होकर उसकी वन्दनीया है। नारी का सम्मान आदिकाल से होता आ रहा है। हिंदी साहित्य जगत में नारी की अवहेलना पर अनेक प्रश्न उठाए गए। परन्तु अब परिवेश बदला है। स्थितियों में परिवर्तन भी आया है। स्त्रियाँ विभिन्न क्षेत्र में अपनी प्रतिभा कौशल का परचम लहरा रही हैं। आज आधुनिक युग में नारी पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर समाज में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। इक्कीसवीं शताब्दी में महिला का वर्चस्व हर क्षेत्र में व्याप्त है। आज स्त्रियाँ घर चाहरदीवारी से निकलकर समाज में अपनी जीवंतता का प्रमाण दे रही हैं। साहित्य में नारी की अवहेलना पर अनेक प्रश्न उठाए गए हैं उनके समाधान हेतु अनेक साहित्यकारों ने अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार नारियों की समस्त समस्याओं पर विचाराभिव्यक्ति कर इस दिशा में विस्तृत वाणी प्रदान की। आज नारी विमर्श और नारी चेतना से सम्पन्न अनेक भारतीय साहित्य सृजित हो रहा है। उन्हीं रचनाकारों में ममता कालिया जो 1960 से साहित्य में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। साठोत्तरी लेखन के यथार्थवादी महिला रचनाकारों में ममता कालिया का स्थान महत्वपूर्ण रहा है और वे आज भी साहित्य लेखन में अपनी सक्रिय भूमिका अदा कर रही हैं।

## पंचम अध्याय : ममता कालिया के कथा-साहित्य में राजनीतिक एवं आर्थिक यथार्थ

ममता कालिया की कहानियाँ उस समय की आर्थिक और राजनीतिक यथार्थ को उद्घाटित करती हैं जो व्यापक सामाजिक परिस्थितियों में सामने आने वाली जटिलताओं और चुनौतियों पर जोर देती हैं। कालिया के कहानी व उपन्यास दर्शाते हैं कि कैसे सत्ता विशेषाधिकार और असमानता राजनीति और अर्थशास्त्र को आकार देते हैं। ममता कालिया अपने कथा साहित्य में राजनीतिक वास्तविकता भ्रष्टाचार सार्वजनिक कर्तव्य और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा पर लिखती हैं, आम तौर पर राजनेताओं और नौकरशाहों के नैतिक दुविधाओं की आलोचना करती हैं। कालिया अन्याय के पीड़ितों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए कुशलता से आर्थिक वास्तविकताओं को समझती हैं। वह गरीबी, बेरोजगारी और आर्थिक उथल-पुथल का सामना कर रहे विभिन्न पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को दर्शाती हैं। उनकी कहानियों के माध्यम से वह दिखाती हैं कि कैसे आर्थिक नीतियाँ वैश्वीकरण और आर्थिक असमानता लोगों को नुकसान पहुँचाती हैं।

ममता कालिया द्वारा राजनीतिक एवं आर्थिक वास्तविकताओं का परिष्कृत चित्रण उनके परस्पर जुड़ाव पर जोर देता है। वह सामान्य व्यक्तियों पर उच्च स्तरीय नीतिगत निर्णयों के परिणामों का अध्ययन करती हैं। जीविकोपार्जन की उनकी क्षमता, संसाधन और सफलता के मार्ग शामिल हैं। उनकी कहानियाँ पाठकों को सामाजिक, आर्थिक प्रणाली की संरचनात्मक असमानताओं का पता लगाने के लिए शिक्षित करती हैं जो समावेशी विकास और न्यायसंगत विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। ममता कालिया की लेखनी जटिल राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों को पकड़ती है। उनकी रचनाएँ पाठकों को शक्ति और मानवीय भावना की क्षमता से रूबरू कराती हैं।

ममता कालिया स्वार्थी राजनीति के नैतिक निहितार्थों की जाँच करती हैं, उन नेताओं की नैतिक ईमानदारी पर सवाल उठाती हैं जो समाज के लिए दीर्घकालिक लाभों से पहले अल्पकालिक लाभ को प्राथमिकता देते हैं। किसी चीज की सिर्फ आलोचना करने से संतुष्ट न होकर, वह मौजूदा राजनीतिक संस्कृति और प्रक्रियाओं का पुनर्मूल्यांकन करने का भी सुझाव देती हैं। नैतिक नेतृत्व की ओर बदलाव जो व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की तुलना में ईमानदारी और सार्वजनिक भलाई को अधिक महत्व देता है, वह कुछ ऐसा है जिसकी वह वकालत करती हैं।

कालिया जी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं पर वर्ग के आर्थिक स्वास्थ्य के व्यापक प्रभावों पर प्रकाश डालती हैं। वह चर्चा करती हैं कि कैसे उनके उपभोग पैटर्न आर्थिक

विकास और स्थिरता को संचालित करते हैं और उन नीतियों के महत्व पर जोर देते हैं जो उनकी वित्तीय सुरक्षा और उर्ध्वगामी गतिशीलता का समर्थन करते हैं। ममता कालिया का काम मध्यम वर्ग के भीतर सामाजिक-आर्थिक विविधता को संबोधित करना है। यह पहचानते हुए कि जहाँ कुछ परिवार आराम का अनुभव कर सकते हैं। संघर्ष और तनाव ममता कालिया की कहानियों में व्याप्त है, जो उनकी कहानियों को जटिलताओं व भावनात्मक गहराई की परतों से समादृत करते हैं। चाहे पारस्परिक गतिशीलता की ममता कालिया दबाव में मानवीय अंतर्क्रियाओं की पेचीदगियों को कुशलता से दर्शाती है। अपने उपन्यासों में ममता कालिया अक्सर कई स्तरों पर संघर्ष को चित्रित करती है। नैतिक दुविधाओं से जूझते पात्रों के भीतर आंतरिक संघर्ष या सामाजिक विभाजनों द्वारा संचालित बाहरी टकराव। ये संघर्ष चरित्र विकास के लिए उत्प्रेरक का काम करते हैं। उनकी कमजोरियाँ, इच्छाओं और प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने में उनके द्वारा किए गए विकल्पों को प्रकट करते हैं। ममता कालिया के कथा साहित्य में राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र व राजनीतिक क्षेत्र की प्रगति का प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि व आत्मनिर्भर होकर नारी ने अपने परिवार व समाज को भी गौरवान्वित किया।

**उपसंहार** - शोध कार्य की अंतिम यात्रा तक आते-आते मन को सुखद अनुभूति की प्राप्ति होती है। एक अलग ही प्रकार का आनंद प्राप्त होता है जिसने शोध कार्य के अन्तर्गत होने वाली मानसिक थकान को तिरोहित कर दिया है। ममता कालिया के कथा साहित्य में यथार्थ बोध : एक अध्ययन के सभी अध्यायों को इसमें संक्षेप में समाहित किया गया है। ममता कालिया के व्यक्तित्व कृतित्व, यथार्थ के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया है। ममता कालिया का सम्पूर्ण साहित्य प्रेम की नई अवधारणा का दस्तावेज है। ममता जी ने अपने ज्ञान, चेतना, बौद्धिक संपदा के कारण सम्पूर्ण हिंदी साहित्य में एक अमिट जगह बनाई है जिसके पदचिह्न अनवरत चलते रहेंगे आपने हिंदी साहित्य में अपनी पहचान अपनी लेखनी, तीव्र बुद्धि के दम पर कायम रखी है और निरंतर आपकी चमक साहित्य में बनी रहेगी।



# संदर्भ ग्रन्थ सूची

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

### आधार ग्रन्थ

1. ममता कालिया, 'बेघर', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1971
2. ममता कालिया, 'नरक दर नरक' किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975
3. ममता कालिया, 'एक पत्नी के नोट्स', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977
4. ममता कालिया, 'प्रेम कहानी', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980
5. ममता कालिया, लड़कियाँ, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984
6. ममता कालिया, 'एक अदद औरत', प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 1998
7. ममता कालिया, 'दौड़' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
8. ममता कालिया, 'जाँच अभी जारी है', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
9. ममता कालिया, 'सीट नं. छह', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005
10. ममता कालिया, 'मुखौटा', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
11. ममता कालिया, 'निर्मोही', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
12. ममता कालिया, 'थिएटर रोड के कोए', पेंगुअन बुक्स, नई दिल्ली, 2006
13. ममता कालिया, 'पच्चीस साल की लड़की', रेमाधव पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2006
14. ममता कालिया, 'छुटकारा', लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
15. ममता कालिया 'अंधेरे का ताला', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
16. ममता कालिया, 'प्रतिदिन', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
17. ममता कालिया, 'काके दी हट्टी', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
18. ममता कालिया, 'उसका यौवन', भारतीय साहित्य संग्रह, नई दिल्ली, 2011
19. ममता कालिया, 'दुःखम-सुखम', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2013

20. ममता कालिया, 'कल्चर-वल्चर', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
21. ममता कालिया, 'सपनों की होम डिलीवरी', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

### सहायक ग्रन्थ

22. डॉ. जानचंद शर्मा, आधुनिक हिंदी कहानी में वर्णित सामाजिक यथार्थ, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली, संस्करण-1974
23. एन.के. महता, वर्ग विचारधारा एवं समाज, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, संस्करण-1994
24. गोपालराय, हिंदी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2002
25. नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2002
26. इन्द्रप्रकाशन पाण्डेय, हिंदी के अधुनातन उपन्यास, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, संस्करण-2004
27. मैत्रेयी पुष्पा, खुली खिड़कियाँ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2006
28. डॉ. एन. मोहन, समकालीन हिंदी कहानी, शिल्पायन संस्थान, दिल्ली, संस्करण-2007
29. देशपांडे, वैशाली स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, विकास प्रकाशन, कानपुर, संस्करण-2007
30. पुष्पपाल सिंह, भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2012
31. ललित शुक्ल, नासिरा शर्मा, शब्द एवं संवेदना की मनोभूमि, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली

32. अनिता गुलाटी रचना धर्मिता के प्रतिबद्ध ममता कालिया, दैनिक ट्रिब्यून, संस्करण-जनवरी 1981
33. रवीन्द्र कालिया, सृजन के सहयात्री, कितबाघर प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 1996
34. गोपाल राय, हिंदी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
35. डॉ. गरिमा श्री वास्तव, ऐ लड़की में नारी चेतना, संजय प्रकाशन, संस्करण 2003
36. ममता कालिया, मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012
37. ममता कालिया, थोड़ा सा प्रगतिशील, लोकभारती प्रकाशन, 2014
38. ममता कालिया, सं. संजय सहाय, धारावाहिक उपन्यास, कल्चर-वल्चर, संस्करण-हंस, अप्रैल 2016
39. राजेश जोशी के लेख, समकालीनता का प्रश्न और कविता, आलोचना, नामवर सिंह, अंक-4
40. डॉ. रेखा पाटील, समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी, विद्या प्रकाशन सी 449 गुजैनी, कानपुर 208-022
41. हेरिशा, डिक्शनरी ऑफ लिटरेरी टर्मस
42. शिवकुमार मिश्र, यथार्थवाद दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली, 1983, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
43. नंददुलारे वाजपेयी, आधुनिक साहित्य, भारती भण्डार, प्रयाग 1957, भारती भण्डार प्रकाशन
44. रामचंद्र वर्मा, मानक हिंदी कोश (खण्ड-4) प्रयाग प्रथम संस्करण-1965, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
45. हजारी प्रसाद द्विवेदी, विचार और वितर्क, साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद द्वितीय संस्करण-1961, साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद

46. त्रिभुवन सिंह, हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद हिन्दी प्रचार पुस्तकालय, वाराणसी, वि.सं.-2014, हिंदी प्रचार पुस्तकालय, वाराणसी
47. मेयि पेई, दि लिविंग वैबस्टर इन्साइक्लोपीडिया डिक्शनरी इंग्लिश लैंग्वेज इंस्टीट्यूट ऑफ, आगरा, 1977
48. विलियम हैरिस, दि न्यू कोलंगिया इन्साइक्लोपीडिया, कोलंबिया युनिवर्सिटी प्रेस, चतुर्थ संस्करण, 1975
49. मुक्तिबोध, नई कविता का संघर्ष, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1983
50. डॉ. प्रतिभा प्रसाद, अमृतलाल नागर के उपन्यासों में यथार्थ बोध, प्रथम संस्करण-2013, अमन प्रकाशन
51. शिवकुमार मिश्र, यथार्थवाद, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1983
52. सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1967
53. लालजी राम शुक्ल, सरल मनोविज्ञान
54. मुहम्मद फरीदुद्दीन, राही मासूम रजा के उपन्यासों का समाज शास्त्रीय अध्ययन
55. सत्यप्रकाश मिश्र (स.) प्रेमचंद के श्रेष्ठ निबंध, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
56. धीरेन्द्र वर्मा (स.) हिंदी साहित्य कोश, प्रयाग, प्रथम संस्करण 1965 ई., वाणी प्रकाशन, दिल्ली
57. कालिया ममता - मेरे साक्षात्कार (प्रदीप सौरभ से बातचीत), किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
58. तिवारी रामचंद्र, हिंदी उपन्यास, विश्वविद्यालय प्रकाशन
59. कालिया ममता, बेघर उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
60. राय गोपाल, हिंदी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
61. तिवारी रामचंद्र, हिंदी उपन्यास, विश्वविद्यालय प्रकाशन

62. शाम सानप, ममता कालिया के कथा-साहित्य मेनारी चेतना, विकास प्रकाशन, अहमदाबाद
63. ममता कालिया, तीन लघु उपन्यास, संस्करण-2020, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
64. उपाध्याय श्रद्धा, हिंदी उपन्यास : वस्तु एवं शिल्प, अमन प्रकाशन, कानपुर
65. कालिया ममता, दौड़ (भूमिका से), वाणी प्रकाशन, दिल्ली
66. कालिया ममता, दुःखम-सुखम, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली
67. कालिया ममता, अँधेरे का ताला, (उपन्यास के कवर पेज से), हितकारी प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली
68. कालिया ममता, सपनों की होम डिलीवरी, पेपर बेक्स, दिल्ली
69. कालिया ममता उपन्यास कल्चर-वल्चर (पूर्व कथन से), संस्करण 2020, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
70. कालिया ममता 'छुटकारा' कहानी संग्रह, दूसरा संस्करण 2016 भूमिका से, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
71. बिजापुरे डॉ. फैमिदा 'ममता कालिया' व्यक्तित्व-कृतित्व, प्रथम संस्करण 2004, विनय प्रकाशन, कानपुर
72. कालिया ममता 'सीट नंबर छह', कहानी संग्रह, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
73. कालिया ममता, 'उसका यौवन' कहानी संग्रह, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
74. कालिया ममता 'जाँच अभी जारी है' कहानी संग्रह (किताब के पीछे वाले पृष्ठ से), लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
75. कालिया ममता 'बोलने वाली औरत', कहानी संग्रह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
76. कालिया ममता, ममता कालिया की कहानियाँ खण्ड दो, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
77. सोनट के माधुरी, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में चेतना प्रवाह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
78. कालिया ममता, 'कितने शहरों में कितनी बार', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

79. कालिया ममता, मेरे साक्षात्कार (रेणु दीक्षित से बातचीत), किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
80. कालिया ममता, मेरे साक्षात्कार (कोमल राजदेव से बातचीत), किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
81. डॉ. शाम सानप, ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना, विकास प्रकाशन
82. गुलाटी अनिता, रचनाधर्मिता के प्रतिबद्ध ममता कालिया, दैनिकी ट्रिब्यून जनवरी 1981
83. लमही पत्रिका जुलाई-सितंबर, 2011
84. डॉ. सानप शाम, ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना, विकास प्रकाशन
85. डॉ. गनेस दास, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नारी के विविध रूप, अक्षय प्रकाशन, कानपुर
86. कालिया ममता, काके दी हट्टी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
87. कालिया ममता, मुखौटा, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
88. कालिया ममता, श्रेष्ठ कहानियाँ, डायमंड बुक्स प्रकाशन

### **कोश साहित्य**

89. संस्कृत हिन्दी कोश, शिवराज वामन व आप्टे, 1969
90. साहित्य कोश भाग 192, सं. धीरेन्द्र वर्मा, 2020
91. मानविकी पारिभाषिक कोश, सं. डॉ. नरेन्द्र, 1965
92. हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, 1990
93. व्यावहारिक पर्यायकोश, महेन्द्र चतुर्वेदी, ओमप्रकाश गांवा, 1980
94. मिथक कोश, डॉ. उषापुरी विधा वाचस्पति, 1986

## पत्र-पत्रिकाएँ

1. अनीता गुलाटी, रचना धर्मिता के प्रतिबद्ध ममता कालिया, दैनिक ट्रिब्यून, जनवरी-1981
2. रोहिणी अग्रवाल, पत्तखोर: नशे की दुनियाँ का अंतरंग सच, कथादेश, जून-2007
3. अमिताभ राय, विमर्श के बाहर भी जिंदगी है, समीक्षा, जुलाई-सितम्बर-2010
4. बटरोही, हिंदी उपन्यास में देह व्यापार : स्त्री की नजर से समयांतर, समयांतर, सं. पंकज बिष्ट, जून-2012
5. ममता कालिया, सं. संजय सहाय, धारावाहिक उपन्यास 'कल्चर-वल्चर' हंस पत्रिका, 2016
6. पत्रिका - आजकल, नई दिल्ली
7. आलोचना - नई दिल्ली
8. कसौटी - पटना
9. नया ज्ञानोदय - नई दिल्ली
10. परख - इलाहाबाद
11. बहुवचन - वर्धा
12. वागर्थ - कोलकाता
13. साक्षात्कार - भोपाल
14. हंस - नई दिल्ली



# शोध-पत्र

## ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री जीवन का संघर्ष

डॉ. अनिता वर्मा

आचार्य हिंदी

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राज.

रमा उदावत

शोधार्थी

हिन्दी विभाग

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

इतिहास साक्षी है कि भारतीय नारी सदियों से पितृसत्तात्मक समाज द्वारा शोषित होती रही है। भारतीय संस्कार रूढ़ियाँ तथा रीति-रिवाज आदि सभी स्त्री की दासता के परिचायक हैं। समाज में स्त्री की स्थिति हमेशा दयनीय रही है। मर्यादा, कर्तव्य, संस्कारों के नाम पर हमेशा उसका शोषण किया गया है। इसलिए उसे अबला, बेचारी आदि नामों से संबोधित किया जाता है। वैसे तो पत्नी को अर्धांगिनी कहा जाता है। परन्तु पुरुष ने उसे कभी बराबर का दर्जा नहीं दिया। सारे अधिकार पुरुष के हिस्से में आते हैं तथा सारे कर्तव्य स्त्री के हिस्से। अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए पुरुष हमेशा नारी का दमन करता रहा है।

“नारी उत्पीड़न और दासता का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना असमानता और उत्पीड़न पर आधारित सामाजिक संरचनाओं के उद्भव और विकास का इतिहास प्राचीन साहित्य में ढेंरो मिथक और कथाएं मौजूद हैं जो पुरुष स्वामित्व की सामाजिक स्थिति के विरुद्ध स्त्रियों के प्रतिरोध और विद्रोह का साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। नारी की दासता और दोगुना दर्जे की सामाजिक स्थिति का कई पुरुष विचारक प्राचीन काल से साहसिक एवं तर्कपूर्ण प्रतिवाद करते रहे हैं। इसके प्रमाण भारत और सारी दुनिया के इतिहास और साहित्य में मिलते हैं। संभवतः नयी सदी की भोर में भारत में नारीवादी सोच स्त्री विमर्श की सैद्धान्तिक विचारधारा इसी की उपज है।<sup>1</sup>

भारत के दो पवित्र ग्रन्थों रामायण तथा महाभारत पुरुष सत्तात्मक समाज व नारी उत्पीड़न की कथा कहते हैं। रावण की कैद में रहकर भी अपने आत्मसम्मान की रक्षा करने वाली सीता को मर्यादा पुरुषोत्तम राम एक धोबी के द्वारा लगाए गए मिथ्या आरोप के कारण उसे वन में अकेली छोड़ देते हैं। महाभारत के प्रमुख स्त्री पात्र गांधारी, कुंती, द्रौपदी तीनों पुरुष प्रधान समाज में शोषित होती हैं। रूपवती होते हुए भी गांधारी को पितामह भीष्म अंधे धृतराष्ट्र के लिए मांग लेते हैं जिसके फलस्वरूप गांधारी आजीवन कृत्रिम अंधापन अपना लेती हैं। कुंती को भी पति के रूप में रुग्ण पांडव मिलता है जिसकी असमय मृत्यु हो जाती है। समाज की मर्यादाओं के कारण उसे अपने मातृत्व का त्याग करना पड़ता है।

“भारतवर्ष की मनीषा के लिए शाश्वत प्रश्न लेकर अवतरित हुई द्रौपदी, परस्पर विरोधी राजनीतिक प्रतिशोध का साधन, पांच पांडवों की समन्वित भार्या, द्रूत-क्रीडा में छली गयी। भारतवर्ष के

<sup>1</sup> ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना, डॉ. सानप शाम, पृष्ठ 14।

इतिहास में नारी के उत्पीडन को लेकर वह बड़ी अशुभ घड़ी थी जब दुःशासन द्रोपदी के बालों को खींचता हुआ उसे सभा में ले आया।<sup>2</sup>

महाभारत में जो द्रोपदी के साथ हुआ वह अमानवीय, हृदय विदारक घटना थी। भरी सभा में बड़े-बड़े महापुरुषों के बीच एक स्त्री का ऐसे चीर हरण स्त्री उत्पीडन की पराकाष्ठा थी। द्रोपदी को बचाने तो भगवान श्रीकृष्ण अवतरित हो गए थे, लेकिन आधुनिक समाज में नारी का इसी प्रकार उत्पीडन होता है। सामूहिक बलात्कार, यौन शोषण, घरेलू हिंसा जैसी चीजें प्रतिदिन भारतीय समाज में घटित हो रही हैं। उन्हें बचाने के लिए कोई भगवान भी अवतरित नहीं होते हैं। इनकी शिकार लड़कियां या तो जीवित ही नहीं रहती और यदि किसी कारण बच जाती हैं तो समाज उनके साथ अपमान होता है। 16 दिसम्बर 2012 को दिल्ली में निर्भया के साथ चलती बस में हुआ सामूहिक बलात्कार इसका प्रमाण है कि आधुनिक समाज में स्त्री-पुरुष के साथ भी सुरक्षित नहीं है। निर्भया के साथ बलात्कार ही नहीं हुआ बल्कि अमानवीय कृत्य भी किए गए जो पुरुष की विकृत सोच का परिणाम है।

समय-समय पर विभिन्न सामाजिक संस्थाओं ने महिला उत्थान के लिए अभियान चलाये हैं। विभिन्न समाज सुधारकों जैसे राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, एनी बेसेन्ट, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर आदि महान लोगों ने नारी की स्थिति के सुधार के लिए नए कानून बनवाए। इन्हीं के प्रयास के फलस्वरूप आज भारतीय समाज की नारी शिक्षित हो पायी तथा उसे कानून में विविध अधिकार भी प्राप्त हुए तथा सदियों से चली आ रही कुप्रथाएं जैसे— सती प्रथा, बहु विवाह, बाल-विवाह, विधवा उत्पीडन, अशिक्षा आदि समाप्त हुई।

उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल दिया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। इसी कारण स्त्री की स्थिति में थोड़ा सुधार हो पाया है। परन्तु आज भी हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है। नारी को पुरुष से कमतर आंका जाता है। पुरुष आज भी सामंतवादी सोच में जकड़ा हुआ है। धर्म तथा संस्कारों के नाम पर नारी का शोषण किया जाता है। शिक्षा ने स्त्री को नई बुलंदियों तक पहुंचाया है। आधुनिक स्त्री माँ, पत्नी, बहू होने के साथ-साथ कुशल प्रशासक भी है।

ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य में अधिकतर आधुनिक शिक्षित नारी का चित्रण किया है। घर तथा कार्यक्षेत्र दोनों जगह अपनी दक्षता सिद्ध करने के बावजूद वह पारिवारिक बंधनों तथा संस्कारों में कैद है। नौकरी के साथ उसके कार्य क्षेत्र में वृद्धि हुई है। घर परिवार के प्रति उसे अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना पड़ता है। इसी कारण नारी की समस्याएं भी बढ़ गई हैं। अब उसे घर तथा नौकरी दोनों में सामंजस्य स्थापित करना पड़ता है। स्वयं महसूस किया है। जिसकी सशक्त अभिव्यक्ति उन्होंने अपने कथा साहित्य में की है।

डॉ. विनय कुमार पाठक ने स्त्री विमर्श के अन्तर्गत लिखा है, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् की महिला साहित्यकारों ने पुरुष पाठ और स्त्री पाठ के भेद को समझा। स्त्रियों की कुछ अनुभूतियां ऐसी हैं

<sup>2</sup> वही पृष्ठ 19

जिन्हें पुरुष समझ तो सकता है लेकिन भोगे हुए यथार्थ की तरह प्रस्तुत नहीं कर सकता। महावारी और प्रसव पीड़ा नारी की ही अनुभूतियों के विषय है। इसी तरह नारी पर नानाविध अत्याचार और बलात्कार की अनुभूति पुरुष को प्रथक और स्त्री को अलग होगी। पुरुष संवेदना तो दर्शा सकता है लेकिन लेखन के मर्म को स्पर्श लेखिका ही कर सकती है।<sup>3</sup>

डॉ. विनय कुमार पाठक के कथन से स्पष्ट होता है कि लेखिका ही नारी हृदय के मर्म को स्पर्श पर उसका यथार्थ चित्रण कर सकती है। ममता जी एक संवेदनशील, यथार्थवादी लेखिका हैं। नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण उन्होंने अपनी रचनाओं में किया है। आधुनिक नारी की परिस्थितियोंवश, बढ़ती जटिलताओं, तनाव को ममता जी ने स्वयं महसूस किया है। वे शिक्षिका, पत्नी, बेटा, माँ तथा बहु हैं। इसलिए नारी के सभी रूपों को उन्होंने स्वाभाविकता से अपने कथा साहित्य में उतारा है। जिनका वर्णन हम इस अध्याय के अन्तर्गत करेंगे।

### स्त्री की आर्थिक स्थिति

भारतीय समाज में आज भी अधिकतर स्त्रियाँ आर्थिक रूप से पति पर निर्भर करती हैं। आर्थिक स्वावलंबन आधुनिक नारी की आवश्यकता है। लेकिन आधुनिक भारतीय पुरुष अपना प्रभुत्व जमाने के लिए स्त्री को घर की चारदीवारी में कैद करके रखना चाहता है। अगर वह नौकरी भी करे तो घर के प्रति कर्तव्यों का निर्वाह उसी प्रकार करे, जैसे एक गृहिणी करती है। यही कारण है कि आधुनिक स्त्री तनाव से ग्रसित है। ज्ञान प्रकाश विवेक के मतानुसार, “ममता कालिया की कहानियों में स्त्रियाँ वाचक हैं वे अपनी निजता, आत्म गौरव, आत्मसंघर्ष को अभिव्यक्त करती हैं। उनके बहुत छोटे-छोटे भय हैं। दर से दफ्तर पहुंचने का भय। दर से वापिस घर अपने का भय। दस रुपयों का नोट भुनाने का भय रिफिल घिसने का भय।”<sup>4</sup>

इनकी कहानियों में स्त्रियाँ बने बनाए कोष्ठक से बाहर निकलकर आत्मनिर्भर होना चाहती हैं। वह पराश्रित नहीं रहना चाहती। ममता जी के कथा साहित्य में कुछ स्त्रियाँ उच्च शिक्षित तथा आत्म-निर्भर हैं। कुछ स्त्रियाँ ऐसी हैं जो आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना चाहती हैं। दर्पण कहानी की बानी उसके पति की उपेक्षा से तंग आ जाती है। बानी शिक्षित तथा सुन्दर स्त्री है। शादी से पहले वह नौकरी करती थी। शादी के पश्चात् उसकी स्थिति का वर्णन करते हुए ममता जी ने लिखा है, बानी के लिए जो वर ढूँढा गया, वह स्वस्थ, सुन्दर और कमाऊ था। उसे अपने तीनों गुणों पर नाज था, इतना कि बानी के गुणों को उसने बड़े ठंडे और ठोस ढंग से कबूल कर लिया। उसे स्त्रियों में बड़बोलापन और सक्रियता के बेहत चिह्न थी। सबसे पहले उसने बानी की नौकरी छुड़वा दी। एक बंधे बंधाए, रूटीन से हटना कुछ समय के लिए बानी को अच्छा लगा। उस समय उसे यह नहीं पता था कि वह एक नए

<sup>3</sup> हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि डॉ. विनय कुमार पाठक, पृष्ठ 158

<sup>4</sup> लमही पत्रिका, जुलाई सितम्बर 2011 पृष्ठ 37

रूटीन में इतनी जल्दी फंस जाएगी।”<sup>5</sup>

बानी का पति उस पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है। इसलिए बानी के लिए प्रत्येक कार्य में उसकी अनुमति आवश्यक हो जाती है। बसंत सिर्फ एक तारीख की चंदा भी बेरोजगार हैं वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना चाहती है। वह कहती है “मैं बेरोजगार से बेरोजगार होना चाहती थी। मैं घर का खूंट्टा छुड़ाकर आजाद होना चाहती थी।”<sup>6</sup>

“दुःखम-सुखम” उपन्यास में भग्नों उसके पिता जी विरोध के बावजूद अपनी पढाई पूरी करती है तथा नौकरी भी करती है। विद्यावती उसका सहयोग करती है। कविमोहन की बेटी प्रतिभा भी बड़ी मॉडल बनने का सपना देखती है। परन्तु उसके पिताजी उसे रंगमंच तक ही सीमित रखना चाहते हैं। वह घर से भागकर अपना सपना पूरा करती है।

ममता कालिया के कथा-साहित्य में कुछ ऐसी स्त्रियां भी हैं जो पराश्रित नहीं रहना चाहती। वे पति का वर्चस्व नहीं स्वीकार करना चाहती। वे आर्थिक रूप से सम्पन्न होकर स्वतंत्र रहना चाहती हैं, इसलिए अविवाहित रहने का निर्णय लेती हैं। ममता जी ने अपनी रचनाओं में शिक्षित, अविवाहित नारी पात्रों के मनोभावों को अत्यन्त सच्चाई से प्रस्तुत किया है। वे स्वयं विवाह संस्था की पक्षधर हैं परन्तु उन्होंने अपनी कई अविवाहित सहेलियों की परिस्थितियों का गहन अवलोकन कर अपने साहित्य में चित्रित किया है।

“लडकियां” उपन्यास की कथा नायिका “मैं” विज्ञापन एजेंसी में काम करने वाली अविवाहित लडकी है। वह अपनी निजता, आत्म गौरव तथा अर्थिक स्वतंत्रता के कारण अविवाहित रहने का निर्णय करती है। अपने इस फैसले से वह कभी-कभी उदास भी हो जाती है तथा सोचती है कि जिंदगी ने उसे मौके तो कई दिए थे पर वह फैसला नहीं कर पाई।

वह सोचती है “शायद अखबारों ने मेरी मानसिकता को चौपट कर डाला था। कोई दिन ऐसा न था, जब विवाहित नवयुवतियों के मारे डाले जाने के सचित्र समाचार न छपते हो। बहू प्रताडना राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप लेता जा रहा था। अच्छे पढ़े-लिखे बेरोजगार लडकें एक अदद स्कूटर, फ्रिज या टी.वी. के लिए अपनी पत्नी को जला मारने में कतई संकोच न करते। इस सबका नतीजा ही था कि शादी की तरफ से मैं बिल्कुल विमुख हो गई थी। एक बार तो बहन ही रिश्ता लाई थी, अपने देवर का। उसका कहना था, “भोले-भाले घर में शादी करना ज्यादा अच्छा होगा। महज दस साल के वैवाहिक काल में मेरी बहन की आंखों के नीचे पड़े गहले काले गड्ढे सिर के एक तिहाई सफेद बाल, हाथ-पैरों की उभरी नसें, उस घर की कोई, खुशनुमा तस्वीर पेश नहीं कर पाई और मैंने “न” कर दी।”<sup>7</sup>

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिक्षित नारी अपने आत्मसम्मान आत्म रक्षा तथा अधिकारों के प्रति सचेत है। वह पुरुष प्रधान समाज में अपना अस्तित्व स्थापित कर सकती है। वह दहेज रूपी दानव

<sup>5</sup> उसका यौवन, ममता कालिया, पृष्ठ 122

<sup>6</sup> चर्चित कहानियां ममता कालिया, पृष्ठ 28

<sup>7</sup> तीन लघु उपन्यास, ममता कालिया पृष्ठ 41

की बलि नहीं चढ़ना चाहती।

इसी प्रकार “चिरकुमारी” कहानी की “दिशा” जिंदगी सात घंटे बाद की कहानी की आत्मीय पचीस साल की लड़की कहानी की नायिका मैं “जांच अभी जारी है” कहानी की नायिका अपर्णा आदि स्त्री पात्र आर्थिक रूप से सक्षम तथा अविवाहित पात्र है। सभी नारी पात्र आत्म-गौरव की रक्षा तथा स्वतंत्रता को शादी कर दांव पर नहीं लगाना चाहती। कई बार उनको इसके कारण सहज भी महसूस होता है। चिरकुमारी कहानी की दिशा जिन्दगी सात घंटे बाद की कहानी की आत्मीया, पचीस साल की लड़की कहानी की नायिका मैं जांच अभी जारी है कहानी की नायिका अपर्णा आदि स्त्री पात्र आर्थिक रूप से सक्षम तथा अविवाहित पात्र है। सभी नारी पात्र आत्म गौरव की रक्षा इसके कारण असहज भी महसूस होता है। चिरकुमारी कहानी की नायिका दिशा के बारे में लिखा है, दिशा सोचती है कितनी मुश्किल से उसने यहां तक का सफर तय किया है। कई किस्त की ज्यादातियों और कमियों का मुकाबला उसने अपनी शिक्षा और प्रखर चेतना से किया था। शादी का नाम पर वह अपनी आजादी और आत्म-निर्भरता दांव पर नहीं लगाना चाहती थी।<sup>8</sup>

दिशा के लिए उसकी स्वतंत्रता, स्वावलंबन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। वह अपनी शिक्षा का सुदुपयोग करना चाहती है। विवाहोपरान्त वह पराश्रित जीवन नहीं जीना चाहती। ममता कालिया की कहानियों में शिक्षित तथा आत्मनिर्भर नारी के सभी रूप देखने को मिलते हैं जैसे प्राचार्य प्राध्यापक, अध्यापिका, उच्च कंपनियों में काम करने वाली अफसर बैंक अधिकारी, लेखिका आदि।

ममता जी ने आर्थिक रूपसे विपन्न परन्तु स्वाभिमानी स्त्रियों का भी मार्मिक चित्रण अपने कथा-साहित्य में किया है। अनुभव कहानी का नायक रामू नौकरी से निकाले जाने पर रात एक बैंक की सीढियों पर बीताता है। वहां एक औरत और उसका बच्चा ठंड से ठिठुर रहे थे। उनके कपड़े भी फटे हुए थे। वह औरत रामू से अपने बच्चे को रजाई में सुलाने की विनती करती है। बच्चा ठंड के कारण इतना रो रहा था कि उसकी रोने की ताकत भी खत्म हो गई थी। इसका अत्यंत मार्मिक चित्रण करते हुए ममता जी ने लिखा है, बच्चा उसने पूरी तरह से गोद में छुपा लिया था। मानों उसे वापस गर्भ में पहुंचा रही हो। फिर भी वह रो रहा था। औरत की नजर सहसा रामू की नजर से मिली। वह लपककर बोली, मुन्ना मर जाएगा बाबू, इसे अपने साथ सुला लो।<sup>9</sup>

अर्थाभाव व्यक्ति को कितना मजबूर कर देता है इसका चित्रण ममता जी ने इस कहानी में किया है। वह औरत इतनी गरीब है कि तन ढकने को उसके पास कपड़े तक नहीं हैं तथा सोने के लिए बिस्तर नहीं है। यह कहानी पढ़कर पाठक का मन असीम करुणा से भर जाता है।

चोटिटन कहानी भी आर्थिक पिपन्नता का भयानक रूप दर्शाती है। कहानी में छोटी लड़की सुखिया की माँ बर्तन मांजती है। वह इतनी गरीब है कि उसके पास सुखिया के लिए लाने के लिए

<sup>8</sup> मुखौटा, ममता कालिया पृ 9

<sup>9</sup> जांच अभी जारी है, ममता कालिया, पृष्ठ 98

जांधिया तक नहीं है। इसलिए सुखिया एक दुकान से जांधिया चोरी कर लेती है। पेट भरने के लिए भी वह चोरी करती है। चोरी करने के लिए उसकी आर्थिक परिस्थितियाँ उत्तरदायी है। इसमें ममता जी ने गरीबों का दुष्परिणाम प्रस्तुत किया है।

प्रेम कहानी उपन्यास में भी गरीबों से त्रस्त एक सफाई करने वाली आया का वर्णन किया है। “शॉल” कहानी में “ननकी” स्कूल की चपरासिन है। वह इतनी गरीब है कि उसके पास ठंड में शॉल खरीदने के लिए भी पैसे नहीं हैं। मुख्यध्यापिका को उस पर दया आती है और वह अध्यापिकाओं से पैसा इकठ्ठा नहीं करना चाहती है। इसलिए वे उसे ताने सुनाती हैं। ननकी गरीब होते हुए भी स्वाभिमानी स्त्री है। वह ताने सुनकर शॉल लौटते हुए कहती है “नहीं बहन जी, आपके हाथ जोड़ित हैं हम शॉल न लेब। सुबह से मार फबती सुन-सुन हमारा छाती फट गयी।” बड़ी बहन जी ने असीम करुणा से ननकी को देखा। वह बहुत दुखी लग रही थी। बड़ी बहन जी के अंदर अपनी साथी टीचरों के लिए असह्य क्रोध का ज्वार उठा। इनके अन्दर मानवता तो रही ही नहीं है।<sup>10</sup>

एक औरत दूसरी औरत के प्रति कितनी असंवेदनशील हो सकती है। इसकी वास्तविकता इस कहानी में झलकती है। ऐसी ही असीम करुणा दर्शाती है कहानी है “राजू”। राजू की अम्मा विधावा है तथा अपनी आजीविका के लिए लाला के यहां मजदूरी करती है। गरीबी के कारण उनकी स्थिति अत्यन्त दयनीय है।

वस्तुतः ममता जी ने अपने कथा साहित्य में स्त्री की आर्थिक स्थिति का विभिन्न रूपों तथा विभिन्न स्तरों पर अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने आत्मनिर्भर, स्वावलंबी, पराश्रित, आर्थिक रूप से विपन्न सभी प्रकार की स्त्रियों की आर्थिक स्थितियों को स्पष्ट रूप से उजागर किया है।

---

<sup>10</sup> वही पृष्ठ – 156

## ममता कालिया के कथा-साहित्य में सामाजिक - सांस्कृतिक यथार्थ

डॉ. अनिता वर्मा

आचार्य हिंदी

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राज.

रमा उदावत

शोधार्थी

हिन्दी विभाग

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह सामाजिक व्यवस्था एवं तत्संबंधी मूल्यों का निर्वाह करते हुए समाज की विकासशील प्रक्रिया का हिस्सा बनता है। प्रत्येक साहित्यकार को समय की डगर पर जीवन के प्रवाह से संलग्न होना पड़ता है। कोई भी कथाकार युगीन परिवेश से कटकर अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करने में समर्थ नहीं हो पाता। किसी भी भाषा का साहित्य उसके समाज का दर्पण होता है। समाज में रहते हुए रचनाकार को सामाजिक नियमों का पालन कारण पड़ता है। समाज में रहते हुए वह अनेक सामाजिक समस्याओं का भी सामना करता है। उन्हीं सामाजिक समस्याओं को साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से अपने साहित्य में प्रस्तुत करता है। वह उन समस्याओं पर चिंतन कर, उनका हल प्रस्तुत करने का भी प्रयास करता है। सामाजिक व्यवस्था तथा मूल्य न तो निरपेक्ष होते हैं और न ही शाश्वत। समयानुसार उनमें परिवर्तन आवश्यक होता है।

बद्री नारायण जी को दिये गए एक साक्षात्कार ममता जी भी इस तथ्य की पक्षधर दिखाई देती हैं, “जब समाज में यथास्थिति जड़े जमाने लगती हैं, कोई न कोई आंदोलन उस यथास्थिति को तोड़ता है। जब-जब समाज करवट लेता है, सामाजिक आंदोलन पैदा होते हैं। ये आंदोलन ही हमें जड़ता, मूढ़ता और आत्म-मुग्धता से बचा लेते हैं। एक बात और इन आंदोलनों को बुद्धिजीवी आँख मूँद कर स्वीकृति नहीं देता। इन्हें उलट-पुलट कर इतनी बार जाँचता है कि उनमें एक पारदर्शिता आ जाती है। यही पारदर्शिता परिवर्तन का कारण बनती है। ऐसा न होता तो हमारे समाज में अब तक बाल-विवाह, सती-प्रथा, विधवा-उत्पीड़न रूढ़ अर्थों में चलता रहता। मैं ऐसा सोचती हूँ कि एशियाई देशों, विशेषकर भारत में, आने वाले समय में दहेज और बालिका शिशु के विषय में पूर्वाग्रह के विरुद्ध जोरदार जनांदोलन चलने चाहिए।”<sup>1</sup>

अपने मतानुसार ममता जी ने अपने कथा - साहित्य हर वर्ग की अलग-अलग प्रकार की सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है। उनके कथा-साहित्य में चित्रित समस्याओं को हम निम्नलिखित भागों में बाँट सकते हैं:-

प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक नियमों तथा बंधनों का पालन करते हुए सामाजिक स्थितियों का सामना करना पड़ता है। समाज में विभिन्न वर्गों तथा धर्मों के लोग रहते हैं।

<sup>1</sup> लमही पत्रिका, जुलाई -सितम्बर 2011, पृष्ठ-51

उनकी पारिवारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियाँ भिन्न होती हैं। परंतु फिर भी समाज में रहते हुए सभी को सामाजिक नियमों का पालन करना पड़ता है।

“व्यक्ति से परिवार एवं परिवार से समाज का क्रमबद्ध विकास रहा है। सामाजिक दबाव व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। व्यक्तित्व का पारिवारिक सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ता है। कई बार समाज और व्यक्ति में इतना वैषम्य हो जाता है कि स्थिति बहुत बिगड़ी जाती है। सामाजिक मान्यताओं के दबाव में व्यक्ति भीतर ही भीतर टूटन महसूस करता है।”<sup>2</sup>

### लैंगिक भेदभाव तथा मानवीय मूल्यों का हनन

स्त्री की उपेक्षा के लिए काफी हद तक सामाजिक स्थितियाँ उत्तरदायी हैं। समाज में स्त्री को हमेशा से ही पुरुष से कमतर समझा जाता है।

पितृसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति आज भी वही है जो सदियों पहले थी। रीति-रिवाज प्रारम्भ से ही उसकी सामाजिक स्वतन्त्रता के विरोधी रहे हैं। घर-परिवार, रीति-रिवाज, सामाजिक नियम सभी जगह स्त्री की उपेक्षा होती है। आज भी समाज में लड़के के जन्म पर खुशियाँ तथा लड़की के जन्म पर मातम मनाया जाता है। लड़की को जन्म से पहले ही भ्रूण हत्या कर दी जाती है। डॉ. गनेस दास के अनुसार, “पितृसत्तात्मक व्यवस्था यथावत रूप से चली आ रही है। इसलिए पुरुष की परंपरागत मनोवृत्तियों में बदलाव नहीं आया है।”<sup>3</sup>

सामाजिक स्थितिबश स्त्री की उपेक्षा को ममता कालिया ने अपने साहित्य में चित्रित किया है। उन्होंने सुशिक्षित-अशिक्षित, विवाहित-अविवाहित, युवा-प्रौढ़, वृद्ध सभी वर्गों की स्त्रियों की समाज में स्थिति से अवगत कराया है।

‘दर्पण’ कहानी की नायिका ‘बानी’ अपने पति की उपेक्षा का शिकार होती है। वह सुंदर, शिक्षित स्त्री है। लेकिन शादी के पहले परिवार के कारण अपनी अच्छाएं पूरी नहीं कर पाती तथा शादी के बाद पति के कारण। शादी से पहले वह नौकरी करती थी लेकिन सारी कमाई घर खर्च में चली जाती थी। उसकी माँ हमेशा सारे नियम केवल उस पर थोपती थी। शादी बाद पति ने नौकरी करने से मना कर दिया और वह गृहस्थी में फँसकर रह गई। उसकी इच्छा एक बड़े से दर्पण में अपना सौन्दर्य देखने की होती परंतु वह जब भी अपने पति से खरीदने के लिए कहती वो इसे व्यर्थ की चीज बताकर मना कर देता है। इस प्रकार वह स्वयं को उपेक्षित महसूस करती है।

इसी प्रकार ‘उमस’ कहानी की नायिका ‘रानी’ स्वयं को परिवार में उपेक्षित महसूस करती है। सास उसे बात-बास पर ताने सुनाती है, डांटती है। पति भी उससे हमेशा असंतुष्ट रहता है।

<sup>2</sup> ममता कालिया के कथा-साहित्य में नारी-चेतना, डॉ. सानप शाम, पृष्ठ-72

<sup>3</sup> स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप, डॉ. गनेस दास, पृष्ठ -81, 82

‘मनहूसाबी’ कहानी की उषा बचपन से ही अपने रंग-रूप के कारण उपेक्षित जीवन जीती है। लड़की यदि असुंदर हो तो समाज में उसकी स्थिति और अधिक विकटतर हो जाती है। इसी का चित्रण ममता जी ने इस कहानी में किया है।

‘एक पति की मौत’ कहानी की नायिका ‘सिया’ प्राध्यापिका होते हुए भी पति की उपेक्षा का शिकार होती है। उसका पति नमन उसे तलाक दे देता है। लेकिन तलाक के बाद भी उसकी सास उसे पत्नी धर्म निभाने की बात कहती है। उसकी बेटी भी उसका निरादर करती है। तलाक के बाद उसका पति तो आराम से दूसरी शादी कर लेता है परंतु वह सारी उम्र अकेलेपन का दर्द झेलती है। तलाक के बाद स्त्री की मानसिक स्थिति उजागर करती यह कहानी अत्यंत उल्लेखनीय है।

इस प्रकार ममता जी ने समाज में नारी के संघर्ष व उसकी स्थिति का चित्रण किया है। आधुनिक नारी शिक्षित होते हुए भी समाज में पुरुष के बराबर का दर्जा प्राप्त नहीं कर पाई है। आज भी वह अनपने बारे में नहीं बल्कि परिवार की प्रतिष्ठा तथा समाज के बारे में सोचती है। समाज के निर्माण में नारी की अहम भूमिका है। स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने के बावजूद कर्तव्यों की बेड़ियों में जकड़ी हुई है। स्त्री के अस्तित्व को लेकर समाज की दोहरी मानसिकता को ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य में चित्रित किया है।

गुरु गोविंद दोउ खड़े  
काके लागू पाय  
बलिहारी गुरु आपने  
जिन गोविंद दियो मिलाय।

कबीर जी का यह दोहा आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर लागू नहीं होता है। प्राचीन काल में गुरु को भगवान से भी ऊपर का दर्जा प्राप्त था। गुरु के प्रत्येक आदेश का पालन करना शिष्य अपना कर्तव्य व सौभाग्य समझता था। शिष्य के मन में गुरु के प्रति केवल आदर भावना ही नहीं बल्कि गहन आस्था व निष्ठा थी। लेकिन आजकल समाज में शिक्षा के गिरते स्तर ने गुरु के स्तर को भी नीचे गिरा दिया है। आजकल विद्यार्थियों में गुरु के प्रति कोई आदरभाव शेष नहीं रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार बढ़ गया है। शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं को ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य का अभिन्न अंग बनाया है क्योंकि ममता जी स्वयं अध्यापन कार्य से जुड़ी हुई थी। उन्होंने शिक्षकों व छात्रों का करीब से अवलोकन किया है।

शिक्षार्थी आजकल शिक्षकों का सम्मान नहीं करते इसका चित्रण ममता कालिया ने ‘अंधेरे का ताला’ उपन्यास में किया है। इस उपन्यास में एक छात्र प्राचार्य को पेपरवेट मारकर भाग जाता है। अधिकतर छात्र स्वयं नोट्स न बनाकर रेडीमेड नोट्स खरीदते हैं। लड़कियाँ भी शर्म का दामन छोड़कर आधुनिक हो गई हैं। वे अपने प्रेमी को भाई बताने में जरा भी नहीं

झिझकती। हमारी संस्कृति तथा शिक्षा पर पाश्चात्य शैली का प्रभाव बढ़ता जा रहा है तथा नैतिक मूल्यों का पतन होता जा रहा है।

शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्टाचार किस प्रकार फैल गया है, इस बात का पता हमें 'मुखौटा' कहानी में श्रवण के माध्यम से पता चलता है। श्रवण शहर के एम.पी. के जरिये ओ.बी.सी. का झूठा प्रमाण पत्र हासिल कर लेता है। इसके माध्यम से ममता जी ने आरक्षण के कारण शिक्षा जगत में पैदा हुई विसंगति का भी चित्रण किया है। शिक्षा के स्तर को नीचे गिराने में आरक्षण ने भी अहम भूमिका निभाई है। आरक्षण के कारण कम योग्य छात्रों को भी कॉलेज में आसानी दसे दाखिला मिल जाता है। श्रवण के साथ भी ऐसा ही हुआ था। उससे कम अंक पाने वाले छात्र भी केवल आरक्षण के कारण अच्छे कॉलेज में दाखिल हो गए थे। इसलिए श्रवण को यह अनैतिक कदम उठाना पड़ा था, जिसका बाद में उसे पश्चाताप भी हुआ।

'नरक दर नरक' के नायक जोगेन्द्र को केवल अंग्रेजी विषय के कारण अड़तालीस प्रतिशत नंबर होने के बावजूद नौकरी मिल जाती है। उषा के पिता के साथ घटित घटना के माध्यम से शिक्षा जगत में फैले भ्रष्टाचार का पता चलता है। उसके पिता 'विश्वकर्मा कॉलेज' में प्राचार्य थे। एक छात्र के पिता अपने बेटे की योग्यता बढ़ाने के लिए उन्हें रिश्वत के रूप में घी का पीपा देने का प्रयत्न करते हैं परंतु वे इंकार कर देते हैं। परिणामस्वरूप एक दिन मैदान में कोई पीछे से उन पर लाठी से वार करता है। जब वे अस्पताल से लौटे तो उनके मैनेजर चिरौंजीलाल अपने निजी स्वार्थ के लिए तीन दिन तक कॉलेज बंद करवाने व बिल्डिंग खाली करवाने के लिए कहते हैं। उषा के पिता इंकार कर देते हैं तथा इस्तीफा दे देते हैं। इस प्रकार एक आदर्शवादी प्राचार्य को निकलावाने के लिए क्या-क्या षड्यंत्र रचे जाते हैं। यह बात उषा के पिता के साथ घटित घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट हो जाती है।

आजकल सिर्फ विद्यार्थी ही नहीं बल्कि शिक्षक भी अपने कर्तव्य से विमुख नजर आते हैं। प्रोफेसर शाह ऐसे ही शिक्षक है। दस साल से वे विद्यार्थियों को वही नोट्स लिखवा देते हैं, जो उन्होंने अपनी नियुक्ति के प्रथम वर्ष में बनाए थे। खाली समय में वे ट्यूशन के माध्यम से अपनी जेब गरम करते हैं। 'नायक' कहानी के अध्यापक डॉ. मोहन दीक्षित (एम. डी.) अपने विचारों से छात्रों को प्रभावित करके वरिष्ठ प्रोफेसर नित्यानन्द का घेराव करवा देते हैं। वे उन्हें तेरह घंटे बंदी बनाकर रखते हैं। कहानी का नायक उनके विचारों से प्रभावित होकर घर छोड़कर एम.डी. के साथ दक्षिण यात्रा पर निकाल जाता है। यात्रा के दौरान एम.डी. का रहन-सहन तथा आचरण देखकर उसे समझ आता है कि उनकी कथनी और करनी में कितना अंतर है। यह सोचकर उस छात्र को घोर वितृष्णा होती प्रतिभा का दुरुपयोग करने वाले तथा विद्यार्थियों को गुमराह करने वाले शिक्षक का चित्रण किया है।

आरक्षण व भ्रष्टाचार के कारण सरकारी विद्यालयों में शिक्षा के स्तर में इतनी गिरावट

आ गयी है कि सभी माता-पिता अपने बच्चों को निजी स्कूलों में पढ़ाना चाहते हैं। प्रतिस्पर्धा के कारण बच्चों की क्षमता की अवहेलना कर उनको इतना गृहकार्य दिया जाता है कि उनके पास खेलने के लिए समय नहीं होता है। इसका वर्णन ममता जी ने 'शक' कहानी में कुछ इस प्रकार किया है:-

“सुबह-सुबह बच्चे यूनिफॉर्म, पहन, भारी-भरकम बस्ते पीठ पर लादे निकल जाते और शाम सुस्त चाल से और भी लदे-फंदे लौटते। होम वर्क का बोझ। पब्लिक स्कूलों का होमवर्क, जो बच्चों की शक्ति, क्षमता और धैर्य तीनों की अवहेलना कर उनका शरीर मेज पर ऐसा झुकता कि रात दस बजे तक उठ पाता।”<sup>4</sup>

‘एक रंगकर्मी की उदासी’ में भी ममता जी ने हमारी शिक्षा व्यवस्था तथा विश्वविद्यालयों की त्रुटियों पर प्रकाश डाला है। विश्वविद्यालयों में खाली पड़े पदों के कारण बच्चों का भविष्य दाँव पर लग जाता है। प्रो. मिश्रा रिटायर होने के चार साल बाद भी विश्वविद्यालय जाकर क्लास लेते हैं और वाइस चांसलर को कोसते हैं। इसका वर्णन निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से किया है:-

“ऐसा है मैं न जाऊँ तो बच्चों का कोर्स कैसे पूरा होगा। मूखों ने मुझे रिटायर कर दिया और मेरी जगह कोई अगला रखा ही नहीं। मेरे विभाग में सात पद पहले से खाली पड़े हैं। यह बच्चों का कसूर नहीं है कि वे बॉटनी में एम.एस.सी. कर लेते हैं पर चार पादप नहीं पहचानते। जो टीचर हैं बस वाइवा और एकजामिनरशिप के जुगाड़ में लगे रहते हैं। फिर हम कहते हैं बच्चे कोचिंग क्लास में क्यों जाते हैं।”<sup>5</sup>

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से ममता कालिया ने हमारी शिक्षा व्यवस्था का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है। शिक्षा जगत से जुड़े रहने के कारण ही वे शिक्षा व्यवस्था की खामियों का इतना यथार्थ चित्रण करने में सफल रही हैं।

#### **अधिकारियों द्वारा पद का दुरुपयोग :-**

आधुनिक भारत समाज के अधिकारियों ने ‘जिसकी लाठी उसकी भैंस’ लोकोक्ति को चरितार्थ कर दिया है। प्रत्येक क्षेत्र में अधिकारी वर्ग अधिकतर भ्रष्ट, बेईमान, स्वार्थी तथा लोभी है। अधिकारी लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए अपने पद का दुरुपयोग करने में जरा भी नहीं हिचकते। उनके अधीनस्थ काम करने वाली स्त्रियों की स्थिति भी दयनीय है। ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य में अधिकारियों द्वारा शोषित नारी का चित्रण किया है यथा:-

‘जांच अभी जारी है’ कहानी की नायिका ‘अपर्णा’ बैंक में बेवजह अधिकारियों द्वारा प्रताड़ित की जाती है। अपर्णा उसके पिता जी के खराब स्वास्थ्य के कारण बैंक से ली अग्रिम

<sup>4</sup> काके दीर हट्टी, ममता कालिया, पृष्ठ-55

<sup>5</sup> मुखौटा, ममता कालिया, पृष्ठ-55

राशि समय पर नहीं लौटा पाती है। लेकिन वह फोन पर एक अधिकारी को यह जानकारी दे देती है कि वह घूमने नहीं जा पाई और पिता जी की सेहत के कारण वह अभी आने में सक्षम नहीं है। लेकिन जब दस दिन बाद उससे स्पष्टीकरण मांगा जाता है तो वह शाखा प्रबन्धक को कहती है कि मैंने तो आपको पहले ही फोन पर सूचित किया था। लेकिन वह घूरकर कहता है कि मुझे आपका कोई फोन नहीं मिला। आपको जो भी कहना है, लिखित में कहें। अपर्णा इस निरधार आरोप के कारण दफ्तारों तथा अधिकारियों के बेवजह चक्कर लगाती है। लेकिन बैंक में फ़ैले भ्रष्टाचार के कारण वह फँसती चली जाती है।

बैंक के सभी छोटे-बड़े अधिकारी अपर्णा के साथ घनिष्ठता बनाना चाहते थे। दफ्तर में अनुभवी महिलाएँ समय-समय पर अपर्णा को सतर्क करते हुए कहती हैं, “संभल कर रहना अपर्णा ये शादी-शुदा मर्द बड़े खतरनाक होते हैं। पहले आतुर बनेंगे, फिर कातर और फिर शातिर, एकदम, पन्नालाल

ममता जी ने अधिकारियों की स्त्री लंपटता को दर्शाते हुए लिखा है, “आज की शाम आप क्या कर रही हैं? यह सवाल धीरे-धीरे बैंक का हर छोटा-बड़ा अधिकारी अपर्णा से पूछ चुका था। अपर्णा बुद्ध नहीं थी। माँ की बीमारी, पिता का प्रवास उसके रक्षा कवच थे। अपनी शाम साबुत सुरक्षित बचाने का उसके पास यही उपाय था। लेकिन एक शाम वह चपेट में आ ही गयी।”<sup>7</sup>

इसी प्रकार ‘एक पत्नी के नोट्स’ उपन्यास का नायक संदीप भी अपने पद का दुरुपयोग करता है। वह अपनी पहुँच का प्रयोग अपनी पत्नी को नौकरी दिलवाने में करता है। स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है। अपने पद का प्रयोग वह स्त्रियों को आकर्षित करने के लिए भी करता है।

‘वसंत-सिर्फ एक तारीख’ कहानी की नायिका अपनी पहचान की प्राचार्य से नौकरी पाने की इच्छा से मिलने जाती है। वे पहले उसकी प्राध्यापिका रह चुकी थी। उनकी चापलूसी के लिए नायिका उनके द्वारा लिखे गए गीत कंठस्थ कर उन्हें सुनाती है।

चंदा अभी प्राचार्या के पास बैठी बातें कर रही थी कि तभी एक गर्भवती अध्यापिका उनसे अवकाश माँगने आती है। गर्भावस्था के अंतिम चरण के डॉक्टर ने उसे काम करने मना किया था। प्राचार्या को उस पर बिलकुल तरस नहीं आता और उसे डॉक्टर इस्तीफा देने के लिए कहती है। अध्यापिका निराश होकर वहाँ से चली जाती है तो प्राचार्या चंदा से कहती हैं, “अरे चंदा, तुम्हारी नौकरी का इंतजाम तो मैंने कर ही दिया है, संपर्क बनाए रखना। ये श्रीमती जी ज्यादा से ज्यादा एक हफ्ते की मेहमान है। भई तुम पुरानी छात्रा हो, तुम्हारी मदद हम नहीं

<sup>6</sup> जांच अभी जारी है, ममता कालिया, पृष्ठ-30

<sup>7</sup> वही, पृष्ठ-31

करेंगे तो क्या गैर करेंगे।'<sup>8</sup>

प्राचार्या शांता सक्सेना के माध्यम से ममता जी ने एक महिला अधिकारी द्वारा दूसरी महिला को पीड़ित दर्शाया है। केवल पुरुष अधिकारी ही नहीं बल्कि स्त्री भी अपने पद का दुरुपयोग करने से नहीं चूकती। चंदा द्वारा अपनी प्रस्तुति प्राचार्या शांता सक्सेना अभिभूत हो जाती हैं और एक गर्भवती स्त्री की पीड़ा को अनदेखा कर देती है। अपने पद का उसे इतना घमंड है कि वह सबके प्रति असंवेदनशील हो गई है। वह कॉलेज की लड़कियों को प्यासी रहने के लिए मजबूर करती है। चंदा को यह सब देखकर आत्मग्लानी होती है कि वह क्यों उनसे मिलने आई? उसे उस गर्भवती अध्यापिका के प्रति भी सहानुभूति है। प्राचार्या का व्यवहार चंदा के मन में उसके प्रति घृणा पैदा कर देता है।

इस प्रकार ममता जी ने प्रत्येक क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार और अधिकारियों द्वारा अपने पद का दुरुपयोग, बेईमानी, स्वार्थी प्रवृत्ति को उजागर किया है।

### कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा

भारतीय समाज में विभिन्न संप्रदायों, धर्मों, भाषाओं के लोग रहते हैं। गतिशील समाज में समय-समय पर परिवर्तन आवश्यक है। भारतीय समाज भले ही आर्थिक और शैक्षणिक स्तर पर उन्नति की ओर अग्रसर हुआ है परंतु उसके अंतर्गत विविध सामाजिक समस्याओं ने भी जन्म लिया है जैसे – दहेज प्रथा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, यौन शोषण, महंगाई, लिंग भेद जातिवाद आदि। दैनिक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति इनमें से किसी एक समस्या से जूझता नजर आता है। ऐसे सामाजिक परिवेश में एक साहित्यकार भला इनसे अछूता कैसे रह सकता है। ममता जी ने अपने व्यक्तिगत जीवन में जिन सामाजिक समस्याओं का सामना किया उन्हीं को अपने साहित्य में चित्रित किया है। वे यथार्थधर्मी लेखिका हैं। इसलिए उन्होंने समाज का आईना लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यथा:—

### भ्रष्टाचार :-

आधुनिक भारतीय समाज में प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। आम आदमी को अपना काम करवाने के लिए नीचे से ऊपर तक सभी अधिकारियों की मुट्ठी गरम करनी पड़ती है। अगर वह ऐसा नहीं करता है तो उसे दर-दर की ठोंकरें खानी पड़ती हैं। सरकारी नौकरी तो बिना घूस दिये मिलनी ही असंभव हो गई। चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी से लेकर प्रथम श्रेणी के कर्मचारी सबको रिश्वत देकर काम निकलवाना पड़ता है। शैक्षणिक संस्थान, अस्पताल, बैंक, सरकारी दफ्तर, निजी संस्थान, पुलिस आदि सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार ने अपनी जड़ें जमा ली हैं। ममता कालिया ने अपने कथा-साहित्य में इसके जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किया हैं।

‘प्रेम कहानी’ शायद पहला ऐसा उपन्यास है, जिसमें अस्पतालों में फैले भ्रष्टाचार का

<sup>8</sup> श्रेष्ठ कहानियाँ, ममता कालिया, पृष्ठ-145

पर्दाफाश किया गया है। ममता जी की माँ अधिकतर बीमार रहती थी, इसलिए उन्हें भी उनके साथ अस्पताल में रहना पड़ता था। अस्पताल की दुनिया को इतना करीब से देखने के कारण ही वे उनमें फैले भ्रष्टाचार को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर करने में सफल रही हैं। मरीज डाक्टरों पर भगवान की तरह आँख मूंदकर विश्वास करते हैं। लेकिन आधुनिक काल के डॉक्टर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए मरीज की जिंदगी से खिलवाड़ करने से नहीं चूकते। इसका चित्रण उन्होंने डॉ. गुप्ता के माध्यम से किया है। डॉक्टर गुप्ता को बच्चों का जादूगर कहा जाता है और उसी का फायदा उठाकर वे मरीज से मनचाही फीस लेते हैं। सरकार उन्हें अस्पताल में काम करने के लिए वेतन देती है परंतु वे मरीजों को शाम को अपने बंगले पर बुलाते हैं और मोटी फीस लेते हैं। उनकी इसी बात से चिढ़कर डॉ. गिनेस कहते हैं, “न जाने किस-किसकी मजबूरी से मुड़े-तुड़े नोटों से ऐश करते हैं ये लोग? यह क्या कि जो फीस दे सकता है, वह छींक का इलाज भी वी.आई.पी. ढंग से करा ले और जो नहीं दे सकता, वह दमा, लकवा, तपेदिक को भी किस्मत का हिस्सा मानकर सब्र कर ले।”<sup>9</sup>

इसी प्रकार जब डॉ. गुप्ता महंगी दवाई प्रिस्क्रीब करता है तो डॉ. गिनेस को गुस्सा आता है। डॉ. गुप्ता जान बूझकर अपने फायदे के लिए वह दवाई मरीज को देता है। उसे पता है कि मरीज के स्वास्थ्य पर उसका कितना बुरा असर पड़ेगा। लेकिन वो अपने फायदे के लिए मरीज के जीने मरने की नहीं सोचता।

डॉ. गिनेस के माध्यम से लेखिका ने उनके स्वार्थ का चित्रण करते हुए लिखा है, “उस दवा कंपनी का प्रतिनिधि इनके पास न जाने क्या-क्या भेंट छोड़ जाता है। तभी इन्हें वह दवा कंपनी इतनी प्यारी है।”<sup>10</sup>

पैसे के लिए डॉक्टर कितना नीचे गिर सकते हैं, इसका चित्रण करती ये पंक्तियाँ हमारे सामने डॉक्टर का एक विकृत रूप प्रस्तुत करती हैं।

बैंक क्षेत्र भी भ्रष्टाचार से अछूता नहीं है। ममता कालिया की कहानी ‘जांच अभी जारी है’ बैंक क्षेत्र में चल रहे भ्रष्टाचार को उजागर करती है। कहानी की नायिका अपर्णा को बैंक अधिकारी सिर्फ इसलिए एक केस में उलझा देते हैं, क्योंकि उसने उनका कहना नहीं माना था। अपर्णा पर्स में अग्रिम राशि लिए एक ऑफिस से दूसरे ऑफिस के चक्कर काटती रहती हैं परंतु यह केस और अधिक उलझता चला जाता है। कहानी के अंत तक कोई परिणाम नहीं निकलता और जांच चलती रहती है।

ममता जी ने सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक समस्याओं को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। वे समाज को खोखला करने वाली सभी बुराइयों को उजागर

<sup>9</sup> तीन लघु उपन्यास, ममता कालिया, पृष्ठ – 157

<sup>10</sup> वही, पृष्ठ – 159

करने में सफल नहीं हैं। उन्होंने प्रमुख सामाजिक समस्याओं जैसे दहेज प्रथा, शिक्षा का गिरता स्तर, स्त्री की उपेक्षा, भ्रष्टाचार, महंगाई, तलाक, रिश्तों में दरार, आतंकवाद, बच्चों का एकाकीपन, अंधविश्वास, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, पैसों का महत्व आदि का बोलता हुआ चित्र अंकित किया है। यह वर्णन इतना प्रभावशाली है कि पाठक को सोचने पर मजबूर कर देता है।



Social Science & Management Welfare Association  
Youth Economics Association  
& Radiant Group of Institutions, Jabalpur (M.P.), INDIA



## International Conference On Role of Technology for Social Change in Society

Date : 13 March 2022, Sunday

Venue : Jabalpur (M.P.), INDIA

### Certificate

This is to certify that Prof/Dr/Shri/Mrs./Mr./Ku.

रमा उदावत

University / College / Organization

राजकीय कोटा कला महाविद्यालय, कोटा

Registration No. 215 Subject हिन्दी विभाग

in the International Conference On Role of Technology for Social Change in Society.  
International Conference jointly organized by Social Science & Management Welfare  
Association, Youth Economics Association & Radiant Group of Institutions, Jabalpur  
(M.P.), INDIA.

He / She successfully attended / Participated / Presented a paper entitled

ममता कालिया के साहित्य में चित्रित समस्याएँ

*Jairam*  
Dr. Jairam Casian Miowe  
Vice President-Social Science &  
Management Welfare Association  
Tanzania, Africa  
Advisory Board Member SSMWA

*Prabha*  
Dr. Thoudam Prabha  
International Co-ordinator  
Social Science & Management  
Welfare Association  
University of Buraimi, Sultanate of Oman  
Advisory Board Member SSMWA

*Er. Nitin Basedia*  
Er. Nitin Basedia  
Director  
Radiant Group of Institutions  
Jabalpur (M.P.), India

*Monika*  
Dr. Monika Panchani  
Associate Professor  
Department of Zoology  
Sardar Vallabhbhai Patel  
Cluster University, Mandla (H.P.)  
Member SSMWA

*Dr. D. Vishwakarma*  
Dr. D. Vishwakarma  
Secretary - Social Science &  
Management Welfare Association  
President - Youth Economics Association  
E.C. Member of Indian Economic Association  
& in charge of Madhya Pradesh

### Sponsored By



Head Office : 320, Sanjeevani Nagar, Veer Sawarkar Ward In Front of Income Tax Water  
Tanki, Garha, Jabalpur (M.P.), INDIA-482003, Cell - 9131312045, 9770123251, 0761-4036611

www.issmwa.com



**Youth Economics  
Association**

**Social Science &  
Management  
Welfare Association**



## **International Conference on Education, Employment, Entrepreneurship & Youth Development**

**DATE : 20-21 November, 2021**

**VENUE : Jabalpur (M.P.), INDIA**

### **Certificate**

This is to certify that Prof/Dr/Shri/Mrs./Mr./Ku.

**रमा उदावत**

University / College / Organization

**राजकीय कोटा कला महाविद्यालय, कोटा**

Registration No. **165** Subject **हिन्दी विभाग**

in the International Conference On Education, Employment, Entrepreneurship & Youth Development. International Conference jointly organized by Youth Economics Association, Social Science & Management Welfare Association & Radiant Group of Institution, Jabalpur (M.P.), INDIA.

He / She successfully attended / Participated / Presented a paper entitled

**ममता कालिया के कथा साहित्य में यथार्थ**

**Dr. Jairus Casian Mlowe**  
Vice President  
Youth Economics Association  
Social Science & Management  
Welfare Association, Tanzania, Africa  
Advisory Board Member SSMWA

**Dr. Thoudam Prabha**  
International Co-ordinator  
Social Science & Management  
Welfare Association  
University of Buraimi, Sultanate of Oman  
Advisory Board Member SSMWA

**Dr. Eni Kuswati**  
Resources Person Ministry of  
Education & Culture in Indonesia for  
Sekolah Penggerak, Superintendent  
Authorities Education, Kudus,  
Central Java, Indonesia  
Member ISSMWA

**Er. Nitin Basedia**  
Director  
Radiant Group of Institution,  
Jabalpur (M.P.), India

**Dr. D. Vishwakarma**  
President - Youth Economics Association  
Secretary - Social Science & Management  
Welfare Association  
Member - Indian Economics Association

**Sponsored By**



Head Office : 320, Sanjeevani Nagar, Veer Sawarkar Ward Garha, Jabalpur (M.P.), INDIA-482003, Cell - 9131312045, 9770123251, 0761-4036611

[www.issmwa.com](http://www.issmwa.com)

# परिशिष्ट

## (साक्षात्कार)

## परिशिष्ट

### (ममता कालिया जी से साक्षात्कार)



परिवेश साहित्य सृजन का मूल आधार होता है। संवेदनशील साहित्यकार अपने परिवेश से असंपृक्त नहीं रह सकता। सृजन प्रेरणा के रूप में अनेक अनुभूतियाँ समाहित होती रहती हैं, जीवन यात्रा सतत् चलती रहती है। ममता कालिया एक ऐसी कथाकार हैं जिनके कथा साहित्य, संस्मरण में अनुभूत संवेदना के विविध स्वरूप दृष्टिगोचर होते हैं इनके कथा साहित्य पर शोध कार्य करते हुए मुझे ममता कालिया जी से भेंट करने का अवसर मिला। गाजियाबाद इनके आवास पर दिनांक 24.01.2025 को मुझे इनके सृजन पर संवाद करने का अवसर मिला। प्रस्तुत है मेरे द्वारा पूछे गये प्रश्न व ममता कालिया जी के उत्तर जो इस साक्षात्कार में प्रस्तुत हैं-

**रमा उदावत** आपको साहित्य लेखन की मूल प्रेरणा कहाँ से मिली?

**ममता कालिया** साहित्य लेखन की प्रेरणा मुझे पूरे परिवेश से मिली। मेरे पिताजी विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों के निदेशक रहे हैं, वे स्वयं साहित्य प्रेमी थे। उस समय हमारे घर मुक्तिबोध, जैनेन्द्र, माखनलाल चतुर्वेदी, डॉ. नगेन्द्र, अज्ञेय जी आदि कवियों-लेखकों का आना-

जाना रहता था। मेरे चाचा भारतभूषण अग्रवाल भी थे जो साहित्य लेखक थे। इसलिए बचपन में ही एक माहौल मिला जो मेरी प्रेरणा का स्रोत रहा।

**रमा उदावत** वर्तमान में आप किस रचना पर कार्य कर रही हैं?

**ममता कालिया** वर्तमान में मैंने अभी 'रविकथा' का अगला भाग है 'शेषकथा' नाम से पूरा किया है। इसमें रविकथा में जो बातें कहना शेष रह गयी थी उन्हीं को लेकर 'शेषकथा' संस्मरण लिखा गया है।

**रमा उदावत** विश्व हिन्दी मेला जो 1 फरवरी से 9 फरवरी तक दिल्ली में लगने वाला है उसमें आपकी कौन-कौनसी नई रचनाएँ आने वाली हैं?

**ममता कालिया** मेले में मेरी तीन रचनाएँ (पुस्तकें) आ रही हैं-

1. कहानी संग्रह-दूरस्थ दाम्पत्य
2. उपन्यास-सच्चा झूठ
3. बाल पुस्तक - जादू की घड़ी

**रमा उदावत** प्रसिद्ध लेखक रवीन्द्र कालिया से आपकी मुलाकात कहाँ और किस प्रकार हुई?

**ममता कालिया** 30 जनवरी 1965 का दिन था, उस दिन पंजाब यूनिवर्सिटी में एक गोष्ठी थी। मुझे आचार्य हजारी प्रसाद जी ने एक गोष्ठी में एक टेलीग्राम किया कि आज की इस गोष्ठी में आप 'आज के कथा-साहित्य पर' पर्चा पढ़ें। मैं बहुत खुश हुई। मैं नई-नई लेखक बन चुकी थी, मैं इंग्लिश पढ़ाती थी, मैंने मेरे पापा को दिखाया, पापा बड़े खुश हुए, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आपको भेजा है जरूर जाना तुम। उस दिन इतेफाक से सण्डे भी था। मैं वहाँ चली गयी, तो वहाँ रवीन्द्र कालिया जी, कमलेश्वर जी ओर भी बहुत लेखक थे। डॉ. नामवर सिंह जी अध्यक्षता कर रहे थे। डॉ. नामवर सिंह ने कहा कि ममता अग्रवाल का पर्चा सबसे अच्छा था। जब मैं वापस आने के लिए बस में बैठी थी तो रवीन्द्र कालिया भी आकर बैठ गए। हम एक ही बस में दिल्ली पहुँच गए। उन्होंने अपना कोई

सामान भी नहीं लिया। बस मैं जब बैठे तो उन्होंने कहा कि तुम क्या कविता-वविता लिखती हो क्या ! मुझे बड़ा गुस्सा आया इनके ऊपर। बस इस प्रकार फिर कुछ बातें हुई तो हमारी कई जगह सोच भी मिल गयी।

**रमा उदावत** आपको 2022-23 का 'संतोष कोली स्मृति पुरस्कार' किस साहित्य रचना के लिए मिला है?

**ममता कालिया** संतोष कोली स्मृति पुरस्कार मुझे समग्र लेखन के लिए मिला है। लेकिन मैं खुश नहीं हूँ क्योंकि मुझे तीसरे स्थान पर आना कभी पसंद नहीं था।

**रमा उदावत** हाल ही में आपको 2024 का 18वाँ उदयरज स्मृति पुरस्कार किस साहित्य रचना के लिए प्राप्त हुआ?

**ममता कालिया** यह पुरस्कार मुझे 'नई धारा' नाम की एक पत्रिका में 'आधी हकीकत' नाम की कहानी प्रकाशित हुई थी उसके लिए दिया गया है। यह कहानी 'दूरस्थ दाम्पत्य' कहानी संग्रह में आयेगी।

**रमा उदावत** आपको अपनी रचनाओं में कौनसी रचना सबसे अच्छी लगती है?

**ममता कालिया** मुझे 'दौड़' उपन्यास बहुत पसंद है क्योंकि उस समय में कॉर्पोरेट जगत में किस प्रकार युवा अपना जीवन झोंक देता है। कोई साहित्य प्रेमी, कला प्रेमी हो फिर भी वह कॉर्पोरेट की दुनिया में अपना जीवन झोंक देता है परन्तु सबसे ज्यादा अच्छी रचना मुझे मेरा पहला उपन्यास 'बेघर' लगता है क्योंकि वह स्वतः स्फूर्त रचना है।

**रमा उदावत** क्या आने वाले समय में आपकी 'आत्मकथा' लिखने की योजना है?

**ममता कालिया** नहीं, आत्मकथा लिखने की योजना नहीं है, क्योंकि मुझे लगता है मेरा आत्म बहुत सी किताबों में आ गयी है। वो अलग-अलग रूप लेकर आती है उदाहरणार्थ लैला-मजनू कहानी है, 'नरक-दर-नरक' उपन्यास है। मुझे लगता है आत्मकथा अलग से किसी भी लेखक

को लिखने की जरूरत नहीं पड़ती है। मैं आत्मकथा नहीं लिखूँगी परन्तु अपने पिता को एक केरेक्टर के रूप में, लिखूँगी, पिता की तरह नहीं लिखूँगी।

**रमा उदावत** आपके 'सच्चा झूठ' उपन्यास की क्या विषय-वस्तु है?

**ममता कालिया** 'सच्चा झूठ' में कोविड के बारे में है, यह रचना कोविड के पॉजिटिव पक्ष में है, कोविड के दौरान भी लड़के-लड़की की मोहब्बत हो रही है, शादियाँ भी हुई हैं। कोविड के समय केवल हाहाकार, मृत्यु और नेगेटिव बातों की नहीं हुई है। मेरा कहना है कि मृत्यु के बीच में भी जीवन हस्ताक्षर कर रहा है। कोविड के दौरान ऐसा नहीं है कि जीवन रुक गया हो, जीवन तो चल ही रहा है। इसलिए मैंने इसका शीर्षक 'सच्चा झूठ' रखा है।

**रमा उदावत** आपके नए कहानी संग्रह 'दूरस्थ दाम्पत्य' में किस प्रकार की विषय वस्तु है?

**ममता कालिया** इसमें पति-पत्नी अलग-अलग रहते हैं, प्रेम करते हैं, बाद में शादी कर लेते हैं, परन्तु साथ-साथ नहीं रह पाते। रहना उनको दूर-दूर पड़ता है। दूरस्थ दाम्पत्य में यही सब है। इससे नई समस्याएँ पैदा हो रही हैं। पति-पत्नी के बीच गलतफहमी भी बढ़ जाती है। इसमें 'अभिषिप्त दाम्पत्य' कहानी भी है जो 'मोहन राकेश' के जीवन से संबंधित है।

**रमा उदावत** आपने एम.ए. अंग्रेजी में किया, लेकिन आप हिन्दी साहित्य की ओर कैसे प्रवृत्त हुईं?

**ममता कालिया** अंग्रेजी मुझे पसन्द थी, शुरु-शुरु में मैंने अंग्रेजी में कविताएँ भी लिखी, लेकिन अंग्रेजी ज्यादा लोग नहीं जानते तो वे रचनाएँ पढ़ भी नहीं पाते। मेरे पापा ने भी कहा ममता अगर तुमको प्रसिद्ध होना है तो तुम हिन्दी में लिखो, क्योंकि हिन्दी हमारी मातृभाषा है। इसे सब आसानी से समझ जाते हैं। मेरे पापा साहित्य प्रेमी थे और हमारे घर पर लेखकों का आना जाना लगा रहता था। बस वहीं से मैं हिन्दी साहित्य की ओर प्रवृत्त हुई।

- रमा उदावत** आपकी रचनाओं में यथार्थ किस रूप में दिखाई देता है?
- ममता कालिया** मैंने अपनी रचनाओं में सामान्य जीवन के संघर्ष को उतारा है जिसे छोटे से लेकर बड़े आदमी तक मेरी रचनाओं को समझ सके। मैंने निर्मल वर्मा को भी पढ़ा है उनकी रचनाओं में कल्पना अधिक है मुक्तिबोध की रचना जिसमें फैंटेसी का अधिक प्रयोग किया है जिसे प्रत्येक पाठक आसानी से समझ नहीं सकता। मैंने मेरे आस-पास घटित होने वाली घटनाओं को यथार्थ रूप में अपनी रचना में उतारा है।
- रमा उदावत** आपकी पहली कहानी कौनसी थी? उसका मूल उद्देश्य क्या है?
- ममता कालिया** मेरी पहली कहानी 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में प्रकाशित हुई थी जो मुकम्मल कहानी 'ऊँचे-ऊँचे कंगूरे' है जिसने हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन की कहानी प्रतियोगिता में पहला स्थान पाया था। इसका मूल उद्देश्य एक आदर्शवादी प्रेमी और शक्तिशाली पिता के बीच, झूलती नायिका की मनोदशा थी।
- रमा उदावत** आपको 'दुःखम-सुखम' उपन्यास पर 'व्यास सम्मान' मिला, इसमें आपने गाँधीवादी विचारधारा को चित्रित किया है, इसकी क्या पृष्ठभूमि रही है?
- ममता कालिया** 'दुःखम-सुखम' उपन्यास में मैंने अपने पिता और चाचा 'भारतभूषण अग्रवाल' का मिला-जुला रूप करके कविमोहन के रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें गाँधीवादी विचारधारा की पृष्ठभूमि मैंने मेरे बचपन के समय से उठाई। जब से मैं समझने लगी उस समय 'गाँधीबाबा' का प्रभाव अपने आस-पास देखा। मेरी 'दादी' 'गाँधीबाबा' से प्रभावित थी, हमारे घर पर खूब रूई हुआ करती थी। दादी के पास 'चरखा' था और वो चरखे से सूत कातती थी। उनकी सभाओं में जाती थी परंतु मेरे दादाजी इसका विरोध करते थे। मेरी दादी गाँधी जी से बहुत प्रभावित थी वहीं से इसकी पृष्ठभूमि ली गई है।

**रमा उदावत** आपने लेखन और पारिवारिक जिम्मेदारियों में किस प्रकार सामंजस्य किया?

**ममता कालिया** इसमें मेरे पति रवि की अहम् भूमिका रही है। कभी-कभी खाना बनाने में बच्चों को तैयार करने में। रवि को खाना बनाने का बहुत शौक था। मैं सुबह-सुबह बच्चों को स्कूल भेजकर फिर खुद को भी कॉलेज जाना होता था। रात को जब सब सो जाते उसके बाद मेरा दिन शुरू होता मैं अधिकतर रात में लिखती थी।



छायाचित्र



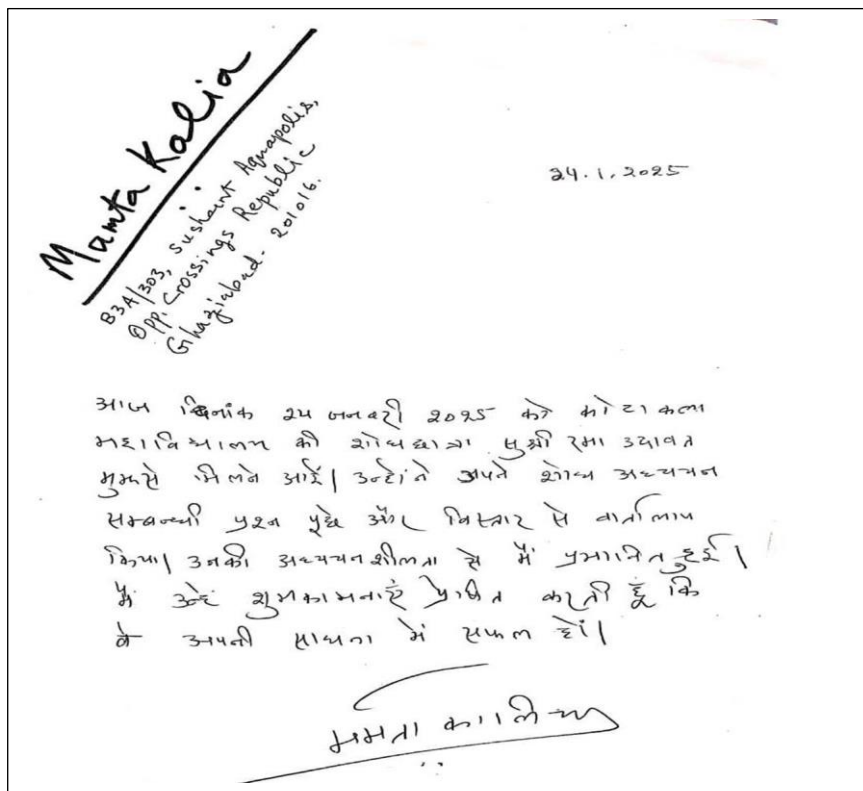
कथाकार ममता कालिया जी से उनके निवास पर गाजियाबाद में  
आत्मीय संवाद (शोधार्थी रमा उदावत)



शोध पर्यवेक्षक प्रो. अनिता वर्मा जी का अभिनन्दन



कथाकार ममता कालिया जी के साथ सुखद अनुभूति के क्षण



कथाकार ममता कालिया जी के साक्षात्कार के दौरान प्राप्त ऑटोग्राफ

